खाकी से गद्दारी

ड्यूटी कॉल्स

देवराज चौहान सीरीज़ का विस्फोटक उपन्यास

अनिल मोहन

देवराज चौहान सीरीज़ का
विस्फोटक उपन्यास

सामग्रियाँ

"तुम कौन हो ?"

"देवराज चौहान ।"

मोती खान फुर्ती से आगे बढ़ा और रिवाल्वर की नाल उसकी छाती पर रख दी ।

देवराज चौहान ने चेहरा ऊपर उठाकर मोती खान को देखा और कह उठा ।

"जब तुम्हें कुछ करना चाहिए था, तब तो तुमने कुछ किया नहीं और अब बेकार की कोशिश में... ।"

"अपने बारे में बताओ ।" मोती खान के चेहरे पर खतरनाक भाव आ गए थे ।

"देवराज चौहान नाम है मेरा बड़ा खान का दुश्मन हूँ मैं..."

"बकवास कर रहे हो तुम...तुम... ।"

"जब्बार मलिक को मैंने ही जेल से फरार करवाया था । इंस्पेक्टर सूरजभान यादव ।"

मोती खान चौंका ।

"ओह, तुम पुलिस वाले हो ।"

"मैं पुलिस वाला नहीं हूँ । पुलिस वाला होता तो किसी भी कीमत पर जब्बार को जेल से बाहर नहीं निकालता । मैं बड़ा खान का दुश्मन हूँ इसलिए जब्बार को जेल से फरार करवाया । बड़ा खान मुझे पैंतीस करोड़ दे रहा था जब्बार को जेल से फरार करवाने के, परन्तु मैंने उसे मुफ्त में भगा दिया । इसी कारण जब्बार और बड़ा खान के रिश्ते खराब हो गए । बड़ा खान सोचता है कि जब्बार और मेरे बीच जरूर कुछ खास हुआ है तभी तो मैंने उसे जेल से फरार करवाया.... ।"

"हाँ । ऐसा सुना है मैंने ।" मोती खान के होंठों से निकला । परन्तु मैं कैसे यकीन करूँ कि तुम वो ही हो... ।"

खाकी से गद्दारी

खाकी से गद्दारी (उपन्यास)

'सूरज पॉकेट बुक्स' पुस्तक संख्या- 73

प्रस्तुत संस्करण: मार्च 2020

मुखपृष्ठ : शाहनवाज़ खान

प्रकाशक:

सूरज पॉकेट बुक्स

ठाणे, महाराष्ट्र

www.soorajbooks.com

Email ID: soorajpocketbooks@gmail.com & publisher@soorajbooks.com

हमारी सभी पुस्तकें निम्न वेबसाइट्स व एप्स पर उपलब्ध हैं:

soorajbooks.com/shop, Amazon.in, flipkart.com, pustakmandi.com, Kindle, and other online stores

यह एक काल्पनिक किताब है। स्थानों और संस्थाओं के नामों का प्रयोग केवल कथ्य को प्रमाणिकता प्रदान करने के लिए किया गया है। कहानी में आये सभी चरित्र, नाम और घटनाएं लेखक की कल्पना पर आधारित हैं और किसी भी जीवित या मृत व्यक्ति से किसी भी प्रकार का सम्बन्ध एक संयोग मात्र होगा।

आज के दौर के सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यासकार

अपनी देवराज चौहान सीरीज़ के

के साथ आपकी सेवा में फिर हाज़िर हैं.

खाकी पहन कर, इंस्पेक्टर सूरजभान यादव बनकर, देवराज चौहान जेल में बन्द खतरनाक आतंकवादी जब्बार मलिक से मिलने जा पहुँचा था ।

पाठकों से,

लीजिये मैं फिर हाजिर हूँ सूरज पॉकेट बुक्स से, आपका अच्छा सा, प्यारा सा, छोटा-सा लेखक – अनिल मोहन। हम लोगों का साथ भी कितना अच्छा है, हम मिलते हैं उपन्यासों की वजह से, एक उपन्यास खत्म होता है तो दूसरा सामने आ जाता है, ये सिलसिला न तो कभी रुका है और न ही रुकेगा। 46 सालों से आपकी सेवा में लगा हूँ और मेरा ख्याल है 46 साल बहुत होते हैं परन्तु हमारा वास्ता कम से कम 66 साल का तो होना ही चाहिए। मैंने कहीं ज्यादा तो नहीं कह दिया। सूरज पॉकेट बुक्स से आपने मेरा पहला उपन्यास 'रफ्तार' पढ़ा, उसके बाद पढ़ा सूरमा, दोनों ही उपन्यास आज तक भी अच्छे बिक रहे हैं। दरअसल आपको उपन्यास चाहिये थे व्हाइट पेपर्स पर, अच्छी सजावट से। यूँ तो पहले वाले प्रकाशन ये ही बात कहते थे परन्तु पूरा नहीं करते थे। ये बात पूरी की सूरज पॉकेट बुक्स ने, तभी तो उपन्यास अभी तक बिक रहे हैं। कल ही सूरज पॉकेट बुक्स के मालिक शुभानन्द से मुलाकात हुई थी और उन्होंने रफ्तार और सूरमा, के बारे में ये ही कहा कि हर महीने उन्हें ये दोनों किताबें पुनः प्रिन्ट करवानी पड़ रही हैं और उनकी कहानी भी अच्छी हैं। दोस्तों एक बात तो मैं भी कहता हूँ कि सौ कहानियों में से सिर्फ एक ही कहानी मेरी खराब हो सकती है बाकी की 99 आपकी पसन्द पर खरी उतरेंगी।

अब आपके हाथों में 'खाकी से गद्दारी' आई है। बेहतरीन उपन्यास है। मजेदार कहानी है। शुरु की तो फिर खत्म कर के ही रुकेंगे। मैंने खुद पढ़ी है और मेरा क्या कहना, आप ही पढ़ लीजिये। जो फैसला आपका होगा वो ही

पाठकों से,

लीजिये मैं फिर हाजिर हूँ सूरज पॉकेट बुक्स से, आपका अच्छा सा, प्यारा सा, छोटा-सा लेखक – अनिल मोहन। हम लोगों का साथ भी कितना अच्छा है, हम मिलते हैं उपन्यासों की वजह से, एक उपन्यास खत्म होता है तो दूसरा सामने आ जाता है, ये सिलसिला न तो कभी रुका है और न ही रुकेगा। 46 सालों से आपकी सेवा में लगा हूँ और मेरा ख्याल है 46 साल बहुत होते हैं परन्तु हमारा वास्ता कम से कम 66 साल का तो होना ही चाहिए। मैंने कहीं ज्यादा तो नहीं कह दिया। सूरज पॉकेट बुक्स से आपने मेरा पहला उपन्यास 'रफ्तार' पढ़ा, उसके बाद पढ़ा सूरमा, दोनों ही उपन्यास आज तक भी अच्छे बिक रहे हैं। दरअसल आपको उपन्यास चाहिये थे व्हाइट पेपर्स पर, अच्छी सजावट से। यूँ तो पहले वाले प्रकाशन ये ही बात कहते थे परन्तु पूरा नहीं करते थे। ये बात पूरी की सूरज पॉकेट बुक्स ने, तभी तो उपन्यास अभी तक बिक रहे हैं। कल ही सूरज पॉकेट बुक्स के मालिक शुभानन्द से मुलाकात हुई थी और उन्होंने रफ्तार और सूरमा, के बारे में ये ही कहा कि हर महीने उन्हें ये दोनों किताबें पुनः प्रिन्ट करवानी पड़ रही हैं और उनकी कहानी भी अच्छी हैं। दोस्तों एक बात तो मैं भी कहता हूँ कि सौ कहानियों में से सिर्फ एक ही कहानी मेरी खराब हो सकती है बाकी की 99 आपकी पसन्द पर खरी उतरेंगी।

अब आपके हाथों में 'खाकी से गद्दारी' आई है। बेहतरीन उपन्यास है। मजेदार कहानी है। शुरु की तो फिर खत्म कर के ही रुकेंगे। मैंने खुद पढ़ी है और मेरा क्या कहना, आप ही पढ़ लीजिये। जो फैसला आपका होगा वो ही

पढ़ी है और मेरा क्या कहना, आप ही पढ़ लीजिये। जो फैसला आपका होगा वो ही मेरा होगा। वैसे 'खाकी से गद्दारी' का टाइटल कवर आपने देखा ही है कि उसे भी कितना खूबसूरत बनाया है। ये टाइटल कवर बनवाने में शुभानन्द जी के साथ तीन और व्यक्ति लगे। तब जाकर ये बन सका। वरना इसके पहले के तीन कवर तो मुझे भी पसन्द नहीं आये थे। यानी कि सब काम मिल-जुल कर ही पूर्ण होता है, कोई भी काम एक ही आदमी पूरा नहीं कर सकता। सूरज पॉकेट बुक्स आगामी माह में प्रकाशित होने वाले सेट में मेरा देवराज चौहान सीरीज का उपन्यास **'जीना इसी गली में'** प्रकाशित करने वाले हैं, जो कि डकैती पर ही आधारित है। मेरे उपन्यासों में लाजवाब डकैती पढ़ने को मिलती रहेगी और बिना डकैती के उपन्यास भी इतने ही बढ़िया होंगे। तो अब शुरु करते हैं 'खाकी से गद्दारी' को और मिलते हैं देवराज चौहान सीरीज के आगामी उपन्यास 'जीना इसी गली में'।

आपका-

अनिल मोहन

लेखक से बातचीत के लिये:

ई मेल-

anilmohan012@yahoo.co.in

फेसबुक कॉन्टेक्ट-

Facebook.com/anilmohan012

Facebook.com/anilmohanofficial

इसी भीड़ में चार पुलिस वाले खड़े थे। एक सब-इंस्पेक्टर था, एक कॉन्स्टेबल और दो सिपाही थे।

"हम में से किसी ने इंस्पेक्टर साहब को देखा नहीं।" एक कॉन्स्टेबल बोला, "उन्हें पहचानेंगे कैसे ?"

"पहचान लेंगे।" सब-इंस्पेक्टर ने कहा, "पुलिस वाले दूर से ही पहचाने जाते हैं।"

"अगर सर वर्दी में हुए तो आसानी से पहचान लेंगे।" दूसरा कॉन्स्टेबल बोला।

"भला इंस्पेक्टर साहब वर्दी में सफर क्यों करेंगे ?" सब-इंस्पेक्टर ने कहा, "वे साधारण कपड़ों में ही होंगे।"

तभी ट्रेन का शोर गूँज उठा। ट्रेन धड़धड़ाती हुई प्लेटफॉर्म में प्रवेश कर आई थी। कुली पहले ही ट्रेन पर चढ़ने लगे कि सवारियों से सामान उठाने की बात तय कर लें।

शोर-शराबा और बढ़ गया। फिर देखते ही देखते ट्रेन प्लेटफॉर्म पर रुक गई।

कानों को फाड़ देने वाला शोर उठ खड़ा हुआ। लोग नीचे उतरने लगे। कुलियों का रेला हर तरफ दिख रहा था। ट्रेन यहीं तक की थी। ये राहत की बात थी, वरना चढ़ने वालों को और भी मुसीबतें खड़ी कर देनी थी।

वे चारों पुलिस वाले दो-दो की टोली में इंस्पेक्टर साहब को तलाश करने लगे।

अगले दस मिनट में ही शोर और भीड़ कम होने लगी। ट्रेन से उतरने वाला देवराज चौहान भी था।

वह पैंट-कमीज पहने था। सिर के बाल छोटे थे। होंठों पर मूँछें थीं। उसने मीडियम साइज का एक सूटकेस थाम रखा था। उसकी नजरें हर तरफ जा रही थीं। आखिरकार उसकी निगाह दो पुलिस वालों पर जा टिकीं, जो कि परेशानी भरे अंदाज में ट्रेन से उतरने वाले लोगों को देख रहे थे, उन्हें पहचानने की चेष्टा कर रहे थे।

देवराज चौहान उनके पास पहुँचकर बोला, "किसे ढूंढ रहे हो ?"

खाकी से गद्दारी

ए.सी.पी. कौल ने थके और भारी क़दमों से जेलर के कमरे में कदम रखा और कुर्सी घसीट कर बैठ गया। कोहनी को टेबल पर रखा और उँगलियों से माथा रगड़ने लगा। आँखें बन्द हो गईं थी।

कमरा खाली था। मिनट भर से ऊपर के पल इसी में बीत गए। उँगलियां माथे पर फिरती रहीं।

तभी दरवाजे की तरफ से आहट उभरी।

कोई भीतर आ रहा था।

परन्तु ए.सी.पी. संजय कौल ने आँखें भी नहीं खोलीं।

"मैं आपकी कुछ सहायता कर सकता हूँ सर ?" जेलर की आवाज ए.सी.पी. कौल के कानों में पड़ी।

ए.सी.पी. कौल ने तुरन्त आँखें खोलीं, फिर सिर को हाथों से हटाया और जेलर को देखा।

"तुम जब्बार मलिक का मुँह खुलवा सकते हो ?" ए.सी.पी. कौल ने देखकर तीखे स्वर में पूछा।

जेलर सकपकाया, फिर सम्भलता हुआ कह उठा।

“वो बात नहीं सर...पर... दरअसल आप तीन इंस्पेक्टर के साथ बहुत जोर-शोर से आये थे कि आज जब्बार मलिक को छोड़ने का इरादा नहीं है, इसलिए मैंने पूछा.... ।”

“जब्बार मलिक मुँह खोलने को तैयार नहीं है वो सबकुछ जानता है परन्तु बड़ा खान के बारे में कुछ भी बताने को तैयार नहीं ।” ए.सी.पी. कौल ने झल्लाहट भरे अंदाज में कहा ।

जेलर कुछ कहने लगा कि तभी एक इंस्पेक्टर ने भीतर प्रवेश करते हुए कहा ।

“सर, जब्बार मलिक मुँह नहीं खोलेगा ।”

ए.सी.पी. कौल ने दांत भींचकर इंस्पेक्टर को देखा ।

“जो हम जानना चाहते हैं, उनके जवाब उसके पास हैं, ये बात वो जानता है, परन्तु वो हमें कुछ भी बताने को तैयार नहीं । आज जिस तरह से जवाब देने के लिए टॉर्चर किया है वो कुछ ज्यादा हो गया है । उसे रोक दें क्या ?”

“हाँ ।” ए.सी.पी. कौल ने सिर हिलाया... “वो सब रोक दो । उससे जब्बार पर कोई फर्क नहीं पड़ रहा है ।”

“वो इंस्पेक्टर फौरन बाहर निकल गया ।”

“ सर ।” जेलर कह उठा.... “मैं कुछ.... ।”

“तुम मेरे लिए एक कप चाय मंगवा दो तो मेहरबानी होगी ।”

“अभी लीजिये सर ।”

□□□

पुलिस इंस्पेक्टर के छोटे से रुम में ए.सी.पी. संजय कौल के अलावा तीन इंस्पेक्टर और थे, जिनके साथ कुछ देर पहले ही जब्बार मलिक से मुलाकात कर के जेल से वापस ही लौटे । चारों बैठे थे । चारों के चेहरे पर गंभीरता थी ।

साथ ही सब इंस्पेक्टर राधे श्याम शर्मा सतर्क अवस्था में खड़ा था ।

सब इंस्पेक्टर राधे श्याम शर्मा कौल के लिए एक जिम्मेदार ऑफिसर था ।

“सर ।” एक इंस्पेक्टर ने कहा --- “हम जितनी यातना इस जब्बार मलिक को दे चुके हैं, इतनी यातना में हम कई कैदियों के मुँह खुलवा चुके होते ।”

“परन्तु जब्बार का हम मुँह भी नहीं खुलवा सके, हमारी यातना पर वो तड़पता तो है, परन्तु बोलता कुछ भी नहीं पर इतना बहुत बार कहा कि वो हर बात का जवाब जानता है परन्तु बताएगा कुछ भी नहीं ।”

ए.सी.पी. संजय कौल की गंभीर निगाहें सब पर जा रही थीं ।

“सर, लगता है पुलिस के हाथ इन अपराधियों के सामने कमजोर पड़ने लगे हैं ।”

“नहीं सर, सब इंस्पेक्टर राधे श्याम शर्मा उसी मुद्रा में कह उठा--- “पुलिस के हाथ कभी कमजोर नहीं हो सकते, हमारे हाथ हमेशा मजबूत हैं और मजबूत ही रहेंगे । परन्तु कभी न कभी हमारे सामने जब्बार जैसा खिलाड़ी भी पड़ जाता है जो हमारी बातों में नहीं फँसता ।”

किसी ने सब इंस्पेक्टर शर्मा की बात का जवाब नहीं दिया ।

ए.सी.पी. कौल ने उस पर निगाह भरते हुए कहा ।

“कल दिल्ली पुलिस हेडक्वार्टर से एक शूटर यहाँ भेजा जा रहा है ।”

“वो क्यों ?”

“मैंने हेडक्वार्टर में खबर करना सही समझा कि मुझे एक फोन कॉल पर कहा गया है हम जल्दी ही जब्बार मलिक को यहाँ से निकालने वाले हैं । इस नाते शूटर को यहाँ भेजा जा रहा कि वो उसकी रखवाली कर.... ।”

“जब्बार को हमने इस जगह पर रखा गया कि वहाँ तक कोई नहीं पहुँच.... ।”

“ये बात दिल्ली वाले भी जानते हैं, परन्तु वो ये भी जानते हैं कि हम जब्बार मलिक का मुँह नहीं खुलवा सके । उनका भेजा गया इंस्पेक्टर जब्बार मलिक का मुँह भी खुलवाने की चेष्टा.... ।”

“जब हम नहीं खुलवा सके तो वो क्या खुलवा.... ।”

“तुम जल्दी तैश में न आया करो । दिल्ली वालों को भी मेहनत कर लेने दो ।”

उनके बीच ये बातें चलती रही।

फिर मीटिंग बर्खास्त हो गई।

□□□

अगले दिन।

सुबह साढ़े दस बजे ए.सी.पी. संजय कौल अपने ऑफिस में चहल-पहल करता दिख रहा था। कभी वो टेबल के पीछे मौजूद अपनी कुर्सी पर जा बैठता था। उसकी सोचों का वजह जब्बार मलिक था या फिर वो इंस्पेक्टर जो दिल्ली से आ रहा था। जिसको ट्रेन हर पल जब्बार की तरफ सरकाती आ रही थी।

कौल ने इंटरकॉम का स्विच दबाकर कहा।

"इंस्पेक्टर शर्मा को भेजो।" कहने के पश्चात कौल ने टहलना छोड़ा और अपनी कुर्सी पर आ बैठा था।

दो मिनट के भीतर ही सब इंस्पेक्टर राधे श्याम शर्मा ने भीतर प्रवेश किया और ए.सी.पी. को सैल्यूट मारा फिर सतर्क स्वर में कहा।

"हुक्म सर।"

"बैठ जाओ।"

सब इंस्पेक्टर शर्मा कुर्सी पर बैठ गया।

दोनों की निगाहें मिलीं।

"राधे श्याम शर्मा जी।" ए.सी.पी. संजय कौल ने गंभीर स्वर में कहा– "मैं तुम्हें कुछ काम सौंपने वाला हूँ।"

"यस सर।" सब इंस्पेक्टर शर्मा सतर्क सा नजर आने लगा।

"दिल्ली से आने वाले इंस्पेक्टर को तुम लेने स्टेशन जाओगे। तुम उसे रिसीव करोगे और.... ।"

"मैं समझ गया सर।"– सब इंस्पेक्टर शर्मा ने कहा।

"उस इंस्पेक्टर का नाम सूरजभान यादव है ?"

"जी।"

"उसकी कोई तस्वीर नहीं है, लेकिन तुम उसे पहचान लोगे ?"

"यस सर ।"

"पैंतीस मिनट ट्रेन आने को रह गए हैं ।"

शर्मा फौरन उठ खड़ा हुआ ।

"तुम इंस्पेक्टर सूरजभान यादव के साथ हर पल रहोगे । उसकी कही हर बात पूरी होनी चाहिए ।"

"जी सर । अब मुझे चलना चाहिए ।" शर्मा बोला ।

ए.सी.पी. कौल ने अपना सोच भरा चेहरा हौले से हिला दिया ।

शर्मा तुरन्त कौल साहब के ऑफिस से बाहर निकल गया ।

□□□

जम्मू रेलवे स्टेशन

दिन के ग्यारह बज रहे थे । हर तरफ भीड़-भाड़ शोर शराबा था । एक दूसरे से टकराते लोग आ-जा रहे थे । उन्होंने सूटकेस-बैग उठा रखे थे । लाल कपड़ों में हर तरफ कुलियों की मौजूदगी का एहसास हो रहा था । ट्रेनों की धड़-धड़ाधड़ और भौंपू की आवाजें बराबर कानों में पड़ रही थीं । इस शोर में कुछ ऊँचे स्वर में बात करना पड़ रहा था ।

प्लेटफॉर्म नम्बर एक पर तो और भी ज्यादा भीड़ थी । खोमचे वाले, ट्राली वाले, चाय बेचने वाले, सामान उठाये दौड़ते कुली और प्लेटफॉर्म पर खड़े लोगों की भीड़ । स्पीकर द्वारा बार-बार घोषणा हो रही थी कि दिल्ली से आने वाली ट्रेन प्लेटफॉर्म नम्बर एक पर पहुँच रही है ।

इस घोषणा के साथ ही प्लेटफॉर्म पर हलचल बढ़ गई थी । लाल कमीज में कुली प्लेटफॉर्म पर ट्रेन के इंतजार में आ पहुँचे थे । ट्रेन अब कभी भी पहुँच सकती थी ।

इसी भीड़ में चार पुलिस वाले खड़े थे । एक सब-इंस्पेक्टर था, एक कॉन्स्टेबल और दो सिपाही थे ।

“हम में से किसी ने इंस्पेक्टर साहब को देखा नहीं।” एक कॉन्स्टेबल बोला, “उन्हें पहचानेंगे कैसे ?”

“पहचान लेंगे।” सब-इंस्पेक्टर ने कहा, “पुलिस वाले दूर से ही पहचाने जाते हैं।”

“अगर सर वर्दी में हुए तो आसानी से पहचान लेंगे।” दूसरा कॉन्स्टेबल बोला।

“भला इंस्पेक्टर साहब वर्दी में सफर क्यों करेंगे ?” सब-इंस्पेक्टर ने कहा, “वे साधारण कपड़ों में ही होंगे।”

तभी ट्रेन का शोर गूँज उठा। ट्रेन धड़धड़ाती हुई प्लेटफॉर्म में प्रवेश कर आई थी। कुली पहले ही ट्रेन पर चढ़ने लगे कि सवारियों से सामान उठाने की बात तय कर लें।

शोर-शराबा और बढ़ गया। फिर देखते ही देखते ट्रेन प्लेटफॉर्म पर रुक गई।

कानों को फाड़ देने वाला शोर उठ खड़ा हुआ। लोग नीचे उतरने लगे। कुलियों का रेला हर तरफ दिख रहा था। ट्रेन यहीं तक की थी। ये राहत की बात थी, वरना चढ़ने वालों को और भी मुसीबतें खड़ी कर देनी थी।

वे चारों पुलिस वाले दो-दो की टोली में इंस्पेक्टर साहब को तलाश करने लगे।

अगले दस मिनट में ही शोर और भीड़ कम होने लगी। ट्रेन से उतरने वाला देवराज चौहान भी था।

वह पैंट-कमीज पहने था। सिर के बाल छोटे थे। होंठों पर मूँछें थीं। उसने मीडियम साइज का एक सूटकेस थाम रखा था। उसकी नजरें हर तरफ जा रही थीं। आखिरकार उसकी निगाह दो पुलिस वालों पर जा टिकीं, जो कि परेशानी भरे अंदाज में ट्रेन से उतरने वाले लोगों को देख रहे थे, उन्हें पहचानने की चेष्टा कर रहे थे।

देवराज चौहान उनके पास पहुँचकर बोला, “किसे ढूंढ रहे हो ?”

दोनों ने देवराज चौहान को देखा।

“आप कौन हैं ?” हवलदार ने संभले हुए स्वर में पूछा।

"इंस्पेक्टर सूरजभान यादव ।"

"ओह !" हवलदार ने तुरन्त देवराज चौहान के हाथों से सूटकेस लिया, "हम आपको ही ढूंढ रहे थे ।"

"तो मेरे आने की खबर मिल गई थी ।"

"जी सर ! हम आपको लेने आये हैं । ए.सी.पी. साहब ने हमें आपको रिसीव करने का ऑर्डर दिया ।"

"मेरा भी यही ख्याल था कि तुम लोग मुझे ढूंढ रहे होंगे ।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा ।

तभी सब-इंस्पेक्टर और एक सिपाही वहाँ आ पहुँचे । दोनों ने फौरन देवराज चौहान को सैल्यूट दिया ।

"जम्मू में आपका स्वागत है सर ।" सब-इंस्पेक्टर ने कहा ।

"नाम क्या है तुम्हारा ?" देवराज चौहान ने सिर हिलाकर पूछा ।

"सब-इंस्पेक्टर राधे श्याम शर्मा हूँ सर ।"

"और कितने लोग हैं जो मुझे लेने आये हैं ?"

"हम चार ही हैं सर ।"

"तो हमें अब चलना चाहिए ।" देवराज चौहान बोला, "कहाँ ले जाओगे मुझे ?"

"सर, आपके ठहरने के लिए एक फ्लैट तैयार कर रखा है, वहीं पर... ।"

"मैं पहले ए.सी.पी. साहब से मिलूँगा । उसके बाद फ्लैट पर जाऊँगा ।" देवराज चौहान बोला ।

"जो हुक्म सर ।"

□□□

देवराज चौहान जम्मू पुलिस हैडक्वार्टर पहुँचा ।

देवराज चौहान के कहने पर सब-इंस्पेक्टर राधे श्याम शर्मा उसे रेस्ट रूम में ले गया । जहाँ देवराज चौहान ने हाथ-मुँह धोकर सूटकेस में से वर्दी निकालकर पहनी । बैल्ट लगाई । कैप सिर पर रखी । कमीज की छाती पर

इंस्पेक्टर सूरजभान यादव नेम की प्लेट लगी चमक रही थी। मूँछों ने उसके चेहरे का रौब और भी बढ़ा रखा था। कमर पर होलेस्टर लटक रहा था।

"इंस्पेक्टर शर्मा।" देवराज चौहान बोला, "अब मैं ए.सी.पी. साहब से मिलने को तैयार हूँ।"

"जी सर, आइए।"

दोनों कमरे से बाहर निकले और कॉरिडोर में आगे बढ़ गए।

सूटकेस कमरे में ही रहा।

दो मिनट का रास्ता तय करने के बाद सब-इंस्पेक्टर एक कमरे का दरवाजा खोलकर बोला।

"जाइये सर, ए.सी.पी. साहब आपका इंतजार कर रहे हैं।"

देवराज चौहान ने सिर हिलाया और भीतर प्रवेश कर गया।

सब-इंस्पेक्टर शर्मा बाहर ही रहा। दरवाजा बन्द हो गया।

ये दो कमरों जितना कमरा था। सजा हुआ। बड़ी सी टेबल के गिर्द चार कुर्सियाँ पड़ी थीं। पाँचवीं कुर्सी पीछे दीवार की तरफ थी। दीवार पर महात्मा गाँधी की तस्वीर लगी थी। कुर्सी पर पचपन बरस का चुस्त सा दिखने वाला व्यक्ति, जो कि ए.सी.पी. संजय कौल था, बैठा था। वह क्लीन शेव्ड था।

ए.सी.पी. संजय कौल ने देवराज चौहान को भीतर प्रवेश करते देखा।

देवराज चौहान पास पहुँचकर जोरदार सैल्यूट देता कह उठा।

"सर, इंस्पेक्टर सूरजभान यादव दिल्ली से हाजिर है!"

ए.सी.पी. संजय कौल मुस्कुराया और खड़ा होकर देवराज चौहान की तरफ हाथ बढ़ाया।

देवराज चौहान ने हाथ मिलाया।

"इंस्पेक्टर सूरजभान यादव। एनकाउंटर स्पेशलिस्ट।" ए.सी.पी. संजय कौल ने कहा, "बहुत नाम सुना था तुम्हारा। तुम्हारे कारनामे मैंने कई बार अखबारों में पढ़े हैं। जब पता चला कि तुम्हें भेजा जा रहा है तो मैं तुमसे मिलने को उत्सुक हो उठा। बैठो।"

देवराज चौहान टेबल के पास पड़ी कुर्सी पर बैठ गया।

ए.सी.पी. संजय कौल भी बैठा।

"सफर में कोई परेशानी तो नहीं हुई ?" कौल ने पूछा।

"नहीं सर ! सब ठीक रहा।" देवराज चौहान शांत मुस्कान के साथ बोला।

"तुम तीन दिन पहले आने वाले थे।"

"यस सर ! तीन दिन पहले मैं दिल्ली से चलने ही वाला था कि घरेलू समस्या की वजह से रुकना पड़ा।"

"परिवार में कौन-कौन है ?"

"पत्नी है, तीन बच्चे हैं। दो बेटे, एक बेटी। बेटे कॉलेज में हैं। बेटी स्कूल में पढ़ रही है सर।"

"हूँ !" ए.सी.पी. संजय कौल ने सिर हिलाया फिर मुस्कुराकर बोला, "एनकाउंटरों में आज तक कितनों को मारा तुमने ?"

"बत्तीस को सर ! वह सब नामी खतरनाक लोग थे।" देवराज चौहान भी मुस्कुराया।

"कानून की सेवा दिल से कर रहे हो।"

"वर्दी पहनी ही इसलिए थी सर। मेरे लिए मेरा परिवार और मेरा देश एक समान है।"

"तुम्हारे विचार जानकर अच्छा लगा मुझे। अपना आई-कार्ड दिखाओ।"

"जी सर !" देवराज चौहान ने कहा और कमीज की जेब से आई-कार्ड निकाल कौल की तरफ बढ़ा दिया।

कौल ने कार्ड लेकर देखा।

देवराज चौहान की पुलिस की वर्दी में वहाँ तस्वीर लगी थी। उस पर पुलिस डिपार्टमेंट की मुहर थी। नाम-पता, रैंक, रजिस्टर्ड नम्बर, हर चीज उस पर दर्ज थी। कौल ने कार्ड को वापस देवराज चौहान को लौटा दिया।

देवराज चौहान ने कार्ड वापस रखते हुए पूछा, "जब्बार मलिक अब किस हाल में है सर ?"

"वह ठीक है। जेल में पहले की तरह ही है।" कौल ने बताया।

"उसे छुड़ाने की कोई कोशिश तो नहीं हुई ?"

"नहीं ! सब ठीक है ।" ए.सी.पी. कौल ने गम्भीर स्वर में कहा, "मैंने दिल्ली पुलिस को खबर दी थी कि बड़ा खान ने फोन पर धमकी दी है कि वह जब्बार मलिक को जल्दी ही जेल से छुड़ा ले जायेगा, तो दिल्ली पुलिस ने एहतियात के तौर पर तुम्हें जम्मू भेज दिया कि तुम भी जब्बार मलिक पर अपने तौर पर नजर रख सको । दिल्ली का ऑर्डर था, इसीलिए मैं उन्हें कुछ नहीं कह सका, जबकि हकीकत में हमने जब्बार मलिक को कड़े पहरे में रखा है । चौबीसों घण्टे उस पर नजर रखी जाती है । उसे ऐसी कोठरी में रखा है कि वहाँ तक साधारण पुलिस वाले भी नहीं जा सकते । बड़ा खान उसे जेल से निकालकर नहीं ले जा सकता । जब्बार मलिक तक पहुँच पाना कोई मजाक नहीं है सूरजभान !"

"मुझे यकीन है कि आपने पुख्ता इंतजाम कर रखे होंगे !" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा, "उसके खिलाफ दिल्ली में भी केस चल रहे हैं । इसीलिए दिल्ली पुलिस को भी उसकी चिंता है ।"

"मैं समझता हूँ ।" ए.सी.पी. कौल ने कहा ।

"जब्बार मलिक को छः महीने पहले जम्मू पुलिस ने गिरफ्तार किया था ।"

ए.सी.पी. कौल ने सिर हिलाया ।

"तो जब्बार मलिक ने अब तक बड़ा खान के बारे में क्या-क्या जानकारी दी ?"

"कुछ भी नहीं !"

"कुछ भी नहीं ?" देवराज चौहान के माथे पर बल पड़े ।

"वह सख्त जान है । दृढ़ता से भरा हुआ है । बड़ा खान को भगवान की तरह मानता है और उसके खिलाफ मुँह खोलने को तैयार नहीं है । हमने बहुत कोशिश कर ली, लेकिन वह पक्का इंसान है ।"

"कोशिश में क्या किया, मैं जान सकता हूँ सर ?" देवराज चौहान ने पूछा ।

"उसे जेल में, गुपचुप तरीके से हर तरह की यातना दी गई कि वह बड़ा खान के बारे में पुलिस को बताये। उसका ठिकाना बताये। उसके साथियों के नाम बताये। उन लोगों के नाम-पते बताये जो आम लोगों के बीच रहकर बड़ा खान और उसके लोगों के काम आते हैं। हमने यातना का कोई चेहरा नहीं छोड़ा, जो उसे दिखाया न गया हो। परन्तु वह मुँह खोलने को तैयार नहीं। मरने को तैयार है। इस बात पर तो जब्बार मलिक जीत गया और हम हार गए।"

"क्या कहता है वह ?"

"हर बात पर कहता है कि इसका जवाब मेरे पास है लेकिन बताऊँगा नहीं।"

"ऐसे लोग भी होते हैं।" देवराज चौहान ने सिर हिलाया, "दिल्ली से मुझे यह कहकर भेजा गया है कि जब्बार मलिक का मुँह खुलना बहुत जरूरी है। वह बड़ा खान की बहुत बातें जानता है और पुलिस को बड़ा खान के बारे में जानने की जरूरत है, क्योंकि पुलिस उसके बारे में ज्यादा नहीं जानती। दो साल पहले बड़ा खान का नाम अचानक सुनने में आया और उसके बाद हिन्दुस्तान में खौफ की तरह फैलता चला गया।"

"तुम उसका मुँह खुलवाने के लिये जो कोशिश करना चाहते हो कर सकते हो।"

"थैंक्यू सर !"

"परन्तु जब्बार मलिक तुम्हारी किसी बात का जवाब नहीं देगा। हमने अंत तक कोशिश कर ली कि वह मुँह खोल दे। ये हम ही जानते हैं कि हमने कितनी कोशिश की।"

"दिल्ली पुलिस का मानना है कि जब्बार मलिक को फाँसी की सजा दी जायेगी। परन्तु उससे पुलिस और जनता का कोई भला नहीं होगा। भला तब होगा जब बड़ा खान पर हाथ डाला जा सके।"

"असम्भव !" ए.सी.पी. कौल के होंठों से निकला, "बड़ा खान तक पहुँचना नामुमकिन है।"

"क्यों ?"

"सबसे बड़ी बात तो ये है कि पुलिस अभी तक बड़ा खान का चेहरा भी नहीं जानती। उसके जो भाषण, धमकियों की सीडी जो भी हमारे पास पहुँची है, उनमें उसने अपने मुँह पर कपड़ा लपेट रखा है। हमें आज तक कोई ऐसा नहीं मिला जिसने बड़ा खान का चेहरा देखा हो। जो भी मिले, सबने ये ही कहा कि बड़ा खान हर वक्त अपने चेहरे पर कपड़ा लपेटकर रखता है। मेरे ख्याल में वह सतर्क रहने वाला इंसान है।"

"वह हिन्दुस्तान का है या पाकिस्तान का ?" देवराज चौहान ने पूछा।

"खबर नहीं इस बात की।"

"जब्बार मलिक उसका चेहरा देखने के बारे में क्या कहता है, क्या उसने चेहरा देखा है ?"

"हाँ ! उसने बड़ा खान का चेहरा देखा है। इस बात को वह स्वीकार करता है। परन्तु पुलिस को बड़ा खान के चेहरे का स्कैच बनवाने को तैयार नहीं। वह कहता है कि तुम लोग मेरी मर्जी के खिलाफ, मुझसे कोई काम नहीं करा सकते। ये बात वह ठीक कहता है। वह जिद्दी है और जान दे देगा, परन्तु बड़ा खान के बारे में कोई जानकारी नहीं देगा !" ए.सी.पी. कौल ने कहा।

"कितनी अजीब बात है कि पुलिस अभी तक बड़ा खान की राष्ट्रीयता भी नहीं जान सकी।"

"किसी गलतफहमी में मत रहना इंस्पेक्टर सूरजभान यादव।" कौल ने गम्भीर स्वर में कहा, "हमने बड़ा खान के बारे में जानने की बहुत कोशिश की, परन्तु हमें जरा भी सफलता नहीं मिली।"

देवराज चौहान का चेहरा शांत और गम्भीर था।

"आप दिल्ली बात कर लें सर ! मेरे को कुछ अधिकार देकर भेजा गया है।" देवराज चौहान ने कहा।

"किस तरह के अधिकार ?"

"यही कि मैं अपनी तरह से, जब्बार मलिक का मुँह खुलवाने की कोशिश कर सकूँ।"

"इस काम में जम्मू पुलिस तुम्हारे साथ है इंस्पेक्टर सूरजभान यादव।"

"थैंक्यू सर ! फिर भी आप दिल्ली बात कर लें तो बेहतर होगा ।" देवराज चौहान मुस्कुराकर कह उठा ।

"मैं दिल्ली बात कर लूँगा । अब तुम क्या चाहते हो ? मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ ।"

"अभी तो मैं कुछ देर आराम करूँगा । लंच करूँगा । उसके बाद शाम चार बजे जब्बार मलिक से मिलने जाऊँगा ।"

"तुम्हारे आराम का सब इंतजाम कर रखा है । सब-इंस्पेक्टर शर्मा की ड्यूटी तुम्हारी देख-रेख की है । तुम्हें जिस चीज की भी जरूरत हो, उसे कह दो, पूरी हो जायेगी ।"

"थैंक्यू सर !" देवराज चौहान मुस्कुराया और उठ खड़ा हुआ ।

"तुमसे मिलकर अच्छा लगा एनकाउंटर स्पेशलिस्ट !" कौल भी उठते हुए मुस्कुराया ।

दोनों ने हाथ मिलाये ।

फिर देवराज चौहान ने सैल्यूट दिया और बाहर निकल गया ।

सब-इंस्पेक्टर राधे श्याम शर्मा बाहर ही मौजूद था, उसके इंतजार में ।

"शर्मा !" देवराज चौहान ने कहा, "मेरा सूटकेस लो और जहाँ मुझे ठहराने का इंतजाम कर रखा है, वहाँ चलो !"

"जी सर !"

दोनों आगे बढ़ गए ।

"दो बजे मेरे लंच का इंतजाम करना है और चार बजे मैं जब्बार मलिक से मिलने जेल जाऊँगा ।" देवराज चौहान ने कहा ।

"मैं समझ गया सर !"

□□□

सब-इंस्पेक्टर शर्मा और देवराज चौहान जहाँ पहुँचे, वह सजा-सजाया फ्लैट था ।

सब-इंस्पेक्टर शर्मा ने सूटकेस बेडरूम में रख दिया था ।

देवराज चौहान ने पूरे फ्लैट पर नजर मारी। वह खाली था। तीन बेडरूम, बड़ी लॉबी और ड्राइंग हॉल था फ्लैट में। किचन में भी जरूरत का हर सामान मौजूद था।

"ये फ्लैट किसका है?" देवराज चौहान ने शर्मा से पूछा।

"पुलिस डिपार्टमेंट का है सर। कोई ऑफिसर बाहर से आता है तो ये उसे दिया जाता है।"

"हूँ!" देवराज चौहान ने शांत भाव में सिर हिलाया, "कॉफी बनानी आती है?"

"यस सर! अभी बनाता हूँ सर।" कहकर शर्मा किचन की तरफ बढ़ गया।

"अपने लिए भी बना लेना।"

"जी सर!"

देवराज चौहान ने वर्दी उतारी और नाइट सूट पहनकर सिगरेट सुलगाई फिर बन्द खिड़की को खोलकर बाहर देखा। सामने सड़क थी। वहाँ से वाहन आ-जा रहे थे। इसी सड़क पर से वह शर्मा के साथ आया था। दोपहर का डेढ़ बज रहा था। कश लेते हुए देवराज चौहान वहाँ से हटने लगा कि एकाएक ठिठका।

उसकी निगाह सामने सड़क पार खड़ी हरे रंग की कार पर जा टिकी।

कार के भीतर कोई बैठा था।

तो क्या कोई उस पर नजर रख रहा था?

कौन हो सकता है?

बड़ा खान या कोई और?

या यूँ ही वह कार खड़ी है और उसे बिना वजह शक हो रहा है। ये सोचकर देवराज चौहान खिड़की से हट गया कि जो भी सच होगा, जल्दी ही सामने आ जायेगा।

वह पलटा तो शर्मा को कॉफी के प्याले के साथ करीब आते देखा। देवराज चौहान ने एक प्याला थाम लिया। वह सोफा चेयर पर जा बैठा।

शर्मा भी एक कुर्सी पर बैठ गया।

दोनों कॉफी के घूँट भरने लगे।

"जब्बार मलिक या बड़ा खान के बारे में तुम्हारे पास क्या खबर है शर्मा ?" देवराज चौहान ने पूछा।

"खास नहीं। जो सब जानते हैं, वह ही मैं जानता हूँ सर !" शर्मा बोला।

"बताओ क्या जानते हो ? पहले बड़ा खान के बारे में बताओ।"

"वह खतरनाक है, दरिंदों जैसा है। उसके कारनामों पर निगाह मारी जाये तो ये बात स्पष्ट हो जाती है। दो साल पहले बड़ा खान का नाम सुनने में आया और उसके बाद हर कांड में बड़ा खान का नाम जुड़ने लगा। लम्बे हाथ हैं उसके। उसके आदमी हर जगह पर हैं। हिन्दुस्तान में उसके आदमियों का जाल बिछा है और वह जहाँ चाहता है, वहीं आतंकी कार्यवाही कर देता है। पुलिस अभी तक उसके चेहरे से वाकिफ नहीं हो पाई है। जब्बार मलिक, बड़ा खान के करीबी लोगों में से एक है।"

"बड़ा खान की पीठ पर किसका हाथ है, इस बारे में सुना कभी ?" देवराज चौहान ने पूछा।

"नहीं सुना। परन्तु कश्मीर घाटी उसके नाम से कांपती है। पहले से ही मौजूद आतंकवादी दल बड़ा खान का नाम सुनते ही सीधे हो जाते हैं। शुरू-शुरू में एक-दो संगठनों ने बड़ा खान के खिलाफ आवाज उठाने की कोशिश की, परन्तु शीघ्र ही वह शांत और चुप हो गए। शायद बड़ा खान ने उन्हें समझा दिया था कि चुप रहने में ही भलाई है।"

"उन संगठनों से पता करने की कोशिश नहीं की बड़ा खान के बारे में ?"

"पुलिस गुप-चुप तरीके से बड़ा खान के बारे में जानकारी पाने की भरपूर चेष्टा कर चुकी है। लेकिन फायदा नहीं हुआ। जब्बार मलिक को बड़ा खान की जानकारी है, परन्तु वह कुछ नहीं बताता।"

देवराज चौहान ने कॉफी का प्याला खाली करके टेबल पर रख दिया।

"सर, मैं आपके लंच का इंतजाम करता हूँ।" शर्मा उठते हुए बोला, "मैं आधे घण्टे में आया।"

"बाहर से लाओगे लंच ?" देवराज चौहान ने पूछा।

"यस सर ! एक जगह पर मैंने तब ही ऑर्डर दे दिया था जब आप कमिश्नर साहब से बात कर रहे थे ।"

देवराज चौहान ने सिर हिलाया और खुली खिड़की पर जा खड़ा हुआ ।

सामने सड़क पार वह हरी कार अब नहीं खड़ी थी ।

सब-इंस्पेक्टर शर्मा लंच लेने चला गया ।

□□□

देवराज चौहान ने लंच किया ।

उसके बाद शर्मा चार बजे आने को कहकर चला गया ।

तीन बज रहे थे ।

देवराज चौहान सिगरेट के कश लेते यूँ ही खुली खिड़की पर पहुँचा कि ठिठक गया । सामने सड़क पार वह हरी कार खड़ी थी । भीतर कोई बैठा भी दिखा ।

देवराज चौहान के होंठ सिकुड़ गए ।

अब शक की कोई गुंजाइश नहीं रही थी कि उस पर नजर रखी जा रही है ।

नजर रखने वाले कौन हो सकते हैं ? ये बात देवराज चौहान समझ नहीं पा रहा था ।

देवराज चौहान खिड़की से हटा और एक तरफ होलेस्टर में रखा रिवॉल्वर चेक किया । गोलियों की मैग्जीन फुल थी । वह रिवॉल्वर वही रखकर बेडरूम में आ गया । चेहरे पर गम्भीरता नजर आ रही थी । वह जानता था कि वह भारी खतरे में कदम रख चुका है । देवराज चौहान के तौर पर कोई भी उसे पहचान सकता था । हर वक्त उसे पुलिस वालों के बीच ही रहना था । कभी भी वह फँस सकता था । अपने बुरे हालातों से वह अच्छी तरह वाकिफ था ।

बेड पर बैठते ही उसका मोबाइल बज उठा ।

मोबाइल बेड पर ही था। उसने फोन उठाया और स्क्रीन पर आ रहा नम्बर देखा। वह नम्बर उसकी समझ में नहीं आया। ये मोबाइल फोन उसका नहीं, इंस्पेक्टर सूरजभान यादव का था।

"हैलो!" देवराज चौहान ने बात की।

"इंस्पेक्टर सूरजभान यादव हो तुम?" उधर से शांत आवाज कानों में पड़ी।

"हाँ, तुम कौन हो?"

"मुझे हैरानी है कि तुम सही-सलामत कैसे जम्मू पहुँच गए। तुम्हें खत्म करने का तगड़ा इंतजाम कर रखा था दिल्ली में।"

देवराज चौहान के दाँत भींच गए।

"कौन हो तुम?" देवराज चौहान सख्त शब्दों में कह उठा।

"दिल्ली में तुम बच कैसे गए?" उधर से कहा गया।

"किस्मत से।"

"किस्मत बार-बार साथ नहीं देती।" इस बार कानों में पड़ने वाले स्वर में मुस्कुराहट भरी थी।

"तो दिल्ली में मुझे मारने के लिए तुमने मुझ पर हमला कराया था।" देवराज चौहान गुर्रा उठा था।

"हाँ! परन्तु हैरानी है कि तुम घायल भी नहीं हुए और जम्मू आ ही पहुँचे। मेरे आदमियों ने बेकार काम किया। नाकारा हो गए हैं वह।"

"क्यों मारना चाहते थे तुम?"

"क्योंकि तुम जैसे खतरनाक पुलिस वाले को जब्बार मलिक के पास भेजा जा रहा...।"

"तुम कौन हो, अपना नाम बताओ?"

"क्या करोगे जानकर?" कानों में पड़ने वाले स्वर में मुस्कान थी।

"बताओ!"

"बड़ा खान!"

पल भर के लिए देवराज चौहान अचकचा उठा।

"चुप क्यों हो गए इंस्पेक्टर?"

"मैंने सोचा नहीं था कि तुम बड़ा खान हो सकते हो।"

"बड़ा खान ही हूँ मैं। सुना है लोग मुझसे डरते हैं। सच में ऐसा है क्या ?"

"वह हरी कार में तुम्हारे आदमी ही मुझ पर नजर रख रहे हैं ?" देवराज चौहान ने कहा।

"हरी कार, मैं समझा नहीं ?"

"मैं जिस फ्लैट में हूँ उसके बाहर एक हरी कार मुझ पर नजर रख रही है।"

"हो सकता है कि वह मेरे आदमी हों। दावे के साथ नहीं कह सकता। मुझे बहुत काम रहते हैं और मेरे आदमी भी कामों में व्यस्त रहते हैं। खैर, छोड़ो हमें काम की बात करनी चाहिए।"

"काम की बात ?"

"जब्बार मलिक को आजाद कराने की बात। इसके बदले तुम्हें बहुत बड़ी रकम मिल सकती है।"

"तुमने तो धमकी दी है कि तुम जब्बार मलिक को जेल से निकालने वाले हो।" देवराज चौहान बोला।

"हाँ, ये सच है !"

"तो फिर मुझे क्यों कह रहे हो कि... ।"

"तुम्हारे द्वारा काम आसानी से हो जायेगा।"

"मेरे से कोई आशा मत रखो।" देवराज चौहान ने कहा और फोन बन्द कर दिया।

सोच के भाव देवराज चौहान के चेहरे पर नजर आ रहे थे। बड़ा खान का फोन आना मामूली बात नहीं थी।

उसकी नजर हर तरफ थी। इंस्पेक्टर सूरजभान यादव का फोन उसके पास था। ये अच्छी बात थी कि बड़ा खान उसे इंस्पेक्टर सूरजभान यादव ही समझ रहा था। उसकी हरकत से वाकिफ नहीं था। बड़ा खान की नजर उस पर यानी कि इंस्पेक्टर सूरजभान यादव पर थी। स्पष्ट था कि बड़ा खान बेहद फुर्तीला और सतर्क रहने वाला इंसान था।

बड़ा खान जब्बार मलिक को जेल से निकालने की कोशिश में व्यस्त था। साथ ही उसे भी नोटों का चारा डाल रहा था कि उसके माध्यम से, जब्बार मलिक जल्दी आजाद हो जाये।

देवराज चौहान समझ गया कि उसे बेहद सतर्क रहने की जरूरत थी। वह पुलिस के बीच मौजूद, पुलिस वाला बना हुआ था। कोई भी उसे पहचान सकता था।

इधर बड़ा खान कभी भी, उसके साथ कुछ भी कर सकता था। खतरा हर तरफ था।

□□□

जम्मू सेंट्रल जेल के बाहर बनी पार्किंग में सब-इंस्पेक्टर शर्मा ने पुलिस कार रोकी और बाहर निकला। तब तक देवराज चौहान भी बगल का दरवाजा खोलकर बाहर आ गया था। देवराज चौहान वर्दी में था।

"आइये सर ! जब्बार मलिक इसी जेल में हैं।" सब-इंस्पेक्टर शर्मा ने कहा, "मैं ए.सी.पी. साहब से, उनके पैड पर स्पेशल ऑर्डर ले आया हूँ कि जेलर साहब आपको जब्बार मलिक से मिलने दें और आपको हर तरह का सहयोग दें।"

देवराज चौहान ने मुस्कुराकर सिगरेट सुलगाई।

"कब लाये ऑर्डर ?"

"आपके लंच के बाद मैं ए.सी.पी. साहब के पास ही गया था ऑर्डर लेने।"

"चलो, भीतर चलें !" देवराज चौहान ने कहा।

दोनों जेल के बड़े से फाटक की तरफ बढ़ गए।

फाटक जैसे बड़े गेट के पास चार हथियारबंद पुलिस वाले खड़े थे। वहाँ भीतर जाने वालों की लाइन लगी थी। दो सिपाही भीतर आने-जाने वालों के कागजात देखने और उन्हें संभालने में व्यस्त थे।

वे सिपाही सब-इंस्पेक्टर शर्मा को जानते थे।

शर्मा ने उन्हें बताया कि उनके साथ दिल्ली से आये बड़े साहब हैं। उन्होंने देवराज चौहान का आई-कार्ड देखा।

शर्मा देवराज चौहान के साथ जेल के भीतर प्रवेश कर गया।

"बेहतर होगा सर कि एक बार जेलर साहब से आप मिल लें।" शर्मा बोला।

"जरूर !"

दोनों जेलर के शानदार ऑफिस में पहुँचे।

जेलर सुधीर लाल व्यस्त था और जेल के तीन कर्मचारियों और एक कैदी से बात कर रहा था। देवराज चौहान और सब-इंस्पेक्टर शर्मा जेलर से हैलो कहने के बाद कुर्सियों पर बैठ गए।

जेलर सुधीर लाल ने उन्हें जल्दी निबटाकर भेज दिया फिर सब-इंस्पेक्टर शर्मा से बोला।

"कैसे हो शर्मा ?" उसने एक नजर देवराज चौहान पर मारी।

"ठीक हूँ सर ! ये इंस्पेक्टर सूरजभान यादव हैं और दिल्ली से, जब्बार मलिक के लिए भेजे गए हैं।" शर्मा ने जेब से ए.सी.पी. साहब का लैटर निकालकर जेलर की तरफ बढ़ाया, "ये ए.सी.पी. साहब का लैटर है, आपके लिए।"

लैटर थामते ही जेलर सुधीर लाल कह उठा।

"ए.सी.पी. साहब का फोन आ गया था इस बारे में।" उसने लैटर खोलकर पढ़ा और उसे एक तरफ पेपरवेट के नीचे रखकर, देवराज चौहान को देखकर कहा, "इंस्पेक्टर सूरजभान यादव, मुझे ऐसा क्यों लगता है कि तुम्हें कहीं देखा है ?"

देवराज चौहान संभला।

"जरूर ऐसा लग रहा होगा सर !" देवराज चौहान मुस्कुराकर कह उठा, "मेरी तस्वीरें कई बार अखबारों में छपी हैं।"

"ये दिल्ली में एनकाउंटर स्पेशलिस्ट हैं सर !" शर्मा फौरन कह उठा।

"ओह, तो तुम वह सूरजभान यादव हो !" जेलर सुधीर लाल ने सिर हिलाया, "मैंने तुम्हारे बारे में अखबारों में पढ़ा है। तुमसे मिलकर सच में

बहुत खुशी हुई। छः महीने पहले तुमने एनकाउंटर में सुखदेव सिंह को मारा था। परन्तु अखबार वालों ने लिखा कि तुमने आराम से, तसल्ली से उसकी हत्या की। काफी हो-हल्ला मचा था इस बारे में।"

"अखबार वालों को तो मौका चाहिए, साधारण खबर को मसालेदार बनाने के लिए।" देवराज चौहान मुस्कुराया।

जेलर सुधीर लाल हौले से हँसा फिर बोला- "जब्बार मलिक का तुम क्या करोगे ?"

"उस पर निगरानी रखने के लिए मुझे भेजा गया है। क्योंकि बड़ा खान ने उसे जेल से निकाल ले जाने की धमकी दी है।"

"जब्बार मलिक को जेल से फरार नहीं करवाया जा सकता।"

सुधीर लाल ने इंकार में सिर हिलाया- "तुम अभी देखोगे कि वह कितने सख्त पहरे में है। उस तक तो जेल के कर्मचारी भी नहीं पहुँच सकते। बिना जरूरी काम के उस तरफ जाने की मनाही है। तीन परतों में जेल में गनमैन जब्बार मलिक पर पहरा देते हैं।"

"मैं जानता हूँ कि जब्बार मलिक को यहाँ से आजाद नहीं करवाया जा सकता।" देवराज चौहान ने कहा, "लेकिन जिस ड्यूटी के लिए मुझे भेजा गया है, उसे तो पूरा करना ही है।"

"क्यों नहीं ! वैसे तुम किस तरह जब्बार मलिक पर नजर रखना चाहोगे ?"

"अभी मैंने सोचा नहीं। जब्बार मलिक से मिलने के बाद ही कोई फैसला ले सकूँगा।"

जेलर सुधीर लाल ने टेबल के नीचे लगे बेल का बटन दबाया।

बाहर बेल बजने की आवाज आई।

फिर एक सिपाही ने भीतर प्रवेश किया।

"जी साब ?"

"कबीर को भेजो।"

सिपाही वापस चला गया।

"कुछ खबर है कि जब्बार ने बड़ा खान के बारे में बताया हो ?"

"नहीं !" सुधीर लाल ने कहा, "वैसे ये बात पुलिस बेहतर जानती है।"

"उसने कभी जेल के कर्मचारी से कोई बात की हो ?" देवराज चौहान ने पूछा।

"जब्बार मलिक इस बारे में बहुत सतर्क रहता है। वह जेल वालों से फालतू बात नहीं करता। मेरे इशारे पर एक पुलिस वाले ने उससे दोस्ती करने की कोशिश की कि शायद वह अपने मुँह से कुछ निकाले। परन्तु कोई फायदा नहीं हुआ।"

देवराज चौहान चुप रहा।

"अगर तुम सोचते हो कि वह कुछ बताएगा तो तुम गलत सोचते हो।"

"मैं अपनी कोशिश तो करूँगा ही।"

"जरूर करो। मैं तुम्हारे साथ हूँ। मुझे ऑर्डर मिल चुके हैं कि तुम्हारा पूरा साथ दिया जाये।" सुधीर लाल ने कहा।

"धन्यवाद !"

तभी पचास बरस के एक आदमी ने भीतर प्रवेश किया।

"सर !" उसने सिर हिलाकर जेलर को देखा।

"कबीर, इनसे मिलो ! ये दिल्ली से आये इंस्पेक्टर सूरजभान यादव हैं। जब्बार मलिक के लिए आये हैं।"

"जी सर !"

"इन्हें जब्बार तक ले जाओ और तुम्हें इनकी बात माननी है !" सुधीर लाल ने कहा फिर देवराज चौहान से बोला- "जब्बार मलिक की देख-रेख का काम कबीर अली के हवाले है।"

देवराज चौहान ने कबीर को देखा फिर खड़ा हो गया।

शर्मा भी उठा।

जेलर से विदा लेकर देवराज चौहान और शर्मा कबीर के साथ उस कमरे से निकले और आगे बढ़ गए।

"जब्बार मलिक की निगरानी तुम्हारे हवाले है ?" देवराज चौहान ने कबीर से पूछा।

"निगरानी नहीं, देखरेख !" कबीर बोला, "उसके पास जेल के हर कर्मचारी का जाना मना है। सिर्फ एक की ही ड्यूटी लगती है, जो कि जब्बार मलिक की देखरेख करता है। दो महीनों से मेरी ड्यूटी लगी हुई है।"

"तुम मुसलमान हो।"

"तो ?"

"जब्बार मलिक भी मुसलमान है। इस नाते तुम्हारे दिल में उसके लिए नरमी होगी।" देवराज चौहान ने कहा।

कबीर मुस्कुराया।

"नाम क्या है तुम्हारा, पूरा नाम ?"

"कबीर अली !" बातों के दौरान वे आगे बढ़ते जा रहे थे। जेल के कई ऐसे गेटों को उन्होंने पार किया, जहाँ हर कोई नहीं आ सकता था, "इंसान से सबसे पहले उसका धर्म नहीं पूछा जाता सर। ये पूछा जाता है कि वह किस देश का है। मैं हिन्दुस्तानी हूँ। उसके बाद मुसलमान। मैं कानून का कर्मचारी हूँ और अपने फर्ज को कैसे पूरा करना है, जानता हूँ। जब्बार मलिक आतंकवादी है। उसका और मेरा कानून और अपराध का रिश्ता है।"

"धर्म के नाते जब्बार मलिक ने तुम्हें दाना डालने की कोशिश की ?"

"की।"

"क्या बोला ?"

"वह यहाँ से निकलना चाहता है।"

"इस बारे में तुम्हारी सहायता मांगी उसने ?"

"हाँ ! उसने कहा बदले में वह मुझे मालामाल कर देगा।" कबीर अली सहज स्वर में बोला, "ये बात मैंने जेलर साहब को बता दी थी। मैं धोखेबाज मुसलमान नहीं हूँ। अपने देश और जनता के प्रति वफादार हूँ।"

"कैसा इंसान है जब्बार मलिक ?"

"जिद्दी, सख्त, कुछ भी कर देने वाला।"

"तुमसे उसने बातें की ?"

"कई बार।"

"क्या बातें ?"

"इधर-उधर की बातें। वह अपने बारे में या बड़ा खान के बारे में कोई बात नहीं करता।"

"कोशिश की तुमने बड़ा खान के बारे में बात करने की ?"

"कई बार। लेकिन वह चुप हो जाता है। कुछ भी नहीं कहता। या फिर मुस्कुरा देता है।"

बातों के दौरान देवराज चौहान रास्तों को भी देखता जा रहा था। वह सुरक्षा भरे ऐसे रास्ते थे कि जिन्हें पार कर पाना आसान नहीं था।

"जब्बार मलिक कब से जेल में है ?"

"छः महीनों से।"

"इस दौरान उससे कोई मिलने आया ?"

"नहीं ! और आएगा भी नहीं। क्योंकि जो उससे मिलने आएगा पुलिस उसे वहीं पकड़ लेगी।"

"जब्बार मलिक कहाँ का है ?"

"पास ही कठुआ नाम की जगह है, वहाँ का है।"

वे जेल के भीतरी हिस्सों में से गुजर रहे थे।

"यहाँ तक कोई बाहरी व्यक्ति नहीं आ सकता।" देवराज चौहान ने कहा।

"किसी भी हाल में नहीं।"

"फिर बड़ा खान कैसे कहता है कि वह जल्दी ही जब्बार मलिक को जेल से निकाल ले जायेगा ?"

"वह ही जाने।"

अब वहाँ हर पंद्रह कदमों पर एक पहरेदार नजर आ रहा था। ये चार फुट चौड़ी गैलरी थी। जिसके आस-पास दीवारें और ऊपर छत थी। अब वे लाइन बनाकर चलने लगे थे। आगे कबीर, फिर देवराज चौहान, पीछे सब-इंस्पेक्टर शर्मा।

जब भी उस रास्ते पर पहरेदार आता तो वहाँ से सरककर निकलना पड़ता था। पहरेदार देवराज चौहान और शर्मा को पहचान भरी नजरों से देख रहे थे।

जल्दी ही वह रास्ता बरामदे जैसी जगह में जा पहुँचा। पंद्रह बाई पंद्रह की वह जगह बरामदे जैसी ही थी। ऊपर छत थी। हर तरफ दीवारें थीं और सामने एक कोठरी नजर आ रही थी। जिस पर मोटी-मोटी सलाखों का मजबूत दरवाजा लगा था। वहाँ छः गनमैन अलग-अलग जगहों पर पहरा दे रहे थे। लाइट जल रही थी।

"उसी कोठरी में है जब्बार मलिक।" कबीर अली ने कहा।

"यहाँ तक पहुँचने के कितने रास्ते हैं?" देवराज चौहान ने पूछा।

"जिस रास्ते से हम आये हैं, ये ही रास्ता है। दूसरा कोई रास्ता नहीं।"

तीनों ठिठक गए।

तभी एक पहरेदार बोला।

"ये दोनों कौन हैं कबीर?"

"बड़े साहब हैं। दिल्ली से आये हैं, जब्बार पर नजर रखने को भेजा गया है।" कबीर ने कहा।

"ये यहाँ भी रह सकते हैं या कहीं भी, इन्हें हर वक्त यहाँ आने-जाने की इजाजत है।" कबीर बोला।

"ठीक है! हम समझ गए!" गनमैन ने कहा।

"जब तुम्हारी ड्यूटी बदले तो नए पहरेदारों को भी ये बात बता देना।"

"बता दूँगा।"

कबीर ने देवराज चौहान से कहा।

"जब्बार मलिक से मिलना चाहोगे?"

"क्यों नहीं! मिलूँगा, बातें भी करूँगा।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा।

कबीर आगे बढ़ा और सलाखों वाले दरवाजे पर जा पहुँचा।

"जब्बार!" कबीर ने पुकारा।

वह छोटी सी कोठरी थी। एक तरफ लेटे जब्बार की टाँगे दिख रही थीं।

"क्या है?" भीतर से मर्दाना आवाज आई, "तू फिर आ गया!"

"किसी को तेरे से मिलाने लाया हूँ।"

जब्बार मलिक फौरन उठा और सलाखों वाले दरवाजे पर आ पहुँचा।

वह करीब छः फुट लम्बा, सामान्य काठी का व्यक्ति था। उसने जेल के कपड़े पहन रखे थे और कुर्ते पर 115 लिखा था। दोनों हाथों से उसने सलाखों को थाम लिया था। नजरें सामने खड़े देवराज चौहान पर जा टिकीं थीं। उसकी आँखों में किसी तरह का भाव नहीं था।

देवराज चौहान और शर्मा भी उसे ही देख रहे थे।

"ये किन पुलिस वालों को पकड़ लाया तू ?" जब्बार मलिक कह उठा।

"ये साहब दिल्ली से आये हैं तेरे लिए। इंस्पेक्टर सूरजभान यादव।" कबीर बोला।

"क्यों ?"

तभी देवराज चौहान ने इशारों से कबीर अली को पास बुलाया।

"अपना परिचय मैं इसे अच्छी तरह दे दूँगा। लॉकअप की चाबी किसके पास है ?"

"वह तो जेलर साहब के पास ही... ।"

"चाबी लेकर आओ !" देवराज चौहान ने कहा।

"जेलर साहब जब्बार मलिक के लॉकअप की चाबी किसी को नहीं देंगे।"

"उनसे कहो, मैंने मंगवाई है।"

"ठीक है सर !" कबीर ने कहा और पलटकर तेज-तेज कदमों से वह वहाँ से चला गया।

देवराज चौहान सिगरेट सुलगाकर एक गनमैन के पास पहुँचा।

"कुर्सियाँ नहीं हैं यहाँ बैठने को ?"

"उस कमरे में पड़ी हैं।" गनमैन ने पास ही के एक दरवाजे की तरफ इशारा किया। जिस पर बाहर से कुंडी लगी थी।

"ये क्या जगह है ?"

"गनमैनों के लिए स्टोर है। अपनी जरूरत का थोड़ा सा सामान हम यहाँ रख देते हैं।" गनमैन बोला।

देवराज चौहान ने सिर हिलाया और कश लेता वहाँ से हट गया।

जब्बार मलिक अभी तक सलाखों को दोनों हाथों से थामे, देवराज चौहान को देख रहा था।

"आप !" शर्मा पास आकर धीमे स्वर में बोला, "क्या करना चाहते हैं सर ?"

"इससे बात करूँगा।" कहते हुए देवराज चौहान की निगाह, जब्बार मलिक की कोठरी की तरफ गई।

"त...तो चाबी की क्या जरुरत है ?"

"बात करने का मेरा अपना ढंग है।"

शर्मा ने फिर कुछ नहीं कहा।

दस मिनट में कबीर अली चाबी के साथ लौटा।

"जेलर साहब ने कहा कि आप ये चाबी किसी और को न दें।" कहते हुए कबीर ने उसे मोटी सी चाबी थमाई, "आप क्या जब्बार की कोठरी का दरवाजा खोलने का इरादा रखते हैं ?"

"हाँ !"

"ऐसा मत कीजियेगा सर। ये दरवाजा नहीं खोला जाता। खाना-पीना, सलाखों से ही दिया जाता है। सलाखों से ही बर्तन ले लिए जाते हैं। जरूरत पड़ने पर दरवाजा जबरदस्त पहरेदारी में खोला जाता है।"

देवराज चौहान ने कबीर अली को देखा फिर मुस्कुराकर बोला।

"फिक्र मत करो। मैं अकेले में जब्बार मलिक से बात करूँगा। तुम सब-इंस्पेक्टर शर्मा के साथ जाओ यहाँ से।" शर्मा !" उसने शर्मा को आवाज लगाया।

"जी सर !"

"जेलर के ऑफिस में मेरा इंतजाम करो !"

"यस सर। !"

कबीर और शर्मा चले गए।

चाबी थामे देवराज चौहान जब्बार मलिक की कोठरी तक पहुँचा और दरवाजे के की-होल में चाबी डालकर चाबी घुमाने लगा।

जब्बार अभी तक सलाखें थामे खड़ा था। उसकी आँखें सिकुड़ गई थीं।

"सर, आप ये क्या कर रहे हैं ?" पीछे से एक गनमैन की आवाज आई।

देवराज चौहान ने पलटकर गनमैनों को देखा फिर बोला।

"अपनी ड्यूटी कर रहा हूँ।"

"इस तरह दरवाजा मत खोलिये। ये खतरनाक है।" दूसरे गनमैन ने कहा।

"इसने खतरनाक जैसा कोई काम किया तो तब तुम इसे संभालना। ये ही तुम लोगों की ड्यूटी है।"

"दरवाजा खोलना आपके लिए खतरनाक हो सकता है।"

देवराज पलटकर पुनः चाबी घुमाने लगा।

उसने चार बार चाबी घुमाई और लॉक खुल गया। जब्बार मलिक अभी तक दोनों हाथों से सलाखें थामे खड़ा था।

"दरवाजा खुल चुका है।" देवराज चौहान ने कहा, "पीछे हटो !"

"तुम्हें मुझसे डर नहीं लगता ?" जब्बार मलिक कठोर स्वर में बोला।

"नहीं ! क्योंकि मैं तुमसे भी ज्यादा खतरनाक हूँ।" देवराज चौहान मुस्कुराया।

"खतरनाक हो ! मुझसे ज्यादा ?"

"हाँ !" आजमा लेना। मैं तुम्हें कई मौके दूँगा आजमाने के !" देवराज चौहान का स्वर सरल था।

"पागल लगते हो तुम मुझे। छः महीनों में दो बार ये दरवाजा खोला गया है और दोनों बार यहाँ ढेर सारे गनमैन थे। तब मुझे खुशी हुई कि मुझसे सब लोग कितना डर रहे हैं। लेकिन तुम अकेले रहकर ही दरवाजा खोल रहे....।"

"क्योंकि तुम्हारी भाषा में मैं पागल हूँ।" देवराज चौहान मुस्कुरा पड़ा।

जब्बार मलिक देवराज चौहान को घूरता रहा।

"पीछे हटो। दरवाजा खोलो !"

जब्बार मलिक सलाखें छोड़कर पीछे हट गया।

देवराज चौहान ने धकेला तो वह भारी दरवाजा थोड़ा सा भीतर को खुला। एक ही बार में धकेलकर देवराज चौहान ने दरवाजा खोला और

भीतर प्रवेश कर गया। जब्बार मलिक की कठोर निगाह उस पर थी। होंठ भींच चुके थे।

देवराज चौहान ने कोठरी में नजर मारी।

ये आठ फुट चौड़ी और आठ फुट लम्बी कोठरी थी। एक तरफ सीमेंट का चबूतरा बना हुआ था जो कि जब्बार मलिक का बेड था। तकिया-चादर जैसी कोई चीज नहीं थी वहाँ। ओढ़ने के लिए कम्बल अवश्य रखा हुआ था।

एक तरफ बिना दरवाजे का टॉयलेट-बाथरूम था जो कि तीन फुट चौड़ा, तीन फुट लम्बा था।

बस, यही कुछ था वहाँ।

"तुमने कभी सोचा था कि ऐसी जगह रहोगे ?" देवराज चौहान बोला।

इस वक्त देवराज चौहान की पीठ उसकी तरफ थी।

देवराज चौहान इन शब्दों के साथ पलटने ही जा रहा था कि जब्बार मलिक बाज की तरह उस पर झपट पड़ा। वेग के साथ देवराज चौहान से टकराया और देवराज चौहान की कमर पर सख्ती से बाँह लपेट ली और होलेस्टर पर हाथ मारकर फुर्ती से रिवॉल्वर निकालकर देवराज चौहान की कनपटी पर लगा दी।

"अब तू तो गया इंस्पेक्टर !" जब्बार मलिक गुर्रा उठा।

उसकी बाँह के लपेटे में फँसा देवराज चौहान शांत स्वर में बोला।

"ऐसा करने का मौका मैंने तुम्हें दिया है। मैंने जान बूझकर तेरी तरफ पीठ की।"

"बकवास मत कर !"

"मैंने तेरे को पहले ही कहा था कि तुम्हें कई मौके दूँगा।"

"जुबान बन्द रख !" जब्बार मलिक गुर्रा उठा, "अब मैं तुझे कवर करके यहाँ से निकल जाऊँगा।"

"नहीं कर पायेगा ऐसा तू !"

"अभी तू मुझे जानता ही कहाँ है इंस्पेक्टर।" जब्बार मलिक ने दाँत पीसे, "चल, बाहर चल !"

जब्बार मलिक एक बाँह उसकी कमर पर लपेटे, कनपटी पर रिवॉल्वर रखे उसे कोठरी से बाहर लाया। ये नजारा देखकर सब गनमैन चौंके। उनकी गनें इनकी तरफ तन गईं। जब्बार मलिक की खतरनाक निगाह गनमैनों पर फिर रही थी।

"रिवॉल्वर फेंक दे जब्बार।" एक गनमैन ने कठोर स्वर में कहा, "तू यहाँ से निकल नहीं सकता!"

"कोई आगे बढ़ा तो मैं इस पुलिस वाले की खोपड़ी उड़ा दूँगा।" जब्बार गुर्राया।

"तू भी नहीं बचेगा!"

"मुझे अपनी परवाह नहीं है। इस कैद से मैं तंग आ चुका हूँ। तुम लोग गनें फेंक दो।"

वहाँ सन्नाटा सा छा गया। सभी गनमैनों की निगाह जब्बार मलिक और देवराज चौहान पर थी।

इस स्थिति में भी देवराज चौहान शांत खड़ा था।

"गनें फेंको, वरना मैं इसे शूट कर दूँगा।" जब्बार मलिक गुर्राया।

गनमैनों के लिए ये दुविधा का वक्त था।

"फेंको!" उसी लहजे में जब्बार मलिक ने कहा।

"मत फेंकना!" देवराज चौहान ने ऊँचे स्वर में कहा।

"चुप कर हरामजादे, क्यों बेमौत मरना चाहता है।" जब्बार मलिक ने दाँत किटकिटाये।

तभी देवराज चौहान ने बिजली की सी तेजी के साथ हरकत की।

दायीं कोहनी पूरी ताकत के साथ पीछे की तरफ, जब्बार मलिक के पेट में मारी।

जब्बार मलिक कराह उठा। कनपटी पर रखा रिवॉल्वर वाला हाथ नीचे की तरफ हुआ तो देवराज चौहान ने उसकी कलाई पकड़ी और आगे को झटका दिया। कमर पर लिपटी जब्बार की बाँह खुल गई। वह लड़खड़ा कर आगे को हुआ और तुरन्त ही पलटा। रिवॉल्वर वाला हाथ पुनः देवराज चौहान की तरफ उठ चुका था।

अब जब्बार खुले में था। कोई भी गनमैन उसे शूट कर सकता था।

"कोई भी जब्बार पर गोली नहीं चलाएगा।" देवराज चौहान ने उसी पल ऊँचे स्वर में कहा।

जो गनमैन जब्बार मलिक की टांगो का निशाना लेने जा रहा था वह इन शब्दों पर रुक गया।

जब्बार मलिक देवराज चौहान पर रिवॉल्वर ताने खूनी निगाहों से उसे घूर रहा था।

देवराज चौहान उसे देखकर शांत भाव में मुस्कुराकर बोला- "मैंने तुमसे कहा था कि मैं तुमसे ज्यादा खतरनाक हूँ। परन्तु तुमने मेरी बात का यकीन नहीं किया।"

"तू इस वक्त मेरे निशाने पर है।" जब्बार मलिक दहाड़ा।

"बढ़िया खिलाड़ी वह होता है जो रिवॉल्वर हाथ में आते ही वजन से महसूस करके बता देता है कि इसमें कितनी गोलियाँ बाकी हैं।"

जब्बार मलिक के दाँत भिंच गए। उसने हाथ में दबी रिवॉल्वर को देखा।

एकाएक उसे महसूस हुआ कि रिवॉल्वर का वजन कम है।

जब्बार ने फौरन रिवॉल्वर के उस हिस्से को देखा जहाँ गोलियों की मैग्जीन डाली जाती थी। वह जगह खाली थी।

स्पष्ट था कि उसके हाथ में थमी रिवॉल्वर खाली है।

जब्बार मलिक ने गुस्से में काँपते, हाथ में दबी रिवॉल्वर को देवराज चौहान पर मारा।

देवराज चौहान खुद को बचा गया।

"अब तो तुम्हें यकीन हो गया होगा कि ये सब करने का मौका, मैंने तुम्हें दिया है।"

तभी जब्बार मलिक ने पागलों की तरह उस पर छलांग लगा दी।

देवराज चौहान ने फुर्ती से खुद को बचाया और जोरदार घूंसा जब्बार मलिक के पेट में मारा।

पेट पकड़कर जब्बार चीखा और दोहरा होता चला गया।

देवराज चौहान ने गनमैनों को देखकर कहा ।

"सब ठीक है । रिवॉल्वर खाली थी । मैं इसे चैक कर रहा था कि ये क्या कर सकता है ।"

गनमैन सतर्कता से वापस अपनी जगहों पर पहुँच गए ।

जब्बार मलिक ने सीधा होकर देवराज चौहान को मौत भरी निगाहों से देखा ।

"गुस्सा आ रहा है जब्बार ?" देवराज चौहान मुस्कुराया, "आना भी चाहिए । तुम्हारी जगह मैं होता तो मुझे भी गुस्सा आता । लेकिन मैं तुम्हारी तरह सामने वाले को बेवकूफ नहीं समझता । ये जरूर सोचता कि सामने वाला अगर रिवॉल्वर पर हाथ डालने का मौका दे रहा है तो वह खाली भी हो सकती है ।"

"क्या चाहते हो ?" जब्बार मलिक खतरनाक स्वर में कह उठा ।

"तुमसे बात करने आया हूँ ।"

"बड़ा खान के बारे में पूछेगा तू, यही न ?"

"नहीं ! ऐसा कुछ भी नहीं है । मैं बड़ा खान के बारे में कुछ नहीं पूछूँगा ।" कहकर देवराज चौहान ने नजरें घुमाई और कुछ दूर पड़ी रिवॉल्वर उठा लाया । जेब से गोलियों की मैग्जीन निकालकर उसमें फिक्स की और रिवॉल्वर वापस होलेस्टर में डालता, जब्बार से मुस्कुराकर बोला, "अब ये भरी हुई है ।"

"हरामजादा । !" जब्बार मलिक शब्दों को चबाकर कह उठा ।

देवराज चौहान मुस्कुराया ।

तभी दूर खड़े एक गनमैन ने कहा ।

"सर, इसे वापस कोठरी में बन्द कर दीजिये ।"

"अब ये मेरी जिम्मेदारी है । मैं संभाल लूँगा इसे ।" देवराज चौहान ने कहा फिर जब्बार मलिक से बोला, "मेरा शुक्रिया कहो कि मैंने तुम्हें बन्द कोठरी से बाहर निकाला । खुले में घूमने का मौका दिया । वह देखो !" देवराज चौहान ने लकड़ी के दरवाजे की तरफ इशारा किया, "वह स्टोर है, उसमें से दो कुर्सियाँ ले आओ । हम आराम से बातें करेंगे ।"

जब्बार मलिक मौत-सी निगाहों से देवराज चौहान को देखता रहा।

"या तुम कोठरी के भीतर रहना पसन्द करोगे। तब मैं सलाखों के दरवाजे के बाहर कुर्सी रख के बैठ जाऊँगा। तुमसे बात करने के लिए। मेरे ख्याल में तो तुम्हें कुछ वक्त खुले में बिताना चाहिए।"

जब्बार मलिक बिना कुछ कहे स्टोर की तरफ बढ़ गया।

वहाँ फैले गनमैन सतर्क हो गए।

देवराज चौहान जब्बार मलिक को देखता रहा।

जब्बार मलिक ने दरवाजा खोला और भीतर चला गया। मिनट भर बाद बाहर आया तो उसने दो कुर्सियाँ उठा रखी थीं। वह कुर्सियाँ थामे देवराज चौहान के पास आया। दोनों कुर्सियों को आमने-सामने रखा।

देवराज चौहान बैठ गया जबकि जब्बार मलिक उसे घूर रहा था।

"बैठ जाओ! खुद को तनावमुक्त कर लो। मेरा इरादा तुम्हें परेशान करने का नहीं है।" देवराज चौहान ने कहा।

जब्बार मलिक कुर्सी पर बैठ गया।

"तुम सोच रहे होगे कि अगर रिवॉल्वर भरी होती तो यहाँ से निकल जाते, मुझे कवर करके।"

जब्बार मलिक के दाँत भिंच गए।

देवराज चौहान ने होलेस्टर से रिवॉल्वर निकाली और उसकी तरफ बढ़ाई।

"लो, अब ये भरी हुई है!"

जब्बार की आँखें सिकुड़ी।

"तुम गोली चलाकर चेक कर लो।" देवराज चौहान थोड़ा रुका और फिर पुनः बोला, "और यहाँ से निकलने की कोशिश करो।"

जब्बार मलिक ने तुरन्त रिवॉल्वर थाम ली।

रिवॉल्वर हाथ में आते ही जब्बार ने महसूस किया कि पहले की अपेक्षा रिवॉल्वर अब भारी है।

"अब तुम मुझे कवर करके यहाँ से निकलने की कोशिश कर सकते हो। परन्तु तुम किसी भी सूरत में सफल नहीं हो सकते। ये मेरा दावा है, क्योंकि

यहाँ के इंतजाम ही ऐसे हैं। ज्यादा देर तक मुझे कवर करने में तुम सफल नहीं रह सकते।"

"मैं तुम्हें शूट तो कर सकता हूँ।" जब्बार मलिक गुर्राया।

"तुम मुझे शूट नहीं करोगे।" देवराज चौहान मुस्कुराया।

"क्यों?"

"क्योंकि मेरे मरने से तुम्हें कोई फायदा नहीं होने वाला, बल्कि तुम पर सख्तियाँ और बढ़ जाएँगी।"

जब्बार मलिक कुछ पल देवराज चौहान को देखता रहा फिर रिवॉल्वर उसकी तरफ बढ़ाई।

देवराज चौहान ने रिवॉल्वर लेकर होलेस्टर में रखी और बोला।

"एहसास हो गया होगा इस बात का कि मैं तुमसे खतरनाक हूँ।"

"तुम मुझसे ज्यादा खतरनाक नहीं हो सकते।" जब्बार मलिक ने कठोर स्वर में कहा।

"ठीक है! तुम ज्यादा खतरनाक सही। मुझे दिल्ली से तुम्हारे लिए भेजा गया है।" देवराज चौहान ने कहा।

"मुझे चाय मिल सकती है?" जब्बार मलिक ने कहा।

देवराज चौहान ने गनमैन से चाय लाने को कहा।

परन्तु गनमैन ने ये कहकर मना कर दिया कि वह अपनी ड्यूटी छोड़कर नहीं जा सकता।

देवराज चौहान ने सब-इंस्पेक्टर शर्मा को फोन करके कहा कि कबीर के हाथ दो चाय भिजवा दें।

फिर देवराज चौहान ने पैकिट निकालकर उसकी तरफ बढ़ाया।

"नहीं। मैं सिगरेट नहीं पीता। इससे फेफड़े खराब हो जाते हैं।" जब्बार मलिक ने कहा।

"फेफड़ों के खराब होने की चिंता है, लेकिन जेल में जो जिंदगी का कीमती वक्त खराब हो रहा है, उसकी चिंता नहीं है।"

"चिंता है!" जब्बार मलिक गुर्राय, "मैं जल्दी ही जेल से निकल जाऊँगा।"

"तुम कभी सफल नहीं हो सकते। तुम जेल से फरार नहीं हो सकते।"

जब्बार मलिक ने देवराज चौहान को घूरा फिर बोला।

"क्या नाम है तुम्हारा ?"

"इंस्पेक्टर सूरजभान यादव।" देवराज चौहान ने सिगरेट सुलगा ली।

"तुम मेरे लिए दिल्ली से आये हो ?"

"हाँ !"

"क्यों ?"

"बड़ा खान ने धमकी दी है कि तुम्हें जेल से जल्दी निकाल लेगा।"

जब्बार मलिक की आँखें चमक उठी।

"हाँ, बड़ा खान सच में मुझे यहाँ से निकाल लेगा !"

"मुझे दिल्ली से इसलिए भेजा गया है कि इस बात का ध्यान रखूँ कि तुम जेल से फरार न हो सको। बड़ा खान अगर कोई कोशिश करता है तो सफल न हो सके।" देवराज चौहान ने कहा, "जबकि मैं इस तरह के काम हाथ में नहीं लेता। डिपार्टमेंट मुझे इस तरह के काम देता भी नहीं है। दिल्ली में मुझे एनकाउंटर स्पेशलिस्ट के तौर पर जाना जाता है। मैंने आज तक एनकाउंटर में बत्तीस ऐसे अपराधियों को मारा है, जो कि बेहद खतरनाक माने जाते थे। जबकि सच बात तो ये है कि 32 में से 20 को तसल्ली से शूट किया और कह दिया कि एनकाउंटर हुआ था।"

जब्बार मलिक देवराज चौहान को घूर रहा था।

देवराज चौहान ने कश लिया और पुनः बोला।

"तुम्हारे लिए मुझे जम्मू भेजने के ऑर्डर आये तो मैंने ये काम हाथ में लेने से मना कर दिया। परन्तु ये कहकर मुझे तैयार किया गया कि हो सकता है जब्बार मलिक का एनकाउंटर करने का मौका मिल जाये।"

"तो मुझे मारने आये हो।" जब्बार मलिक गुर्रा उठा।

"तुम्हें क्या लगता है जब्बार।"

जब्बार मलिक देवराज चौहान को घूरता रहा।

"मैं यहाँ सिर्फ तुम्हारी देख-रेख के लिए आया हूँ। तुम्हें मारने नहीं। मैंने अपना परिचय तुम्हें ये समझाने के लिए दिया है कि मुझसे पंगा लेने की कोशिश मत करना। जैसा कि तुम कर चुके हो अभी।"

जब्बार मलिक देवराज चौहान को देखता रहा फिर कह उठा।

"तुम जैसा पुलिस वाला मैंने पहले कभी नहीं देखा।"

"दोबारा देखोगे भी नहीं।" देवराज चौहान ने सिगरेट एक तरफ फेंकी और जेब से तह किया कागज निकालकर खोला, "मैं तुम्हें तुम्हारे जुर्म बताने जा रहा हूँ जो कि पुलिस रिकॉर्ड में दर्ज हैं।"

"जो बात मैं जानता हूँ, वह बताने का क्या फायदा ?" जब्बार मलिक ने कहा।

"मैं तुम्हें तुम्हारा पुराना वक्त याद कराना चाहता हूँ।" कागज पर निगाह मारते देवराज चौहान ने कहा, "पच्चीस साल की उम्र में तुम कठुआ के प्राइमरी स्कूल में टीचर थे। तुम्हारी पत्नी है, दो बच्चे हैं। स्कूल की नौकरी करते-करते तुम अचानक ही गायब हो गए और तीन साल बाद जब दिखे तो कानून ने तुम्हें एक आतंकवादी संगठन से जुड़े पाया।"

"जश्न-ए-आजादी।" जब्बार मलिक कड़वे स्वर में बोला।

"हाँ, उस संगठन का नाम ये ही था ! पुलिस रिकॉर्ड में दर्ज है कि तुमने श्री नगर में चार जगह बम विस्फोट किये, जिसमें 11 सैनिक और 16 मासूम नागरिक मारे गए।"

"मेरी आशा से कहीं कम लोग मरे।" जब्बार मलिक हँस पड़ा।

"ऐसा तुमने क्यों किया ?"

"कश्मीर के मुसलमान भाइयों को आजाद करवाने के लिए।"

"आजाद ? किससे आजाद करवाना चाहते हो ?"

"हिन्दुस्तान से।"

"कश्मीर तो पहले ही आजाद है और हिन्दुस्तान का हिस्सा है।"

"ये ही तो लड़ाई है हमारी कि कश्मीर हिन्दुस्तान का हिस्सा नहीं है। उसकी आजादी चाहिए हमें।"

"ये तुम कहते हो, खामख्वाह के पैदा हो चुके संगठन कहते हैं।"

"हम सब आजादी के दीवाने हैं।"

"तीन साल के लिए तुम कहाँ गायब हो गए थे ?" देवराज चौहान ने पूछा।

"पाकिस्तान गया था। वहाँ ट्रेनिंग ली। ट्रेनिंग के दौरान मेरी आँखें खुली कि कश्मीर के मुसलमानों पर कितना जुल्म कर रही है हिन्दुस्तान सरकार। मैंने कसम ली कि कश्मीर को आजाद करा के रहूँगा।"

"ये शिक्षा तुम्हें पाकिस्तान से मिली ?"

"हाँ ! वहाँ मेरे मुसलमान भाई रहते हैं। हमारे हमदर्द हैं। वह हमें पैसा, हथियार और सहायता देते हैं कश्मीर को आजाद.... ।"

"परन्तु कश्मीर के मुसलमान तो खुश हैं। वह अपने को आजाद कहते हैं।"

"बकवास ! पूरे कश्मीर को मिलिट्री ने घेर रखा है, वह लोग... ।"

"अगर कश्मीर में मिलिट्री न होती तो पाकिस्तान से आने वाले लोगों ने कश्मीर को खा लिया होता। कश्मीर के तुम्हारे मुसलमान भाई पूरी तरह बर्बाद हो चुके.... ।"

"चुप रहो !" जब्बार मलिक गुर्रा उठा, "मिलिट्री की वजह से कश्मीर बर्बाद हुआ है।"

"तुम भूल रहे हो कि कश्मीर में पहले कितना अमन-चैन था। तगड़ा पर्यटक स्थल था। लोग वहाँ घूमने जाते तो वहाँ के स्थानीय लोगों को गर्मियों में इतना पैसा मिल जाता कि अगली गर्मियों तक आराम से पेट भर खाते। परन्तु पाकिस्तान की तरफ से जब कश्मीर में आतंकवाद उभरा तो वहाँ के लोग भूखे मरने लगे और.... ।"

"तुम ये सब बातें कहकर मुझे ये समझाना चाहते हो कि मैं गलत रास्ते पर हूँ ?" जब्बार मलिक का चेहरा लाल हो उठा।

"हाँ, तुमने गलत राह पकड़ी !"

"मुझे समझाने की कोशिश मत करो। मैं कश्मीर को आजादी दिलाने वाला सिपाही... ।"

"छोड़ो इन बातों को ।" देवराज चौहान ने पुनः कागज पर नजरें टिका दीं, "उसके बाद तुमने जम्मू में बम ब्लास्ट किये ।"

"उन्नीस धमाके किये जम्मू में ।" जब्बार मलिक ने दाँत भींचकर कहा, "207 लोगों को मारा । हिन्दुस्तानियों को मारा ।"

"और तुम्हें गर्व है इस बात का ।" देवराज चौहान ने उसे घूरा ।

"क्यों न होगा !"

"तुम भी तो हिन्दुस्तानी हो ।"

"मैं हिन्दुस्तानी नहीं, कश्मीरी हूँ ।"

"कश्मीर के लोग हिन्दुस्तानी ही तो हैं । कश्मीर हिन्दुस्तान का ही तो है !"

"कश्मीर आजाद देश है, हिन्दुस्तान ने तो जबरन उस पर कब्जा कर रखा है ।"

"ये बातें तुम्हें पाकिस्तान वालों ने बताईं ?"

"हाँ, तभी तो मेरी आँखें खुलीं !"

मुस्कुराया देवराज चौहान ।

"पाकिस्तान को बहुत चिंता है कश्मीर की ।"

"क्योंकि वहाँ मुसलमान भाई रहते हैं ।"

"मुसलमान भाई पूरे हिन्दुस्तान में रहते हैं । जितने पाकिस्तान में है, उससे ज्यादा हिन्दुस्तान में है और वे सब खुश हैं । वे जानते हैं कि पाकिस्तान ही कश्मीर में शह देकर, आतंकवादी संगठन खड़े करता है । हिन्दुस्तान में तो मुसलमान फल-फूल रहे हैं । हिन्दुस्तान के ही तो हैं वह । तुम जैसे लोग ही हिन्दुस्तान में मजहब की दीवार खड़ी करने की कोशिश.... ।"

"मैं सिर्फ कश्मीर को आजाद देखना चाहता हूँ और मरते दम तक आजादी के लिए लड़ूँगा ।"

"आजाद को तुम लोग क्या आजाद कराओगे । तुमसे बात करने का कोई फायदा नहीं ।" देवराज चौहान ने कागज पर नजर मारते हुए कहा, "फिर तुमने संगठन बदल लिया और दूसरे संगठन से छः साल तक जुड़े रहे ।

एक बार तो तुमने जम्मू से कश्मीर जा रहे मिलिट्री के जवानों से भरे ट्रक को उड़ा दिया। तब 45 जवानों को अपनी जान गंवानी पड़ी।"

जब्बार मलिक के होंठों पर खतरनाक मुस्कान नाच उठी।

"तुम्हें अपने किये का पछतावा क्यों नहीं है ?"

"ये आजादी की जंग है। पछतावा कहाँ से आ गया ?" जब्बार मलिक ने गर्व भरे स्वर में कहा, "उस ट्रक को उड़ाने में मैंने बहुत मेहनत की थी। सफल होने पर मुझे बहुत खुशी हुई थी।"

देवराज चौहान जब्बार मलिक को घूरता रहा फिर शांत स्वर में बोला।

"तुम्हारी गिरफ्तारी के वक्त मैं पुलिस टीम में होता तो तुम्हारा एनकाउंटर कर देता।"

"जानते हो मुझे जिन्दा क्यों रखा गया है ?"

"ताकि तुम पुलिस को अपने साथियों के बारे में बताओ।"

"इसी कारण तो मुझे जिन्दा गिरफ्तार किया गया। लेकिन तुम्हारी पुलिस के हाथ कुछ नहीं लगा। मैं अपना मुँह नहीं खोल रहा और खोलूँगा भी नहीं। बड़ा खान जल्दी ही मुझे यहाँ से निकाल लेगा।"

"तुम यहाँ से बाहर नहीं जा सकते।"

जब्बार मलिक ने देवराज चौहान को घूरा।

"मैं निकल जाऊँगा इंस्पेक्टर।"

"निकल के दिखाना। अब तो मैं तुम्हारी सेवा में मौजूद रहूँगा।" देवराज चौहान सामान्य लहजे में कह उठा।

"देखूँगा तुम्हें भी।"

"तो 34 साल की उम्र में तुम बड़ा खान के संगठन में शामिल हो गए। यानी कि दो साल पहले। डेढ़ सालों में तुमने बड़ा खान के इशारे पर दिल्ली तक पहुँचकर तबाही मचाई।"

"दिल्ली के एक मंत्री को बम से उड़ा दिया था।" जब्बार मलिक गुर्रा उठा, "साले की सिर्फ एक टांग की मिल पाई थी। मैं कभी भी पकड़ा नहीं गया। हर जगह से बच निकलता था।"

"लेकिन छः महीने पहले पकड़े गए।"

"परवाह नहीं। मैं यहाँ से जल्दी ही निकल जाऊँगा।"

"बड़ा खान के सम्पर्क में तुम कैसे आये ?"

"वह खुद मुझे मिला था। उसने मुझे अपने संगठन में शामिल किया। वह अच्छा इंसान है।"

"क्या देता था वह तुम्हें ?"

"क्या मतलब ?"

"तुम उसके काम करते हो वह तुम्हें कितना पैसा देता था ?"

"बहुत। पैसे के साथ दुनिया भर के ऐश-आराम भी देता था। तुम देखना वह मुझे जेल से निकाल लेगा। क्योंकि मुझे एक ऐसा बड़ा काम करना है जिसकी प्लानिंग बन चुकी है। वह काम मैं ही पूरा कर सकता हूँ। ये ही कारण है कि बड़ा खान मुझे जेल से निकालकर रहेगा। मैं बहुत जल्दी आजाद हो जाऊँगा।"

तभी कबीर अली वहाँ पहुँचा।

वह एक प्लेट में दो गिलासों में चाय लाया था। देवराज चौहान और जब्बार मलिक को इस तरह बाहर कुर्सियों पर बैठे देखा तो चेहरे पर हैरानी उभरी। परन्तु कहा कुछ नहीं।

कबीर चाय देकर चला गया।

जब्बार मलिक ने चाय का घूँट भरा फिर कह उठा।

"शुक्र है, ढंग की चाय तो मिली।"

देवराज चौहान ने भी चाय का घूँट भरा और कह उठा।

"तुमने अपने जीवन में एक भी काम अच्छा नहीं किया जो.... ।"

"मैंने हर काम अच्छा किया है। हिन्दुस्तान से कश्मीर को आजाद कराना है। ये लड़ाई तब तक चलेगी, जब तक कश्मीर आजाद नहीं होगा। मेरे मुसलमान भाई आजादी की साँस नहीं लेते, तब तक... ।"

तभी देवराज चौहान का मोबाइल बजने लगा।

देवराज चौहान ने चाय का गिलास नीचे रखा और फोन निकालकर बात की।

"हैलो !"

"इंस्पेक्टर सूरजभान यादव ।" बड़ा खान की आवाज कानों में पड़ी ।

"ओह, तुम !" देवराज चौहान की निगाह जब्बार मलिक की तरफ उठी ।

जब्बार मलिक उसे ही देख रहा था ।

"इंस्पेक्टर !" बड़ा खान की आवाज पुनः कानों में पड़ी, "मेरी उन लोगों से बात हुई है, जिन्होंने दिल्ली में तुम पर हमला किया था । वे कहते हैं उस हमले में तुम बच नहीं सकते । बच भी गए तो हाथ-पाँव सलामत नहीं रह सकते ।"

"लेकिन मैं तो पूरी तरह सलामत जम्मू में मौजूद हूँ ।" देवराज चौहान ने कहा ।

"मेरे आदमी गलत नहीं हो सकते इंस्पेक्टर ।"

"तो मैं भी गलत नहीं हूँ । तुम जानते हो कि मैं जम्मू में हूँ ।"

"मुझे लगता है कि कुछ तो गड़बड़ है कि हमले में तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगड़ा । जिन्होंने हमला किया, वे लोग ये मानने को तैयार नहीं हैं कि तुम पूरी तरह सलामत हो सकते हो ।"

"मुझे तुम्हारी या तुम्हारे आदमियों की परवाह नहीं है । जानते हो इस वक्त मैं कहाँ हूँ ।"

"बोलो !"

"जेल में, जब्बार मलिक के पास बैठा उससे बातें कर रहा हूँ ।"

"झूठ !" बड़ा खान की संभली आवाज कानों में पड़ी ।

देवराज चौहान के चेहरे पर मुस्कान नाच उठी ।

"तुम्हें जब्बार से बात करनी है तो कहो ।"

"कराओ !"

जब्बार मलिक की आँखें सिकुड़ चुकी थीं । वह देवराज चौहान को देखे जा रहा था ।

देवराज चौहान ने कान से फोन हटाया और जब्बार मलिक की तरफ बढ़ाया ।

परन्तु जब्बार मलिक ने फोन लेने की कोशिश नहीं की ।

"बात करो !" देवराज चौहान बोला ।

"मुझे पुलिस वालों से बात करना पसन्द नहीं ।"

"बड़ा खान से तो बात करना पसन्द है ?" देवराज चौहान मुस्कुरा पड़ा ।

जब्बार मलिक चौंका और झपटने के ढंग में उसने मोबाइल लेकर बात की ।

"ब...बड़ा खान ?" जब्बार मलिक के होंठों से निकला ।

"आह !" बड़ा खान की आवाज जब्बार के कानों में पड़ी, "तुम्हारी आवाज सुनकर सुकून मिला मुझे ।"

"मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि मैं आपसे बात कर रहा हूँ ।" जब्बार मलिक कह उठा ।

"मेरा भी यही हाल है जब्बार । तुम्हारे कारनामे बहुत याद आते हैं । याद है तुम्हारा एक काम अधूरा है ।"

"जिसकी तैयारी हम कर चुके थे !" जब्बार मलिक का चेहरा खुशी से चमक रहा था ।

"हाँ, उसी की बात कर रहा हूँ !"

"मेरा यहाँ दिल नहीं लगता । आप मुझे यहाँ से बाहर निकालो ।" जब्बार मलिक तड़पकर बोला ।

"तुम्हें निकालने की कोशिश में लगा हूँ । जिससे तुमने फोन लिया इसका नाम क्या है ?"

"इंस्पेक्टर सूरजभान यादव । मेरे लिए दिल्ली से आया है ।"

"हैरानी है ! जबकि मेरे आदमी कहते हैं कि इसे अब तक जिन्दा नहीं होना चाहिए । या फिर इसे मरने के किनारे पर होना चाहिए ।"

"ये तो एकदम ठीक है । आप मुझे यहाँ से बाहर निकालो बड़ा खान ।"

"कोशिश कर रहा हूँ । तुम्हें जेल में जबरदस्त पहरे में रखा है । वहाँ से तुम्हें निकाल पाना आसान नहीं रहेगा । परन्तु मेरी कोशिशें चल रही हैं । मेरे आदमियों ने जेल के भीतर पैठ बना ली है । वह कभी भी तुम्हें वहाँ से ले जाने की कोशिश करेंगे ।"

"उस वक्त का मुझे बेसब्री से इंतजार... ।"

तभी देवराज चौहान ने उससे फोन ले लिया ।

जब्बार मलिक ने अचकचाकर देवराज चौहान को देखा।

"मत भूलो कि तुम कैदी हो। तुम्हें चाय पिला दी। फोन पर बात करा दी ये ही बड़ी बात हो चुकी है।" कहकर देवराज चौहान ने फोन कान से लगाकर कहा, "जब्बार से बात करके तुम्हें अच्छा लगा होगा।"

"शुक्रिया !" बड़ा खान की आवाज कानों में पड़ी।

"ये कभी भी मारा जा सकता है। जिन्दा बचने वाला नहीं।" देवराज चौहान का स्वर शांत था।

"मैं तुम्हें मुँह मांगी दौलत दूँगा अगर तुम जब्बार को जेल से निकाल दो।"

"लालच मत दो बड़ा खान।" देवराज चौहान मुस्कुराया, "मैं बिकने वाला नहीं।"

"तुम सोच भी नहीं सकते कि तुम्हें कितनी दौलत दूँगा। एक बार जब्बार को... ।"

"बेकार है, किसी और को ढूँढो।" देवराज चौहान ने कहा और फोन बन्द कर दिया।

जब्बार मलिक व्याकुल सा देवराज चौहान को देख रहा था।

देवराज चौहान ने फोन वापस जेब में रखा।

"इंस्पेक्टर !" जब्बार मलिक कह उठा, "बड़ा खान से बात करके मेरा हौसला दुगुना हो गया है। तुमने बहुत अच्छा काम किया जो मेरी बात करा दी। जानते हो मुझे बाहर निकालने पर तुम्हें कितना पैसा मिलेगा ?"

"मैं वर्दी को बेचता नहीं हूँ।" देवराज चौहान ने कहा।

"मुझे जेल से बाहर निकालने के बदले तुम अपनी और अपने परिवार की जिंदगी चमका सकते हो।"

देवराज चौहान ने सिर आगे किया और कह उठा।

"सच बात तो ये है कि मैं तुम्हें बहुत आसानी से जेल से बाहर ले जा सकता हूँ।"

जब्बार मलिक की आँखें चमक उठीं।

"परन्तु ये काम मैं सपने में भी नहीं करूँगा।"

"तुम बेवकूफ हो ।"

"वर्दी पहनकर मैं कानून के साथ इतना बड़ा धोखा करने का, दिल नहीं रखता । मैं सिर्फ एनकाउंटर करना ही जानता हूँ । आज तक मैंने किसी भी हाथ आये मुजरिम को छोड़ा नहीं है । फिर तुम तो पहले से ही पिंजरे में बन्द हो ।"

जब्बार मलिक के होंठ भिंच गए, बोला- "तुम पैसा कमाने का बहुत शानदार मौका गँवा रहे हो इंस्पेक्टर ।"

"मैं पहले भी ऐसे कई मौके गँवा चुका हूँ, परन्तु इस बात का कभी दुःख नहीं हुआ ।"

"सच में पागल हो तुम ।" जब्बार मलिक उठा ।

"उठो !" कहकर देवराज चौहान भी उठा ।

परन्तु जब्बार मलिक कुर्सी पर बैठा देवराज चौहान को घूरता रहा । फिर बोला- "मेरी बात पर तुम सोचना ।"

देवराज चौहान मुस्कुराया ।

जब्बार मलिक ने चाय का खाली गिलास नीचे रखा और खड़ा हुआ ।

"अपनी कोठरी में चलो ।" देवराज चौहान ने कहा ।

"तुम्हें बड़ा खान ने भी कहा मुझे यहाँ से निकालने को ?" जब्बार बोला ।

"हाँ !"

"बड़ा खान तुम्हें दौलत के ढेर पर बिठा देगा । एक बार उसकी बात मानकर देखो तो !"

"कोठरी में चलो ।" देवराज चौहान ने उसकी बाँह पकड़ी और कोठरी की तरफ बढ़ने लगा ।

जब्बार खान जैसे बहुत बातें करना चाहता था ।

परन्तु देवराज चौहान कोई बात करने के मूड में नहीं था । उसने जब्बार को कोठरी में डाला और चाबी को चार बार घुमाकर दरवाजा बन्द कर दिया ।

सलाखों को दोनों हाथों में थामे जब्बार मलिक उसे ही देखे जा रहा था ।

"तुम दोबारा आओगे यहाँ ?" जब्बार बेसब्री से बोला ।

"हाँ, तुमसे मिलना तो लगा ही रहेगा !" देवराज चौहान मुस्कुराया।

"मुझे यहाँ से निकालकर बड़ा खान से पैसा लो। इस बारे में सोचना इंस्पेक्टर।"

"मुझे आज तक कोई खरीद नहीं सका।"

"मेरी बात को फुर्सत में सोचना। पुलिस की नौकरी में क्या रखा है, हर समय जान पर बनी रहती... ।"

"एक बार ये वर्दी पहनकर देखो।" देवराज चौहान ने कहा, "तब पता चलेगा कि फर्ज निभाने में कितना मजा आता है।"

"बकवास मत करो। नोटों के बारे में... ।"

देवराज चौहान पलटा और आगे बढ़ता चला गया।

सलाखें थामे खड़े जब्बार मलिक की निगाह देवराज चौहान की पीठ पर ही रही, जब तक कि वह गैलरी में मुड़ नहीं गया। उसके बाद भी जब्बार मलिक देर तक सलाखें थामे बेचैन-सा खड़ा था।

□□□

सब-इंस्पेक्टर शर्मा जेलर के ऑफिस के बाहर ही टहलता मिला।

"जब्बार मलिक से बात हो गई सर ?" उसे देखते ही शर्मा पास आया।

"हाँ !"

"कुछ बताया उसने बड़ा खान के बारे में ?"

"नहीं !" देवराज चौहान ने मुस्कुराकर कहा और जेलर के ऑफिस में प्रवेश कर गया।

जेलर भीतर ही मिला।

शर्मा भी पीछे-पीछे आ गया।

"कहिये, यादव साहब !" जेलर देवराज चौहान को देखकर कह उठा, "बातचीत में सफलता मिली ?"

"जब्बार मलिक टेढ़ा बन्दा है।" देवराज चौहान मुस्कुराया।

"काफी टेढ़ा है।" जेलर बोला।

"वक्त लगेगा, परन्तु मैं उसे सही रास्ते पर ले आऊँगा। मुझे आपके सहयोग की जरूरत होगी।"

"मुझसे जो बन पड़ेगा, मैं करूँगा।"

"ये जब्बार के लॉकअप की चाबी।" देवराज चौहान ने चाबी उसकी तरफ बढ़ाई।

चाबी थामते जेलर ने पूछा।

"तुम लॉकअप खोलकर भीतर गए थे क्या ?"

"भीतर भी गया और उसे बाहर भी लाया।"

"ओह, वह खतरनाक है !"

"उसने कोशिश की, परन्तु सफल नहीं हो सका।" देवराज चौहान ने कहा।

जेलर सिर हिलाकर रह गया। फिर बोला।

"बैठो, चाय मँगवाता हूँ !"

"शुक्रिया, अब तो मैं आता ही रहूँगा। आपके साथ चाय जरूर पियूँगा। अब इजाजत दीजिये।"

देवराज चौहान शर्मा के साथ जेलर के ऑफिस से निकला और आगे बढ़ गया।

"जब्बार मलिक से क्या बात हुई सर ?"

"खास नहीं। आज तो उसकी सलामती के बारे में ही पूछा है।" देवराज चौहान ने कहा।

"बड़ा खान के बारे में उसने कोई बात नहीं की ?"

"की। परन्तु उसके बारे में बताया कुछ नहीं।"

"वह बताएगा भी नहीं। उस पर बहुत कोशिश की जा चुकी है।" शर्मा ने साथ चलते हुए कहा।

वह जेल के प्रवेश फाटक से बाहर निकले। बाहर अभी भी भीड़ थी।

"अब किधर जाना चाहेंगे सर ?"

"ए.सी.पी. साहब के पास। वह इस वक्त कहाँ होंगे ?" देवराज चौहान ने पूछा।

"इस वक्त अपने ऑफिस में ही होंगे ।"

"तो वहीं चलो !"

दोनों एक तरफ पार्किंग में खड़ी कार की तरफ बढ़े ।

अगले ही पल देवराज चौहान ठिठक गया । शर्मा भी ठिठका । देवराज चौहान की निगाह उस हरी कार पर टिक चुकी थी जो कि डेढ़ सौ कदमों की दूरी पर खड़ी थी ।

"क्या हुआ सर ?" शर्मा ने पूछा ।

"वह हरी कार । उधर देख रहे हो, वह हम पर नजर रख रही है ।"

"आपको कैसे पता सर ?"

"जिस फ्लैट में मैं ठहरा हूँ, उसके बाहर भी इसी कार को दो बार देख चुका हूँ ।"

"ओह !" शर्मा बोला, "मैं उन्हें देखता हूँ सर ।" कहकर वह आगे बढ़ गया ।

"रहने दो । उन्हें देखने का अभी वक्त नहीं आया ।"

"आप फिक्र मत करें सर । ये जम्मू है । मैं जानता हूँ कि उन्हें कैसे संभालना है ।" शर्मा कार की तरफ बढ़ता चला गया ।

शर्मा उस हरी कार के पास पहुँचा ।

भीतर दो लोग बैठे थे । एक पच्चीस बरस का, दूसरा पचास बरस का ।

"तुम जैसे बेवकूफों को पीछा करना भी नहीं आता ।" शर्मा ने दोनों से कहा ।

"क्या हो गया ?"

"वह जानता है कि तुम पीछे हो ।" शर्मा ने उनसे कहा ।

"हमने खुद को छिपाने की जरूरत नहीं समझी ।"

"मरना चाहते हो ?" शर्मा झल्लाया, "वह एनकाउंटर स्पेशलिस्ट है । सीधे गोली मारता है । बात नहीं करता । चले जाओ यहाँ से और अब खुद को छिपाकर उस पर नजर रखो । कार बदल लो । इस तरह तेज रंग की कार इस्तेमाल मत करो कि कार फौरन नजर में आ जाये । अब उसे पता नहीं चलना चाहिए कि तुम लोग उस पर नजर रख रहे हो । दोबारा तुम लोगों ने

सावधानी नहीं बरती तो मैं बड़ा खान से तुम्हारी शिकायत करूँगा ।" कहने के साथ ही शर्मा पलटा और वापस चल पड़ा ।

कुछ कदमों के पश्चात शर्मा को कार स्टार्ट होने की आवाज सुनाई दी ।

शर्मा ने चलते-चलते पलटकर पीछे देखा ।

वह हरी कार मुड़कर अब वापस जा रही थी ।

शर्मा देवराज चौहान के पास पहुँचा और उधर देखा, जहाँ हरी कार खड़ी थी । वह कार अब कहीं भी नजर नहीं आ रही थी ।

देवराज चौहान ने मुस्कुराकर शर्मा से कहा ।

"तुमने तो इन्हें दौड़ा दिया ।"

"मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि इन लोगों से कैसे निबटा जाता है ।" शर्मा ने कहा ।

"तुमने क्या कहा ?"

"सीधे-सीधे कहा कि दोबारा नजर मत आना । पीछा करने की सोचना भी मत, वरना अंदर कर दूँगा ।"

देवराज चौहान पुलिस मुख्यालय में ए.सी.पी. संजय कौल से मिला ।

"आओ सूरजभान !" कौल ने भीतर आते पाकर कहा, "जब्बार से मिल लिए ?"

देवराज चौहान ने सैल्यूट दिया फिर कुर्सी पर बैठता कह उठा- "यस सर, जब्बार मलिक से जेल से मिलकर ही आ रहा हूँ ।"

"कैसा लगा वह ?"

"खतरनाक है । उसने मुझ पर काबू पाने की चेष्टा की ।" देवराज चौहान ने कहा ।

"क्या तुमने उसे लॉकअप से बाहर निकाला या खुद भीतर गए ?"

"दोनों ही बातें हुईं ।"

"तुम्हें ऐसा रिस्क नहीं लेना चाहिए था ।" कौल बोला ।

"मैं उससे अपने ढंग से बात करना चाहता था । हम बाहर कुर्सियाँ रखकर बैठे थे ।"

"ओह !"

"उसने मेरी रिवॉल्वर पर कब्जा करके, नाल मेरे सिर से लगा दी।"

"फिर ?" कौल के माथे पर बल पड़े।

"रिवॉल्वर खाली थी सर।"

कौल कुछ पल देवराज चौहान को देखता रहा-

"तुम्हें ऐसा खतरा नहीं उठाना चाहिए था।"

"सामने वाले पर प्रभाव जमाने के लिए ये सब करना जरूरी था।"

"मुँह खोलने को तैयार हुआ वह ?"

"मैंने उसका मुँह खुलवाने की चेष्टा नहीं की। इधर-उधर की ही बातें की। मैं धीरे-धीरे आगे बढ़ना चाहता हूँ।"

"जैसा तुम ठीक समझो।"

"वह तीन साल पाकिस्तान में ट्रेनिंग के दौरान रहा और वहाँ ये बात उसके दिमाग में ठूस-ठूसकर भर दी गई कि इसके कश्मीरी भाई मुसीबत में हैं। मिलिट्री वाले वहाँ के लोगों को तंग कर रहे हैं और वह कश्मीर को हिन्दुस्तान से आजाद करवाना चाहता है।"

"दिमाग खराब है उसका।" कौल ने एकाएक मुँह बनाकर कहा।

"मैंने उसे समझाने की चेष्टा की परन्तु कोई फायदा नहीं हुआ।"

"होगा भी नहीं। पहले ये लोग आतंकवाद का रास्ता ये कहकर पकड़ते हैं कि कश्मीर के मुसलमानों को हिन्दुस्तान की सरकार तंग कर रही है फिर आतंकवाद ही इनका बिजनेस बन जाता है। पैसा लेते हैं संगठनों से और उनके इशारे पर आतंकवाद फैलाते हैं। कई बड़े संगठन लोगों को किराये पर लेते हैं और अपने नाम पर धमाके कराते हैं।"

"इन लोगों के पास आतंक फैलाने के अलावा और कोई काम नहीं है।" देवराज चौहान ने कहा।

"है क्यों नहीं, बहुत काम हैं। मेहनत करके अच्छी जिंदगी बिताई जा सकती है। परन्तु इनके मुँह पर आतंक फैलाने का स्वाद लग चुका है। इस काम से आसानी से पैसा मिल जाता है, परन्तु देर-सवेर में पुलिस मुठभेड़ में या मिलिट्री से टकराकर मारे जाते हैं ये लोग। पहले से अब हालात बेहतर हुए हैं। कश्मीर के लोगों को समझ आ गई है कि सीमा पार से आये

आतंकवादियों का साथ देने में कुछ नहीं रखा। कश्मीर को चैन-अमन की जरूरत है। ड्रग्स की तरह है आतंकवाद। एक बार आतंक का स्वाद लग जाये तो मौत आने तक ये काम बहुत आसान लगता है।"

"हमने अपने देश से आतंकवाद मिटा देना है सर !"

"जरूर। और क्या बोला जब्बार ?"

"उसका कहना है कि बड़ा खान के साथ ऐसे काम की प्लानिंग कर चुका है जो कि सिर्फ वह ही कर सकता है। इसलिए बड़ा खान उसे हर हाल में जेल से बाहर निकलवा के ही रहेगा।" देवराज चौहान ने कहा।

"ये मुमकिन नहीं।" कौल ने इंकार में सिर हिलाया, "जब्बार को जबरदस्त पहरे में रखा गया है।"

"सर, मैं जब्बार का मुँह खुलवा लूँगा। जो भी मैं करना चाहता हूँ, उसकी इजाजत मुझे दी जाये।"

"तुम्हें पूरा सहयोग मिलेगा सूरजभान।"

□□□

देवराज चौहान, शर्मा के साथ जब उस फ्लैट पर पहुँचा तो शाम के साढ़े सात बज रहे थे। अँधेरा घिर चुका था। फ्लैट पर पहुँच कर रौशनी जलाई और देवराज चौहान ने वर्दी उतारकर दूसरे कपड़े पहने।

"सर !" शर्मा बोला, "आप डिनर कब लेंगे ?"

"डिनर लाकर रख दो और तुम जाओ।"

"ठीक है सर ! उधर अलमारी में एक बोतल रखी है, अगर आप पीना चाहें तो...। ए.सी.पी. साहब के कहने पर ही बोतल रखी गई है। मैं आपके लिए डिनर लेकर आता हूँ। कुछ खास लेना चाहेंगे आप डिनर में ?"

"नहीं !"

शर्मा जल्दी आने को कहकर चला गया। देवराज चौहान ने दरवाजा बन्द किया और हाथ-मुँह धोकर अलमारी से बोतल निकाली और किचन से गिलास लाकर, गिलास तैयार किया और घूंट भरा। चेहरे पर सोचें नाच रही

थीं। यहाँ रात को ठंड हो जाती थी। कश्मीर के मौसम का असर जम्मू तक होता था।

देवराज चौहान की सोचें जब्बार मलिक के गिर्द घूम रही थीं। वह बिगड़ैल इंसान था। ऐसे लोगों को सीधी राह पर लाना सम्भव नहीं हो पाता था। आतंकवाद को वह आजादी की लड़ाई का नाम देना चाहता था। कश्मीर को आजाद कराने को कह रहा था, जो कि पहले से ही आजाद था। कश्मीर के मुसलमान भाइयों पर हिन्दुस्तान की सरकार जुल्म कर रही है, ऐसा जब्बार कहता था, परन्तु इस हकीकत से वह वाकिफ नहीं था कि पाकिस्तान से ज्यादा मुसलमान हिन्दुस्तान में रहते हैं और वह खुश हैं। उसने कभी सोचा नहीं कि अभी तक हिन्दुस्तान ने अपनी कोशिशों से कश्मीर को बचा रखा है, वरना पाकिस्तान ने पूरी तरह कश्मीर का बेड़ा गर्क कर देना था। इन बातों को समझने के लिए जब्बार के पास दिमाग नहीं था।

जब्बार जैसे और भी ढेरों लोग थे जो आतंकवाद को अपना धंधा बनाये हुए थे। पाकिस्तान के कुछ लोगों ने इनका दिमाग इस तरह बना दिया था कि ये सिर्फ आतंकवाद के बारे में ही सोचें।

देवराज चौहान व्हिस्की के घूँट भरता रहा। मन ही मन अपनी योजना को तैयार करता रहा। उसकी योजना, उसकी सोचें सब कुछ जब्बार मलिक पर ही टिकी थीं।

आज की मुलाकात से वह इतना तो महसूस कर चुका था कि जब्बार मलिक बेहद खतरनाक है। ये बात भी वह जानता था कि बड़ा खान उसे जेल से नहीं निकाल सकता। जबरदस्त पहरा था वहाँ। जब्बार मलिक वहाँ से निकलने के लिए तड़प रहा था और बड़ा खान उसे बाहर निकालने के लिए तड़प रहा था।

एक घण्टे में देवराज चौहान ने एक गिलास समाप्त किया और दूसरा बना लिया और वापस आ बैठा। उसने सिगरेट सुलगा ली। जेहन में सोचें नाच रही थीं। तभी कॉलबेल बज उठी। कश लेते हुए देवराज चौहान उठा और दरवाजे के पास पहुँचकर बोला।

"कौन है ?"

"मैं हूँ सर !" शर्मा की आवाज आई ।

देवराज चौहान ने दरवाजा खोल दिया ।

शर्मा खाना ले आया था । जो कि लिफाफे में बन्द था ।

"बर्तनों में डाल दूँ खाना सर ?" शर्मा ने पूछा ।

"नहीं, ऐसे ही रख दो । मैं ले लूँगा ।"

शर्मा खाने का लिफाफा किचन में रख आया ।

"आप कहें तो रात मैं यहाँ रुक सकता हूँ ।" शर्मा बोला ।

"जरूरत नहीं । तुम सुबह आ जाना ।"

"कितने बजे सर ?"

"दस-ग्यारह के लगभग ।"

"ठीक है सर । यहाँ रात को सर्दी हो जाती है । मैं जाऊँ अब ?"

देवराज चौहान ने सिर हिला दिया ।

शर्मा सुबह आने को कहकर चला गया ।

देवराज चौहान ने दरवाजा बन्द किया । सिगरेट ऐशट्रे में डाली और गिलास उठाकर घूँट भरा ।

वह मन ही मन फैसला करता जा रहा था कि उसे क्या करना है । वह जानता था कि उसकी सोचें, खतरनाक हदें पार कर रही हैं । पर ये ही करना था उसने । उसके सामने ये ही रास्ता था, जिस पर चलना उसे ठीक लग रहा था । देवराज चौहान ने गिलास खाली किया और किचन की तरफ बढ़ गया । थकान सी महसूस कर रहा था । खाना खाकर नींद लेना चाहता था । बीती रात भी ट्रेन के सफर में ही गुजरी थी । तभी कानों में मोबाइल के बजने का स्वर पड़ा ।

देवराज चौहान किचन से निकला और मोबाइल उठाकर पुनः किचन की तरफ बढ़ आया ।

"हैलो !" देवराज चौहान ने मोबाइल पर बात की ।

"कैसे हो इंस्पेक्टर सूरजभान यादव ।" बड़ा खान की आवाज कानों में पड़ी । देवराज चौहान पल भर के लिए ठिठका । फिर लिफाफों से खाना निकालकर बर्तनों में डालने लगा ।

“शर्मा गया अभी-अभी ।” बड़ा खान की आवाज पुनः कानों में पड़ी ।

“मुझ पर नजर रखवा रहे हो ।” देवराज चौहान बोला ।

“ये तो पता नहीं, पर मेरी नजर हर उस इंसान पर रहती है, जो मेरे काम का हो ।”

“मैं तुम्हारे काम का हूँ ?”

“बहुत । वैसे अब तुम उस खाने को खाओगे, जो शर्मा लाया था ।”

“तैयारी कर रहा हूँ ।”

“उस खाने में जहर भी हो सकता है ।”

पल भर के लिए देवराज चौहान ठिठका फिर सामान्य हो गया ।

“मुझे नहीं लगता ।”

“आज तो जहर नहीं है । परन्तु जहर कभी भी हो सकता है ।”

“मेरी मौत की तुम फिक्र मत करो ।” देवराज चौहान मुस्कुराया ।

“मुझे चिंता है तुम्हारी, क्योंकि तुम चाहो तो जब्बार को जेल से निकाल सकते हो ।”

“मैं क्यों चाहूँगा ?”

“इसलिए कि मैं तुम्हें नोट दूँगा । एक करोड़ कैसा रहेगा ?”

“बहुत कम कीमत लगा रहे हो ।”

“दो करोड़ !”

“बेकार है ।”

“पाँच करोड़ ।” बड़ा खान की आवाज कानों में पड़ी ।

“तुम्हारी छोटी सोच है, इसलिए छोटा सोच रहे हो ।”

“तुम रकम बोलो ।”

“एक पैसा भी नहीं ।”

“सौदा मंजूर नहीं ?”

“नहीं ।”

“क्यों ?”

“जब से वर्दी पहनी है, मैंने कोई गलत काम नहीं किया । तुम जैसों का एनकाउंटर अवश्य किया है ।”

"मेरी बात पर गम्भीरता से विचार करो। तुम जब्बार को बाहर निकालो, मैं तुम्हें दस करोड़ दूँगा।"

"कोई फायदा नहीं।"

"रकम बढ़ा लो इंस्पेक्टर। मैं तुम्हें बीस करोड़ तक दे सकता हूँ।"

"तुम पच्चीस भी दो।" देवराज चौहान मुस्कुराया।

उधर से बड़ा खान के साँस लेने की आवाज आई।

"ठीक है, पच्चीस करोड़ ही सही। बोलो, कहाँ पहुँचाऊ ?"

"मैं लेने को तैयार नहीं।"

"बेवकूफ, पच्चीस करोड़ तुमने कभी देखे नहीं होंगे और देखोगे भी नहीं।" बड़ा खान का स्वर शांत था।

"बहुत ज्यादा जरूरत है तुम्हें जब्बार मलिक की।"

"क्योंकि वह पागल इंसान है। हिम्मती है। जुनून है उसमें। बड़े से बड़े काम को कर देने की लगन है उसमें। वह जान जाने की भी परवाह नहीं करता। ऐसे लोगों की मुझे बहुत जरूरत रहती है।" बड़ा खान का स्वर कानों में पड़ा।

देवराज चौहान खाने का बर्तन उठाये कमरे में पहुँचाने लगा।

दो चक्कर लगाकर ये काम पूरा किया और सोफे पर बैठता कह उठा।

"जब्बार से तुमने कोई काम लेना है ?"

"हाँ !"

"वह बहुत खास काम है ?"

"बहुत ही खास। तभी तो जब्बार को तुमसे पच्चीस करोड़ में खरीदने को कह रहा हूँ।"

"काम क्या है ?"

"ये बात तुम्हारे काम की नहीं है।"

देवराज चौहान ने खाना खाना शुरू कर दिया।

"तुम कौन हो ?"

"ये भी तुम्हारे काम की बात नहीं है।"

"हिंदुस्तान के हो या पाकिस्तान के ?"

चंद पल लाइन पर खामोशी रही फिर बड़ा खान की आवाज आई ।

"पाकिस्तान का ।"

"किसके इशारे पर तुम काम करते हो ?"

"मैं किसी का नौकर नहीं हूँ जो किसी के इशारे पर काम करूँ ।"

"तो ये काम क्यों करते हो ?"

"मेरा अपना संगठन है । लोग हिन्दुस्तान में अपना आतंक फैलाना चाहते हैं । मैं उनसे पैसे लेकर, जहाँ वह चाहते हैं, वहाँ आतंक फैलाता हूँ । उस आतंक की जिम्मेदारी वह लोग अपने सिर पर ले लेते हैं, कि बाजार में उनका रौब कायम रहे ।"

"तो तुम बिजनेस कर रहे हो ये सब करके ?"

"ऐसा कह सकते हो तुम ।"

"जब्बार भी बिजनेस करता है आतंक का ?"

"हाँ, वह भी हर काम के मेरे से पैसे लेता है । परन्तु उसके मन में हिन्दुस्तान के लिए नफरत है । असल काम तो वह नफरत ही करती है ।" बड़ा खान की आवाज में मुस्कान आ गई, "एक खास जुनून है जब्बार में ।"

"उसका फायदा तुम उठाते हो ।"

"बदले में पैसे भी तो देता हूँ ।"

"उसके मन में जो नफरत है वह पाकिस्तान वालों ने ही भरी ?"

"तुम्हें इन बातों से क्या इंस्पेक्टर । तुम अपने पच्चीस करोड़ के बारे में सोचो । ये इतनी बड़ी रकम है कि... ।"

"जैसा काम तुम मुझसे करवाना चाहते हो, वैसा काम मैं नहीं करता ।" देवराज चौहान ने कहा ।

"पच्चीस करोड़ एक साथ देखा है कभी ?"

"नहीं !" देवराज चौहान के होंठों पर मुस्कान आ ठहरी ।

"देखना नहीं चाहोगे ?"

"इस तरह नहीं ।"

"ठीक है पच्चीस करोड़ के अलावा तुम्हें एक बंगला भी दूँगा दिल्ली में ।"

"कोशिश बेकार है तुम्हारी ।"

"क्या तुम चाहते हो कि अगली बार शर्मा तुम्हारे लिए खाना लाये तो उसमें जहर हो ।"

"वह जहर खाना मुझे पसन्द है, परन्तु वर्दी से गद्दारी पसन्द नहीं ।"

"तुम जैसे बेवकूफ ही मरते हैं ।" बड़ा खान का कानों में पड़ने वाला स्वर शांत था, "मैं तुम्हें तीस करोड़ तक दे सकता हूँ, अगर तुम जब्बार को जेल से बाहर निकाल दो । इतनी बड़ी रकम को ठुकराते मैंने किसी को नहीं देखा ।"

"मैं ठुकरा रहा हूँ ।" कहकर देवराज चौहान ने फोन बन्द करके रख दिया ।

उसने आराम से खाना समाप्त किया ।

चेहरे पर शांत भाव नजर आ रहे थे ।

□□□

सुबह सवा दस बजे सब-इंस्पेक्टर राधे श्याम शर्मा नाश्ते के साथ आ पहुँचा । देवराज चौहान तब नहा रहा था । शर्मा को पंद्रह मिनट बाहर ही खड़े रहना पड़ा । देवराज चौहान जब नहाकर निकला तो उसने दरवाजा खोला ।

"गुड मॉर्निंग सर !" शर्मा मुस्कुराकर भीतर की तरफ आता बोला, "आपके लिये नाश्ता लाया हूँ ।"

देवराज चौहान मुस्कुरा दिया ।

"दूँ सर ?"

"अभी रुको !" देवराज चौहान ने कहा और वर्दी पहनने लगा ।

"वर्दी धुलवानी हो तो बता दीजियेगा सर !" शर्मा बोला ।

देवराज चौहान ने वर्दी पहनने के बाद कहा ।

"नाश्ता ले आओ ।"

शर्मा प्लेट में रखकर नाश्ता ले आया । दो गोभी के पराठे और साथ में दही था ।

"तुमने कर लिया ?" देवराज चौहान ने पूछा ।

"यस सर। अब तो हजम भी होने वाला है।" शर्मा ने हँसकर कहा।

नाश्ते के दौरान देवराज चौहान ने पूछा।

"रात मुझे सपना आया शर्मा!"

"अच्छा सर!"

"मैंने सपने में देखा कि तुम मेरे खाने ने जहर डालकर लाये हो।"

शर्मा चिहुँककर देवराज चौहान को देखने लगा फिर बोला- "ये कैसा सपना है सर ?"

"सपने तो सपने ही होते हैं।" देवराज चौहान ने कहा।

"हाँ सर! कई बार, बल्कि अक्सर ही, सपनों का सिर-पैर पता नहीं चलता। रात नींद तो ठीक आई ?"

"बढ़िया!" देवराज चौहान ने कहा, "क्या तुम बड़ा खान को जानते हो ?"

"मैं उतना ही जानता हूँ, जितना कि पुलिस जानती है।" शर्मा ने कहा।

"मैं ये पूछना चाहता हूँ क्या तुम बड़ा खान के लिए काम करते हो ?"

"ये... ये आप क्या कह रहे हैं सर ?" शर्मा अचकचा उठा।

"जवाब दो!"

"नहीं सर। मैं पुलिस वाला हूँ। बड़ा खान के लिए काम क्यों करूँगा। ये आपको क्या हो गया है सर ?"

"अगर तुम बड़ा खान के लिए काम कर रहे होते तो तब भी मेरे पूछने पर क्या कहते ?"

शर्मा उलझन भरी नजरों से देवराज चौहान को देखने लगा।

"जवाब दो।"

"मैं समझा नहीं कि आप कहना क्या चाहते हैं ?"

"मान लो कि तुम बड़ा खान के लिए काम करते हो और मेरे पूछने पर तुम क्या जवाब देते ? क्या बता देते कि तुम बड़ा खान के लिए...।"

"बिल्कुल नहीं बताता। बताकर मैं फँसना क्यों चाहूँगा, अगर मैं बड़ा खान के लिए काम करता हूँ तो। लेकिन मैं आपके इन सवालों का मतलब नहीं समझ पाया कि आप क्या... ?"

"मुझे इस बात का भी सपना आया कि तुम बड़ा खान के लिए काम करते हो। लेकिन तुम्हें इस बात की परवाह नहीं करनी चाहिए। क्योंकि सपनों का कोई सिर-पैर नहीं होता।" देवराज चौहान मुस्कुरा पड़ा।

शर्मा लम्बी साँस लेकर कह उठा।

"आपने तो मुझे डरा ही दिया था। मेरा दिल देखिये, जोरों से बज रहा है।" शर्मा ने अपने दिल पर हाथ रखा।

देवराज चौहान ने नाश्ता समाप्त किया।

एकाएक खामोश बैठा शर्मा कह उठा-

"क्या किसी ने आपको मेरे बारे में कुछ कहा है सर ?"

"नहीं तो !"

"फिर आपने मुझे परेशान करने वाली इतनी गम्भीर बात क्यों की। मैं अभी तक समझ नहीं पाया।"

"वह यूँ ही, मजाक किया था मैंने।"

"मजाक की आदत हो आपकी, ऐसा लगता तो नहीं।" शर्मा ने दबे स्वर में कहा।

"कभी-कभी तो मैं बहुत बड़े मजाक कर देता हूँ। मुझसे सावधान रहना।" देवराज चौहान मुस्कुरा पड़ा।

"ठीक है सर। आज आपका कहाँ चलने का...।"

"जब्बार मलिक के पास जाना है मुझे।"

□□□

देवराज चौहान और शर्मा जम्मू सेंट्रल जेल में पहुँचे।

रास्ते में देवराज चौहान ने ये जानने की चेष्टा की कि क्या कोई पीछा कर रहा है। परन्तु इस बारे में वह किसी नतीजे पर नहीं पहुँच पाया।

जेलर सुधीर लाल अपने ऑफिस में नहीं था परन्तु कबीर अली उन्हें टकरा गया।

कबीर अली ने कहा कि वह जेलर साहब को तलाश करके लाता है।

देवराज चौहान और शर्मा ऑफिस में ही बैठे रहे। आधे घण्टे बाद जेलर सुधीर लाल ने भीतर प्रवेश करते हुए कहा।

"माफ करना, आपको इंतजार करना पड़ा। मैं कैदियों का मुआयना करने गया था।"

कबीर अली भी वहाँ आ गया था।

"जब्बार से मिलूँगा मैं।" देवराज चौहान बोला, "उसकी कोठरी की चाबी चाहिए।"

"क्यों नहीं।" कहने के साथ ही जेलर पीछे दीवार के पास रखी मजबूत तिजोरी की तरफ बढ़ गया। जेब से चाबी निकालकर तिजोरी खोली और भीतर पड़ी कुछ चाबियों में से एक चाबी निकालकर तिजोरी बन्द करके देवराज चौहान के पास आया और उसे चाबी देते हुए कह उठा, "इंस्पेक्टर सूरजभान, आप ये चाबी किसी और के हाथ में मत देना।"

"नहीं। ये मेरे पास सुरक्षित रहेगी।"

देवराज चौहान जेलर के कमरे से बाहर निकला। शर्मा और कबीर साथ थे।

"शर्मा तुम कल की तरह यहीं मेरा इंतजार करोगे।" देवराज चौहान बोला।

"यस सर !" शर्मा ने कहा।

"और कबीर साहब आप दो चाय लेकर, जब्बार की कोठरी पर आ जाइये।"

"जी जनाब !"

देवराज चौहान आगे बढ़ता चला गया। कबीर अली भी वहाँ से चला गया।

शर्मा ने आस-पास देखा। पुलिस वाले, कैदी लोग आ-जा रहे थे। परन्तु सब व्यस्त थे। शर्मा एक तरफ हुआ और मोबाइल निकालकर नम्बर मिलाने लगा। फिर फोन कान से लगा लिया।

दूसरी तरफ बेल जा रही थी।

"हैलो !" कानों में मर्दाना आवाज पड़ी।

"लगता है इंस्पेक्टर सूरजभान यादव को मुझ पर शक हो गया।" शर्मा ने धीमे स्वर में कहा।

"कैसा शक ?"

"वह मुझे बोला कि रात सपना आया उसे कि मैंने खाने में जहर डाल दिया है। फिर उसने मुझसे पूछा कि क्या मैं बड़ा खान के लिए काम करता हूँ। ये बातें सामान्य नहीं कही जा सकतीं। क्या किसी ने कोई बेवकूफी कर दी है ?"

"ऐसा तो नहीं है।"

"हमारा कोई आदमी सूरजभान से मिला ?"

"बिल्कुल नहीं। किसी को कोई ऐसा आदेश नहीं दिया गया।" उधर से कहा गया।

"लेकिन कुछ तो बात है ही जो... ।"

"तुमने तो कहीं पर लापरवाही नहीं कर दी ?"

"क्या बात करते हो। मैं तुम्हें बेवकूफ दिखता हूँ क्या ?"

"हो सकता है वह इंस्पेक्टर तुम्हें यूँ ही चैक कर रहा हो।"

"लगता तो नहीं कि ऐसा होगा। परन्तु कुछ शक तो उसे मुझ पर हुआ है।" शर्मा गम्भीर स्वर में बोला।

"तुम उसके साथ चिपके रहो। टोह लो कि कैसे उस पर काबू पाकर हम जब्बार को आजाद करवा सकते हैं। वह औरतों का शौकीन है ?"

"ऐसी कोई बात उसने नहीं की।"

"उससे बात करके पता करो। अगर वह औरतों का शौकीन है तो हम उस पर जल्दी काबू पा सकते हैं। वह हमारी गिरफ्त में होगा।"

"पता करूँगा। लेकिन वह मुझे ऐसा लगता नहीं। जो औरतों का शौकीन होता है, वह ऐसी बात इशारे में कह देता है। मुझे तो लगता है कि उसका पूरा ध्यान जब्बार पर है।" शर्मा ने फोन पर कहा।

"अब वह कहाँ है ?"

"जेल में, जब्बार के पास।"

"तुम उसके साथ हो ?"

"नहीं। वह मुझे जेलर के कमरे के पास रहने को कह गया... ।"

"तुम उसके साथ नहीं जा सकते थे क्या ?" दूसरी तरफ से तीखे स्वर में कहा गया।

"जब्बार से मिलते वक्त वह मुझे साथ नहीं रखता।"

"क्यों ?"

"मैं नहीं जानता।"

"फोन बन्द करो और जब वह वापस लौटे तो उससे पता करने की कोशिश करो कि वह किस फेर में है।"

□□□

देवराज चौहान ने जब्बार मलिक की कोठरी का दरवाजा खोला और बोला- "बाहर आ जाओ।"

जब्बार बाहर निकला।

कल की अपेक्षा आज वह कुछ शांत दिख रहा था।

"कैसे हो ?" देवराज चौहान मुस्कुराया।

जवाब में जब्बार ने सिर हिला दिया।

"कुर्सियाँ ले आओ। बैठ के बातें करते हैं।" देवराज चौहान ने कहा।

"चाय मँगवा लो तो अच्छा लगेगा मुझे।" जब्बार बोला।

"आ रही है।"

जब्बार मलिक स्टोर से दो कुर्सियाँ ले आया।

देवराज चौहान और जब्बार आमने-सामने बैठे।

वहाँ मौजूद गनमैन सतर्क थे जब्बार से।

"आज कोई हरकत नहीं करोगे ?" एकाएक देवराज चौहान बोला।

"तुमने उस बारे में क्या सोचा ?" जब्बार ने गनमैनों पर निगाह मारते दबे स्वर में पूछा।

"जेल से बाहर निकलने की बात कर रहे हो ?"

"हाँ! इसके बदले तुम्हें तगड़े पैसे... ।"

"वर्दी की आड़ में मैं पैसे नहीं लेता। लेकिन एक बात तो है जब्बार।" देवराज चौहान ने कहा।

"क्या ?"

"बड़ा खान तुम्हारा दीवाना है।"

जब्बार की आँखें सिकुड़ी।

"रात को फोन आया था बड़ा खान का। वह तीस करोड़ देने को तैयार है तुम्हारे लिए।"

"पैसा कमाने का शानदार मौका है ये तुम्हारे लिए।" जब्बार कह उठा।

"बड़ा खान कहता है कि तुम जैसा दूसरा कोई नहीं।"

"मुझे खुशी है कि बड़ा खान मेरे बारे में ऐसा सोचता है।" जब्बार मलिक कह उठा।

"वह इससे भी ज्यादा सोचता है। तुमने उसे काफी प्रभावित कर रखा है।"

"तीस करोड़ कमाने को तुम तैयार हो ?"

"नहीं !"

"बेवकूफ हो तुम।" जब्बार मलिक कसमसा उठा।

"बड़ा खान मुझे खरीद नहीं सकता। लेकिन वह हर हाल में तुम्हें यहाँ से निकाल लेना चाहता है।"

"तुम्हें तीस करोड़ की बात मान लेनी चाहिए।"

"वह मुझे दिल्ली में बंगला देने को भी तैयार है।" देवराज चौहान मुस्कुराया।

"तुम्हारे तो मजे हो गए।"

"लेकिन मैं इसी जिंदगी में खुश हूँ। ज्यादा मजे नहीं लेना चाहता।"

"तुम्हारी माँ पागल थी, जिसने तुम जैसे बेवकूफ को जन्म दिया।"

मुस्कुराता हुआ देवराज चौहान उसे देखता रहा।

"पैसा कमाने के मौके जिंदगी में बार-बार नहीं आते इंस्पेक्टर।" जब्बार कह उठा।

"जानता हूँ !"

"तुम्हें इस मौके का फायदा उठाना चाहिए और... ।"

"तुम हजारों बार ये बात कह लो, परन्तु मैं अपने इरादे पर पक्का हूँ। वर्दी पहनकर रिश्वत नहीं लूँगा ।"

"ये रिश्वत नहीं, तुम्हारा मेहनताना होगा, मुझे यहाँ से निकालने के लिए ।"

"मुझे उसकी भी जरूरत नहीं ।"

जब्बार मलिक के होंठ भिंच गए । वह नाराज दिखने लगा । तभी कबीर अली चाय के दो गिलास ट्रे में रखे आता दिखा ।

"तुम्हारे लिए चाय आ गई ।" देवराज चौहान ने कहा ।

कबीर ने पास आकर चाय दी ।

एक गिलास देवराज चौहान ने थामा दूसरा जब्बार मलिक ने ।

"और कुछ चाहिए सर ?" कबीर ने पूछा ।

"नहीं, तुम जाओ !"

कबीर चला गया ।

घूंट भरने के पश्चात जब्बार ने कहा- "चाय का शुक्रिया !"

देवराज चौहान ने मुस्कुराते हुए चाय का घूंट भरा ।

"एक मेहरबानी मुझ पर और कर दो ।" जब्बार बोला ।

"क्या ?"

"व्हिस्की नहीं पी महीनों से... ।"

"व्हिस्की तुम्हें नहीं मिल सकती । मैं जेल के नियम नहीं तोड़ सकता ।"

"तुम्हारे लिए मामूली बात है ये ।"

"परन्तु तुम्हें व्हिस्की नहीं दूँगा ।" देवराज चौहान ने कहा ।

जब्बार मलिक ने घूँट भरकर कहा ।

"मैं तो कल से सोच रहा था कि तुम नोट लेने को तैयार हो जाओगे और मुझे जेल से निकाल दोगे ।"

"तुमने गलत सोचा ।"

"भाड़ में जाओ ।" जब्बार ने नाराजगी से कहा "बड़ा खान से मेरी फोन पर बात करा दो ।"

"वह जिस नम्बर से फोन करता है, वह नम्बर मेरे फोन में आया हुआ है, परन्तु मैं बात नहीं करा सकता ।"

"क्यों ?"

"मैं बड़ा खान जैसे आतंकवादी को फोन नहीं करूँगा । उसका फोन बेशक आता रहे ।" देवराज चौहान का स्वर सामान्य था ।

जब्बार के चेहरे पर नाराजगी कायम रही ।

"तुम बड़ा खान के बारे में कुछ बताना पसन्द करोगे ?"

"तुम गलत सोचते हो कि मुझे चाय पिलाकर और मीठा बोलकर, मेरे से कुछ जान सकोगे ।"

"पूछने का मेरा ये मतलब नहीं... ।"

तभी देवराज चौहान का फोन बजा ।

देवराज चौहान ने फोन निकालकर बात की ।

जब्बार मलिक की निगाह देवराज चौहान पर जा टिकी थी ।

"हैलो !" देवराज चौहान बोला ।

"इंस्पेक्टर सूरजभान यादव !" बड़ा खान की आवाज कानों में पड़ी- "मुझे पता है तुम इस वक्त जेल में हो ।"

"ये जानना तुम्हारे लिए बड़ी बात नहीं । जाहिर है कि तुम्हारे आदमी मेरा पीछा कर रहे हैं । वह तुम्हें खबर देते रहते हैं ।"

"मेरे आदमी मुझे वह ही खबर देते हैं, जो मैं जानना चाहूँ । तुम पुलिस वाले की हर खबर मुझ तक पहुँच रही है ।"

"ये बहादुरी का काम नहीं ।"

"तुमने अब तक सोच लिया होगा कि तीस करोड़ को तुम कहाँ पर रखोगे ।"

"बेकार की बातें मैं नहीं सोचता ।"

"इतनी बड़ी रकम लेने से तुम इंकार कर रहे हो ।"

"अब तुमने सही कहा ।"

"कोई मामूली पुलिस वाला इतनी बड़ी दौलत को नहीं ठुकरा सकता ।"

"मैं ठुकरा रहा हूँ ।"

"तुमसे जब भी बात करता हूँ तो मुझे अपने उन आदमियों की बात याद आ जाती है, जिन्होंने दिल्ली में तुम पर हमला किया ।"

"क्या बात ?"

"यही कि उस हमले के बाद तुम जिन्दा नहीं बच सकते । बच गए तो बुरे हाल में रहोगे । बल्कि मेरे एक आदमी का तो यहाँ तक कहना है कि उसने तुम्हें गोलियाँ लगते देखीं थीं । तुम्हें गिरते देखा था ।" बड़ा खान की आवाज कानों में पड़ी ।

"तुम्हारे आदमी बेवकूफ हैं ।"

"वह कैसे ?"

"मैंने छाती पर बुलेट प्रूफ पहन रखा था । उन गोलियों से मेरा कुछ नहीं बिगड़ा और मैं यहाँ हूँ ।"

"हाँ, तुम जम्मू में हो ! दिल्ली पुलिस में मौजूद मैंने अपने आदमियों से तुम्हारे बारे में जानकारी हासिल की है । उन्होंने यही कहा कि इंस्पेक्टर सूरजभान यादव को जब्बार मलिक की देख-रेख के लिए जम्मू भेजा गया है । परन्तु कुछ तो गड़बड़ है । दिल्ली में तुम पर हमला करने वाले ये मानने को तैयार नहीं कि तुम सलामत हो सकते हो ।"

"अपनी ये बकवास बन्द करो ।"

"तो तुम जब्बार को जेल से नहीं निकलोगे ?"

"बड़ा खान, मुझे खरीद नहीं सकते ।" देवराज चौहान ने चुभते स्वर में कहा, "वैसे मैं जब्बार के सामने कुछ शर्तें रखने जा रहा हूँ, अगर वह मेरी बातें मान लेगा तो मैं उसे जेल से बाहर निकाल सकता हूँ ।"

"कैसी शर्तें ?"

"ये तुम्हारे जानने लायक बातें नहीं हैं । मेरे और जब्बार के बीच की बात है ।"

"तुम जब्बार से मेरे बारे में जानना चाहोगे ।"

"मैंने कहा न, ये तुम्हारे जानने लायक बातें नहीं हैं ।"

"जब्बार से मेरी बात कराओगे क्या ?"

"जरूर ! लेकिन आज के बाद कभी भी बात नहीं कराऊँगा । क्योंकि मेरे और जब्बार के बीच जो बातें तय होने जा रही हैं, उनमें तुम अड़चन डाल सकते हो और इस तरह जब्बार भी आजाद होने से रह जायेगा ।"

"जब्बार से मेरी बात कराओ ।"

"बहुत उतावले हो रहे हो ।"

"ऐसी बात नहीं । जब्बार से बात करने का मन कर रहा है ।"

देवराज चौहान ने जब्बार की तरफ फोन बढ़ाकर कहा- "करो बात !"

जब्बार ने तुरन्त फोन लेकर बात की ।

"बड़ा खान !" जब्बार मलिक के होंठों से निकला ।

"ये तुम्हें जेल से निकालने के लिए किस तरह की शर्तें रख रहा है ?" बड़ा खान ने तेज स्वर में पूछा ।

"अभी तो इस बारे में कोई बात नहीं हुई ।" जब्बार ने देवराज चौहान को देखकर कहा ।

देवराज चौहान मुस्कुरा रहा था ।

"तुम इसकी बातों में मत आना ।" बड़ा खान का स्वर जब्बार के कानों में पड़ा, "ये तुमसे मेरे बारे में जानना चाहेगा । मेरे चेहरे के बारे में जानना चाहेगा । हमारे खास लोगों की जानकारी... ।"

"मैं बच्चा नहीं हूँ बड़ा खान ! अभी तक पुलिस वालों को मैं ही सँभालते आया हूँ ।"

"जेल से निकालने के सपने दिखाकर, ये तुमसे बहुत बातें पूछेगा ।"

"परवाह नहीं । मैं इसकी बातों में नहीं आने वाला ।"

"एकदम अपने को पक्का कर लो कि तुमने इसकी किसी बात की परवाह नहीं करनी है । ये तुम्हें... ।"

"तुम चिंता मत करो बड़ा खान । जब्बार के मुँह से कुछ निकलवा पाना इन पुलिस वालों के बस का नहीं है ।"

"शाबाश ! यही सुनना चाहता था मैं । इस बारे में तसल्ली रखो । मैं तुम्हें जल्दी ही जेल से निकालूँगा ।"

"मुझे तुम्हारी बात पर यकीन है ।" जब्बार ने यकीनी भाव में कहा ।

"मेरे आदमी जेल के भीतर तक पहुँच चुके हैं जब्बार और तुम्हें वहाँ से निकालने के लिए खामोशी से ताना-बाना बुन रहे हैं। दस-बीस दिन की बात है और फिर तुम मेरे पास होगे। फिर हिन्दुस्तान को दहलाकर... ।"

उसी पल देवराज चौहान ने जब्बार से फोन ले लिया।

जब्बार मलिक गहरी साँस लेकर रह गया।

"बस !" देवराज चौहान फोन कान से लगाता कह उठा- "बहुत बातें हो गईं बड़ा खान।"

"जब्बार से बात करके मुझे अच्छा लगा।"

"कानून इस बात की इजाजत नहीं देता कि इस तरह मैं तुम्हारी बातें जब्बार से कराऊँ।"

"तुम अजीब आदतों के मालिक हो इंस्पेक्टर। हटकर पुलिस वाले हो।"

"इसमें कोई शक नहीं कि दिल्ली में तुमने मुझ पर जबरदस्त हमला कराया था। मुझे मार देना चाहते थे।"

"मुझे ऐसा करना पड़ा। क्योंकि तुम जब्बार पर नजर रखने आ रहे थे और तुम्हें बहुत ही खतरनाक पुलिस वाला माना जाता है। मैं नहीं चाहता था कि तुम जब्बार मलिक तक पहुँचो। तुम मेरी कोशिश को फेल कर सकते हो।"

"जब्बार को जेल से निकालने की कोशिश ?"

"हाँ !"

"तो तुम कोशिश कर रहे हो। तुम्हारी धमकी खोखली नहीं थी।"

"बड़ा खान खोखली धमकी नहीं देता।"

"तुम किसी भी हाल में जब्बार को जेल से नहीं निकलवा सकते।"

"तुम ही क्यों नहीं मान जाते।"

"ये बकवास करनी बन्द कर दो अब।" देवराज चौहान ने कहा और फोन बन्द कर दिया।

जब्बार मलिक चाय खत्म करके खाली गिलास, नीचे कुर्सी के पास रख चुका था। देवराज चौहान की चाय ठंडी हो गई। उसने भी गिलास नीचे रख दिया।

जब्बार की निगाह देवराज चौहान पर थी।

देवराज चौहान मुस्कुराया।

"ये सच है कि तुम मुझे आसानी से जेल से बाहर निकाल सकते हो ?" जब्बार ने पूछा।

"सच है !"

"तुम किन शर्तों की बात कर रहे थे ?"

"वह तो मैंने बड़ा खान से कहा था, तुमसे मैं कोई शर्त नहीं रख रहा।"

"क्या मतलब ?" जब्बार मलिक की आँखें सिकुड़ी।

"मैं तुम्हें मुफ्त में जेल से बाहर निकालूँगा।"

जब्बार बुरी तरह चौंका।

"मुफ्त में ?"

"पूरी तरह मुफ्त में।" देवराज चौहान के चेहरे पर शांत मुस्कान थी।

"असम्भव !" जब्बार के होंठों से निकला।

"क्यों ?"

"बड़ा खान तुम्हें तीस करोड़ देने को तैयार है।"

"लेकिन मैं रिश्वत नहीं लेता।"

"तुम जो कह रहे हो, सच कह रहे हो क्या ?" जब्बार मलिक का चेहरा अविश्वास में डूबा था।

"मैं मजाक नहीं करता।"

"तुम तीस करोड़ नहीं लोगे और मुफ्त में मुझे जेल से बाहर निकाल दोगे ?"

"अब तुमने ठीक कहा।"

"ये नहीं हो सकता।"

"मैं सच कह रहा हूँ।"

"तुम... तुम बहुत बड़े पागल हो क्या ?"

“नहीं ! मैं समझदार इंसान हूँ। तुम्हें कभी लगा कि मैं पागल हूँ।”

“अब... अब लग रहा है।” जब्बार के होंठ भिंच गए।

देवराज चौहान ने सिगरेट सुलगाकर कश लिया और बोला।

“अगर तुम जेल से बाहर नहीं निकलना चाहते तो जुदा बात है।”

“मैं... मैं निकलना चाहता हूँ। तुम... तुम ये मेहरबानी मुझ पर क्यों कर रहे हो ?”

“मेरी मर्जी।”

“मर्जी ? आखिर कुछ तो वजह होगी ?”

“कोई वजह नहीं है। तुम मेरे बारे में न सोचकर अपनी आजादी के बारे में सोचो। तुम बड़ा खान के पास पहुँच जाओगे।”

जब्बार मलिक देवराज चौहान को खा जाने वाली नजरों से देखने लगा।

“मैं समझ गया।” जब्बार बोला।

“क्या ?”

“तुम मुझे जेल से बाहर निकाल कर, मेरा पीछा करके, मेरे सहारे बड़ा खान तक पहुँच जाने की सोच रहे हो।”

“तुम्हारी सोच सच में बहुत घटिया है। मैं तुम्हें ऐसा लगता हूँ।”

जब्बार देवराज चौहान को घूरने लगा।

“ये बात मेरे और तुम्हारे बीच है। कोई तीसरा इसमें शामिल नहीं है।”

“मुझे यकीन नहीं आता। तुम्हें तो बड़ा खान ने दिल्ली में, मारने की कोशिश की थी फिर तुम....।”

“वह मेरे लिए मामूली बातें हैं। मैं एनकाउंटर स्पेशलिस्ट हूँ। मेरे बहुत दुश्मन हैं।” देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा, “मैं तुम्हें यहाँ से फरार करवाने ही आया हूँ। ये मत पूछना क्यों, परन्तु मेरे इरादों के पीछे, बड़ा खान तक पहुँचना नहीं है।”

“आखिर तुम चाहते क्या हो ?”

“अगर तुम जेल से भाग जाना चाहते हो तो, मैं तुम्हारी मदद करना चाहता हूँ।”

“मुफ्त में ?”

"हाँ !"

"तीस करोड़ नहीं लोगे ?"

"नहीं !"

"ये ही बात मेरी समझ में नहीं आ रही कि तुम... ।"

"तुम बेकार की बात को समझने की कोशिश कर रहे हो । अगर नहीं निकलना चाहते तो... ।"

"मैं निकलना चाहता हूँ जेल से ।"

देवराज चौहान मुस्कुरा पड़ा ।

जब्बार मलिक देवराज चौहान को देखता रहा ।

"तुम्हें मेरा एहसान मानना चाहिए कि मैं तुम्हें जेल से फरार करवाने को कह रहा हूँ ।"

"जब ऐसा कर दोगे तब मैं अवश्य तुम्हारा एहसान मानूँगा ।"

जब्बार गम्भीर स्वर में बोला, "लेकिन ये ही एक बात समझ में नहीं आ रही कि तुम इस काम के बदले तीस करोड़ क्यों नहीं ले रहे । बड़ा खान तुम्हें पैसा देने को तैयार... ।"

"सच कहूँ ?"

"हाँ, कहो !"

"मैंने बहुत मोटी-मोटी रिश्वतें ली हैं । जिन मगरमच्छों ने रिश्वतें नहीं दीं, उनका एनकाउंटर कर दिया ।"

"ओह, तो ये है तुम्हारे एनकाउंटर का राज ?"

"मेरे पास इतना पैसा इकट्ठा हो चुका है कि अब उसे संभालना कठिन हो रहा है ।" देवराज चौहान ने कहा ।

"ऐसा है तो तुम्हें पुलिस की नौकरी छोड़कर, आराम से जिंदगी बितानी चाहिए ।"

"मैंने ऐसा किया तो बात बाहर आ जायेगी । मैं फँस जाऊँगा । जब तक ये खाकी मेरे जिस्म पर है, तब तक डिपार्टमेंट के लोग भी सम्भले रहते हैं । जुबान बन्द रखते हैं । वर्दी उतरी नहीं कि अपने ही साथी बदला लेने पर लग जाते हैं ।"

"ये बात तो है।" जब्बार ने सहमति की मोहर लगाई।

"ये खाकी, अपने को सलामत रखने की आड़ है, वरना नौकरी मैं खुद नहीं करना चाहता।"

"तुम!" जब्बार बोला, "बड़ा खान को, ये कह सकते थे कि तुम मुझे मुफ्त में....।"

"तुम मुझे ठीक लगे। मैंने तुमसे बात कर ली। बड़ा खान को मैंने देखा नहीं। जानता नहीं, और फोन पर ऐसी बातें मैं तय नहीं करता। मैं जानता हूँ कि तुम्हारे मन में मेरे लिए शक है कि मैं तुम्हें मुफ्त में जेल से बाहर क्यों निकाल रहा हूँ। मैं इस स्थिति में होता तो मुझे भी शक होता। लेकिन धीरे-धीरे तुम ठीक हो जाओगे।"

"मुझे अभी भी यकीन नहीं आ रहा कि तुम जो कह रहे हो वह सच है। तुम मुझे जेल से बाहर निकालोगे।"

"जल्दी ही ये बात सामने आ जायेगी। वैसे तुम क्या चाहते थे कि बड़ा खान तुम्हें जेल से निकाल ले जाता। वह अपनी इस कोशिश में कभी भी कामयाब नहीं हो सकता। तुम पर सख्त पहरा है।" देवराज चौहान बोला।

"तुम मुझे कैसे बाहर निकालोगे?"

"मैंने प्लानिंग कर ली है।"

"क्या?"

"कल बताऊँगा।" कहने के साथ ही देवराज चौहान उठ खड़ा हुआ।

"जा रहे हो?" जब्बार मलिक बेचैन हो उठा।

"लेकिन मुझे जेल से निकालोगे कब?"

"परसों।"

"पक्का?" जब्बार के चेहरे पर अविश्वास के भाव थे।

"परसों इस वक्त तक तुम जेल से बाहर, खुली हवा में साँस ले रहे होगे जब्बार!"

"तुम सच में कोई पैसा नहीं लोगे मुझे फरार करवाने की एवज में?" जब्बार ने खुद को जैसे तिलिस्म में फँसा पाया।

"ये ही बात सोचते रहो।" देवराज चौहान ने मुस्कुराकर कहा, "अब उठो। कुर्सियाँ वापस रखो और अपनी कोठरी में पहुँचो कि तुम्हें ताले में बन्द करके जाऊँ और बाकी के काम पूरे करूँ ?"

जब्बार उठते हुए बोला।

"क्या यहाँ के पहरेदार तुम्हारी योजना में शामिल हैं ?"

"हम जो करने जा रहे हैं, उसमें सिर्फ मैं और तुम ही शामिल हैं।"

"ये कैसे सम्भव हो सकता है कि... ।"

"वक्त आने पर देख लेना।"

□□□

देवराज चौहान ने जेलर को चाबी लौटाई।

"बोला कुछ वह ?" जेलर ने चाबी थामकर पूछा।

"दो-तीन मुलाकातों के बाद बोलेगा। मैं उससे बातें करके, उसके दिमाग को सही रास्ते पर ला रहा हूँ।" देवराज चौहान ने कहा।

"हैरानी होगी कि अगर वह इस तरह मुँह खोल दे। पुलिस तो उसके साथ हर मुमकिन तरकीब लड़ा चुकी है।"

"जब्बार रास्ते पर आ जायेगा।" देवराज चौहान मुस्कुरा पड़ा।

"एक गनमैन ने मुझे अपने मोबाइल से फोन करके बताया कि जब्बार फोन पर बातें कर रहा है।" जेलर बोला।

"मैंने बात कराई थी उसकी।"

"कल भी तुमने बात कराई थी।"

"हाँ !" देवराज चौहान शांत था।

"किससे ?"

"क्या ये बताना जरूरी है ?"

जेलर देवराज चौहान को देखने लगा।

"मैं जो कर रहा हूँ, वह सब मेरी प्लानिंग का हिस्सा है कि जब्बार को लाइन पर ला सकूँ।" देवराज चौहान ने कहा, "फिर भी आप जानना चाहते हैं कि मैंने किससे बात कराई तो दो दिन बाद इसका जवाब दे दूँगा।"

"इंस्पेक्टर यादव !" जेलर ने गम्भीर स्वर में कहा, "जब्बार बहुत खतरनाक है। मैं नहीं चाहता कि उसे कुछ करने का मौका मिले। ये तो तुमने देख ही लिया होगा कि उसे बड़ा खान यहाँ से फरार नहीं करवा सकता।"

"यस सर ! मैं आपकी इस बात से सहमत हूँ।"

"तो तुम्हें चाहिए कि दिल्ली वालों को इस बारे में अपनी रिपोर्ट दे दो कि जब्बार यहाँ सुरक्षित है।"

"मैं कुछ और सोच रहा हूँ सर !"

"क्या ?"

"जब्बार मलिक को दिल्ली ले जाकर तिहाड़ जेल में रखा जाये। वह बहुत सुरक्षित जेल है।"

"तो तुम्हें लगता है कि जब्बार यहाँ से भाग सकता है।"

"ये बात नहीं सर। परन्तु तिहाड़ जेल में वह ज्यादा सुरक्षित ढंग से कैद में रहेगा।"

"ये तुम जानो। इस बारे में तुम्हें दिल्ली वालों से बात करनी चाहिए। मेरा काम कैदियों को ठीक से रखना है।"

"ठीक है सर। मैं दिल्ली वालों से इस बारे में बात करूँगा। वैसे कल दिल्ली से एक इंस्पेक्टर और आ रहा है।"

"वह क्यों ?"

"मेरे से रिपोर्ट लेने। जब्बार की रिपोर्ट किसी और तरीके से भेजने के लिए मेरे को मना कर दिया गया है। क्योंकि बड़ा खान के हाथ बहुत लम्बे हैं। पुलिस डिपार्टमेंट में उसके लोग हैं। मुझे पहले ही कह दिया गया था कि मेरे पहुँचने के दो-तीन दिन बाद इंस्पेक्टर राजपाल सिंह को भेजा जायेगा। इंस्पेक्टर राजपाल शायद कल आ जाये सर। इस बारे में मुझे अभी फोन आया है।"

"ये सब तुम्हारा काम है और तुम जानते हो कि ये काम तुमने कैसे करना है ।"

"जी सर !" देवराज चौहान ने जेलर से हाथ मिलाया, "मैं कल आऊँगा सर !"

देवराज चौहान बाहर निकला तो सब-इंस्पेक्टर राधे श्याम शर्मा भी बाहर आ गया ।

"जब्बार से बहुत बढ़िया बात हुई सर ?" शर्मा ने पूछा ।

"हाँ, आज मुझे सफलता मिली !" देवराज चौहान ने सामान्य स्वर में कहा ।

दोनों बाहर की तरफ बढ़े जा रहे थे ।

"बड़ा खान के बारे में बताया उसने कुछ ?"

"ऐसा ही समझो । मेरे और जब्बार के बीच एक समझौता हुआ है ।"

"कैसा समझौता सर ?"

"ये मैं तुम्हें नहीं बता सकता । सीक्रेट बात है । यूँ समझो कि बड़ा खान का बुरा वक्त शुरू हो गया है ।"

"ऐसा सर ?"

"हाँ !"

"फिर तो जब्बार ने बड़ा खान के बारे में जरूर कोई खास बात बताई है ।"

देवराज चौहान मुस्कुरा पड़ा ।

दोनों जेल से बाहर आकर पार्किंग की तरफ बढ़े एकाएक देवराज चौहान ठिठक कर बोला ।

"ओह, मैं अभी आया ! जेलर से एक बात करनी रह गई, तुम पार्किंग में गाड़ी तक चलो, मैं आया ।" इतना कहकर देवराज चौहान पलटकर जेल के बड़े से गेट की तरफ बढ़ता चला गया ।

सब-इंस्पेक्टर राधे श्याम शर्मा ने ठिठककर देवराज चौहान को जाते देखा । उसके चेहरे पर सोच के भाव नाच रहे थे । फिर पलटकर सामने पार्किंग की तरफ बढ़ गया । साथ ही जेब से मोबाइल निकाला और नम्बर

मिलाने लगा कि दूसरी तरफ बेल जाने लगी । शर्मा ठिठककर बात होने का इंतजार करने लगा ।

"हैलो !" उधर से आवाज आई ।

"मेरे पास बुरी खबर है ।" शर्मा ने तेज स्वर में कहा ।

"क्या ?"

"जब्बार और इंस्पेक्टर सूरजभान यादव के बीच कोई समझौता हो गया है । सूरजभान ने ही ये बात मुझे बताई है । मेरे पूछने पर उसने ये ही कहा कि समझो आज से बड़ा खान के बुरे दिन शुरू हो गए हैं ।"

"क्या समझौता हुआ दोनों के बीच ?"

"ये नहीं पता लगा । सूरजभान नहीं बता रहा ।"

"ये ही तो काम की बात है, पता लगाओ ।"

"ये बात जानने के लिए ज्यादा जोर दूँगा तो सूरजभान मुझ पर जरूर शक करेगा ।"

"जैसे भी हो, ये बात पता लगाओ ।"

"कोशिश करता हूँ ।"

"वह औरतों का रसिया है या नहीं ?"

"मौका नहीं लगा इस बारे में बात करने का ।"

"तुम बहुत ढीले चल रहे हो शर्मा ।"

"मैं ठीक काम कर रहा हूँ । जो वर्दी मैंने पहनी है, मुझे उसका भी ध्यान रखना पड़ता है ।"

"जो नोट तुम्हें बड़ा खान की तरफ से मिलते हैं, उनका ज्यादा ध्यान रखो ।" कहकर फोन बन्द कर दिया गया ।

देवराज चौहान दूर से ही शर्मा को मोबाइल पर बात करते देख रहा था । वह जानबूझकर शर्मा से अलग हुआ था कि क्या उसकी कही बात सुनकर शर्मा कहीं फोन करता है और शर्मा ने फोन किया । देवराज चौहान के मन में ये शक बैठा हुआ था कि शर्मा बड़ा खान का आदमी हो सकता है । ये शक तब-से शुरू हुआ था जब बड़ा खान ने उसे फोन पर कहा था कि शर्मा के लाये खाने में जहर हो सकता है । यहीं से शक का बीज पड़ा था और

जब भी वह जब्बार से मिलकर आता तो शर्मा दिलचस्पी के साथ पूछता है कि जब्बार से क्या बातें हुईं ? शर्मा ने देवराज चौहान को पास आते देखा। फोन उसने जेब में रख लिया था।

"बहुत जल्दी आ गए सर ?" शर्मा कह उठा।

"बात इतनी जरूरी नहीं थी। रास्ते से आ गया। कल कर लूँगा।" देवराज चौहान ने लापरवाही से कहा।

दोनों कार में जा बैठे। शर्मा ने कार आगे बढ़ा दी।

"ए.सी.पी. साहब के पास चलें सर ?" शर्मा ने पूछा।

"नहीं। मुझे किसी बाजार में ले चलो। भीड़-भरे बाजार में। कुछ सामान खरीदना है।" देवराज चौहान ने कहा।

"जी !"

शर्मा सामान्य गति से कार चला रहा था।

"आप जेलर साहब से कह रहे थे कि दिल्ली से इंस्पेक्टर साहब आ रहे हैं ?" शर्मा बोला।

"इंस्पेक्टर राजपाल सिंह।"

"वह क्यों सर ?"

"जब्बार के बारे में मैंने उसे रिपोर्ट देनी है।"

"सर, रिपोर्ट तो आप फोन पर भी... ।"

"बड़ा खान के लोग पुलिस के बीच में हैं। फोन पर बताई रिपोर्ट बाहर भी जा सकती है।"

"जब्बार के बारे में ऐसी भी क्या रिपोर्ट है कि उसे इतना गुप्त रखा जा रहा है।"

"ये डिपार्टमेंट की बातें हैं।"

"कुछ मुझे भी बताइये सर कि जब्बार खान से आपकी क्या बात हुई ?" शर्मा कह उठा।

"मुझे बात को बाहर करना मना है शर्मा।"

"बात बाहर नहीं जायेगी सर। मेरा आपसे वादा है।"

"ये बात है तो जान लो कि जब्बार मलिक ने मुँह खोल दिया है। उसने मुझे बड़ा खान की भीतरी बातें बताई। उसके खास लोगों के बारे में और उनके ठिकानों के बारे में बताया।" देवराज चौहान ने कहा।

"सच सर ?" शर्मा के होंठों से निकला।

"हाँ। ये बात तुम किसी से कहना नहीं।"

"नहीं कहूँगा सर। लेकिन उसने इतनी आसानी से आपको क्यों बताया। पहले तो वह... ।"

"मेरा उसके साथ समझौता हुआ है। तुम्हें बताया तो है।"

"क्या समझौता सर ?"

"वह मुझे बड़ा खान के बारे में बताएगा और मैं उसे जेल से फरार करवा दूँगा।"

"ओह, आप उसे जेल से फरार करवा रहे हैं ?" शर्मा ने देवराज चौहान को देखा।

"बेवकूफ हो तुम। ये सब तो मैंने उसका मुँह खुलवाने के लिए नाटक किया है और वह मेरी बातों में फँस गया।"

"आप तो बहुत चालाक हैं सर।" शर्मा मुस्कुराया, "वरना जब्बार तो काबू में नहीं आ रहा था।"

"अभी तो वह और बताएगा। ये तो शुरूआत भर है। बड़ा खान अब ज्यादा देर बच नहीं सकेगा।"

"आप बड़ा खान का एनकाउंटर कर देंगे सर ?"

"ऐसे लोगों का एनकाउंटर ही किया जाता है।"

"बड़ा खान का एनकाउंटर जरूर करना सर। हमारे देश में वह बहुत दहशत फैला रहा है। बड़ा खान का ठिकाना आपको पता चला गया ?"

देवराज चौहान ने मुस्कुराकर शर्मा को देखा

"क्या हुआ सर ?"

"ज्यादा मत पूछो। जो बताया है, वह ही ज्यादा हो गया। सब बातें अपने तक रखना।"

"बेशक मेरी जान चली जाये, परन्तु ये बातें मुँह से नहीं निकलेंगी।"

"शाबाश !" देवराज चौहान ने कहकर सिगरेट सुलगा ली ।

"सर, रात के लिए बोतल का इंतजाम करूँ ?"

"वह ही अभी पड़ी है ।"

"कुछ और चाहिए हो तो बता दीजिये ।" शर्मा मुस्कुराया ।

"और ?" देवराज चौहान ने शर्मा को देखा ।

"रात को शराब के साथ, कुछ और । कई अफसर कह देते हैं कि किसी को ले आओ ।"

"समझा । !" देवराज चौहान ने सिर हिलाया ।

"कहें तो बढ़िया चीज का इंतजाम कर... ।"

"नहीं ! ये बातें मुझे पसन्द नहीं । इन कामों के लिए मेरी पत्नी ही बहुत है ।"

"आपकी मर्जी सर !"

कुछ देर बाद शर्मा ने कार को भीड़ भरे बाजार के बाहर रोक दिया ।

"सर, ये ऐसा बाजार है जहाँ आपको जरूरत की हर चीज मिलेगी । मैं गाड़ी पार्किंग में लगाकर आता.... ।"

"तुम्हारी जरूरत नहीं शर्मा । मैं अकेले ही बाजार घूमना चाहता हूँ ।" देवराज चौहान बोला ।

"ठीक है सर ! मैं आपका इंतजार करता हूँ ।" शर्मा ने कहा ।

"बेहतर होगा कि तुम वापस चले जाओ । यहाँ मुझे काफी वक्त लग जायेगा । मैं तुम्हें शाम को फ्लैट पर ही मिलूँगा ।"

"आप कहें तो मैं चार घण्टे भी इंतजार कर लूँगा सर ।"

"जरूरत नहीं !" देवराज चौहान ने कार का दरवाजा खोलते हुए कहा, "तुम पाँच बजे मुझे फ्लैट पर मिलना ।"

"जी !"

देवराज चौहान बाहर निकला और बाजार की तरफ बढ़ गया ।

कार में बैठा शर्मा उसे जाता देखता रहा । परन्तु फौरन देवराज चौहान भीड़ में शामिल होकर नजर आना बन्द हो गया ।

शर्मा ने मोबाइल निकालकर नम्बर मिलाया और तुरन्त ही बात हो गई-
“बहुत बुरी खबर है ।” शर्मा ने कहा, “जब्बार ने इंस्पेक्टर सूरजभान यादव के सामने मुँह खोल दिया है ।”

“क्या कह रहे हो शर्मा ?”

“मैं सच कह रहा हूँ, इंस्पेक्टर यादव ने मुझे राजदार बनाकर ये बात बताई है । इंस्पेक्टर यादव और जब्बार के बीच समझौता हो गया है कि वह बड़ा खान के बारे में सब कुछ बताएगा और इंस्पेक्टर यादव उसे जेल से बाहर निकाल देगा । जबकि इंस्पेक्टर यादव का कहना है कि उसका ऐसा कोई इरादा नहीं है । उसने तो मुँह खुलवाने के लिए जब्बार से ऐसा कहा है ।”

“जब्बार धोखेबाजी नहीं कर सकता ।”

“उसने ऐसा कर दिया है । तुम्हें मेरी बात का भरोसा करना चाहिए । इंस्पेक्टर यादव ने राजदार बनाकर मुझे ये सब बातें कहीं ।’”

“यकीन नहीं होता ।”

“इंस्पेक्टर सूरजभान यादव ने कहा कि जब्बार ने बड़ा खान के बारे में बताना शुरू कर दिया है । कल वह और बातें बताएगा । वह कहता है कि जब्बार के मुँह से उसे बहुत महत्वपूर्ण बातें पता चली हैं और आगे भी पता चलेंगी ।”

“मुझे सच में विश्वास नहीं हो रहा ।”

“बकवास मत करो । मत भूलो कि ये खबर मैं दे रहा हूँ ।”

उधर से गहरी साँस लेने का स्वर शर्मा के कानों में पड़ा ।

“जब्बार ने बड़ा खान के खास लोगों के बारे में और उनके ठिकानों के बारे में बताया है इंस्पेक्टर यादव को ।”

“बहुत गलत किया जब्बार ने ।”

“जब्बार को इंस्पेक्टर यादव ने अपनी बातों में फँसा लिया है । धोखे में फँस गया जब्बार ।”

“जब्बार इतना बेवकूफ नहीं है कि इंस्पेक्टर की बातों में आ जाये ।”

“वह आ चुका है । अब क्या करोगे ?”

"मेरा काम ऊपर तक पहुँचाना है। बड़ा खान को बताऊँगा। जो करना होगा वह ही करेगा।"

"मेरी राय है कि इंस्पेक्टर यादव को खत्म कर दिया जाये।" शर्मा ने कठोर स्वर में कहा।

"तुम्हारी राय बड़ा खान तक पहुँचा दूँगा।"

"बेशक ये काम करने को मुझे दे दिया जाये। ठीक मौका देखकर मैं इंस्पेक्टर यादव को शूट कर दूँगा।"

"बड़ा खान के हुक्म के बिना तुम कुछ नहीं करोगे।"

"मैं अपनी राय दे रहा हूँ।"

"अब कहाँ है सूरजभान यादव ?"

"एक मार्केट में गया है। कहता है कुछ खरीदना है। शाम पाँच बजे मुझे फ्लैट पर मिलने को कहा है।"

"तुम्हें साथ क्यों नहीं ले गया ?"

"मैंने साथ जाने की कोशिश की, परन्तु उसने मना कर दिया।"

"एक बात बताओ शर्मा।" उधर से आती सोच-भरी आवाज कानों में पड़ी, "अगर जब्बार ने सूरजभान यादव को कुछ बताया है तो जेल से निकलने के पश्चात उसे ए.सी.पी. संजय कौल के पास जाकर उसे बताना चाहिए था। जब्बार का मामला ए.सी.पी. कौल ही देख रहा है। वह जेल से सीधा बाजार क्यों गया ?"

"इंस्पेक्टर सूरजभान यादव अपनी रिपोर्ट ए.सी.पी. कौल को नहीं दे रहा। जब्बार से जुड़ी बातों की रिपोर्ट लेने दिल्ली से कोई इंस्पेक्टर राजपाल सिंह आजकल में जम्मू आ रहा है। यादव अपनी रिपोर्ट उसके हाथों में सौंपेगा या उसे बताएगा। कोई तो खास बात होगी कि जो यादव ने दिल्ली से किसी को बुलाया है।"

"इसका मतलब जब्बार ने सच में मुँह खोल दिया है।"

"तो क्या अब तक तुम मेरी बात को बकवास समझ रहे थे ?" शर्मा ने गुस्से में कहा।

“मेरा काम बातें लेकर, बड़ा खान तक पहुँचाना है। मैं कुछ नहीं समझ रहा था।”

“तो जो तुम्हारा काम है, वह ही करो।”

“औरत वाली बात की तुमने ?”

“की। परन्तु उसने मना कर दिया।”

“ओह! मैं तो सोच रहा था कि रूबी को भेजूँगा। वह उसे शीशे में उतार लेगी।”

“मैंने जो तुम्हें बताया है, वह सब कुछ बड़ा खान को बताओ।”

“मुझे पता है मुझे क्या करना है।” कहने के साथ ही उधर से फोन बन्द कर दिया गया।

सोचो में डूबे शर्मा ने फोन जेब में डाला और कार स्टार्ट करके आगे बढ़ा दी।

उधर कुछ दूर बाजार की भीड़ में छिपा देवराज चौहान फोन पर बातें करते हुए शर्मा को ही देख रहा था। शर्मा का चरित्र उसके लिए संदिग्ध बनता जा रहा था। फोन पर बात करना मामूली बात थी। परन्तु उसके कार से जाते ही किसी से फोन पर बात करने लग जाने का मतलब था कि ताजा हालात के बारे में किसी को बता रहा है। जेल के बाहर भी जब उसने कुछ देर के लिए शर्मा को छोड़ा तो शर्मा तुरन्त फोन पर बातें करने लग गया था। शर्मा का चरित्र संदिग्ध होने की वजह से ही देवराज चौहान उसे झूठी बातें बता रहा था कि जब्बार के साथ उसका समझौता हो गया है और जब्बार ने मुँह खोल दिया है। अगर शर्मा सच में खबरें बड़ा खान को दे रहा था तो बड़ा खान के हाथ उसकी आशा से कहीं ज्यादा लम्बे थे।

□□□

आधा घण्टा पैदल चलने के बाद देवराज चौहान बाजार के दूसरे कोने से बाहर निकला तो सामने सड़क को पाया। वाहन वहाँ से आ- जजा रहे थे। टैक्सी की तलाश में देवराज चौहान सड़क किनारे पैदल ही चल पड़ा।

बाजार में इस बात का पता नहीं चल पा रहा था कि कोई पीछे है या नहीं, परन्तु सड़क किनारे चलने वालों की संख्या ज्यादा नहीं थी। वह पीछे भी नजर रखने लगा और टैक्सी को भी देखता रहा कि वह खाली जाती मिल जाये।

जम्मू जैसे शहर में टैक्सी से ज्यादा ऑटो का चलन था। ऐसे में टैक्सी मिलना आसान नहीं था।

पाँच-सात मिनट बाद ही देवराज चौहान को उस इंसान का पता चल गया जो उसके पीछे था।

वह पैंतीस बरस का स्वस्थ व फुर्तीला इंसान था। कद पाँच फुट दस इंच था। उसने कमीज-पैंट पहनी हुई थी और वह करीब तीस कदम पीछे आ रहा था। उसके सिर के बाल आगे से साफ थे। देवराज चौहान समझ गया कि ये तब से पीछे है, जब से वह शर्मा से अलग हुआ था। यानी उस पर बड़ा खान पूरी तरह नजर रखवा रहा है। चलते-चलते देवराज चौहान ने मोबाइल निकालकर, वक्त देखा।

दोपहर के ढाई बज रहे थे।

कुछ आगे जाने पर देवराज चौहान को एक रेस्टोरेंट दिखा तो लंच के इरादे से और पीछा करने वाले से निबटने की सोचकर रेस्टोरेंट में प्रवेश कर गया।

चूँकि वह पुलिस की वर्दी में था, इसलिए रेस्टोरेंट वालों ने उसे पूरी तवज्जो दी।

उसे एक खाली टेबल दी गई। खाना भी जल्दी ही उसे सर्व कर दिया गया।

इस दौरान देवराज चौहान पीछा करने वाले को देख चुका था कि वह भी रेस्टोरेंट के भीतर आकर वेटर को खाने का ऑर्डर दे रहा है। उसकी टेबल बाहर निकलने वाले दरवाजे के करीब थी।

देवराज चौहान को लगा कि उस हरी कार में बैठे, उसे इसी व्यक्ति की झलक मिली थी। परन्तु विश्वास के साथ कुछ नहीं कह सकता था। लेकिन एक बात उसे सतर्क कर देने के लिए काफी थी कि जब से शर्मा ने उस हरी

कार में बैठे लोगों से जाकर बात की थी, तब से ही हरी कार को उसने अपने पीछे नहीं देखा था।

स्पष्ट था कि पीछा करने वालों ने कार बदल ली है और अब वह सतर्कता से काम ले रहे हैं।

देवराज चौहान ने लंच समाप्त किया।

पीछा करने वाला अभी भी लंच में व्यस्त था और रह-रहकर देवराज चौहान को देख लेता था।

देवराज चौहान ने टिप के साथ 'बिल' पे किया और देखा कि पीछा करने वाले ने भी लंच करना छोड़ दिया है और वेटर को बुलाकर लंच के पैसे दे रहा है।

देवराज चौहान उठा और बाहर की तरफ बढ़ गया।

रेस्टोरेंट से बाहर निकलते ही देवराज चौहान बाईं तरफ सरककर खड़ा हो गया।

चंद पल बीते कि पीछा करने वाला बाहर निकला। फौरन ही ठिठककर देवराज चौहान की तलाश में हर तरफ नजर मारी कि उसी पल देवराज चौहान को अपने पास पहुँचा पाकर उसने सूखे होंठों पर जीभ फेरी।

"हैलो !" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा, "तुम अच्छी तरह जानते हो कि मैं इंस्पेक्टर सूरजभान यादव हूँ।"

वह हड़बड़ाया हुआ सा चुप रहा।

"मैं जानता हूँ तुम मेरा पीछा कर रहे हो।"

"मैं... मैं पीछा क्यों करूँगा पुलिस वाले का।" वह कह उठा।

"चलो, उधर पार्किंग में चलकर बात करते... !"

"मैं क्यों चलूँ तुम्हारे साथ। तुम खामख्वाह मेरे गले पड़ रहे... ।"

"ठीक है तब पुलिस स्टेशन चलते हैं।"

"लेकिन मैंने किया क्या है ?" वह खीझकर कह उठा।

"मेरा पीछा।"

"तुम्हें गलतफहमी हुई है, मैं भला तुम्हारा पीछा क्यों करूँगा।"

देवराज चौहान ने उसकी आँखों में देखकर कठोर स्वर में कहा- "तुम अच्छी तरह जानते हो कि दिल्ली में मुझे एनकाउंटर स्पेशलिस्ट कहा जाता... ।"

"ठीक है, ठीक है !" मैंने तुम्हारी बात मान ली । चलो पार्किंग में !" वह नर्वस-सा कह उठा ।

देवराज चौहान उसे लेकर पास ही रेस्टोरेंट की पार्किंग में एक कार की ओट में पहुँचा ।

"अपनी रिवॉल्वर निकालो ।" देवराज चौहान ने कहा ।

वह अब घबराया हुआ था । उसके चेहरे पर हिचक आ ठहरी ।

देवराज चौहान ने होलेस्टर से रिवॉल्वर निकाली तो वह फौरन कह उठा ।

"ठहरो, देता हूँ !" इसके साथ ही उसने रिवॉल्वर निकाली और देवराज चौहान को दे दी ।

देवराज चौहान ने अपनी रिवॉल्वर की नाल उसके माथे पर रख दी ।

"ये... ये क्या कर रहे हो ?" वह भय से चीखा ।

वहाँ एक दो लोग और भी थे । ये देखकर वह पीछे हो गए । चूँकि देवराज चौहान पुलिस की वर्दी में था इसलिए किसी ने शोर-शराबा डालने की चेष्टा नहीं की ।

"मैं चाहता हूँ तुम अपने बारे में तुरन्त सब कुछ बिना पूछे बता दो या फिर गोली खाकर मर जाओ ।"

"ब... बताता हूँ !" वह हांफता-सा कह उठा ।

"बोलो !" देवराज चौहान ने रिवॉल्वर वाला हाथ नीचे किया ।

"म... मैं बड़ा खान के लिए काम करता हूँ और इस वक्त तुम पर नजर रख रहा हूँ । तुम जो करते हो । जहाँ जाते हो, उसकी रिपोर्ट बड़ा खान के आदमी को देता हूँ ।"

"बड़ा खान कहाँ मिलेगा ?"

"मुझे क्या पता ? मैं बड़ा खान के किसी ठिकाने को नहीं जानता । फोन पर ऑर्डर मिलता है । पैसे घर पहुँच जाते हैं । बड़ा खान के लिए इसी तरह के काम मुझे करने पड़ते हैं ।" उसने घबराये स्वर में कहा ।

"नाम ?"

"जसबीर सिंह ।"

"पहले तुम हरे रंग की कार में मेरा पीछा कर रहे थे । मुझ पर नजर रख रहे थे ।"

"ह... हाँ !"

"अब जो सवाल मैं तुमसे पूछने जा रहा हूँ उसके जवाब पर ही तुम्हारा जीना-मरना तय है ।"

"म... मैंने तुम्हें सब सच बताया है ।"

"मैं ये कह रहा हूँ कि इस सवाल के जवाब में भी सच बोलना ।"

वह थूक निगलकर रह गया ।

"परसों जब मैं सब इंस्पेक्टर शर्मा के साथ जेल से बाहर निकला तो तुम वहाँ हरी कार में मुझ पर नजर रख रहे थे ।"

"ह...हाँ ! मेरे साथ, एक और भी था ।"

"तब शर्मा तुम्हारे पास आया ।"

उसने सहमति से सिर हिलाया ।

"शर्मा ने तुमसे क्या कहा कि तुम लोग फौरन वहाँ से चले गए ।"

वह एकाएक चुप कर गया ।

"इसी सवाल के जवाब पर तुम्हारा जीना-मरना तय है । वैसे मैं शर्मा की असलियत जान चुका हूँ ।"

"क... कैसी असलियत ?" उसके होंठों से निकला ।

"जो तुम बताने से हिचक रहे हो ।"

"मैं... मैं !"

"मेरे सवाल का जवाब दो ।" देवराज चौहान ने दाँत भींचकर कहा और रिवॉल्वर की नाल पुनः उसके माथे पर रख दी ।

"तु... तुम्हारा ख्याल ठीक है ।" वह डर से काँपकर कह उठा ।

"कैसा ख्याल ?"

"कि... कि शर्मा बड़ा खान के लिए काम करता है ।"

देवराज चौहान मुस्कुरा पड़ा । रिवॉल्वर वाला हाथ नीचे कर लिया ।

"तुम सच बोले, तुम्हारी जिंदगी बच गई।" देवराज चौहान ने कहा।

उसने राहत भरी साँस ली।

"चले जाओ यहाँ से। मैं किसी को नहीं बताऊँगा कि हमारी कोई बात हुई है। समझ गए?"

"ह...हाँ! मैं तुम्हारा एहसानमन्द रहूँगा। अगर तुमने शर्मा को नहीं बताया कि मैंने तुम्हें उसके बारे में बता दिया है।"

"मैं शर्मा तो क्या, किसी से भी कुछ नहीं कहूँगा। परन्तु तुम मुझे दोबारा पीछे नजर मत आना।"

उसने सिर हिलाया और वहाँ से चला गया।

देवराज चौहान ने अपनी रिवॉल्वर होलेस्टर में डाली। उसकी रिवॉल्वर जेब में रखी और पार्किंग से बाहर आ गया। सड़क पर नजर मारी, परन्तु टैक्सी कहीं नहीं दिखी।

देवराज चौहान ने जेब से मोबाइल निकालकर जगमोहन का नम्बर मिलाया।

"सूरजभान की हालत अब कैसी है?" देवराज चौहान ने पूछा।

"बेहतर है। सुधार हो रहा है।" जगमोहन की आवाज कानों में पड़ी।

"उसकी पत्नी-बच्चे पास ही हैं उसके?"

"हाँ! सोहनलाल भी उनकी बहुत मदद कर रहा है। सब ठीक है, तुम जम्मू में हो?"

"हाँ!"

"क्या कर रहे हो?"

"जो कर रहा हूँ ठीक कर रहा...।"

"तुम्हारी चिंता है मुझे, सूरजभान बनकर पुलिसवालों के बीच तुम कब तक सलामत रह सकते हो?"

"अभी तक तो सब ठीक चला रहा है।" कहकर देवराज चौहान ने फोन बन्द कर दिया और जेब में रखा।

तभी उसे एक खाली ऑटो मिल गया।

देवराज चौहान ऑटो में बैठा और कैलाश कॉलोनी चलने को कहा। चालीस मिनट बाद देवराज चौहान कैलाश कॉलोनी में 40 नम्बर का मकान ढूंढ रहा था। वह मकान जल्दी ही उसे मिल गया। जो कि दो मंजिला मकान था। बाहर दो-तीन कारें खड़ी थीं। एक-दो लोगों को आते-जाते भी देखा। देवराज चौहान खुले गेट से भीतर प्रवेश कर गया। चूँकि वह पुलिस की वर्दी में था, भीतर मौजूद दो-तीन लोगों की नजर उस पर जा टिकी। एक व्यक्ति तुरन्त पास आया और बोला।

"हुक्म कीजिये साब ?"

"राठी से मिलना है।" देवराज चौहान ने कहा।

"खास काम है साब जी ?"

"उसे कहो दिल्ली से इंस्पेक्टर सूरजभान यादव आया है।"

"मैं अभी आया।" कहकर वह मकान के साइड के दरवाजे से भीतर प्रवेश कर गया।

मिनट भर बाद वह वापस आया तो उसके साथ साठ बरस का एक आदमी भी था जिसने कीमती कपड़े पहने हुए थे। गले में सोने की चैन, हाथ की उँगलियों में सोने की अंगूठियाँ थीं।

देवराज चौहान उसे देखते ही समझ गया कि वह ही राठी है।

परन्तु वह व्यक्ति देवराज चौहान को देखते ही बोला।

"तुम इंस्पेक्टर सूरजभान यादव नहीं हो।"

देवराज चौहान मुस्कुराया और उसके पास आकर छाती पर लगी नेम प्लेट की तरफ इशारा किया।

"मैं जिसे इंस्पेक्टर सूरजभान यादव समझकर बाहर आया था, वह तुम नहीं हो।"

"हम भीतर चलकर बात करें।" देवराज चौहान ने कहा।

"नहीं !" उसने स्पष्ट इंकार कर दिया, "मैं तुमसे न तो मिलना चाहता हूँ, न ही बात करना चाहता हूँ।"

देवराज चौहान ने जेब से मोबाइल निकाला और जगमोहन के नम्बर मिलाता कह उठा।

"इंस्पेक्टर सूरजभान यादव ने एक बार तुम्हारी जिंदगी बख्शी थी। याद है कि भूल गए?"

राठी की आँखें सिकुड़ी।

देवराज चौहान ने फोन कान से लगा लिया। उधर बेल जा रही थी। फिर जगमोहन की आवाज कानों में पड़ी।

"हैलो!"

"सूरजभान की बात कराओ राठी से।"

"रुको!"

देवराज चौहान ने मोबाइल राठी की तरफ बढ़ाकर कहा।

"इंस्पेक्टर सूरजभान यादव से बात कर लो।"

उलझन में फंसे राठी ने फोन थामा और कान से लगा लिया।

तभी मध्यम-सी आवाज कानों में पड़ी।

"राठी!"

"ओह इंस्पेक्टर साहब!" राठी के चेहरे पर मुस्कान उभरी, "मेरा नमस्कार कुबूल कीजिये। मैं....।"

"राठी!" आवाज से लग रहा था कि जैसे वह हिम्मत इकट्ठी करके बोल रहा है, "तुम्हारे सामने भी एक इंस्पेक्टर सूरजभान यादव खड़ा है। ये तुमसे जो कहे, वह काम पूरा करना ये मेरा आदमी है।"

"आपका हुक्म हो गया तो समझिये काम हो गया।" राठी ने हँसकर कहा।

इसके साथ ही उधर से फोन बन्द हो गया।

राठी ने देवराज चौहान को फोन थमाते हुए कहा- "आइये भीतर चलते हैं।"

भीतर साधारण से ड्राइंग रूम में दोनों जा बैठे। राठी ने वहाँ मौजूद एक आदमी से चाय और खाने-पीने का सामान लाने को कहा। फिर देवराज चौहान से बोला- "आप इंस्पेक्टर यादव साहब के बहुत खास लगते हैं।"

जवाब में देवराज चौहान मुस्कुराया।

"मेरे लिए सेवा बताइये।" राठी ने कहा।

"मुझे एक ऐसे बन्दे की जरूरत है जो खतरा उठाना जानता हो । मुसीबत मोल ले सके । सूरजभान ने मुझे कहा था कि मैं आप पर भरोसा कर सकता हूँ । किन्हीं भी हालातों में आप मुझे धोखा नहीं देंगे ।"

"सूरजभान की खातिर मैं कुछ भी कर सकता हूँ । अगर आप मुझे पूरी बात बता दें तो काम करने में मुझे आसानी रहेगी ।"

"मैंने एक आदमी को जम्मू जेल से निकालना है ।"

"ओह !"

"वह छः फुट लम्बा, अच्छी सेहत वाला है । मुझे उस जैसा ही आदमी चाहिए कि वह मेरे साथ पुलिस की वर्दी पहनकर, उस कोठरी में जाये और वापसी में पुलिस की वर्दी में कैदी मेरे साथ हो । आपका हाजिर किया बन्दा उसकी जगह कोठरी में रह जायेगा कि उस वक्त सब ये ही समझें कि कैदी अपनी जगह पर मौजूद है ।"

"बहुत खतरनाक योजना है तुम्हारी ।"

"बस ये ही एक रास्ता है उस कैदी को बाहर निकालने का ।"

राठी की पैनी निगाह देवराज चौहान पर थी ।

"पुलिस वाले होकर तुम गैरकानूनी काम कर रहे हो ।"

"इसकी फिक्र आप न करें ।"

"सूरजभान तुम्हारे इरादे जानता है ?"

"नहीं ! आप चाहें तो उससे बात कर सकते हैं ।" देवराज चौहान ने कहा ।

"मुझे सूरजभान ने कहा है कि तुम मुझसे जो कहो, उसे मैं पूरा करूँ ।"

"ये आपकी मर्जी कि आप अब उससे बात करना चाहते हैं या... ।"

"करना चाहता हूँ । नम्बर मिलाकर दो ।"

देवराज चौहान ने फोन निकालकर जगमोहन से बात की ।

"सूरजभान से राठी बात करना चाहता है ।" कहकर देवराज चौहान ने फोन राठी को दे दिया ।

राठी ने फोन कान से लगा लिया ।

कुछ पलों बाद सूरजभान की आवाज राठी के कानों में पड़ी ।

"कहो राठी !"

"तुम्हारा आदमी बहुत ही खतरनाक काम करने को कह रहा है, ये कहता है कि... ।"

"राठी !" सूरजभान की आवाज कानों में पड़ी, "ये जो भी कहता है उसे पूरा करो । सवाल मत करो ।"

"मैं समझ गया ।" कहकर राठी ने फोन देवराज चौहान को देकर कहा, "तुम अपने किसी आदमी को फोन करते हो, फिर वह सूरजभान से बात कराता है । तुम सीधे सूरजभान को क्यों नहीं फोन करते ?"

"ये बात तुम्हें उसी से पूछनी चाहिए थी । फिर भी तुम्हें बता देता हूँ कि सूरजभान घायल है और मेरे दो साथी उसकी देखभाल कर रहे हैं । सूरजभान का परिवार भी, सूरजभान के साथ है ।"

"ओह, कैसे घायल हुआ सूरजभान ?"

"ये बातें करके बात को लम्बा मत करो । मेरी जरूरत तुमने जान ली है कि मुझे कैसा आदमी चाहिए ।"

राठी चुप रहा ।

"ऐसा आदमी है तुम्हारे पास ?"

"इंतजाम हो जायेगा । तुम मुझे अपना नम्बर दे दो । मैं कल सुबह तुम्हें फोन करूँगा ।"

देवराज चौहान ने राठी को अपना फोन नम्बर दिया और वहाँ से बाहर आकर पैदल ही आगे बढ़ गया ।

शाम के पाँच बज रहे थे ।

देवराज चौहान ऑटो-टैक्सी की तलाश में आगे बढ़ा जा रहा था कि फोन बजा ।

"हैलो !" देवराज चौहान ने बात की ।

"इंस्पेक्टर सूरजभान यादव !" बड़ा खान की आवाज कानों में पड़ी ।

"तुम ?" देवराज चौहान के चेहरे पर कड़वी मुस्कान उभरी ।

"सुबह तुमने कहा कि जब्बार के साथ तुम्हारा समझौता होने जा रहा है अगर उसने तुम्हारी शर्तें मान ली तो... ।"

"हाँ, ऐसा ही कहा था मैंने !"

"क्या बात हुई जब्बार से ?"

"तुम्हारे हाथ तो बहुत लम्बे हैं बड़ा खान। ये बात तुम्हें पता नहीं चली कि मेरी क्या बात हुई जब्बार से ?"

दो पलों की खामोशी के बाद आवाज आई बड़ा खान की।

"मुझे पता चल चुका है, परन्तु मैं तुम्हारे मुँह से सुनना चाहता हूँ।"

देवराज चौहान समझ गया कि शर्मा ने ही आगे खबर भेजी है। उसके अलावा तो ये बात उसने किसी से की नहीं थी। देवराज चौहान की आँखों के सामने शर्मा का चेहरा नाच उठा।

"जब्बार मलिक से मेरा समझौता हो गया है। सुनकर तुम्हें दुःख होगा।

"क्या ?"

"वह मुझे तुम्हारे बारे में सब कुछ बताएगा और मैं उसे जेल से बाहर निकाल दूँगा।"

"जब्बार मलिक ऐसा घटिया इंसान नहीं है।"

"वह बहुत बढ़िया इंसान है। उसने आज मुझे तुम्हारे बारे में बहुत कुछ बताया। तुम्हारे आदमियों के बारे में बताया। उनके ठिकानों के बारे में बताया। वह समझौते पर खरा उतर रहा है।"

"मैं तुम्हारी बात पर यकीन नहीं कर सकता। जब्बार ऐसा नहीं है।"

"मैं तुम्हें यकीन दिलाना भी नहीं चाहता। कल जब्बार मुझे और भी बहुत बातें बताएगा। मैं उसे रजिस्टर और पेन देकर आया हूँ। वह सब बातें लिखता रहेगा। कल मैं जाऊँगा तो रजिस्टर मुझे दे देगा।"

बड़ा खान की आवाज नहीं आई।

"चुप क्यों हो गए ?" देवराज चौहान सड़क के किनारे आगे बढ़ा जा रहा था।

"जब्बार ऐसा नहीं है।"

"तो तुम चाहते हो कि मैं तुम्हें यकीन दिलाऊँ ?" देवराज चौहान हँसा।

बड़ा खान की आवाज नहीं आई।

"मैं तुम्हें यकीन भी दिला सकता हूँ।" देवराज चौहान ने कहा।

"कैसे ?" बड़ा खान की आवाज कानों में पड़ी।

"चार-पाँच दिनों के बाद जब्बार मलिक को मैं जेल से फरार करवा दूँगा। उसने ईमानदारी से मुझे सब कुछ बताया है तो मैं भी अपनी बात पूरी करूँगा, उसे जेल से बाहर निकलवा दूँगा।"

"अगर तुमने ये ही काम करना था तो मेरे से तीस करोड़ लेकर करते।"

"मैं तुम्हारे बारे में जानना चाहता था। ताकि तुम्हारा एनकाउंटर करके नाम कमा सकूँ।"

"तीस करोड़ कमाना ज्यादा समझदारी वाली बात है।"

"मैंने अपनी समझ के हिसाब से जब्बार से सौदा किया है।"

"यकीन नहीं होता तुम्हारी बात पर।"

"कुछ दिन रुको। जब्बार के जेल से फरार होने की खबर सुनकर यकीन कर लेना।"

"मैं अभी भी तुम्हें तीस करोड़ दे सकता हूँ।"

"क्यों ?"

"जब्बार से मिलने वाली जानकारी किसी को न बताओ। वह सारी मेरे हवाले कर दो।"

"कभी नहीं। उस जानकारी को पाने के लिए मुझे जब्बार पर बहुत मेहनत करनी पड़ी। उसे रास्ते पर लाना आसान नहीं था। मैं इस बात को कभी नहीं भूल सकता कि तुमने दिल्ली में मुझे मारने की चेष्टा की थी।"

"मैं तुम्हें तीस करोड़ की रकम देने को तैयार हूँ।"

"जिसकी मैं जरूरत नहीं समझता।"

"इस बार के हमले में तुम मर भी सकते हो। हर बार किस्मत साथ नहीं देती।"

"बेशक मैं मर जाऊँ लेकिन तुम्हारा काम हो ही गया बड़ा खान।"

"जब्बार इतना भी नहीं जानता कि मुझे मुसीबत में डाल सके।" बड़ा खान की शांत आवाज आई।

"वह तुम्हारे बारे में बहुत कुछ जानता है, जिसकी तुम्हें खबर भी नहीं है। अभी तक आज सुबह उसने जो बताया है, वह बातें ही पुलिस के लिए काफी हैं तुम्हारी गर्दन पकड़ने के लिए। लेकिन तुम्हारा एनकाउंटर मैं करूँगा।"

देवराज चौहान ने कहा और फोन बन्द कर दिया। चेहरे पर जहरीले भाव नाच रहे थे। मन ही मन अंदाजा लग रहा था कि बड़ा खान इस वक्त क्या सोच रहा होगा और अब क्या करेगा ?"

तभी खाली टैक्सी मिल गई। देवराज चौहान ने टैक्सी को रुकवाया और उसमें बैठते हुए ड्राइवर को बताया कि कहाँ जाना है। टैक्सी आगे बढ़ गई।

देवराज चौहान अब फ्लैट पर जाना चाहता था।

तभी फोन बजा। देवराज चौहान ने बात की। दूसरी तरफ शर्मा था।

"सर आप कहाँ हैं, आपने पाँच बजे मुझे फ्लैट पर आने को कहा था। पर आप यहाँ नहीं हैं।"

"आ रहा हूँ।" देवराज चौहान ने कहा।

□□□

शर्मा बाहर ही इंतजार करता मिला। देवराज चौहान ने उसे चाबी दी तो वह फ्लैट खोलते कह उठा।

"बाजार से कुछ खरीददारी नहीं की सर ?"

"नहीं ! आज ये देखा कि वहाँ क्या-क्या मिलता है। कल फिर जाऊँगा।" देवराज चौहान ने कहा।

दोनों भीतर प्रवेश कर गए।

"कॉफी बनाऊँ सर ?" शर्मा बोला।

"हाँ !"

शर्मा किचन में चला गया।

देवराज चौहान ने वर्दी उतारकर, दूसरे कपड़े पहने और सिगरेट सुलगाकर बैठ गया।

कुछ ही देर में शर्मा दो कॉफी बना लाया। एक उसे दी, दूसरी खुद थामकर बैठ गया।

देवराज चौहान ने कॉफी का घूँट भरा तो शर्मा कह उठा।

"सर, मैं अभी तक जब्बार के बारे में सोच रहा हूँ !"

"उसके बारे में सोचने को है ही क्या ?" देवराज चौहान मुस्कुराया ।

"आपने किस चालाकी के साथ उस पर काबू पा लिया । उसके भीतर की बातें जान लीं ।"

"कल वह और भी बहुत कुछ बताने वाला है ।"

"बड़ा खान के बारे में आपको काफी कुछ बता दिया जब्बार ने ?"

"बहुत कुछ !" देवराज चौहान ने कॉफी का घूँट लेते शर्मा को देखा ।

"तो आपको फौरन बड़ा खान के खिलाफ एक्शन लेना चाहिए ।"

"मैं जल्दबाजी नहीं करता । मेरा काम करने का ढंग औरों से अलग है । लेकिन वह बचेगा नहीं । मेरी नजर अब बड़ा खान पर टिक चुकी है । उसकी मौत के साथ ही ये खेल खत्म होगा ।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा ।

"मुझे और बताइये सर कि जब्बार ने क्या-क्या बताया ?" शर्मा ने मुस्कुराकर कहा ।

"तुम ये बातें जानने को बहुत उत्सुक हो रहे हो ।"

"उत्सुकता तो होती ही है सर कि जब्बार का मुँह कोई नहीं खुलवा सका और ये काम आपने कर दिखाया ।"

"इस बारे में मुझसे ज्यादा मत पूछो । तुम्हें जल्दी ही मैं बड़ा खान की लाश दिखाऊँगा ।"

शर्मा सिर हिलाकर रह गया ।

"बड़ा खान का एनकाउंटर करने के लिये मैंने अपना काम शुरू कर दिया है ।" देवराज चौहान बोला ।

"ओह !"

"लेकिन आप तो अकेले जम्मू आये थे । आपके आदमी तो मैंने देखे नहीं ।" शर्मा कह उठा ।

"ये ही तो मेरा काम करने का ढंग है कि मरने वाले को पता नहीं चलता कि उसकी मौत आ गई है । मैं कहीं भी अकेला नहीं जाता परन्तु अकेला दिखता हूँ । बड़ा खान मुझ पर नजर रखवा रहा है । ये मैं जानता हूँ । परन्तु

वह ये नहीं जानता कि मेरे आदमी उसके खिलाफ काम शुरू कर चुके हैं। वह अब बच नहीं सकेगा।"

"ओह! आप तो बहुत ही छुपे रुस्तम हैं।"

देवराज चौहान ने मुस्कुराकर कॉफी का प्याला रखा।

"मैं कुछ देर आराम करना चाहता हूँ शर्मा।"

"जरूर सर। मुझे बताइये मैं आपके लिए क्या करूँ?" शर्मा बोला।

"जो तुम्हारे मन में आये करो।"

"रात के खाने में कुछ खास चाहिए तो कह दीजिये।" शर्मा ने कहा।

"कुछ भी खास नहीं।" देवराज चौहान उठता हुआ बोला, "जो तुम खाओगे, मैं खा लूँगा।"

□□□

रात के नौ बज रहे थे।

देवराज चौहान ने व्हिस्की का गिलास खाली करके टेबल पर रखा कि शर्मा वहाँ आकर बोला।

"खाना आ गया है सर। बाद में खाएँगे या अभी लगा दूँ?"

"ले आओ।" देवराज चौहान ने शर्मा को देखा।

"लाया सर।" कहकर शर्मा किचन में चला गया।

देवराज चौहान का चेहरा बेहद शांत था।

दस मिनट में शर्मा ने उसके सामने टेबल पर खाना लगा दिया। खाने की महक भूख बढ़ा देने वाली थी। देवराज चौहान ने खाने पर नजर मारी फिर शर्मा से बोला।

"बैठ जाओ शर्मा।"

शर्मा पास ही कुर्सी पर बैठ गया।

"तुम्हारा परिवार है?" देवराज चौहान ने पूछा।

"जी सर। दो बेटियाँ हैं स्कूल में पढ़ती हैं।" शर्मा ने मुस्कुराकर कहा।

"ये खाना तुम खाओ।"

देवराज चौहान के शब्द शर्मा के लिए किसी विस्फोट से कम न थे।

शर्मा चिहुँककर खड़ा हो गया।

"क्या सर ?" उसके होंठों से निकला।

"मैंने ऐसा तो कुछ नहीं कहा कि तुम इतने हैरान-परेशान हो जाओ।" देवराज चौहान मुस्कुरा पड़ा।

"प...पर सर, म...मैं तो घर जाकर खाना खाऊँगा। मेरी पत्नी मेरे साथ ही खाना खाती है।" शर्मा घबराये स्वर में कह उठा।

"खाना खाओ !" देवराज चौहान का स्वर कठोर हो गया।

"न... नहीं सर !" शर्मा बेचैन, परेशान सा कह उठा।

"हैरानी है कि तुम मेरे साथ खाना नहीं खा सकते।" देवराज चौहान उसी लहजे में बोला।

"न... नहीं सर ! म... मैं ये खाना नहीं खाऊँगा।" शर्मा घबरा गया था।

"क्यों ?"

शर्मा ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी और देवराज चौहान को देखने लगा। देवराज चौहान ने रिवॉल्वर निकालकर, शर्मा की तरफ कर दी।

शर्मा काँप उठा।

"तुम खाना नहीं खाओगे तो मैं तुम्हें गोली मार दूँगा।" देवराज चौहान ने सख्त स्वर में कहा।

"अ... आप ऐसा नहीं कर सकते। भला खाना न खाने की वजह से आप मुझे गोली क्यों मारेंगे ?"

"मैं सब कुछ कर सकता हूँ, ये बात अभी तुम नहीं जानते। बैठ जाओ।"

"न... नहीं सर, मैं घर जाऊँगा।"

"बैठो !" देवराज चौहान गुर्रा उठा।

शर्मा काँपती टाँगो से वापस बैठ गया।

"ये खाना तुम क्यों नहीं खा रहे, ये बात मैं जानता हूँ।"

"क... क्या जानते हैं ?"

"ये ही तो मैं तुम्हारे मुँह से सुनना चाहता हूँ।" देवराज चौहान की आवाज में कठोरता थी।

"म... मुझे अभी भूख नहीं ।"

"शर्मा !" देवराज चौहान खतरनाक स्वर में कह उठा, "बड़ा खान अब मुझे हर हाल में मार देना चाहेगा ।"

शर्मा की निगाह देवराज चौहान पर थी । वह घबराया सा था ।

"और आज बड़ा खान के पास मौका है मुझे खाने में जहर देने का ।"

"य... ये आप क्या कह रहे हैं सर ?"

"मैं जानता हूँ तुम बड़ा खान के लिए काम करते हो ।"

"न... नहीं सर !" शर्मा के होंठों से निकला ।

"नहीं करते ?"

"न... नहीं सर !"

"तो बड़ा खान ने मुझे फोन पर झूठ कहा ?"

"क्या कहा ?"

"कि शर्मा उसका आदमी है ।"

"बड़ा खान ऐसा नहीं कह सकता । वह भला आपको ऐसा क्यों कहेगा ?"

"इसलिए कि बड़ा खान से मेरी दोस्ती हो गई है । मैं उसके कहने पर जब्बार को जेल से बाहर निकालने जा रहा हूँ ।"

"क्या ?" शर्मा हैरान हो उठा ।

"वह मुझे करोड़ों रुपया दे रहा है इस काम के । उसने ही मुझे बताया कि शर्मा अपना ही आदमी है ।"

"आप झूठ कह रहे हैं ।"

"क्यों ?"

"अगर बड़ा खान से दोस्ती हो गई होती तो... ।" शर्मा ने होंठ भिंच लिए ।

"अपने शब्द पूरे करो ।" देवराज चौहान बोला ।

"तो आप इस तरह रिवॉल्वर निकालकर मेरी तरफ न तानते ।"

देवराज चौहान के चेहरे पर कुटिलता भरी मुस्कान नाच उठी ।

"कम से कम तुमने ये तो स्वीकार किया कि तुम बड़ा खान के लिए काम करते हो ।"

शर्मा होंठ भींचे देवराज चौहान को देखता रहा ।

"अब ये भी बता दो कि तुम खाना क्यों नहीं खाना चाहते ?"

शर्मा चुप ।

"मैं बता देता हूँ । बड़ा खान के कहने पर तुमने खाने में जहर डाला है आज ।"

शर्मा के होंठ अभी भी भींचे रहे ।

"हाँ बोलो !"

"हाँ !" शर्मा के स्वर में दृढ़ता के भाव थे ।

देवराज चौहान ने रिवॉल्वर वापस रख ली और मुस्कुराकर बोला ।

"मुझसे घबराने की जरूरत नहीं । क्योंकि मैं इंस्पेक्टर सूरजभान यादव नहीं हूँ ।"

"क्या ?" शर्मा ने आँखें सिकोड़कर देवराज चौहान को देखा ।

"हैरान हो गए ?"

"तुम इंस्पेक्टर सूरजभान यादव नहीं हो ?"

"नहीं !" देवराज चौहान ने इंकार में सिर हिलाया, "मैं नहीं हूँ पुलिस वाला ।"

"तुम्हारी वर्दी... तुम्हारा कार्ड और... ।"

"सब नकली हैं । मैं देवराज चौहान हूँ । डकैती मास्टर देवराज चौहान ।"

"विश्वास नहीं होता, तुम मुझे बेवकूफ बना... ।"

देवराज चौहान ने होंठों पर लगी मूँछें उतार दीं ।

शर्मा अचकचाकर उसे देखने लगा ।

"तुमने कभी देवराज चौहान की तस्वीर देखी है ?" देवराज चौहान ने होंठों पर मूँछें पुनः चिपका लीं ।

"न... नहीं ।"

"देखी होती तो मुझे अब तक पहचान लिया होता ।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा ।

शर्मा देवराज चौहान को देखता रहा, फिर बोला- "तुम इंस्पेक्टर सूरजभान यादव के नाम पर क्या कर रहे हो। यादव खुद कहाँ पर है ?"

"आओ बाहर चलते हैं।" देवराज चौहान उठते हुए बोला, "डिनर भी करेंगे और बातें भी हो जाएँगी। बड़ा खान भी मेरी असलियत नहीं जानता लेकिन तुम जान चुके हो कि मैं देवराज चौहान... ।"

"तुमने मुझे क्यों बताया ?"

"बाहर चलो, बातें भी हो जाएँगी।"

दोनों बाहर निकलकर पुलिस कार में बैठे। शर्मा ने कार आगे बढ़ा दी।

"मुझे अभी तक ये जानकर हैरानी हो रही है कि तुम इंस्पेक्टर यादव न होकर देवराज चौहान, डकैती मास्टर हो।"

देवराज चौहान ने सिगरेट सुलगा ली।

"तुमने सच बात कही है ?" शर्मा पुनः बोला।

"मैं झूठ क्यों कहूँगा ?"

"इंस्पेक्टर यादव कहाँ है ?"

"उसे मैंने कहीं रखा हुआ है।"

"तुमने ऐसा क्यों किया ? आखिर तुम करना क्या चाहते हो, इंस्पेक्टर यादव बनकर ?"

"मुझे खबर मिली थी कि इंस्पेक्टर सूरजभान यादव, जब्बार जैसे खतरनाक मुजरिम की रखवाली करने जम्मू जा रहा है। यादव का ये जम्मू का पहला दौरा था। उसे वहाँ कोई नहीं जानता। उधर पता चला कि बड़ा खान जब्बार को जेल से निकालना चाहता है तो मुझे लगा कि इस मामले से मैं मोटा पैसा कमा सकता हूँ।"

"परन्तु तुम तो डकैतियाँ डालते हो। इस काम में कैसे आ गए ?"

"मैं सभी काम कर लेता हूँ। नोट मिलने चाहिए।"

शर्मा कुछ बेचैन दिख रहा था।

"तुम कबसे बड़ा खान के लिए काम कर रहे हो ?"

"जब से जब्बार जेल में आया। वह मुझे अच्छे पैसे देता है।"

"और आज उसके कहने पर तुमने मेरे खाने में जहर डाल दिया।"

"मैंने ऐसा कुछ नहीं किया। खाना ही बड़ा खान के आदमी दे गए थे। मैं जानता था कि आज खाने में जहर है।"

देवराज चौहान मुस्कुरा पड़ा।

शर्मा सामान्य रफ्तार से कार सड़क पर चला रहा था।

"इधर मोड़ लो।" देवराज चौहान ने आगे आ रहे चौराहे को देखकर कहा।

"इधर तो सुनसान सड़क है।"

"कोई बात नहीं। हममें आराम से बातें हो जाएँगी।"

शर्मा ने उस तरफ ही कार ले ली और बोला।

"तुम कहते हो तुम इस मामले में पैसे कमाने आए हो। ऐसा है तो तुमने बड़ा खान की तीस करोड़ की बात...।"

"मेरे हिसाब से तीस करोड़ कम था।" देवराज चौहान मुस्कुराया।

"कम था?" कार चलाते शर्मा ने देवराज चौहान पर नजर डाली।

"कम से कम 50 तो होना चाहिए।"

"तुमने 50 के बारे में बात की, बड़ा खान से?"

"मैं क्यों करूँ, वह खुद रकम बढ़ाएगा।"

"तुम्हें मालूम था कि बड़ा खान तुम्हें खाने में जहर दे सकता है?"

"हाँ! आज इस बात का एहसास हुआ कि बड़ा खान अब मुझे मारना चाहेगा और मेरा ख्याल ठीक निकला।"

"सच बात तो ये है कि मुझे तुम्हारी किसी बात पर यकीन नहीं हो रहा।"

"क्यों?"

"मुझे इस पर भी भरोसा नहीं कि तुम डकैती मास्टर देवराज चौहान हो।"

"मैं हूँ।"

"खैर, अब तुमने सब बता दिया है तो इस बारे में बड़ा खान से बात करूँगा। वह तुम्हें 50 करोड़ दे देगा।"

"तुम सच में मेरे बड़े काम आ रहे हो।"

"अगर तुम देवराज चौहान हो तो ये तुम्हारी हिम्मत है कि तुम पुलिस वालों के बीच घूम रहे हो। कभी भी तुम्हें कोई पहचान सकता है। इस तरह मूंछें लगाकर तुम खुद को बचा नहीं सकते।"

"मुझे पुलिस की वर्दी बचा रही है।" देवराज चौहान ने कहा, "कोई पुलिस वाला ये बात सोच भी नहीं सकता कि वर्दी में डकैती मास्टर देवराज चौहान उनके बीच भी बैठ सकता है।

"विश्वास के लायक ये बात ही नहीं है।"

"तुम ठीक कहते हो।"

"कार रोको जरा।" एकाएक देवराज चौहान बोला।

"क्यों ?"

"मुझे यहीं तक आना था। अब यहाँ से वापस जाना है। बहुत काम निबटाने हैं।"

शर्मा ने कार रोकी।

ये सुनसान इलाका था। यहाँ सर्दी सी महसूस हो रही थी। कार के शीशे खुले थे।

परन्तु देवराज चौहान ये देखकर चौंका कि शर्मा के हाथ में रिवॉल्वर दबी थी। उसके चेहरे पर कठोरता थी।

"ये क्या शर्मा ?"

"तुम मुझे यहाँ क्यों लेकर आये। क्या चाहते हो ?" शर्मा ने सतर्क स्वर में कहा।

"मैं तुम्हें यहाँ लेकर आया। ये क्या कहते हो। हम दोनों यहाँ आये हैं। मुझे यहाँ किसी से मिलना है।"

"किससे ?"

"बड़ा खान किसी को भेज रहा है, उससे मैंने बात करनी है।" देवराज चौहान ने कहा।

"ये नहीं हो सकता।" शर्मा सख्त स्वर में बोला, "ऐसा होता तो बड़ा खान तुम्हारे लिए जहर वाला खाना न भिजवाता।"

"तो तुम्हें मेरी बात पर यकीन नहीं ?"

"नहीं !"

"रिवॉल्वर हाथ में ही रखो और देखते रहो कि अभी मुझसे मिलने यहाँ बड़ा खान का भेजा आदमी आएगा ।"

"मैं जानता हूँ कि कोई नहीं आएगा ।"

"देखते रहो ।"

शर्मा संदिग्ध नजरों से देवराज चौहान को देखता रहा ।

देवराज चौहान ने सिगरेट सुलगाकर कश लिया ।

"तुम इंस्पेक्टर सूरजभान यादव ही हो । जानबूझकर खुद को देवराज चौहान कह रहे हो ।"

"मैं देवराज चौहान नहीं हूँ ।"

"ऐसी बातें करके तुम मुझे पागल बना रहे हो । मैं तुम्हारी बातों में नहीं फँसने वाला ।"

"तुम मेरी सच बात को मानने से इंकार कर रहे हो और झूठ को सच मान रहे... ।"

"चुप हो जाओ । तुम इंस्पेक्टर सूरजभान यादव हो और मुझे अपनी बातों में उलझा रहे... ।"

"शर्मा, मैं तुम्हें एक सच और बताना चाहता हूँ !" देवराज चौहान बोला ।

"क्या ?"

"मैंने तुमसे खाने से लेकर अब तक जो भी बातें कीं, वह सब बकवास थीं और एक ही बात सच है कि मैं डकैती मास्टर देवराज चौहान हूँ । इंस्पेक्टर सूरजभान यादव नहीं हूँ ।"

शर्मा दाँत भींचे देवराज चौहान को देखने लगा ।

"तुम्हें मेरी बात का यकीन नहीं आया ?"

"भाड़ में जाओ तुम । तुम्हारी बातें मुझे पागल कर रही हैं । मैं तुम्हें गोली मारने जा रहा.... ।"

उसी पल देवराज चौहान ने बाज की तरह झपट्टा मारा और उसकी रिवॉल्वर वाली कलाई पकड़कर दूसरी तरफ घुमा दी । उसी पल फायर की तेज आवाज हुई ।

गोली सामने का शीशा तोड़ती निकल गई ।

शर्मा ने रिवॉल्वर वाला हाथ आजाद कराने की चेष्टा की ।

परन्तु देवराज चौहान ने कई बार उसका रिवॉल्वर वाला हाथ, कलाई पकड़े स्टेयरिंग पर मारा और शर्मा के हाथ से रिवॉल्वर छिटककर नीचे, जूतों के पास जा गिरी । इसी के साथ देवराज चौहान ने दूसरे हाथ का घूँसा जोरों से उसके चेहरे पर मारा । शर्मा का सिर कार से टकराया । वह चीखा ।

देवराज चौहान ने रिवॉल्वर निकालकर उसकी कमर से लगा दी । ऐसा होते ही शर्मा थम सा गया ।

देवराज चौहान की आँखों में खतरनाक चमक लहरा रही थी ।

दोनों की नजरें मिलीं ।

"अब सुन शर्मा, मैं डकैती मास्टर देवराज चौहान ही हूँ । इंस्पेक्टर सूरजभान यादव नहीं ।"

शर्मा ठगा सा बैठा उसे देखता रहा ।

"तेरे को मुझ पर शक हुआ कि मैं तेरे साथ कुछ करने वाला हूँ तो तुझे उसी वक्त ही मुझे शूट कर देना चाहिए था । परन्तु तू तो बातों में लग गया । तूने वक्त का सही इस्तेमाल नहीं किया ।"

देवराज चौहान एक-एक शब्द चबाकर कह रहा था- "तूने बड़ा खान का साथ देकर जिस्म पर पहनी खाकी से गद्दारी की है ।"

शर्मा ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी । नजर देवराज चौहान पर थी । कमर में रिवॉल्वर लगी थी ।

"मैंने हालातों की मजबूरी में फँसकर खाकी पहनी तो मुझे खाकी की आड़ में गर्व महसूस हुआ । तब मुझे एहसास हुआ कि ये वर्दी वास्तव में खास है कि पुलिस वाले इसे पहनकर, फर्ज की राह पर चलते हुए खुद को कुर्बान कर देते हैं । लेकिन एक तू भी है जिसने खाकी की सही कीमत नहीं समझी और वर्दी पहनकर बड़ा खान की सेवा करने लगा ।"

"तुम डकैती मास्टर हो ।" शर्मा हिम्मत करके बोला, "तुम्हारे मुँह से ये बातें अच्छी नहीं लगतीं ।"

"लेकिन इस वक्त मैंने वह खाकी पहनी हुई है जिसे पहनकर मैं गर्व महसूस कर रहा हूँ। जब से मैंने इसे पहना है, कोई गलत काम नहीं किया। जो भी कर रहा हूँ, कानून के हक में कर रहा... ।"

"बकवास मत करो। तुम कोई तगड़े फ्रॉड हो।"

"और तुम खाकी के गद्दार हो।" देवराज चौहान के स्वर में दरिंदगी के भाव आ गए, "मैं तुम्हें शूट करने के लिए, तुम्हें इस एकांत में लाया। शायद तुम्हें अपनी मौत का विश्वास नहीं आ... ।"

"मुझे मारकर तुम्हें क्या... ।" शर्मा के शब्द अधूरे रह गए।

कार में एक के बाद एक तीन गोलियों की आवाज गूँजी। वहाँ बारूद की स्मैल फैल गई थी।

तीनों गोलियाँ शर्मा की कमर में जा धँसी थीं। वह वहीं सीट पर तड़पकर पसर गया था। देवराज चौहान ने उसकी कमर से रिवॉल्वर हटाई और कार की डोम लाइटें जलाईं। रौशनी में शर्मा का चेहरा दिखा। वह मर चुका था। आँखें फटी पड़ी थीं। देवराज चौहान ने 'डोम' लाईट जलते रहने दी। वह कार का दरवाजा खोलकर बाहर निकला और दरवाजा बन्द करके रिवॉल्वर जेब में रखी और पैदल ही वापस चल पड़ा। कार में शर्मा स्टेयरिंग सीट पर मरा पड़ा था। भीतर की लाईट जल रही थी। शर्मा को शूट करके देवराज चौहान को लग रहा था कि उसने अच्छा काम कर दिया है।

तभी देवराज चौहान का फोन बजने लगा।

"हैलो।" देवराज चौहान ने बात की।

"मैं राठी।" उधर से राठी की आवाज कानों में पड़ी।

"बोलो।"

"अगर तुम मेरे पास आ जाओ तो मैं तुम्हें काम का आदमी दिला सकता हूँ।"

"ठीक है। क्या तुम मेरे लिए कार भेज सकते हो। मैं इस वक्त ऐसी जगह पर हूँ जहाँ सवारी के लिए कुछ भी नहीं है।"

"भेजता हूँ। बताओ तुम कहाँ पर हो?"

□□□

देवराज चौहान जब राठी के पास पहुँचा तो रात के बारह बज रहे थे। राठी की भेजी कार ही उसे लेकर आई थी।

"माफ करना तुम्हें इस वक्त तकलीफ दी।" राठी उससे हाथ मिलाता कह उठा, "आओ तुम्हें तीन आदमी दिखाता हूँ। उसमें से जो भी काम का लगे चुन लेना। वह मेरे से पंद्रह लाख रुपये एडवांस लेगा, परन्तु तुम जैसा कहोगे, वह वैसा ही करेगा। कुछ हद तक मैंने उन्हें समझा दिया है कि उन्हें क्या करना पड़ेगा।"

"कहाँ हैं वह लोग ?" देवराज चौहान ने पूछा।

"उधर, कमरे में आओ।"

देवराज चौहान राठी के साथ कमरे में पहुँचा।

वहाँ जब्बार मलिक की उम्र के तीन लोग मौजूद थे। वैसी ही सेहत, वैसा ही कद।

"ये ठीक रहेगा।" तीनों को देखते ही देवराज चौहान ने एक की तरफ इशारा किया। उसका चेहरा जब्बार जैसा लग रहा था।

"ये तुम्हें कब-कहाँ चाहिए ?"

"दिल्ली पुलिस के इंस्पेक्टर की वर्दी में इसे कल सुबह दस बजे मेरे पास भेज देना। सीने पर इंस्पेक्टर राजपाल सिंह की नेम प्लेट लगी होनी चाहिए। बाकी सब कुछ इसे कल मैं समझा दूँगा।"

देवराज चौहान ने कहा और पता बताया जहाँ वह रह रहा था।

"कल काम करना है ?"

"परसों। परन्तु कल से ये मेरे साथ ही रहेगा।"

"ठीक है।"

देवराज चौहान ने राठी से कहा।

"कल तुम्हें पंद्रह लाख भी मिल जायेंगे। जो उसे दोगे।"

"उनकी जरूरत नहीं। वह मैं... ।"

"तुमने मेरा काम कर दिया है। ये ही बहुत है। खर्चा मुझे करने दो।"

□□□

अगले दिन दस बजे दिल्ली पुलिस की वर्दी पहने इंस्पेक्टर राजपाल सिंह फ्लैट पर पहुँचा।

देवराज चौहान ने उसे तसल्ली भरी नजरों से देखकर कहा।

"ठीक है। खाकी वर्दी में तुम पक्के पुलिस वाले लग रहे हो। नाम क्या है तुम्हारा ?"

"भूपेंद्र कालिया।"

"जब तक मेरे साथ हो, तब तक के लिए भूपेंद्र कालिया को भूल जाओ और इंस्पेक्टर राजपाल सिंह बन जाओ।"

"ठीक है।"

"पंद्रह लाख मिल गए तुम्हें ?"

"हाँ।"

"काम के बारे में क्या जानते हो ?" देवराज चौहान ने पूछा।

"इतना ही कि तुम मुझे जेल में ले जाओगे। वहाँ कोई कैदी, मेरी वर्दी पहनकर वापस तुम्हारे साथ चला जायेगा और देखने वाले ये ही समझेंगे कि मैं तुम्हारे साथ आया था और मैं ही वापस जा रहा हूँ। जबकि मैं कैदी के कपड़ों में उसकी कोठरी में होऊँगा।"

"बिल्कुल ठीक। परन्तु जल्दी ही ये बात खुल जायेगी। तुम फँस जाओगे।"

"मैं खुद को बचाने के लिए कोई कहानी तैयार कर लूँगा। एक-दो सालों में इस मामले से बच निकलूँगा। उसी दौरान राठी साहब मेरे लिए वकील का खर्चा भी देंगे।" भूपेंद्र कालिया ने कहा।

"राठी को कबसे जानते हो ?"

"12 सालों से मैं उनके लिए काम कर रहा हूँ।"

देवराज चौहान सिर हिलाकर रह गया।

"लेकिन एक बात मुझे समझ नहीं आई।" भूपेंद्र कालिया ने कहा।

"क्या ?"

"आप पुलिस वाले होकर किसी को इस तरह जेल से फरार करवा रहे हैं, इससे आप पकड़े जायेंगे।"

"मैं पुलिस वाला नहीं हूँ।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।

"ओह !"

"और मैं कोई भी काम गलत नहीं कर रहा। कानून के फायदे के लिए उस कैदी को जेल से निकाल रहा हूँ।"

उसने कुछ नहीं कहा।

उसके बाद देवराज चौहान वर्दी पहनकर तैयार हुआ।

ग्यारह बज गए थे।

देवराज चौहान ने ए.सी.पी. संजय कौल के मोबाइल पर फोन किया।

"हैलो !" कौल की आवाज कानों में पड़ी।

"गुड मॉर्निंग सर !" देवराज चौहान ने कहा।

"ओह, सूरजभान ! कैसे हो ?"

"बहुत अच्छा हूँ सर !"

"जब्बार के बारे में कोई सफलता मिली ?" उधर से ए.सी.पी. कौल ने पूछा।

"कोशिश चल रही है सर। मेरे ख्याल में वह दो-तीन दिन में रास्ते पर आ जायेगा।"

"मुझे बहुत अजीब लगेगा यदि तुमने बातों में फँसाकर उससे जानकारी ले ली। जबकि हमने उसका मुँह खुलवाने के लिए बहुत मेहनत की। परन्तु हम हार गए।"

"मैं उसका मुँह खुलवा लूँगा सर।"

"अच्छी बात है !"

"मैंने सब-इंस्पेक्टर शर्मा के लिए फोन किया था कि आज वह मेरे पास नहीं आया। उसके मोबाइल पर फोन किया तो बेल जा रही है, परन्तु उसने कॉल पिक नहीं की।"

"हैरानी है ! शर्मा तो जिम्मेदार व्यक्ति है। मैं किसी और को भिजवाता...।"

"जरूरत नहीं सर ! मुझे जेल में जब्बार से मिलने जाना है। शर्मा से बात हो जाये तो उसे वहीं भेज दीजिये।"

"ठीक है इंस्पेक्टर !"

देवराज चौहान ने मोबाइल जेब में रखकर भूपेंद्र कालिया से कहा।

"हमें अब चलना चाहिए। जेल में जाने से पहले मैं किसी बाजार में जाना चाहता हूँ।"

"मैं आपको ले चलता हूँ।" भूपेंद्र कालिया ने कहा।

दोनों फ्लैट से बाहर निकले। देवराज चौहान ने फ्लैट को लॉक करते हुए कहा।

"हमें टैक्सी लेनी होगी। मेरे पास गाड़ी का इंतजाम नहीं है। तुम कैसे आये थे ?"

"ऑटो पर।"

दोनों आगे बढ़ गए।

वे पुलिस की वर्दी में थे। परन्तु दोनों का ही पुलिस डिपार्टमेंट से कोई वास्ता नहीं था। उन्हें टैक्सी मिल गई थी। पहले वे बाजार गए। देवराज चौहान ने आधा घण्टा लगाकर बाजार से कुछ सामान खरीदा और भूपेंद्र कालिया के साथ उसी टैक्सी में, जम्मू सेंट्रल जेल की तरफ चल पड़ा।

"असल काम हमें कल करना है।" देवराज चौहान ने भूपेंद्र कालिया से कहा, "परन्तु आज तुम्हारा मेरे साथ जाना जरूरी है।"

इसलिए कि जेल वाले कल भी देखें तो कोई शक वाली बात न सोचें। तुम्हारा आना रूटीन में लें।"

"पुलिस की वर्दी पहनकर जेल में जाना। मुझे बहुत अजीब सा लग रहा है।" भूपेंद्र कालिया ने कहा।

"बेफिक्र रहो ! सब ठीक रहेगा। चेहरे को शांत रखो और पुलिस वालों की तरह चाल-ढाल अपना लो। खुद में विश्वास रखोगे तो बड़े से बड़ा काम भी कर लोगे।" देवराज चौहान ने कहा, "मैं हर रोज जेल जा रहा हूँ। मुझे कोई समस्या नहीं आई और तुम दिल्ली से आये इंस्पेक्टर राजपाल सिंह हो।"

"मेरे पास कोई आई कार्ड तो है नहीं।"

"मैं तुम्हारा आई कार्ड हूँ। चिंता मत करो।"

□□□

देवराज चौहान भूपेंद्र सिंह कालिया के साथ जेल पहुँचा। भूपेंद्र कालिया को इस बात का फायदा मिला कि वह देवराज चौहान के साथ है। जेल के बाहरी गेट पर खड़े सिपाहियों ने भूपेंद्र कालिया को टोका तो देवराज चौहान ने कहा कि इंस्पेक्टर साहब मेरे साथ हैं। उन्हें भीतर जाने दिया गया। देवराज चौहान ने हाथ में एक लिफाफा थाम रखा था। उसमें बाजार से की गई खरीददारी का सामान था। वे दोनों जेलर के कमरे में पहुँचे। जेलर सुधीर लाल वहाँ मौजूद नहीं था। उसके ऑफिस के बाहर स्टूल पर एक सिपाही बैठा था। उससे जेलर को बुलाने को कहकर, दोनों भीतर जा बैठे।

"अजीब सा लग रहा है मुझे और कुछ डर भी लग रहा है।" भूपेंद्र कालिया ने कहा।

जवाब में देवराज चौहान मुस्कुराकर रह गया।

दस मिनट बाद वहाँ कबीर अली आया।

"नमस्कार इंस्पेक्टर साहब !" कबीर अली मुस्कुराकर बोला, "जेलर साहब अभी आ रहे हैं। कुछ कैदियों में झगड़ा हो गया था। इसी मामले को निबटा रहे हैं। उन्होंने मुझे भेजा है यहाँ। चाय मंगवाऊँ आपके लिए ?"

"नहीं ! अभी नहीं !"

कबीर अली भूपेंद्र कालिया को देखकर कह उठा- "इन इंस्पेक्टर साहब को पहले कभी नहीं देखा।"

"दिल्ली से आज सुबह ही आये हैं। इंस्पेक्टर राजपाल सिंह।"

"ओह !" कबीर अली ने भूपेंद्र कालिया को सैल्यूट मारा।

भूपेंद्र कालिया मुस्कुराया।

"ये आज से मेरे साथ ही काम करेंगे।"

"ये तो अच्छी बात है सर ! वैसे जब्बार ने अभी तक मुँह नहीं खोला क्या ?"

"ये सवाल दो दिन बाद पूछना।" देवराज चौहान ने कहा।

"आज इंस्पेक्टर शर्मा साथ नहीं आये ?" कबीर अली ने पुनः पूछा।

"वह किसी काम में व्यस्त हैं, कुछ देर बाद आयेंगे।"

पंद्रह मिनट बाद जेलर आ गया।

वह भूपेंद्र कालिया से मिला। देवराज चौहान ने परिचय करा दिया था। उसके बाद देवराज चौहान, जब्बार की कोठरी की चाबी लेकर, भूपेंद्र कालिया के साथ बाहर निकला।

"आज चाय लाऊँ सर?" कबीर ने पूछा।

"हाँ! आज तीन लाना।" देवराज चौहान ने आगे बढ़ते हुए कहा।

कबीर अली चला गया।

"यहाँ फँस गए तो बचने का रास्ता भी नहीं म" भूपेंद्र कालिया धीमे स्वर में बोला।

"मैं रोज आ रहा हूँ।" देवराज चौहान ने कहा, "परन्तु फँसा नहीं।"

"हैरानी है कि तुम फंसे नहीं।"

देवराज चौहान ने कुछ नहीं कहा। दोनों आगे बढ़ते रहे।

दस मिनट में कई रास्तों को पार करने के बाद वे जब्बार की कोठरी पर पहुँचे।

"यहाँ तो तगड़ा पहरा है।" भूपेंद्र कालिया वहाँ फैले गनमैनों को देखते हुए धीमे स्वर में कहा।

"तुम पुलिस वाले हो और अपने को यहाँ वैसे ही दिखाओ।" देवराज चौहान ने कहा।

भूपेंद्र कालिया सम्भल गया। कोठरी पर पहुँचकर देवराज चौहान ने चाबी निकालकर दरवाजा खोला।

जब्बार तब सलाखों वाले गेट पर आ पहुँचा था।

"कैसे हो जब्बार?" देवराज चौहान ने पूछा।

"ठीक हूँ!" जब्बार की निगाह भूपेंद्र कालिया पर थी।

दरवाजा खोला गया।

"हटो हमें भीतर आना है।"

जब्बार पीछे हटा।

देवराज चौहान और भूपेंद्र कालिया ने भीतर प्रवेश किया।

देवराज चौहान तुरन्त एक तरफ हो गया कि बाहर फैले गनमैन उसे न देख सकें। जल्दी से उसने लिफाफे से कुछ सामान निकाला और जब्बार के सीमेंट वाले चबूतरे पर रख दिया।

"ये क्या ?" जब्बार के होंठों से निकला।

"बाहर आओ। बातें बाहर होंगी। हम ज्यादा देर भीतर रहे तो गनमैनों को अटपटा लगेगा।"

देवराज चौहान और भूपेंद्र कालिया बाहर निकल आये।

जब्बार मलिक भी कोठरी से बाहर निकला। देवराज चौहान ने अभी भी पहले की तरह लिफाफा थाम रखा था।

"वहाँ से कुर्सियाँ ले आओ। तीन कुर्सियाँ।"

जब्बार गाय की तरह उसी स्टोर की तरफ बढ़ गया।

कुछ ही पलों में वे तीनों कुर्सियों पर बैठे थे।

"ये... ?" जब्बार ने भूपेंद्र कालिया को देखा और चुप कर गया।

"ये मेरे साथ ही है।"

"क्या साथ है ?" जब्बार ने देवराज चौहान से पूछा।

"चिंता मत करो। ये असली पुलिस वाला नहीं है। नकली है। मैं तुम्हें जेल से फरार करवाने की तैयारी कर रहा हूँ।"

"ओह !" जब्बार ने पहलू बदला, "कैसे होगा ये सब कुछ ?"

"मैंने जो सामान तुम्हारी कोठरी में रखा है, वह शेव का सामान है। कैंची भी है। तुम कल सुबह नौ बजे कोठरी में छिपे तौर पर शेव करना शुरू कर दोगे। दाढ़ी-मूंछें सब साफ करनी हैं। उस सामान में छोटा सा गोल शीशा भी है। कैंची से तुमने अपने सिर के बाल काटकर छोटे कर लेने हैं। ये सब करने के बाद तुम्हें कोठरी के गेट पर नहीं आना है। यहाँ पहरा दे रहे गनमैन तुम्हें देख सकते है। ग्यारह बजे तक हम आ जायेंगे। आज की तरह हम तुम्हारी कोठरी के भीतर ही आयेंगे। परन्तु कल पाँच मिनट हम भीतर रुकेंगे। उन पाँच मिनटों में तुमने इसके जिस्म पर पड़ी इंस्पेक्टर की वर्दी पहन लेनी है और ये तुम्हारे कपड़े पहन लेगा। तुम दोनों की कद-काठी और चेहरे की बनावट काफी मिलती है। जब तुम पुलिस की वर्दी पहनकर

बाहर निकलोगे तो इस बदलाव को समझ पाना किसी के लिए आसान नहीं रहेगा। आज की तरह हम तीनों कल भी यहाँ बैठेंगे। उसके बाद जायेंगे। तुम मेरे साथ इंस्पेक्टर की वर्दी में बाहर जा रहे होगे और ये तुम्हारे कपड़ों में, जब्बार के रूप में कोठरी में होगा।"

"ये बिना दाढ़ी-मूँछों के होगा तो.... ।" जब्बार ने कहना चाहा।

"ये दाढ़ी-मूँछों में होगा। तुम जैसी दाढ़ी-मूँछें बनाने का ऑर्डर मैंने कल ही दे दिया था किसी को। आज शाम को मुझे तुम जैसी दाढ़ी मिल जायेगी जिसे कि ये लगा लेगा।" देवराज चौहान बोला।

"सुनने में ये कितना आसान लग रहा है।" जब्बार ने विचलित स्वर में कहा।

"कल कोई खामख्वाह की मुसीबत न आई तो करने में भी आसान होगा।"

"इस तरह तो तुम फँस जाओगे इंस्पेक्टर !" जब्बार मलिक बोला, "मेरे जाने के बाद इसका भेद खुलने की देर है कि तुम... ।"

"मेरी फिक्र मत करो।" देवराज चौहान मुस्कुराया, "अपने को बचाना मुझे आता है।"

जब्बार मलिक पहलू बदलकर बोला।

"मैं तुम्हें समझ नहीं पा रहा हूँ इंस्पेक्टर !"

"क्या नहीं समझे तुम ?"

"ये काम तुम बड़ा खान से पैसा लेकर करते तो मुझे कोई परेशानी नहीं होती परन्तु... ।"

"मेरा मुफ्त में तुम्हें जेल से निकालना, तुम्हें परेशान कर रहा है।"

"हाँ !"

"तो मत निकलो। जेल में ही रहो।"

जब्बार कुछ पल देवराज चौहान को देखता रहा फिर कह उठा- "तुम आखिर ये सब क्यों कर रहे हो ?"

"मेरा मन कहता है कि तुम्हें जेल से निकाल दूँ तो मैं तुम्हें.... ।"

"ये बात नहीं है। बात कुछ और भी है।" देवराज चौहान मुस्कुराया।

तभी कबीर अली चाय दे गया। तीनों चाय पीने लगे। परन्तु जब्बार मलिक के माथे पर लकीरें नजर आ रही थीं।

"बताओ, तुम मुझे जेल से क्यों निकाल रहे हो ?"

"अगर तुम इसी सवाल में उलझे रहोगे तो कल जेल से नहीं निकल पाओगे।"

जब्बार ने कुछ नहीं कहा। चाय का घूँट भरा।

"तुम यहाँ से बाहर नहीं जाना चाहते तो... ?"

"कितनी बार कहूँ कि मैं जेल से निकल जाना चाहता हूँ।" जब्बार कह उठा।

"तो अपना पूरा ध्यान जेल से निकलने पर लगा दो। खामख्वाह का कोई दूसरा सवाल न करो।"

तभी देवराज चौहान का मोबाइल बज उठा।

"बड़ा खान का फोन होगा।" जब्बार के होंठों से निकला।

देवराज चौहान ने फोन पर बात की। बड़ा खान का ही फोन था।

"तुम हर बार बहुत मौके पर फोन करते हो। खासतौर से तब जब मैं जब्बार से बात कर....।"

"सूरजभान मेरे आदमी तुम पर नजर रख रहे हैं। वह मुझे बता देते हैं कि तुम जेल में गए और जेल के भीतर मौजूद मेरे आदमी बता देते हैं कि अब तुम जब्बार से मुलाकात कर रहे हो।" बड़ा खान की आवाज कानों में पड़ी।

"तो अपने लम्बे हाथों का भरपूर फायदा उठा रहे हो।" देवराज चौहान का स्वर शांत था।

"शर्मा कहाँ है ?"

"तुम मुझ पर नजर रखवा रहे हो। तुम्हें पता होगा कि वह कहाँ है।"

"रात जब तुम शर्मा के साथ फ्लैट से निकले तो मेरे आदमी कार न स्टार्ट होने की वजह से, तुम्हारे पीछे नहीं जा सके थे।"

"अफसोस हुआ। रात तुम्हारा भेजा खाना बहुत स्वादिष्ट था।" देवराज चौहान ने तीखे स्वर में कहा।

"तुम्हें कैसे पता कि उसमें जहर था ?" बड़ा खान की आवाज कानों में पड़ी।

"ये बात तुम कैसे कह सकते हो कि मुझे ये बात पता चल गई थी ?"

"क्योंकि तुम अभी तक जिन्दा हो। जहर के बारे में शर्मा ने बताया तुम्हें ?"

"नहीं !"

"शर्मा है कहाँ ?"

"देर-सवेर में तुम्हें उसके बारे में खबर मिल जायेगी।" देवराज चौहान सख्त स्वर में बोला।

"तो तुमने उसे मार दिया।"

"वह तुम्हारे लिए काम करता था और मेरे लिए जहर भरा खाना लाया था।"

"तुम सच में खतरनाक हो।"

"तुम्हारे लिए और उन लोगों के लिए जो तुम्हारे लिए काम करते हैं। तुमने दो बार कोशिश कर ली मुझे मारने की। एक बार दिल्ली में और दूसरी बार रात जम्मू में। परन्तु मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सके।"

"मुझे तुम्हारे बारे में दोबारा से सोचना पड़ेगा। तुम वास्तव में शातिर हो।"

"तुम बचने वाले नहीं।"

"जब्बार से मेरी बात कराओ।"

"किसी कीमत पर नहीं। मैंने कल ही मना कर दिया था कि अब बात नहीं कराऊँगा।"

जब्बार की निगाह देवराज चौहान पर थी। जबकि भूपेंद्र कालिया इस बातचीत को कुछ खास नहीं समझ पा रहा था।

"तुम्हारे और जब्बार के बीच क्या चल रहा है ?" कानों में पड़ने वाला बड़ा खान का स्वर शांत था।

"मैं बहुत जल्द जब्बार को जेल से बाहर निकालने जा रहा हूँ। इससे तुम समझ सकते हो कि हालात कैसे हैं।"

"तुम कहना चाहते हो कि जब्बार ने मेरे बारे में सब कुछ बता दिया है।"

"तुम सोच भी नहीं सकते वहाँ तक, जहाँ तक उसने मुझे बताया है। तुम तो अब गए बड़ा खान।"

बड़ा खान की आवाज नहीं आई।

"इंस्पेक्टर सूरजभान यादव कच्ची गोलियाँ नहीं खेलता बड़ा खान। एनकाउंटर स्पेशलिस्ट मुझे यूँ नहीं कहा जाता। तुम जैसे लोगों तक पहुँचकर, शूट करना ही मेरा काम.... ।"

उधर से बड़ा खान ने फोन बन्द कर दिया था। देवराज चौहान ने मुस्कुराकर होंठ सिकोड़े और मोबाइल जेब में रख लिया। जब्बार मलिक माथे पर बल डाले देवराज चौहान को देख रहा था।

"क्या हुआ ?" देवराज चौहान हौले से हँसा।

"तुम आखिर क्या खेल खेल रहे हो ?"

"तुम्हारे लिए तो खेल सस्ता ही है। कल तुम जेल से बाहर निकलने जा रहे हो।"

"तुम्हारी बातों से स्पष्ट जाहिर है कि तुम बड़ा खान से कह रहे हो कि मैंने तुम्हें उसके बारे में सब बता दिया है।"

"तुम्हें इससे क्या फर्क पड़ता है।"

"पर तुम इतनी गलत बात बड़ा खान से क्यों कर रहे हो ?" जब्बार नाराजगी से बोला।

"बड़ा खान तुम पर ज्यादा भरोसा करता है या मुझ पर ?"

"तुम पर वह भरोसा क्यों करेगा ?" जब्बार बोला।

"ठीक कहा। तुम उसके आदमी हो। वह तुम पर ही भरोसा करेगा। जब यहाँ से बाहर निकलो और बड़ा खान से मिलो तो उसे बता देना। मैंने झूठ कहा था उससे। बात खत्म। देवराज चौहान ने सरल स्वर में कहा।

"परन्तु तुम बड़ा खान से ऐसा क्यों कह रहे हो ?"

"मुझे वह पसन्द नहीं। मैं अपनी बातों से उसे परेशान कर देना चाहता हूँ।"

"ये बात नहीं।"

"तो ?"

"तुम कुछ कर रहे हो । मुझे मुफ्त में जेल से निकाल रहे हो । बड़ा खान से कह रहे हो कि मैंने तुम्हें उसके बारे में सब बता दिया है । इन सब बातों के पीछे कुछ तो है ही ।" जब्बार ने विश्वास भरे स्वर में कहा ।

देवराज चौहान ने चाय का गिलास नीचे रखा और सिगरेट सुलगा ली ।

"तुम मुझे यूँ ही बाहर नहीं निकाल रहे कोई बात तो है ही ।"

"अगर तुम जेल से नहीं निकलना चाहते तो न सही ।"

जब्बार देवराज चौहान को घूरने लगा ।

"ये बात सच है कि मुझे बड़ा खान पसन्द नहीं ।" देवराज चौहान ने कहा, "तुम जो करते हो, बड़ा खान के इशारे पर ही करते हो । बड़ा खान आतंक फैलाने के ठेके लेता है और तुम जैसे लोगों के द्वारा काम को अंजाम देता है ।"

"कश्मीर को आजाद करवाना है हमने ।" जब्बार गुर्रा उठा ।

"बकवास मत करो । कश्मीर आजाद है और तुम जैसे लोग अपना आतंक का बिजनेस जमाये बैठे हो ।" देवराज चौहान ने कठोर स्वर में कहा, "अब तुमने मेरे सामने कश्मीर का जिक्र किया तो मैं तुम्हें जेल से नहीं निकालूँगा ।"

जब्बार ने होंठ भींच लिए ।

"मैं इस वक्त तुमसे इसलिए बात कर रहा हूँ कि यहाँ के पहरेदारों को लगे कि मैं पूछताछ कर रहा हूँ तुमसे । वरना तुम्हारे पास बैठने का मेरा मन जरा भी नहीं है । मैं तुम्हें भी खास पसन्द नहीं करता । बड़ा खान को तो जरा भी नहीं करता ।"

"तो तुम मुझे खास पसन्द नहीं करते ।"

"क्योंकि तुमने आज तक बहुत मासूमों को मारा है ।"

"तो मुझे जेल से क्यों निकालने जा रहे हो ?"

"ये तुम्हारी इच्छा पर है कि तुम निकलना चाहते हो या नहीं । जबरदस्ती नहीं है कि.... ।"

"जरूर इसके पीछे कोई वजह है ।"

"वजह है ।" देवराज चौहान बोला ।

"क्या ?"

"वह वजह जानना तुम्हारे लिए जरूरी नहीं है। तुम्हारे लिए जरूरी है जेल से निकल जाना ।"

जब्बार ने होंठ भींच लिए ।

तभी भूपेंद्र कालिया कह उठा- "अगर ये जेल से नहीं निकलना चाहता तो तुम इसे निकालने पर क्यों लगे हो ?"

"अब मैं भी इस बारे में ही सोचने लगा हूँ ।" देवराज चौहान कड़वे स्वर में बोला ।

"मैं जेल से निकलना चाहता हूँ ।" जब्बार मलिक सख्त स्वर में कह उठा ।

"तो फिर फालतू की बातें क्यों करते हो ?" देवराज चौहान बोला ।

"क्या तुम सच में मुझे जेल से निकाल दोगे ?" जब्बार ने पूछा ।

"जेल से फरारी की योजना तुम्हें बता चुका हूँ ।"

"तुम्हारी योजना बहुत सीधी-साधी है । मुझे शक है कि ये सफल होगी ।" जब्बार ने अपनी शंका जाहिर की ।

"ये सीधी-साधी योजना नहीं है। इस पर मैं मेहनत कर रहा हूँ। तभी तो ये नकली इंस्पेक्टर इस वक्त मेरे साथ बैठा है। इसकी कद-काठी तुम्हारी तरह ही है। मैं रोज-रोज जो तुमसे जेल में मिलने आ रहा हूँ, ये उसी योजना का एक हिस्सा है। ये योजना इतनी आसान नहीं है, जितनी कि तुम समझ रहे हो। मैं मेहनत कर रहा हूँ इस पर। मेरी योजना में कोई कमी नहीं है। अगर तुम्हारी किस्मत ही खराब हुई तो फिर मैं कुछ नहीं कर सकता ।"

"तु... तुम क्या किसी के कहने पर मुझे बाहर निकाल रहे हो यहाँ से ?"

"नहीं ! ये मेरी मर्जी है ।"

"मेरे ख्याल में तुम मुझे जेल से बाहर निकालोगे और पहले से ही तैयार तुम्हारे आदमी मेरा पीछा करने लगेंगे । ये जानने के लिए कि कब मैं बड़ा खान के पास पहुँचता हूँ। ये सब कुछ तुम बड़ा खान तक पहुँचने के लिए कर रहे हो ।"

"ये बकवास तुम पहले भी कर चुके हो। परन्तु ऐसा कुछ नहीं है। कल तुम जेल से बाहर निकल आओ, ये बात पहले मेरे और तुम्हारे बीच थी। अब ये तीसरा आदमी भी जानता है, बस। हम तीनों ही इस बात के राजदार हैं। जेल से बाहर निकलने के बाद कोई तुम्हारे पीछे नहीं होगा। तुम पूरी तरह आजाद होओगे।"

जब्बार गहरी साँस लेकर रह गया। चेहरे पर अविश्वास के भाव थे।

"कल वैसा ही करना जैसा मैंने कहा है। सुबह नौ बजे अपने सिर के बाल काटना शुरु कर देना। बहुत बड़े हैं ये। फिर शेव बनाना। इसकी तरह क्लीन शेव्ड हो जाना। हम जब आए तो तुम इसी हाल में तैयार मिलो। तुम दोनों को सिर्फ पाँच मिनट मिलेंगे, एक-दूसरे के कपड़े पहनने को। इससे ज्यादा देर हम कोठरी में नहीं रह सकते। शेव करने और सिर के बाल काटने के बाद तुम कोठरी के दरवाजे तक नहीं आओगे। गनमैन तुम्हारा बदला हुलिया देख लेंगे तो सारा प्लान फेल हो जायेगा। उसके बाद रोज की तरह हम बाहर कुर्सियों पर बैठेंगे। कबीर चाय लाएगा। एक-डेढ़ घण्टा बैठने के बाद हम यहाँ से चल.... ।"

"तुम्हारा मतलब पुलिस की वर्दी पहनने के बाद मैं घण्टा भर यहाँ बैठूँगा ?" जब्बार के होंठों से निकला।

"हाँ !"

"और कबीर तब चाय भी लाएगा ?"

"हाँ !"

"कबीर मुझे आसानी से पहचान सकता... ।"

"वहम में मत पड़ो। तुमने पुलिस टोपी सिर पर डाल रखी होगी। कैप को माथे पर थोड़ा और झुका लेना। मैं उसे यहाँ ज्यादा देर नहीं रुकने दूँगा आज की तरह। तुम जूते बाँधने के लिए झुक जाना।"

लेकिन वह इसे भी तो देखेगा।" जब्बार ने भूपेंद्र कालिया की तरफ इशारा किया, "ये ठीक है कि तब इसके चेहरे पर दाढ़ी-मूँछें होंगी। परन्तु वह फौरन समझ सकता है कि ये जब्बार नहीं है। गनमैनों से बचा जा सकता है कि वह कुछ दूर रहते हैं, परन्तु कबीर अली तो... ।"

"बात तो इसकी सही है।" भूपेंद्र कालिया कह उठा।

"तो कल चाय नहीं मंगवाई जायेगी।" देवराज चौहान ने कहा।

"ये ठीक रहेगा।" भूपेंद्र कालिया ने सिर हिला दिया।

□□□

जेलर को चाबी देने के बाद देवराज चौहान और भूपेंद्र कालिया जेल से बाहर आये।

"जब्बार को इस तरह बाहर निकालने की कोशिश करके तुम रिस्क वाला काम कर रहे हो।" भूपेंद्र कालिया बोला।

"जानता हूँ।"

"तुम्हारी जगह मैं होता तो ये काम कभी न करता। वह खतरनाक आतंकवादी है।"

देवराज चौहान खामोश रहा।

दोनों टैक्सी लेने के लिए सड़क पर आ पहुँचे।

देवराज चौहान का मोबाइल बजने लगा।

"हैलो!" देवराज चौहान ने बात की।

"इंस्पेक्टर सूरजभान!" ए.सी.पी. संजय कौल की व्याकुल आवाज कानों में पड़ी, "बहुत ही बुरी खबर है। शर्मा का किसी ने मर्डर कर दिया है।"

"ओह! ये आप क्या कह रहे हैं?" देवराज चौहान ने ढेर सारी हैरानी-परेशानी जाहिर की, "ये कैसे हो...।"

"मेरे ख्याल में बड़ा खान ने उसे मारा है। वह तुम्हारे साथ ड्यूटी दे रहा था और तुम जब्बार पर लगे हो।"

"ये हो सकता है।" देवराज चौहान ने आतुरता दिखाते हुए कहा, "सब-इंस्पेक्टर शर्मा की लाश कहाँ है?"

"वह हमें एक वीरान सड़क पर पुलिस कार में मिली है। वहाँ से निकलने वाले लोगों ने पुलिस को खबर दी।" इसके साथ ही इंस्पेक्टर संजय कौल ने बताया कि लाश कार में पड़ी है।

"मैं अभी वहाँ पहुँचता हूँ सर। ये तो बहुत बुरा हुआ।" कहकर देवराज चौहान ने फोन बन्द कर दिया।

"क्या हुआ ?"

"किसी पुलिस वाले की लाश मिली है। मुझे वहाँ जाना होगा।" देवराज चौहान ने चाबी निकालकर भूपेंद्र कालिया को दी, "ये फ्लैट की चाबी है। तुम वहाँ जाओ, मैं फुर्सत पाकर वहीं आऊँगा। फ्लैट से बाहर मत निकलना। खाने-पीने का सामान फ्रिज में पड़ा है। ये वर्दी उतारकर दूसरे कपड़े पहन लेना। कल काम करना है, वर्दी खराब नहीं होनी चाहिए।"

□□□

अगले चार घण्टे देवराज चौहान वहीं पर पुलिस वालों के पास रहा, जहाँ पुलिस कार के भीतर शर्मा का शव मिला था। ए.सी.पी. कौल भी वहाँ था। कार्यवाही हो चुकी थी। फिंगरप्रिंट कार से उठाये जा चुके थे। शर्मा की रिवॉल्वर पाँवों के पास पायदान पर पड़ी मिली होने से पुलिस वालों का अनुमान था कि मरने से पूर्व शर्मा ने खुद को बचाने के लिए रिवॉल्वर का इस्तेमाल करने की चेष्टा की, परन्तु सफल नहीं हो पाया था।

ए.सी.पी. कौल देवराज चौहान के पास आया।

"शर्मा रात तुम्हारे पास से कब गया ?"

"साढ़े नौ के करीब।"

"मेरा ख्याल है कि उसके बाहर निकलते ही बड़ा खान के आदमियों ने उसे घेर लिया और यहाँ लाकर हत्या कर दी।"

"हत्या करने के लिए शर्मा को यहाँ लाने की क्या जरूरत थी। वह वहीं उसे मार....।"

"उन लोगों ने शर्मा से पूछताछ की होगी।" कौल ने गम्भीर स्वर में कहा, "शर्मा इन दिनों तुम्हारे साथ ड्यूटी पर था। शायद बड़ा खान के आदमी जब्बार के बारे में जानना चाहते होंगे कि कहीं उसने मुँह तो नहीं खोला। सूरजभान ये तुम्हारे लिए चेतावनी है, बड़ा खान तुम्हें भी अपना निशाना बना सकता है।"

"मैं सतर्क रहूँगा सर !" देवराज चौहान ने कहा।

"शर्मा के मरने का मुझे बहुत दुःख है।" कहकर कौल अन्य पुलिस वालों के साथ व्यस्त हो गया।

देवराज चौहान का फोन बजा।

"हैलो !" देवराज चौहान ने बात की।

"पहले कत्ल करते हो और फिर उसी कत्ल की तफ्तीश करते हो।" बड़ा खान की आवाज कानों में पड़ी।

"तुम अच्छी तरह जानते हो बड़ा खान कि मैंने शर्मा को क्यों मारा।" देवराज चौहान का स्वर धीमा था।

"तुम्हें मुझसे डरना चाहिए।"

"मैं डरने वाला नहीं।"

"तुम्हें शक कैसे हुआ कि रात के खाने में जहर है ?" उधर से बड़ा खान ने पूछा।

"मैं अपराधियों की सोचों से वाकिफ हूँ कि वह कब क्या करते हैं। फिर बड़ा खान जैसे डरपोक अपराधी के विचारों को जान लेना मेरे लिए मामूली बात है।" देवराज चौहान ने सख्त स्वर में कहा।

"तुम मुझे डरपोक कहकर, मेरा संयम नहीं तोड़ सकते। क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं डरपोक नहीं हूँ।"

"तुम डरपोक हो। क्योंकि खुद छिपे रहते हो और अपने आदमियों से काम करवाते हो।"

"दौलत वाला इंसान ऐसे ही अपराध करता है।" उधर से बड़ा खान ने हँसकर कहा, "मैं जब्बार के बारे में जानना चाहता हूँ कि उसके साथ तुम्हारी क्या खिचड़ी पक रही है ?"

देवराज चौहान के चेहरे पर जहरीली मुस्कान नाच उठी।

"जब्बार मलिक तुम्हारी तरह बेवकूफ नहीं है। वह समझदार है और हालातों को बखूबी समझता है।"

"क्या-क्या बताया उसने तुम्हें ?"

“सब कुछ। मेरे आदमी कभी भी तुम तक पहुँच सकते हैं। तुम कभी भी पकड़े या मारे जा सकते हो।”

कुछ लम्बी खामोशी के बाद बड़ा खान की आवाज आई।

“ये नामुमकिन है।”

“क्यों ?”

“मुझ तक कोई नहीं पहुँच सकता। मुझ जैसा सुरक्षित दूसरा कोई नहीं।”

“मैंने आज तक जिन-जिन के एनकाउंटर किये हैं वे सब भी ऐसा ही सोचते थे। परन्तु मारे गए। मेरे आदमी... ।”

“तुम अपने किन आदमियों की बात कर.... ।”

“पुलिस वाले।” देवराज चौहान ने फौरन कहा, “अभी तक तुम ये ही समझ रहे हो कि मैं अकेला दिल्ली से आया हूँ। परन्तु गुप्त तौर पर मेरे साथ ग्यारह लोग भी हैं। मैं जब भी किसी काम पर निकलता हूँ तो इसी तरह निकलता हूँ। वह ग्यारह के ग्यारह अचूक निशानेबाज हैं। चालाक और फुर्तीले हैं। जब्बार मुझे जो बता रहा है, उसी के आधार पर मैं उन्हें आदेश देकर, उनसे काम ले रहा हूँ। वह कभी भी तुम तक पहुँच सकते हैं।”

“बकवास।” उधर से बड़ा खान एकाएक गुर्रा उठा।

“मेरी सही बात को तुम बकवास कह... ।”

“इंस्पेक्टर सूरजभान यादव।” उधर से बड़ा खान ने शब्दों को चबाकर कहा, “मैं जहाँ पर हूँ, वहाँ मेरी मर्जी के बिना सिर्फ हवा ही पहुँच सकती है और ये जगह जब्बार नहीं जानता।”

देवराज चौहान हँस पड़ा फिर बोला।

“मैं तुम्हें ऐसी बात बताता हूँ, जो कि तुम नहीं जानते।”

“क्या ?”

“जब्बार मलिक तुम्हारी जासूसी किया करता था। जब्बार ने ही कही ये बात। तुम सोच भी नहीं सकते कि वह तुम्हारे बारे में क्या-क्या जानता है। सच में जब्बार का दिमाग बहुत तेज है।”

"तुम ये सब बातें मुझे क्यों बता रहे हो ?" बड़ा खान की आवाज कानों में पड़ी।

"क्योंकि मैं तुम्हारी परवाह नहीं करता। तुम मरने वाले हो। दिल्ली से मुझे जब्बार मलिक के लिए नहीं, तुम्हारे लिए भेजा गया है कि तुम्हें खत्म कर दूँ और मैं अपना काम पूरा करने के काफी नजदीक हूँ। मैंने आज तक जिन लोगों का शिकार किया है, वे कभी समझ ही नहीं पाये कि मैं कब और कैसे उन तक पहुँच गया।"

"तुम इन बातों से मुझे कमजोर नहीं बना सकते।"

"दो दिन में जब्बार जेल से बाहर होगा। उसने वादे के मुताबिक तुम्हारे बारे में सब बता....।"

"मुझे तुम्हारी किसी बात पर यकीन नहीं आ रहा।"

"दो दिन बाद जब्बार से मिल लेना। वैसे आज रात तुम मेरा क्या करने वाले हो ?"

"क्या मतलब ?"

"कल तुमने मुझे खाने में जहर देने की चेष्टा की, आज रात मुझे मारने के लिए क्या करोगे ?"

"मैं जवाब देने की जरूरत नहीं समझता।"

"पुलिस का ख्याल है कि बड़ा खान ने शर्मा को मारा है।"

"मानता हूँ। पुलिस के ख्याल से मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। लेकिन एक बात तो तय है कि तुम मौत के करीब पहुँच चुके हो। बड़ा खान से पंगा लेकर तुमने भारी मुसीबत मोल ले ली है।"

"अब तुम कहोगे कि मैं जम्मू से भाग जाऊँ।"

"कहीं भी जाओ, परन्तु बच नहीं सकते। लेकिन तुमने मुझे उलझा दिया है। जब्बार को पुलिस या कानून इस तरह जेल से बाहर नहीं निकाल सकती और तुम कहते हो कि वह दो दिन में जेल से बाहर होगा।"

"यकीनन।"

"ये सम्भव नहीं।"

"देख लेना।"

"कानून इस तरह किसी को आजाद नहीं कर... ।"

"इसका जवाब तुम्हें दो दिन में मिल जायेगा ।" देवराज चौहान ने कहा और फोन बन्द कर दिया ।

पुलिस वाले अपनी कार्यवाही के अंतिम चरण पर पहुँच चुके थे । कौल से विदा लेकर देवराज चौहान एक पुलिस वाले की मोटर साईकिल पर जा बैठा जो कि वहाँ से जा रहा था ।

भीड़-भाड़ वाले इलाके में पहुँचकर देवराज चौहान ने मोटरसाइकिल छोड़ी और ऑटो में सवार होकर उस बाजार में पहुँचा जहाँ उसे शर्मा लाया था । वह सतर्क था कि बड़ा खान के आदमी उस पर हमला न कर दें । फिर देवराज चौहान उस दुकान पर पहुँचा जहाँ उसने दाढ़ी-मूँछों और विग को तैयार करने को कहा था ।

उसका सामान तैयार था ।

सब कुछ वैसा ही था जैसा उसने बनाने को कहा था । उसके बाद देवराज चौहान फ्लैट पर पहुँचा । भूपेंद्र कालिया फ्लैट पर ही था । देवराज चौहान ने उसे विग, दाढ़ी-मूँछें लगाकर देखीं । सब ठीक था । दूर से देखने पर जब्बार जैसा ही लग रहा था वह ।

"ये ठीक है ।" देवराज चौहान ने कहा, "उतार लो । हमारी तैयारी ठीक हो रही है ।"

"तुम्हें भरोसा है कि कल तुम जब्बार को जेल से निकाल लोगे ?" भूपेंद्र कालिया ने पूछा ।

"आसमान से कोई मुसीबत न गिरी तो मैं पक्का उसे जेल से बाहर ले आऊँगा ।" देवराज चौहान ने कहा ।

"पहले मैं नहीं जानता था कि ये मामला बड़ा खान से जुड़ा है ।" भूपेंद्र कालिया बोला ।

"तुम्हें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता । क्योंकि तुम इस मामले से कोई वास्ता नहीं रखते ।"

"शाम हो रही है, कुछ देर बाद मैं पीना चाहूँगा । बोतल ले आऊँ ?" उसने कहा ।

"रोज पीते हो ?" देवराज चौहान ने उसे देखा ।

"कभी-कभी । आज इसलिए पी रहा हूँ कि कल से पुलिस के चक्कर में फँस जाना है ।" भूपेंद्र कालिया हँसा ।

"आधी बोतल पड़ी है, पी लेना । खाना बनाना जानते हो ?"

"कुछ-कुछ ।"

"तो आज रात का खाना जैसा-तैसा भी हो, तैयार कर लेना । हमारे बाहर जाने में खतरा है । कल जब्बार को जेल से बाहर लाना है और मैं आज रात कोई रिस्क नहीं लेना चाहता ।"

"तुम्हें डर है कि बड़ा खान तुम्हारे साथ कुछ कर सकता है ।"

"वह कुछ भी कर सकता है । वह छिपकर कोई भी वार कर सकता है और मेरा खेल तो तब शुरु होगा जब जब्बार जेल से बाहर आ जायेगा ।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा ।

"कैसा खेल ?"

तभी देवराज चौहान का फोन बजा ।

दूसरी तरफ ए.सी.पी. कौल था ।

"मैं एक हवलदार भेज रहा हूँ । वह तुम्हारी जरूरतें पूरी करेगा और खाना भी दे जायेगा ।"

"मुझे कुछ नहीं चाहिए । आप मेरी चिंता न करें । मैं खाना ले आया हूँ ।" देवराज चौहान नहीं चाहता था कि शर्मा की तरह अब कोई और भेड़ की खाल में, भेड़िया उसके पास आ पहुँचे, "मुझे जरूरत पड़ी तो मैं आपको फोन करूँगा । मेरे पास किसी को न भेजें ।"

"जैसी तुम्हारी इच्छा ।" उधर से कौल ने कहा ।

"मेरी चिंता करने का शुक्रिया ।" देवराज चौहान ने कहा और फोन बन्द कर दिया ।

□□□

आज काम का दिन था ।

जब्बार मलिक को जेल से बाहर निकालना था ।

दिन के दस बज रहे थे। देवराज चौहान और भूपेंद्र कालिया तैयार थे। दोनों ने पुलिस इंस्पेक्टर की वर्दी पहन रखी थी। नाश्ते में उन्होंने ब्रेड से काम चला लिया था।

"तुम्हें कोई घबराहट तो नहीं हो रही?" देवराज चौहान ने भूपेंद्र कालिया से पूछा।

"मेरी फिक्र मत करो। मैं ठीक हूँ।" भूपेंद्र कालिया ने शांत स्वर में कहा।

"तो चलते हैं यहाँ से।"

दोनों फ्लैट से बाहर निकले। फ्लैट लॉक किया।

ऑटो में वे जम्मू की सेंट्रल जेल पहुँचे। रोज की तरह जेल के भीतर पहुँचने में उन्हें कोई परेशानी नहीं हुई।

जेलर के ऑफिस में पहुँचे।

जेलर अपनी कुर्सी पर मौजूद था और एक फाइल खोले उसे देख रहा था।

"आओ सूरजभान!" जेलर उन्हें देखते ही मुस्कुराया, "कैसे हो इंस्पेक्टर राजपाल?"

"वैल सर!"

मुलाकात की रस्म के बाद देवराज चौहान ने कहा।

"जब्बार की कोठरी की चाबी चाहिए सर!"

जेलर ने अपनी कुर्सी छोड़ी और पीछे पड़ी तिजोरी खोलकर चाबी निकालकर कहा।

"मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ सूरजभान। जब्बार से मिले मुझे तीन दिन हो गए हैं।"

देवराज चौहान के मस्तिष्क को तीव्र झटका लगा। उसे अपनी योजना फेल होती दिखी।

"आप साथ चलें तो मुझे खुशी होगी।" देवराज चौहान मुस्कुराकर कह उठा, "लेकिन मेरी राय है कि आप आज साथ न चलें।"

"क्यों?" जेलर ने देवराज चौहान को देखा।

"मेरी कुछ खास बात चल रही है जब्बार से। हो सकता है वह आज बड़ा खान के बारे में मुँह खोल दे। परन्तु आपके साथ होने से मेरी सारी मेहनत पर पानी फिर सकता है। मैं जब्बार को कठिनता से रास्ते पर ला रहा हूँ।"

"हूं!" पास पहुँचकर जेलर ने चाबी देवराज चौहान को थमाई, "ऐसा है तो मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगा।"

"वैसे आपको साथ ले जाकर मुझे खुशी होती।"

"और मुझे खुशी होगी अगर तुम जब्बार का मुँह खुलवा सके।" जेलर ने कहा।

देवराज चौहान भूपेंद्र कालिया के साथ जेलर के ऑफिस से बाहर निकला।

"मैं तो घबरा ही गया था, जब जेलर ने साथ चलने को कहा।" भूपेंद्र कालिया बोला।

"ऐसी बातों को ही आसमानी मुसीबत कहते हैं।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा।

दोनों कुछ ही आगे बढ़े थे कि सामने से कबीर अली आता दिखा।

"वह आ रहा है।" भूपेंद्र कालिया धीमे स्वर में बोला।

कबीर अली पास आते ही कह उठा।

"सर!" साथ ही उसने सैल्यूट दिया, "मैं चाय लेकर वहाँ पहुँचता हूँ।"

"आज नहीं।" देवराज चौहान ने कहा, "मुझे जल्दी वापस जाना है।"

"कुछ और चाहिए तो कह दीजिये सर!"

"अभी तो कुछ भी नहीं। दोपहर बाद मैं फिर आऊँगा, तब चाय लूँगा।"

"जी सर!"

देवराज चौहान और भूपेंद्र कालिया आगे बढ़ गए।

"तुम सफल हो जाओगे?" भूपेंद्र कालिया ने पूछा।

"आशा तो है।"

"मैंने तो फँसना ही फँसना है। तुम असफल रहे तो तुम भी फँस जाओगे।"

दोनों आगे बढ़ते रहे । देवराज चौहान को अब जेल में पहरा देने वाले पहचानने लगे थे । रोज की तरह दस मिनट में ही वे जब्बार मलिक की कोठरी पर जा पहुँचे । रोज की तरह छः गनमैन पहरे पर इधर-उधर फैले हुए थे ।

सलाखों के पास जब्बार मलिक नहीं दिख रहा था ।

देवराज चौहान ने चाबी लगाकर ताला खोला ।

"कौन है ?" भीतर से जब्बार की आवाज आई ।

"मैं हूँ ।" देवराज चौहान बोला ।

"आ जाओ ।"

देवराज चौहान ने चार बार चाबी घुमाने के बाद दरवाजे को धकेला तो खुलता चला गया ।

देवराज चौहान ने भीतर प्रवेश किया । साथ ही भूपेंद्र कालिया ने भीतर प्रवेश किया ।

सीमेंट के चबूतरे के पास जब्बार मलिक मौजूद था ।

क्लीन शेव्ड । सिर के बाल उसने खुद ही काटकर छोटे-छोटे कर लिए थे । नहाया हुआ था वह । गम्भीर आँखों से उसने देवराज चौहान और भूपेंद्र कालिया को देखा । जिस्म पर सिर्फ पुराना सा अंडरवियर था ।

"मैं सच में आज निकल जाऊँगा बाहर ?" जब्बार की आवाज में अविश्वास के भाव थे ।

"आशा तो है ।" देवराज चौहान ने कहा और भूपेंद्र कालिया से बोला, "तुम जब्बार की तरफ जाओ और बाहर वालों को न दिखो । अपनी वर्दी उतारकर इसे दो और चबूतरे पर पड़े जब्बार के जेल के कपड़े पहनो ।"

भूपेंद्र कालिया आगे बढ़ा और फुर्ती से जिस्म पर पड़ी वर्दी उतारने लगा । देवराज चौहान कोठरी के दरवाजे के सामने खड़ा हो गया ताकि बाहर वाले गनमैन उसे न देख सके । जब्बार मलिक फुर्ती से भूपेंद्र कालिया की उतारी वर्दी पहन रहा था, और भूपेंद्र उसके जेल के कपड़े पहन रहा था ।

ये सारा काम दो मिनट में ही पूरा हो गया ।

"कैप पहनो जब्बार ।"

जब्बार मलिक ने वर्दी के साथ की पुलिस टोपी पहनी।

"भूपेंद्र इसकी कैप ठीक करो और थोड़ी सी माथे पर झुका दो।"

भूपेंद्र कालिया ने ऐसा ही किया।

"अब वर्दी की जेबों से दाढ़ी-मूँछें-विग निकालो और पहन लो।"

भूपेंद्र कालिया ने दाढ़ी-मूँछें-विग निकाली और उसे लगाने लगा।

"जब्बार !"देवराज चौहान बोला, "इसकी दाढ़ी-मूँछ-विग ठीक से सैट कर दो।"

जब्बार ने ऐसा ही किया।

अगले दो मिनटों में भूपेंद्र कालिया, जब्बार के रूप में आ चुका था।

कुल चार मिनटों में वे एक-दूसरे के रूप में आ चुके थे।

"चाल में थोड़ी अकड़ रखो जब्बार। अब तुम कैदी नहीं पुलिस वाले हो।" देवराज चौहान बोला।

सब ठीक हो गया था।

"चलो बाहर।" देवराज चौहान खुले दरवाजे की तरफ बढ़ा, "जब्बार तुम मेरे पीछे रहो।"

जब्बार मलिक ने ऐसा ही किया। वह देवराज चौहान के पीछे कोठरी से बाहर आया। ये जुदा बात थी कि उसका दिल जोरों से धड़क रहा था। उसे इस बात का डर था कि शायद वह फरार न हो पाये।

भूपेंद्र कालिया तीसरे नम्बर पर कोठरी से बाहर निकला।

"वह स्टोर है, वहाँ से तीन कुर्सियाँ उठा लाओ।"

भूपेंद्र कालिया कैदियों के कपड़ों में दाढ़ी-मूँछ और बड़े बालों में उसी स्टोर जैसे कमरे की तरफ बढ़ गया। फौरन ही तीन कुर्सियाँ उठा लाया। तीनों कल की तरह कुर्सियों पर बैठ गए।

"हमें यहाँ से निकल जाना चाहिए था।" जब्बार धड़कते दिल से कह उठा। उसका स्वर बेहद धीमा था।

"चुप रहो !"

"कबीर चाय लाएगा आज ?" जब्बार ने पुनः पूछा।

"नहीं !" देवराज चौहान बोला, "तुम पुलिस वाले की तरह बैठो।"

जब्बार संभलकर बैठ गया।

देवराज चौहान ने भूपेंद्र कालिया से कहा- "हमारे जाने के बाद तुम फँस जाओगे।"

"हाँ। लेकिन साल-डेढ़ साल में मैं खुद को बचा लूँगा। राठी मेरे लिए वकील करेगा।"

"ये खतरा तुमने पंद्रह लाख के लिए उठाया?"

"हाँ। मेरी पत्नी के ऑपरेशन के लिए पैसे चाहिए थे। इतनी बड़ी रकम तभी मिल सकती है जब मैं कुछ कर के दिखाऊँ।" भूपेंद्र कालिया ने गम्भीर स्वर में कहा, "राठी मेरी पत्नी का इलाज करायेगा। इलाज में पैसा कम पड़ा तो वह अपने पास से देगा।"

"राठी क्या काम करता है?"

"तुमने उससे पूछा नहीं?"

"मैं अपने कामों में इतना व्यस्त था कि पूछ नहीं पाया।" देवराज चौहान ने कहा।

"वह ड्रग्स का काम करता है। अफगानिस्तान से उसके आदमी ड्रग्स लाते हैं और हजारों की ड्रग्स को वह इंटरनेशनल मार्केट में करोड़ों में बेचता है। यूँ वह मोटर पार्ट्स का धंधा करता है दिखावे के लिए।" भूपेंद्र कालिया ने बताया।

"तुम्हें भरोसा है कि राठी अपनी बात पर खरा उतरेगा और तुम्हारी पत्नी का इलाज करायेगा।"

"मुझे पूरा भरोसा है उस पर। वह मेरे लिए वकील का भी इंतजाम करायेगा।"

देवराज चौहान ने सिर हिलाया और सिगरेट सुलगा ली।

"आखिर हम यहाँ बैठे कर क्या रहे हैं?" जब्बार बेचैनी भरे स्वर में कह उठा।

"चुप रहो। सब्र के साथ बैठो। अभी हमें कम से कम आधा घण्टा यूँ ही बैठना है। हम रोज ही इस तरह बैठते हैं।"

"मैं यहाँ से भाग जाना चाहता हूँ।"

"तुम्हारी जल्दबाजी तुम्हें फँसा देगी।" भूपेंद्र कालिया कह उठा।

जब्बार खामोश हो गया।

"मैंने तुम्हारे बारे में कुछ भी नहीं पूछा।" भूपेंद्र कालिया ने कहा।

"मेरे बारे में तुम कुछ न ही जानो तो अच्छा है। क्योंकि अब तुम पुलिस के पास फँसने जा रहे हो।" देवराज चौहान ने कहा।

"ठीक कहते हो।" भूपेंद्र कालिया ने गहरी साँस ली, "मैं अब फँस जाऊँगा।"

"पुलिस तुम्हें जब्बार का साथी समझेगी क्योंकि तुमने इसे फरार करवाने में सहायता की।"

"मैंने सिर्फ इंस्पेक्टर सूरजभान यादव की सहायता की। पुलिस वाले ने कानून के नाम पर कुछ देर के लिए मेरे से सहायता मांगी थी। इंस्पेक्टर यादव ने मुझसे कहा था कि खतरनाक कैदी को दूसरी जगह ट्रांसफर करना है। परन्तु उसके साथी उसे छुड़ा लेने के लिए तैयार हैं। तुम खामोशी से जब्बार को जेल से निकालकर दूसरी जगह पुलिस कस्टडी में पहुँचा देना चाहते थे। इसलिए तुमने मुझे नकली पुलिस वाला बनाकर जब्बार को बाहर निकाला और कहा कि कुछ घण्टों बाद वापस आकर मैं तुम्हें बाहर निकाल दूँगा। इस काम के बदले हर रोज के तुमने मुझे पाँच हजार रुपये दिये।" भूपेंद्र कालिया ने बेहद शांत स्वर में कहा।

"तो तुमने पुलिस को सुनाने के लिए कहानी तैयार कर ली?"

"हाँ। ऐसा ही कुछ मुझे पुलिस को कहना पड़ेगा। वह कुछ भी कहे मुझे अदालत में भी अपनी बात पर अड़े रहना होगा। इससे पहले मेरे नाम पर कोई जुर्म दर्ज नहीं हुआ। मैं कानून से बच निकलूँगा।" भूपेंद्र कालिया मुस्कुराया।

"तुम हिम्मत वाले हो। राठी ने मुझे अच्छा बन्दा दिया।" देवराज चौहान ने कहा।

"राठी मेरी पत्नी का इलाज करायेगा। उसका ध्यान रखेगा।"

"ये राठी कौन है?" जब्बार मलिक कह उठा।

"तुम इन बातों में दखल मत दो ।" देवराज चौहान बोला, "ये बातें तुम्हारे काम की नहीं हैं ।"

"यहाँ से कब निकलोगे ?" व्याकुलता से कहा जब्बार मलिक ने ।

यही वह वक्त था कि देवराज चौहान का मोबाइल बजने लगा ।

"बड़ा खान का फोन होगा ।" जब्बार के होंठों से निकला, "मेरी बात कराओगे उससे ?"

देवराज चौहान मुस्कुराया और मीठे स्वर में बोला ।

"जल्दी क्या है । अब तुमने बाहर जाकर उससे बात करनी है । मिलना है । जो योजना तुम लोगों ने बना रखी है । उस पर काम करना है ।"

"कम से कम उसे ये तो बता दो कि मैं आज जेल से बाहर निकलने वाला हूँ ।"

"जेल से निकलकर तुम ही बताना उसे कि जेल से बाहर आ गए हो ।"

देवराज चौहान ने बात की । दूसरी तरफ बड़ा खान ही था ।

"आज बहुत देर लगा दी कॉल रिसीव करने में ।" बड़ा खान की आवाज कानों में पड़ी ।

"जब्बार के साथ बातचीत में व्यस्त हूँ । वह तुम्हारे बारे में अहम जानकारियाँ दे रहा है ।" देवराज चौहान बोला ।

"तुम ये बात-बात पर मुझे क्यों बताते हो कि वह तुम्हें मेरे बारे में बता रहा है ।"

"तुम भी तो उत्सुक हो ये जानने के लिए कि मैं क्या कर रहा हूँ । जब्बार मुझे क्या-क्या बता रहा है ।" देवराज चौहान मुस्कुराकर कह उठा, "मैंने गलत तो नहीं कहा बड़ा खान । वरना तुम मुझे बार-बार फोन क्यों करते ।"

"ठीक कहते हो ।" बड़ा खान का शांत स्वर देवराज चौहान के कानों में पड़ा, "परन्तु तुम मुझे ये नहीं बताते कि जब्बार ने तुम्हें क्या बताया । जबकि तुम्हें ये भी बताना चाहिए ।"

"ये बताकर मैं अपना खेल नहीं खराब करना चाहता ।"

जब्बार मलिक गम्भीर नजरों से देवराज चौहान को देख रहा था ।

"खेल ?"

"तुम्हारे एनकाउंटर का खेल। तुम्हारी मौत का खेल।"

"भूल जाओ कि तुम मुझे मार दोगे। तुम मुझे कभी देख भी नहीं पाओगे।"

"जब्बार की दी जानकारी के दम पर, मैं तुम्हारे सिर में गोली मारूँगा।"

"तुम्हारी बातों से मेरा दिमाग खराब नहीं होगा। तुमने कहा कि तुम्हारे आदमी मुझ तक पहुँचने वाले हैं।"

"तो क्या गलत कहा ?"

"अभी तक तो पहुँचे नहीं।"

"अपनी मौत का खेल देखने के लिए उतावले हो रहे हो।"

"मुझे तो लग रहा है कि तुम खामख्वाह की बकवासबाजी कर रहे हो। मुझे परेशान करना चाहते हो।"

"तुम ये ही समझते रहो। मुझे कोई एतराज नहीं।"

"जब्बार इस वक्त तुम्हारे सामने बैठा है। मैं जानता हूँ।" बड़ा खान ने उधर से कहा।

"मैंने कब इंकार किया।"

"मेरी बात कराओ जब्बार से।"

"नहीं।"

"जब्बार की दी जानकारी तुम अपने तक रखो तो तीस करोड़ तुम्हारा। जहाँ कहो वहाँ पहुँचा देता हूँ।"

"मैं रिश्वत नहीं लेता।"

"पैंतीस करोड़ ले लो।"

"बेकार कोशिश कर रहे हो। मैं रिश्वत नहीं लेता। वैसे भी जब्बार के साथ मेरा जो समझौता हुआ... ।"

"बकवास मत करो। उस समझौते में कोई दम नहीं है। जो तुमने बताया। तुम पुलिस वाले हो और जब्बार को जेल से नहीं निकाल सकते। कानून से बंधे हो तुम। जबकि तुमने कहा है कि तुम जब्बार को जेल से निकाल दोगे।"

"सच कहा है।"

"तुम्हारी बात मानने लायक है ही नहीं ।"

"बहुत जल्दी जब्बार आजाद होगा और तुम समझ जाओगे कि मेरे समझौते में दम है ।"

"तुम पागल हो । मैं तुम्हें 35 करोड़ दे रहा... ।"

देवराज चौहान ने फोन बन्द करके जेब में रख दिया । जब्बार सिकुड़ी आँखों से देवराज चौहान को देख रहा था ।

भूपेंद्र कालिया शांत सा बैठा था ।

"तुम बताते क्यों नहीं कि आखिर तुम किस फेर में हो ?" जब्बार मलिक धीमे स्वर में कह उठा ।

"मैं तुम्हें जेल से आजाद करा देने के फेर में हूँ ।" देवराज चौहान मुस्कुराया ।

"बड़ा खान से पैसे लिए बिना । विश्वास नहीं होता । जबकि वे तुम्हें तीस करोड़ देने को... ।"

"रकम बढ़ गई है । अब पैंतीस करोड़ हो गई है ।"

जब्बार ने गहरी साँस लेकर कहा ।

"फिर भी तुम मुफ्त में मुझे जेल से निकाल रहे हो ।"

"इसे तुम मेरी दरियादिली भी समझ सकते हो ।" देवराज चौहान के चेहरे पर मुस्कान थी ।

जब्बार मलिक होंठ भींचकर रह गया ।

"तुम्हें एक बात कह देना चाहता हूँ कि तुम्हारी वर्दी के साथ जो होलेस्टर है, उसमें नकली रिवॉल्वर है ।" भूपेंद्र कालिया ने कहा ।

जब्बार मलिक चुप रहा । वह बेचैन दिख रहा था ।

"अब हमें चलना चाहिए ।" देवराज चौहान बोला ।

तीनों की नजरें मिलीं ।

"तुम अपना ध्यान रखना भूपेंद्र । मुझे तुम्हारी चिंता रहेगी ।" देवराज चौहान ने कहा ।

"मैं सब संभाल लूँगा ।"

देवराज चौहान उठते हुए बोला ।

"कुर्सियाँ वापस उस स्टोर में रखो।"

जब्बार मलिक भी उठा। उसका दिल पुनः तेजी से धड़कने लगा था।

भूपेंद्र कालिया कुर्सी उठाये स्टोर की तरफ बढ़ गया था।

"तुम गनमैनों की तरफ पीठ कर लो और तनकर रहो।"

जब्बार मलिक ने ऐसे ही किया। भूपेंद्र कालिया कुर्सी रखकर आया और अपनी कोठरी की तरफ बढ़ गया।

देवराज चौहान उसके पीछे चल पड़ा। भूपेंद्र कालिया कोठरी में प्रवेश कर गया।

देवराज चौहान ने कोठरी का सलाखों वाला दरवाजा बन्द किया और उसमें लगी चाबी को चार बार घुमाया तो दरवाजा लॉक हो गया। भूपेंद्र कालिया सलाखों के पास आ खड़ा हुआ था।

"कैसा लग रहा है ?" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।

"पूछो मत। इस वक्त मैं सच में खुद को कैदी समझ रहा हूँ।" भूपेंद्र कालिया बोला।

"चलता हूँ।" चाबी थामे देवराज चौहान पलटा और इंस्पेक्टर की वर्दी में खड़े जब्बार मलिक के पास पहुँचा।

जब्बार मलिक ने व्याकुल नजरों से उसे देखा।

"चिंता मत करो।" देवराज चौहान ने धीमे स्वर में कहा, "मेरे साथ पुलिस वालों की तरह चलो। किसी को तुम्हारी चाल पर शक न हो। नब्बे प्रतिशत इस बात के चान्सेज हैं कि हम यहाँ से निकल जायेंगे। आओ।" कहकर देवराज चौहान आगे बढ़ा तो जब्बार मलिक पुलिस वाले के अंदाज में उसके साथ चल पड़ा।

सब गनमैन अपनी-अपनी जगह पर खड़े थे। वे सब कुछ देख रहे थे। परन्तु कुछ भी उन्हें नया नहीं लगा था। ये दोनों पुलिस वाले कल भी आये थे और आज भी आये। जब्बार से मिलकर वापस चल पड़े थे। जब्बार उनके सामने ही कोठरी में गया था।

जब्बार की अदला-बदली हो गई है, ये बात तो वह सोच भी नहीं सकते थे।

उनकी नजरों के सामने सब ठीक-ठाक चल रहा था। जेल के भीतरी रास्तों को पार करते वे आगे बढ़ते जा रहे थे। रास्ते में उन्होंने कोई बात करने की चेष्टा नहीं की थी।

दस मिनट में ही वे जेलर के कमरे के करीब जा पहुँचे थे।

जब्बार मलिक की टाँगे काँप रही थीं। वह मन ही मन घबरा रहा था। वह जानता था कि जेल से बाहर निकलने वाला दरवाजा अब दूर नहीं था और मन में एक ही सवाल था कि क्या वह जेल से फरार हो जायेगा या पकड़ा जायेगा ?

तभी देवराज चौहान को कबीर अली दिखा। वह जेलर के ऑफिस से बाहर निकला था। उसने कुछ फाइलें उठा रखी थीं। सामने देवराज चौहान पड़ गया। जब्बार मलिक उससे एक कदम पीछे था। देवराज चौहान ने उसकी उठाई फाइलों पर चाबी रखते हुए कहा।

"ये याद से जेलर साहब को दे देना।"

जब्बार मलिक देखे जाने के डर से रुका नहीं। आगे निकल गया।

"आप शाम को आयेंगे सर ?" कबीर अली ने सरसरी तौर पर पूछा।

"हाँ !" कहने के साथ ही देवराज चौहान आगे बढ़ता चला गया।

दस कदम आगे खड़ा जब्बार मलिक, उसे आता पाकर पुनः चल पड़ा। डर की वजह से उसका गला सूख रहा था। टाँगें जैसे सम्भल न पा रही थीं। उसे लग रहा था कि जैसे चलते हुए वह ठीक से पांव नहीं रख पा रहा है। परन्तु ऐसा कुछ नहीं था। जेल से फरारी की वजह से वह घबराया हुआ था।

देवराज चौहान उसके फक्क चेहरे को देखा तो कह उठा- "अपने को सम्भालो। तुम तो बहुत हिम्मत वाले हो। बेगुनाहों की जान लेने जैसा घटिया काम तुम जैसे हिम्मती लोग ही करते हैं।"

जब्बार मलिक ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी। सामने ही जेल से बाहर निकलने का फाटक था। जिसके नीचे लगा छोटा सा दरवाजा खुला हुआ था। वहाँ पर पुलिस वाले मौजूद थे।

"अब हम बाहर निकलने जा रहे हैं।" देवराज चौहान ने धीमे स्वर में कहा।

जब्बार मलिक ही जानता था कि इस वक्त उसकी क्या हालत है। वे दोनों बिना किसी परेशानी के बाहर आ गए। जब्बार मलिक पसीना-पसीना हो उठा था।

"रुको मत। आगे बढ़ते रहो। हमें ऑटो...।"

तभी सामने सड़क से जाता ऑटो दिखा। देवराज चौहान ने हाथ हिलाया तो ऑटो रुक गया।

"वक्त हमारा साथ दे रहा है।" देवराज चौहान ने कहा।

अगले दो मिनटों में देवराज चौहान और जब्बार मलिक ऑटो में बैठे जा रहे थे।

पुलिस इंस्पेक्टर की वर्दी ने जब्बार मलिक की बहुत सहायता की थी। जब्बार मलिक के होश अभी तक गुम थे। उसे यकीन नहीं आ रहा था कि वह जेल से बाहर आ गया है। परन्तु खतरा अभी टला नहीं था। भीतर किसी भी वक्त ये पता चल सकता था कि कोठरी में जब्बार की जगह कोई और है और जब्बार मलिक फरार हो चुका है। यहाँ से ज्यादा से ज्यादा दूर हो जाना ही बेहतर था।

जिन पुलिस की वर्दियों ने उन्हें जेल से निकालने में सहायता की थी, उन्हें अब जल्द से जल्द बदल लेना जरूरी था। वरना ये वर्दियाँ उनके लिए मुसीबत खड़ी कर सकती थीं।

देवराज चौहान ने जब्बार के चेहरे पर निगाह मारी। जब्बार मलिक का चेहरा अभी तक धुंआ-धुंआ हो रहा था।

देवराज चौहान ने जब्बार मलिक का कंधा थपथपाया- "तुम इतनी प्यार-मोहब्बत मुझे क्यों दिखा रहे हो?" बेचैन सा जब्बार मलिक कह उठा।

"बकरा जब कटने वाला हो तो उस पर ज्यादा प्यार उमड़ आता है।"- देवराज चौहान बोला।

"बकरा?" जब्बार मलिक के माथे पर बल पड़े, "तुम्हारा मतलब मैं बकरा?"

"हाँ, एक तुम ही तो हो मेरे पास।" देवराज चौहान मुस्कुराया।

"कौन काटेगा मुझे?"

"ये तो वक्त बताएगा ।"

"तुम बताओ ।"

"वक्त बताये तो ज्यादा बेहतर होगा । मेरे बताने से तुम्हें विश्वास नहीं होगा ।"

"तुम पहेलियाँ बुझा रहे... ।"

"तुमने खाकी की ताकत देख ली कि किस आसानी से तुम जेल से बाहर आ गए । अब यही खाकी तुम्हें फँसा भी सकती है । जेल में बात खुलने की देर है कि तुम फरार हो गए हो तो पुलिस वाले, खाकी वालों को ही ढूंढेंगे । इस वर्दी से जल्दी छुटकारा पा... ।"

"तुम्हारी योजना जितनी आसान थी, उतनी आसानी से मैं जेल से बाहर आ गया ।"

"कुछ भी आसान नहीं था । तुमने जो देखा सिर्फ उतनी ही योजना नहीं थी । मैं इस पर पहले से काम कर रहा था । किसी की भी जरा सी गलती की वजह से योजना ताश के पत्तों की तरह ढेर हो सकती थी । परन्तु सब ठीक होता चला गया ।" देवराज चौहान ने कहा ।

"तुम मेरे कटने की बात कर रहे थे ।"

देवराज चौहान मुस्कुराया ।

"कौन काटेगा मुझे ?" जब्बार मलिक ने गम्भीर स्वर में कहा ।

देवराज चौहान ने ऑटो वाले को रुकने को कहा । सड़क के किनारे ऑटो रुका । देवराज चौहान ने उसे सौ का नोट दिया और जब्बार मलिक के साथ आगे बढ़ गया । ।

"अब हमें अलग हो जाना चाहिए ।" देवराज चौहान ने सामने गली की तरफ बढ़ते हुए कहा, "वक्त आने पर पुलिस दो खाकी वर्दी वालों को ढूंढेगी । हमारा अब साथ रहना ठीक नहीं ।"

जब्बार मलिक ने सतर्कता भरी निगाहों से आसपास देखा । परन्तु ऐसा कोई नहीं दिखा, जो उन पर नजर रख रहा हो ।

देवराज चौहान उसकी नजरों का मतलब समझकर कह उठा ।

"मैंने तुम्हें जुबान दी थी कि कोई तुम्हारे पीछे नहीं होगा। वह जुबान अभी तक कायम है।"

जब्बार मलिक ने गहरी नजरों से देवराज चौहान को देखा।

"क्या देख रहे हो ?"

"तुमने आखिर मुझे जेल से निकाला क्यों ?"

"बेकार का सवाल है ये।"

"तुम मेरे साथ कोई चाल चल रहे हो।"

"मैं तुम्हारे साथ चाल चल चुका हूँ। तुम मेरी चाल में फँस चुके हो जब्बार मलिक।"

"कैसी चाल ?"

"जल्दी ही तुम्हें पता चल जायेगा।" देवराज चौहान ने गली में ठिठककर, जेब से रिवॉल्वर निकालकर उसे दी, "ये रख लो। तुम्हें अब कभी भी इसकी जरूरत पड़ सकती है।"

"मुझे जरूरत नहीं। आधे घण्टे में मैं हथियार हासिल कर लूँगा।"/ जब्बार बोला।

"और अगर आधे घण्टे से पहले तुम्हें हथियार की जरूरत पड़ गई तो ?"

"इतनी जल्दी पुलिस मुझे नहीं पकड़...।"

"पुलिस की बात कौन कर रहा है।" देवराज चौहान ने उसे रिवॉल्वर थमाई और पाँच सौ के कुछ नोट निकालकर भी उसे जबरदस्ती दिए, "हथियार और पैसा इन दोनों चीजों की जरूरत पड़ेगी तुम्हें।"

"पता नहीं तुम कैसे पुलिस वाले हो। मैं तुम्हें समझ नहीं पाया।" जब्बार मलिक बोला।

"बकरों के साथ मैं ऐसे ही पेश आता हूँ।" देवराज चौहान मुस्कुरा पड़ा।

जब्बार मलिक ने गहरी साँस ली फिर कह उठा- "इंस्पेक्टर सूरजभान यादव। मैं तुम्हें हमेशा याद रखूँगा। तुम जैसे भी हो, आखिर तुमने मुझे जेल से बाहर निकाला है।"

"मैं जानता हूँ तुम मुझे कभी नहीं भूलोगे।" कहने के साथ ही देवराज चौहान ने जेब से एक कागज निकाला और उसे देता कह उठा, "इसमें मेरा

मोबाइल नम्बर लिखा है। मेरा नम्बर याद कर लो और कागज फाड़ देना। बहुत जल्द तुम बहुत बड़ी मुसीबत में फँसने वाले हो। जब मुसीबत में गहरे फँस जाओ और निकलने का रास्ता न मिले तो मुझे फोन करना। मैं तब तुम्हें मुसीबत से निकालने की कोशिश करूँगा। उस हाल में मुझे अपना दोस्त समझना।"

जब्बार मलिक की आँखें सिकुड़ी।

"मैं मुसीबत में फँसने वाला हूँ?" जब्बार मलिक के होंठों से निकला।

देवराज चौहान ने सहमति से सिर हिलाया।

"कैसी मुसीबत की बात कर रहे...।"

"आने वाला वक्त तुम्हें सब समझा देगा।"

"आखिर तुम मेरे साथ क्या खेल खेल रहे हो। बताते क्यों नहीं?" जब्बार मलिक गुर्रा उठा।

"अब हमें अलग हो जाना...।"

उसी पल जब्बार मलिक ने देवराज चौहान की छाती पर रिवॉल्वर रख दी।

देवराज चौहान मुस्कुरा पड़ा।

"इस बार रिवॉल्वर हाथ में आते ही मैंने सबसे पहले इसका वजन महसूस किया था इंस्पेक्टर। ये सच में भरी हुई है।" जब्बार गुर्राया।

"मैंने लोडेड रिवॉल्वर ही तुम्हें दी है।"

"इसकी पहली गोली मैं तुम्हें मार सकता हूँ, अगर तुमने मुझे न बताया कि तुम किस चक्कर में हो।"

"नहीं बताऊँगा!"

"गोली चलाऊँ?" जब्बार मलिक ने दाँत किटकिटाये।

"चला दे।"

दो पलों के लिए उनके बीच सन्नाटा आ ठहरा। जब्बार मलिक का चेहरा धधक रहा था जबकि देवराज चौहान चेहरे पर शांत मुस्कान समेटे उसे देख रहा था।

"तुम मजाक समझ रहे हो इंस्पेक्टर, लेकिन मैं सच में गोली चला...।"

"तुम मुझ पर गोली नहीं चला सकते ।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा, "मैंने तुम्हें जेल से निकाला है । वरना तुम कभी भी जेल से आजाद नहीं हो सकते थे । वहीं एड़ियाँ रगड़-रगड़कर मर जाते ।"

दाँत किटकिटाकर जब्बार मलिक ने उसकी छाती से रिवॉल्वर हटाई और कह उठा ।

"भाड़ में जा ।" इसके साथ ही पलटकर रिवॉल्वर और नोट जेब में डालकर गली में बढ़ता चला गया ।

देवराज चौहान ने मुस्कुराकर सिगरेट सुलगाई । उसे जाते देखा फिर गली की दूसरी तरफ बढ़ गया । होंठों पर लगी मूंछें उतारकर एक तरफ उछाल दीं ।

□□□

देवराज चौहान वहाँ से सीधा राठी के घर पहुँचा ।

तब राठी कहीं जाने की तैयारी में था कि उसे देखकर ठिठक गया ।

"तुम्हारी मूँछें कहाँ गईं ?" राठी की निगाह उसके चेहरे पर थी ।

"उतार दीं ।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा, "मुझे कपड़े दो पहनने को । ये वर्दी उतारनी है ।"

उलझन में फंसे राठी ने बेडरूम में ले जाकर कपड़े दिए ।

देवराज चौहान ने वर्दी उतारी और राठी की दी पैंट-कमीज पहनने लगा ।

"मेरा आदमी... ।" राठी ने कहना चाहा ।

"भूपेंद्र कालिया जेल में है । अब तक वह फँस चुका होगा या फँस जायेगा ।" देवराज चौहान बोला ।

"इसका मतलब तुम्हें जिसे जेल से निकालना था, निकाल दिया ?"

"हाँ, मेरा काम हो चुका है ।" देवराज चौहान ने कहा, "ये वर्दी यहाँ से दस किलोमीटर दूर फेंक देना ।"

राठी ने वर्दी को देखा, फिर उसे देखकर कहा ।

"तुम पुलिस वाले हो ?"

"नहीं !"

“क्या कर रहे हो तुम, बताओगे।”

देवराज चौहान वर्दी में फँसा रखी नोटों की गड्डियाँ निकालता कह उठा।

“नहीं बता सकता।”

“तुम्हारा नाम?”

“वह जानने की जरूरत नहीं।” देवराज चौहान मुस्कुराया।

“इंस्पेक्टर सूरजभान यादव की प्लेट छाती में लगाये, तुमने जेल से किसी को फरार करवा दिया है।”

“हाँ!”

“इस तरह तो इंस्पेक्टर सूरजभान यादव फँसेगा।”

“उसे कुछ नहीं होगा। सबने मेरा चेहरा देखा है। वह समझ जायेंगे कि मैं नकली था।”

“सूरजभान ने आखिर तुम्हें ऐसा करने की इजाजत कैसे दे दी?”

“उसने मुझे हर काम करने की छूट दे रखी है।”

“तुमने बताया कि वह घायल है।”

“हाँ!”

“कैसे घायल हुआ वह और तुम जो कर रहे हो, क्या उसका सम्बन्ध उसके घायल होने से है?”

“हाँ!”

“मुझे नहीं बताओगे कि ये मामला क्या है।”

“नहीं। ये नाजुक और खतरनाक मामला है।” देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।

“तुम मुझे सब कुछ बताओ तो तुम्हारे काम में मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ।”

“अभी तो सब ठीक चल रहा है, जब मुझे तुम्हारी सहायता की जरूरत पड़ेगी तो जरूर बताऊँगा। मुझे एक लैपटॉप की जरूरत है।”

“लैपटॉप?”

“न हो तो कम्प्यूटर से भी काम चल जायेगा।” देवराज चौहान ने कहा, “मैंने किसी को रिवॉल्वर दी है। उस रिवॉल्वर पर नन्ही सी माइक्रो चिप

लगी है। माइक्रो चिप का कोड मैं जब लैपटॉप सिस्टम में डालूँगा तो लैपटॉप की स्क्रीन पर मुझे उस इंसान की लोकेशन पता चलनी शुरू हो जायेगी, जिसे मैंने रिवॉल्वर दी थी।"

"तुम्हें लैपटॉप मिल जायेगा।" राठी बहुत गम्भीर स्वर में बोला,/"तुम पुलिस वाले नहीं हो ?"

"नहीं !"

"तो फिर ये सब काम कैसे कर रहे हो, जो... ।"

"मुझे सब आता है।"

"अपने बारे में मुझसे क्यों छिपा रहे हो ?"

"बताने की जरूरत नहीं समझता। मुझे लैपटॉप दो, मुझे अपना काम शुरू करना है।"

"तुम अब यहीं रुकोगे ?"

"ज्यादा नहीं, एक-दो दिन।"

"मैं सूरजभान की खातिर तुम्हारे काम आ रहा हूँ। तुम इसी कमरे में रहना। खामखाह बाहर मत निकलना। क्योंकि तुम कानून के साथ खेल रहे हो। पुलिस ने तुम्हें यहाँ से पकड़ा तो मैं भी फँस जाऊँगा।"

"शुक्रिया !"

"मैं नौकर से कह जाऊँगा। वह तुम्हारी जरूरतों का ध्यान रखेगा।" कहकर राठी बाहर निकल गया।

देवराज चौहान ने सिगरेट सुलगाई और कमरे की खिड़की खोल ली।

दस मिनट बाद एक आदमी भीतर आया। वह लैपटॉप ले आया था।

देवराज चौहान ने उससे लैपटॉप ले लिया।

वह आदमी बेड पर पड़ी वर्दी उठाने लगा तो देवराज चौहान ने पूछा- "इसे कहाँ फेंकोगे ?"

"राठी साहब ने कहा है कि यहाँ से दस किलोमीटर दूर कहीं भी फेंक दूँ।" वह बोला।

देवराज चौहान के सिर हिलाने पर वह बाहर निकल गया। देवराज चौहान ने लैपटॉप को ऑन किया और उसमें व्यस्त हो गया।

तभी एक नौकर भीतर आकर बोला।

"आप कुछ लेना पसन्द करेंगे ?"

"खाने में क्या है ?" लैपटॉप में व्यस्त देवराज चौहान ने कहा।

"लंच भी है, वह... ।"

"लंच नहीं, सैंडविच और कॉफी मिल जायेगी ?"

"यहाँ हर चीज मिलेगी साहब जी। आप अपनी जरूरत कह दीजिये।" नौकर मुस्कुराकर बोला।

"सैंडविच, कॉफी ला दो।"

नौकर चला गया।

देवराज चौहान लैपटॉप में ही व्यस्त रहा।

पन्द्रह मिनट में सैंडविच और कॉफी नौकर दे गया।

देवराज चौहान सैंडविच खाने और कॉफी पीने के दौरान भी लैपटॉप के बटनों से खेलता रहा।

करीब आधा घण्टा देवराज चौहान व्यस्त रहा फिर स्क्रीन पर जम्मू-कश्मीर का नक्शा नजर आने लगा। देवराज चौहान की उँगलियाँ लैपटॉप के बटनों से खेलती रहीं।

दस मिनट बाद ही लैपटॉप की स्क्रीन पर नजर आते नक्शे पर एक चमकीला चिन्ह नजर आने लगा। वह माइक्रो चिप के होने का संकेत था। वह माइक्रो चिपउस रिवॉल्वर के हत्थे पर चिपकी हुई थी जो जब्बार मलिक को दी गयी थी। माइक्रो चिप इतनी छोटी थी कि आसानी से उसे देख पाना आसान नहीं था। अब लैपटॉप का सम्बन्ध माइक्रो चिप से जुड़ चुका था। जब्बार मलिक जहाँ-जहाँ जायेगा, रिवॉल्वर उसके साथ होगी और जिस इलाके में वह पहुँचेगा, चमकीले बिंदु को उसी इलाके पर स्थिर हो जाना था।

इस सारे काम में सबसे अहम बात थी कि जब्बार मलिक कहाँ-कहाँ जा रहा है। इस तरह जब्बार मलिक पर नजर रखी जा सकती थी कि उसके लिंक कहाँ-कहाँ पर हैं। इसके साथ ही देवराज चौहान के मष्तिष्क में अब आगे की योजना तैयार हो रही थी।

उसने नौकर को बुलाकर एक और कॉफी लाने को कहा। उसी पल उसका मोबाइल बजने लगा। जबकि ये मोबाइल इंस्पेक्टर सूरजभान यादव का ही था।

"हैलो!" देवराज चौहान ने फोन पर बात की।

"इंस्पेक्टर सूरजभान यादव।" ये आवाज बड़ा खान की थी।

"कहो बड़ा खान!" देवराज चौहान के चेहरे पर कुटिलता-भरी मुस्कान उभरी।

"तुमने जब्बार मलिक को जेल से फरार करवा दिया।" बड़ा खान की कानों में पड़ने वाली आवाज में गंभीरता थी।

"कैसे जाना?"

"जेल में जब्बार मलिक की फरारी को लेकर हंगामा मचा हुआ है। वहाँ मौजूद मेरे आदमियों ने बताया।"

"तुम्हें तो खुशी हो रही होगी कि जब्बार मलिक जेल से बाहर आ गया।"

कुछ खामोशी के बाद बड़ा खान की आवाज कानों में पड़ी।

"खुशी तब होती, अगर तुमने मेरे से कीमत लेकर उसे फरार करवाया होता।"

"मैंने जब्बार को समझौते के तहत फरार करवाया है। उसने मुझे तुम्हारे बारे में सब बता दिया है। पुलिस आर्टिस्ट से तुम्हारे चेहरे का स्कैच भी उसने बनवाया। अब तुम...।"

"झूठ बोल रहे हो तुम।"

"वह कैसे?"

"ऐसा कुछ हुआ होता तो मुझे खबर मिल जाती। तुम सिर्फ जब्बार से बातें करते रहे कुर्सियों पर बैठकर। स्कैच नहीं बनवाया।"

"चलो मान लिया कि नहीं बनवाया।" देवराज चौहान फोन पर मुस्कुरा उठा।

"मुझसे झूठ बोलकर तुम मुझे परेशान करना चाहते हो इंस्पेक्टर।"

"ऐसा ही समझ लो।"

"लेकिन तुम्हारी इस बात पर मुझे विश्वास हो गया कि जब्बार ने तुम्हें मेरे बारे में बताया है। न बताया होता तो तुम उसे जेल से फरार न करवाते। परन्तु एक बात मुझे समझ नहीं आई।"

"क्या ?"

"आखिर तुम उसे जेल से फरार कैसे करवा सकते हो। तुम पुलिस वाले हो। तुम्हारा कानून अब तुम्हें नहीं छोड़ेगा।"

देवराज चौहान हँस पड़ा।

"इसमें हँसने की क्या बात है ?"

"ये मेरी सिरदर्दी है, मैं इसे संभाल लूँगा।"

"मैं तुम्हें ठीक से समझ नहीं पा रहा हूँ इंस्पेक्टर।"

"जब तक मैं तुम्हें समझाना न चाहूँ तुम कुछ भी नहीं कह सकते। तुम्हें अपने बारे में चिंता करनी चाहिए।"

बड़ा खान की आवाज नहीं आई।

"मेरे आदमी और मैं तुम्हें कभी भी शूट कर सकते... ।"

"मैं सुरक्षित हूँ। तुम लोग मुझ तक नहीं पहुँच सकते। इस बात का डर मुझे मत दिखाओ। परन्तु तुम चाहो तो अभी भी मेरे से पैसा काम सकते हो। मुझे ये बताओ कि जब्बार ने तुम्हें क्या बताया और पैसा लो।"

"मैं रिश्वत नहीं लेता।"

"कुछ तो बात है इंस्पेक्टर।"

"क्या बात ?"

"तुमने करोड़ों रुपया नहीं लिया और जब्बार को यूँ ही जेल से निकाल दिया। कुछ तो बात है।"

"सोचते रहो। इसका जवाब मैं तुम्हें मिलने पर दूँगा।"

"मिलने पर ?"

"मैं बहुत जल्दी तुम तक पहुँचने वाला हूँ।"

"ये बकवास करनी अब बन्द भी करो। ऐसी झूठी बातों से तुम मेरा दिमाग खराब नहीं कर सकते।"

"इस बात का जवाब तुम्हें वक्त देगा।"

"जब्बार कहाँ है ?"

देवराज चौहान की निगाह लैपटॉप की स्क्रीन पर दिखाई दे रहे नक्शे पर चमकते बिंदु पर गई ।

"वह अभी तुम तक पहुँचा नहीं ।"

बड़ा खान की आवाज नहीं आई ।

"वह जल्दी तुमसे मिल लेगा ।" देवराज चौहान ने हँसकर कहा ।

"तुम्हारे आदमी उस पर नजर रख रहे होंगे ।"

"बिल्कुल नहीं !"

"तुम जब्बार के दम पर मुझ तक पहुँचना चाहते हो ।"

"नहीं ! कोई भी उसका पीछा नहीं कर रहा ।"

"तो क्या जब्बार मेरे बारे में तुम्हें खबर देकर मुझे फँसा देगा । जेल से आजादी की कीमत वह इस तरह चुकाएगा ?"

"ऐसा भी नहीं है ।"

"इंस्पेक्टर !"

"कहो, सुन रहा हूँ ।"

"अब जब्बार मलिक मेरे काम का नहीं रहा । मेरे काम का तब होता, जब तुमने मेरे से पैसा लेकर उसे जेल से निकाला होता । उसके और तुम्हारे बीच कोई समझौता हुआ है, जो कि जाहिर है, मेरे खिलाफ ही होगा ।"

"समझौते में बारे में मैं तुम्हें नहीं बता सकता ।"

"जानता हूँ तुम नहीं बताओगे । तुम कोई जबरदस्त खेल खेल रहे हो मेरे खिलाफ । मैं उस खेल को समझ नहीं पा रहा हूँ । परन्तु जब्बार मलिक अब मेरे काम का नहीं रहा । क्योंकि वह मेरे खिलाफ तुम्हारे सामने मुँह खोल चुका है ।"

देवराज चौहान के चेहरे पर मुस्कान नाच उठी ।

"तुम्हारी बातों में आकर जब्बार मलिक मेरे लिए खतरा बन सकता है । तुमने उसे यूँ ही जेल से नहीं निकाला होगा ।"

देवराज चौहान के चेहरे पर मुस्कान छाई रही । तभी नौकर आया और कॉफी रखकर चला गया ।

"बड़ा खान !" देवराज चौहान ने कहा, "ये अब तुम्हारा और जब्बार का मामला है। मुझे इस बात से कोई मतलब नहीं कि तुम दोनों अब आपस में कैसे रिश्ते रखते हो। इतना याद रखो कि मैं तुम्हें छोड़ने वाला नहीं।"

उधर से बड़ा खान ने फोन बन्द कर दिया था।

देवराज चौहान ने मोबाइल बेड पर रखा और कॉफी का प्याला उठाकर घूँट भरा।

उसी पल मोबाइल पुनः बज उठा।

"हैलो।!" देवराज चौहान ने मोबाइल पर बात की।

"इंस्पेक्टर सूरजभान !" ए.सी.पी. संजय कौल की हड़बड़ाई आवाज कानों में पड़ी, "ये तुमने क्या किया। जब्बार को जेल से क्यों निकाला। तुम दोनों कहाँ हो। जानते हो कि तुमने कितना गलत काम किया है जब्बार को जेल से भगाकर ?"

देवराज चौहान के चेहरे पर गंभीरता आ गई।

"तुम सुन रहे हो मेरी बात ?"

"हाँ, कमिश्नर साहब, सुन रहा... ।"

"कमिश्नर साहब ? क्या तुम बात करना भी भूल गए। तुम्हारी भलाई इसी में है कि तुम अपने को और जब्बार को मेरे हवाले कर दो। मैं दिल्ली फोन करके तुम्हारी रिपोर्ट देने जा रहा हूँ कि तुमने क्या कर दिया है।"

"मैं इंस्पेक्टर सूरजभान यादव नहीं हूँ कमिश्नर।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा।

"क्या ?" कमिश्नर कौल की तेज आवाज कानों में पड़ी, "तुम इंस्पेक्टर सूरजभान यादव नहीं हो। तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारी इस बात पर भरोसा कर लूँ ? अपने को और जब्बार को कानून के हवाले कर... ।"

"मैं सच में सूरजभान यादव नहीं हूँ। पुलिस वाला नहीं हूँ।" देवराज चौहान ने कहा, "दिल्ली से आप इंस्पेक्टर सूरजभान की तस्वीर मंगाकर, मेरी कही बात का सच-झूठ पता लगा सकते हो।"

"हे भगवान, क्या तुम सच में सूरजभान नहीं हो ?"

"नहीं !"

"तो तुम पुलिस की वर्दी पहनकर, सूरजभान के नाम पर हमें धोखा देते रहे ?"

"ये बात ठीक कही । मेरे पास जो मोबाइल फोन है, वह अवश्य सूरजभान यादव का है ।"

"तुम... तुम जब्बार को जेल से फरार करवाने आये थे ?"

देवराज चौहान खामोश रहा ।

"इंस्पेक्टर सूरजभान यादव कहाँ है ?"

"मेरे पास ।"

"तो तुमने उसका अपहरण कर लिया और खुद सूरजभान यादव बनकर जम्मू आ गए ।"

देवराज चौहान चुप रहा ।

"तुम हो कौन ? बड़ा खान के आदमी हो ?"

"नहीं !"

"तो फिर कौन हो ?"

"ये मैं नहीं बता सकता परन्तु एक बात जरूर कहूँगा कि खाकी पहनकर मैंने खाकी से गद्दारी नहीं की और... ।"

"बकवास मत करो । तुम बच नहीं सकते ।" कमिश्नर कौल की गुस्से भरी आवाज कानों में पड़ी, "तुमने जब्बार मलिक जैसे खूंखार आतंकवादी को जेल से फरार करवा दिया और कहते हो कि खाकी से गद्दारी नहीं की । तुम तो... ।"

"मेरी बात आपकी समझ में नहीं आएगी । सच बात मैं आपको बताना भी नहीं चाहता ।"

"सच ये है कि तुमने जब्बार मलिक को जेल से फरार करवा दिया ।"

"ये सच है ।"

"क्या तुम पुलिस वाले हो ?"

"नहीं !"

"जब्बार के साथ खुद को पुलिस के हवाले कर... ।"

"जब्बार मेरे पास नहीं है । वह जा चुका... ।"

"कहाँ ?"

"मैं नहीं जानता वह कहाँ है, परन्तु मेरे लिए इस वक्त वह फालतू कबूतर की तरह है। वह जहाँ भी उड़ान भरे, परन्तु बाद में वह मेरे पास ही आएगा। मैंने उसे ऐसे चक्रव्यूह में फँसा दिया है कि... ।"

"मैं तुम्हें समझ नहीं पा रहा कि तुम कहना क्या चाहते हो ?"

"एक खास वक्त के बाद आप सब कुछ समझ... ।"

"तुम जो कोई भी हो अपने को कानून के हवाले कर दो ।" कमिश्नर कौल ने कठोर स्वर में कहा, "तुम किसी भी हाल में बच नहीं सकते । पूरे जम्मू में पुलिस का जाल बिछ चुका है। तुम जम्मू से बाहर नहीं जा सकते। जल्दी पकड़े जाओगे।"

देवराज चौहान ने फोन बन्द कर दिया। उसके चेहरे पर गंभीरता थी।

फोन दोबारा बजने लगा । देवराज चौहान ने स्क्रीन पर आया नम्बर देखा। कमिश्नर का ही फोन था। देवराज चौहान ने कॉल रिसीव नहीं की।

कमिश्नर कौल को बताने के लिये उसके पास कुछ नहीं था।

देवराज चौहान की निगाह स्क्रीन पर मौजूद जम्मू के नक्शे के बीच चमकते बिंदु पर बार-बार जा रही थी। वह बिंदु नहीं, जब्बार मलिक की वहाँ पर मौजूदगी का एहसास था। नक्शा बता रहा था कि जब्बार इस वक्त खबर नामक इलाके में मौजूद है। देवराज चौहान के चेहरे पर गम्भीरता नाच रही थी। उसने सिगरेट सुलगा ली थी। उसे कुछ दिन पहले की दिल्ली की बातें याद आईं। वह जगमोहन के साथ होटल में ठहरा हुआ था। मुम्बई से दिल्ली आये उन्हें दस दिन हो चुके थे और जिस काम के लिए वे आये थे, वह काम पूरा हो चुका था। वापसी प्लेन की अपेक्षा, उन्होंने ट्रेन से करने का मन बनाया था। ट्रेन रात की थी। अभी सुबह के ग्यारह बजे थे।

जगमोहन के कनॉट प्लेस में शॉपिंग का मन बनाया और दोपहर को देवराज चौहान के साथ कनॉट प्लेस जा पहुँचा था । मौसम अच्छा था । अभी वे रेडीमेड कपड़ों की दुकान के बाहर ही थे कि दस कदमों के फासले पर उन्होंने एक पुलिस कार रुकती देखी। ड्राइविंग सीट पर एक ही पुलिस वाला था।

वह इंस्पेक्टर सूरजभान यादव था। जो कि कार से निकलकर उसी रेडीमेड कपड़ों के शो-रूम की तरफ बढ़ा।

देवराज चौहान और जगमोहन की नजरें मिलीं।

"चिंता मत करो। इस पुलिस वाले का हमसे कोई मतलब नहीं।" देवराज चौहान ने कहा।

"मैं कहाँ चिंता कर रहा हूँ।" जगमोहन मुस्कुराया।

तभी दो काम एक साथ हुए।

पहला तो ये कि सूरजभान यादव उनके पास से निकला।

दूसरा, उसी वक्त तेज धमाके के साथ सामने खड़ी पुलिस कार उड़ गई। आग के जलते टुकड़े आसपास से गुजरते लोगों पर गिरे। दो लोग उस धमाके की चपेट में आ गए और उनके शरीर के चीथड़े उड़ गए। सूरजभान यादव जगमोहन से टकराया और लड़खड़ा कर नीचे जा गिरा। फिर संभला।

वहाँ चीख-पुकार मच गई थी। देवराज चौहान और जगमोहन स्तब्ध रह गए थे। इस तरह धमाके से कार उड़ती देखकर।

इंस्पेक्टर सूरजभान यादव खड़ा हो चुका था और हड़बड़ाया सा लग रहा था। वह जलती कार को देख रहा था। उसे यकीन नहीं आ रहा था कि उसकी पुलिस कार बम धमाके से उड़ गई है। उसे मारने की चेष्टा की गई है।

अभी कोई कुछ ठीक से समझा भी नहीं था कि तभी देवराज चौहान की निगाह दो आदमियों पर पड़ी जो कि जेबों में हाथ डाले, इंस्पेक्टर सूरजभान यादव को देखते उसकी तरफ बढ़ रहे थे।

देवराज चौहान समझ गया कि उनके हाथ रिवाल्वरों पर हैं।

वे इस पुलिस वाले को मारने का इरादा रखते हैं। इन्होंने ही उसकी कार में बम लगाया होगा। देवराज चौहान इस वक्त रिवॉल्वर नहीं निकालना चाहता था। लोगों की भीड़ थी। गोलियाँ चलीं तो किसी को भी लग सकती थी। देवराज चौहान पास खड़े सूरजभान यादव की बाँह पकड़कर कह उठा- "वह तुम्हें मारने आ रहे हैं।"

सूरजभान यादव ने चौंककर उधर देखा। पास आ चुके दोनों बदमाश भी समझ गए कि इंस्पेक्टर ने उन्हें देख लिया है।

जगमोहन की निगाह भी तब तक दोनों पर टिक चुकी थी।

तभी जगमोहन ने उनमें से एक पर छलांग लगा दी।

"तुम भाग जाओ इंस्पेक्टर!" कहने के साथ ही देवराज चौहान दूसरे व्यक्ति पर झपट पड़ा।

परन्तु इंस्पेक्टर यादव भागा नहीं और दाँत भींचकर रिवॉल्वर निकाल ली।

उस आदमी ने बाँह आगे करके, अपने पर झपटते देवराज चौहान को अपनी बगल की तरफ धक्का दिया और सूरजभान पर गोली चला दी। जो कि सूरजभान के पेट में लगी।

उसी पल सूरजभान की रिवॉल्वर से भी गोली निकली, परन्तु निशाना चूक गया। जगमोहन दूसरे आदमी से भिड़ा हुआ था।

चीख-पुकार, शोर मचा हुआ था।

सामने ही सड़क पर कार जल रही थी। देवराज चौहान संभलकर पुनः उस आदमी पर झपटा जो दोबारा सूरजभान पर फायर करने जा रहा था।

सूरजभान ने पेट पकड़ रखा था। चेहरे पर पीड़ा थी। दूसरे हाथ में रिवॉल्वर थी।

आसपास ज्यादा भीड़ होने के कारण सूरजभान गोली चलाने में हिचक रहा था। तभी उसने देवराज चौहान को रिवॉल्वर वाले से उलझते देखा।

उसने देवराज चौहान को एक तरफ गिराकर तीन-चार गोलियाँ सूरजभान पर चला दी।

एक गोली सूरजभान के कन्धे पर लगी और दूसरी उसकी छाती पर। तीसरी कमर में घुसकर, पीछे से निकल गई। चौथी खाली गई और भीड़ में एक औरत को जा लगी।

हर तरफ दहशत का माहौल बन गया था। लोग दूर भागने लगे। जबकि इंस्पेक्टर सूरजभान यादव नीचे जा गिरा।

तभी वह बदमाश जिसने सूरजभान पर गोलियाँ चलाई थीं, वह भाग खड़ा हुआ। देवराज चौहान उसके पीछे न गया और सूरजभान यादव के पास पहुँचा।

"तुम्हें... तुम्हें तो कई गोलियाँ लगीं... ।" देवराज चौहान ने कहना चाहा ।

"मुझे यहाँ से ले चलो ।" सूरजभान ने डूबते स्वर में कहा ।

"मैं तुम्हें अस्पताल... ।"

"नहीं ! वहाँ मत ले जाना ।" सूरजभान का स्वर धीमा पड़ता जा रहा था, "बड़ा खान मुझे मार देगा ।"

"बड़ा खान, ये कौन है ?"

"वह मेरे परिवार तक भी पहुँचेगा । मेरे बीवी-बच्चों को बचा लो ।"

"वह कहाँ हैं ?" देवराज चौहान ने होंठ भींचकर पूछा ।

सूरजभान ने अपने घर का पता बताया और बेसुध हो गया ।

जगमोहन दूसरे व्यक्ति को पकड़ रखने की चेष्टा कर रहा था जबकि वह भाग जाना चाहता था ।

"उसे जाने दो ।" देवराज चौहान ने कहा ।

जगमोहन ने उसे भाग जाने दिया और पास आ पहुँचा ।

"तुमने इसे छोड़ देने को क्यों कहा ?"

"इसकी हालत ठीक नहीं है । कई गोलियाँ लगी हैं इसे । ये मामला उतना नहीं है जितना कि नजर आ रहा है । इस पुलिस वाले के परिवार वालों को भी बचाना है ।"' देवराज चौहान ने घायल सूरजभान को उठाया, उसे कन्धे पर लादा और आगे बढ़ गया ।

"इसे अस्पताल में... ।"

"इसने बेहोश होने से पहले अस्पताल में ले जाने से मना कर दिया था । इसे किसी बड़ा खान से खतरा है । वे दोनों बड़ा खान के ही आदमी थे । उस कार की तरफ चलो ।" बेहोश सूरजभान को कन्धे पर लादे देवराज चौहान सड़क किनारे खड़ी कार के पास पहुँचा । कार में चाबियाँ लटक रही थीं । कार का मालिक शायद बाहर निकलकर देख रहा होगा कि यहाँ क्या हो रहा है ।

जगमोहन ने स्टेयरिंग सीट संभाली और कार स्टार्ट की ।

देवराज चौहान ने सूरजभान को पीछे वाली सीट पर लिटाया और दरवाजा बन्द करके खुद पास ही बैठ गया।

तभी जगमोहन ने एक आदमी को दौड़कर कार के पास आते देखा। जगमोहन समझ गया कि वह ही इस कार का मालिक होगा। जगमोहन ने तुरन्त कार आगे बढ़ा दी।

"जाना कहाँ है ? ये घायल है और.... ।"

"तुम्हारे पास पार सनाथ का नम्बर है ?" देवराज चौहान ने पूछा।

"हाँ। मेरे फोन में है।" जगमोहन ने फौरन जेब में हाथ डालकर मोबाइल निकाला, "क्या कहूँ उससे ?"

"इसे रखने के लिये हमें किसी जगह की जरूरत है और पारस नाथ से डॉक्टर की बात करो।"

जगमोहन नम्बर मिलाकर पारस नाथ से बात करने लगा।

□□□

रात हो गई थी। उनका मुम्बई जाना रह गया।

जगमोहन के फोन करते ही पारस नाथ ने एक बंगले का पता बताकर वहाँ पहुँचने को कहा था। जब वे वहाँ पहुंचे तो डिसूजा तब तक वहाँ पहुँच चुका था। उन्होंने घायल बेहोश इंस्पेक्टर सूरजभान यादव को भीतर ले जाकर बेड पर डाला। उसकी साँसों की रफ्तार में धीमापन आ चुका था। दस मिनट बाद ही पारस नाथ वहाँ पहुँचा। उसके साथ डॉक्टर और उसका सहायक था।

डॉक्टर उसी वक्त काम पर लग गया। एक घण्टे में शरीर से सारी गोलियाँ निकालकर बैंडिज कर दी गई थी। डॉक्टर ने बताया कि कोई भी गोली घातक जगह नहीं लगी है। फिर भी होश आने तक तो खतरा है ही। दो इंजेक्शन लगाकर, रात को आने को कहकर डॉक्टर गया तो देवराज चौहान ने पारस नाथ से कहा-

"बेहोश होने से पहले इसने कहा कि इसकी पत्नी और बच्चे को भी खतरा है।"

“कहाँ हैं वह ?”

देवराज चौहान ने पता बताया तो डिसूजा कह उठा- “मैं उन्हें वहाँ से हटा देता हूँ ।” डिसूजा चला गया ।

“ये बताया कि किससे खतरा है ?”

“बड़ा खान जैसा नाम ले रहा था ये ।”

“बड़ा खान ?” पारस नाथ बोला, “जम्मू-कश्मीर में आतंकवादी संगठन है इसका ।”

“मैंने कभी ये नाम नहीं सुना ।” देवराज चौहान ने कहा, “तुम्हारा शुक्रिया कि तुमने बंगला और डॉक्टर... ।”

“रहने दो, ये बातें मत करो ।” पारस नाथ कह उठा, “मैं तो ये सोच रहा हूँ कि इसने अस्पताल जाने से क्यों मना किया । ये क्यों नहीं कहा कि पुलिस डिपार्टमेंट को खबर कर दें ।”

“बड़ा खान का खतरा होगा ।” देवराज चौहान बोला ।

“वह तो जम्मू-कश्मीर में... ।”

“उसकी पहुँच दिल्ली तक भी हो सकती है । कोई बात तो होगी ।”

“अब इसके पास किसी के रहने का इंतजाम... ।” पारस नाथ ने कहना चाहा ।

“मैं और जगमोहन इसके पास रहेंगे । हम फुर्सत में हैं ।” देवराज चौहान बोला ।

“ठीक है । डिसूजा इसके परिवार वालों को भी ले आएगा ।”

“अगर वह अब तक सलामत हुए तो ।”

जगमोहन बेहोश सूरजभान के पास बैठा था । पारस नाथ फिर आने को कहकर चला गया ।

रात नौ बजे डॉक्टर आया और सूरजभान को इंजेक्शन लगा गया । डिसूजा सूरजभान की पत्नी और बच्चों को ले आया था ।

उसकी पत्नी चिंतित और बहुत घबराई हुई थी । उसे समझाकर लाने में, डिसूजा को वक्त लग गया था । दो बच्चे थे जो कि अपने पापा की हालत देखकर रो रहे थे । देवराज चौहान ने सूरजभान की पत्नी सुधा को बताया कि

सूरजभान ने ही बेहोश होने से पहले उन्हें बुलाने को कहा था। सुधा अपने पति के पास उसकी देखरेख के लिए बैठ गई। जगमोहन बच्चों को लेकर दूसरे कमरे में चला गया।

रात ग्यारह बजे इंस्पेक्टर सूरजभान यादव को होश आ गया।

सुधा दूसरे कमरे से देवराज चौहान को बुला लाई।

सूरजभान की हालत ज्यादा बेहतर नहीं थी। लेकिन अपनी पत्नी को पास में देखकर वह खुश हुआ था। उसने आभार भरी नजरों से देवराज चौहान को देखा तो देवराज चौहान मुस्कुरा दिया।

सूरजभान ने बच्चों को देखने की इच्छा जताई। देवराज चौहान ने बताया कि वह सो गए हैं। उन्हें उठाना ठीक नहीं।

"तुम्हारी मेहरबानी।" सूरजभान क्षीण स्वर में बोला, "तुमने मुझे बचा लिया।"

"पुलिस डिपार्टमेंट तुम्हें ढूंढ रहा होगा। तुम्हारी पुलिस कार में विस्फोट हुआ था।" देवराज चौहान ने कहा।

कुछ लम्बे पलों तक आँखें बन्द रखने के बाद सूरजभान ने आँखें खोलकर कहा।

"शायद कोई नहीं जानता कि मैं उस कार में था। वह कार मुझे एक चौराहे पर खड़ी मिली थी। परन्तु पास में कोई पुलिस वाला नहीं था और चाबियाँ उसमें लगी थीं। लापरवाही का सबक सिखाने के लिए मैं वह कार लेकर चल पड़ा कि कुछ देर वह परेशान होंगे और उन्हें एहसास होगा कि इस तरह कार में चाबी लगी नहीं छोड़नी चाहिए। रात मैं जम्मू जा रहा था। बाजार से कुछ चीजें खरीदनी थीं। दो-तीन जगह मैं रुका और उसी दौरान बड़ा खान के आदमियों ने कार में बम लगा दिया होगा। परन्तु मैं किस्मत से बच निकला। वह पीछे होंगे और मुझे बम विस्फोट में बचते पाकर वह मेरी जान लेने के लिए मुझ पर गोलियाँ चलाने लगे। परन्तु तुम और तुम्हारा साथी बीच में आ गए।"

"बड़ा खान जम्मू-कश्मीर का आतंकवादी तो नहीं?" देवराज चौहान ने पूछा।

“हाँ, वही ! सूरजभान ने आँखें बन्द करके कमजोर स्वर में कहा, “अभी मुझे आराम करने दो । मैं थकान और कमजोरी महसूस कर रहा हूँ । नींद आ रही है ।”

□□□

सुबह आठ बजे इंस्पेक्टर सूरजभान यादव की आँख खुली ।

सुधा रात भर उसके पास बैठी रही । कभी जागी तो कभी सोई । रात दो बार जगमोहन ने आकर कहा था कि आराम कर लें । परन्तु सुधा नहीं मानी थी । अब सुधा की आँखें भारी हो रहीं थीं । चेहरा ढीला लग रहा था । अपने पति को बेहतर पाकर वह खुश थी ।

सूरजभान पहले से ठीक था । यूँ वह हिलने की स्थिति में नहीं था । चार गोलियाँ लगीं थीं उसे । परन्तु अब वह कुछ देर बात करते रहने के काबिल था ।

“फिक्र मत करो सुधा ।” सूरजभान कमजोर स्वर में बोला, “अब मैं ठीक हूँ ।”

सुधा की आँखों से आँसू बह निकले ।

“वे कहाँ हैं, जिन्होंने मुझे बचाया है ।” सूरजभान ने पूछा ।

“साथ वाले कमरे में हैं ।”

“उन्हें बुलाओ । वे दोनों सच में अच्छे इंसान हैं । उन्होंने मुझे बचाया, वरना मैं जिन्दा नहीं रहता ।”

सुधा देवराज चौहान को बुला लाई ।

जगमोहन किचन में कॉफी तैयार कर रहा था ।

“अब तुम कैसा महसूस कर रहे हो ?” देवराज चौहान पास पड़ी कुर्सी पर बैठता कह उठा ।

“पहले से ठीक हूँ । मुझे कितनी गोलियाँ लगीं ?”

“चार । खुशी है कि कोई गोली घातक जगह नहीं लगी । तुम्हें कम से कम 15 दिन आराम करना होगा ।”

“तुमने मुझे बचा लिया ।”

"इत्तफाक से ।" देवराज चौहान बोला, " तब मैं और मेरा साथी वहाँ थे ।"

"मेरी पत्नी और बच्चों को यहाँ लाकर, इन्हें भी बचा लिया । वरना बड़ा खान इन्हें मार देता ।"

"बड़ा खान के बारे में मुझे बताओ ।"

"ये कश्मीर में आतंकवादी संगठन का मालिक है और खतरनाक है । इसके बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है पुलिस के पास । दो साल पहले ये अचानक ही सामने आया और आतंकवाद की दुनिया में छा गया ।"

"यह तुम्हारे पीछे क्यों पड़ा है ?" देवराज चौहान ने पूछा ।

कुछ देर चुप रहकर सूरजभान यादव मध्यम स्वर में बोला ।

"बड़ा खान का एक करीबी साथी छः महीने पहले जम्मू पुलिस के हाथ लग गया था । जब्बार मलिक नाम है उसका । परन्तु छः महीने बीत जाने पर भी वह मुँह नहीं खोल रहा । बड़ा खान के बारे में नहीं बता रहा । पुलिस वालों ने हर तरह से कोशिश कर ली । इसी बीच बड़ा खान ने जम्मू पुलिस को धमकी दी कि वह जब्बार मलिक को जेल से निकाल ले जायेगा । ऐसे में जब्बार पर कड़ी सुरक्षा लगा दी गई । जब्बार दिल्ली में भी बम धमाके कर चुका है । इसलिए दिल्ली पुलिस उसे हाथ से नहीं जाने देना चाहती । दिल्ली में मुझे एनकाउंटर स्पेशलिस्ट कहा जाता है । अपराधी मुझसे खौफ खाते हैं ।"

सूरजभान कुछ क्षण साँस लेने के लिए रुका ।

तभी जगमोहन कॉफी बना लाया । एक प्याला देवराज चौहान को दिया, दूसरा सुधा को और तीसरा खुद ले लिया ।

"दिल्ली पुलिस ने मुझे जम्मू जाने का आदेश देते हुए जब्बार मलिक का मामला मुझे सौंप दिया । साथ में इस बात के ऑर्डर भी थे कि बड़ा खान को ढूंढकर खत्म कर दूँ । ये सारा काम गोपनीय ढंग से हुआ । इस बात को डिपार्टमेंट की तरफ से छिपाया गया कि मुझे बड़ा खान को खत्म करने का काम सौंपा गया है । परन्तु एक घण्टा भी नहीं बीता होगा कि मेरे मोबाइल पर बड़ा खान का फोन आ गया ।"

"बड़ा खान का फोन, तुम्हारे मोबाइल पर ?" जगमोहन बोला।

"हाँ ! उसे पता चल गया था कि जब्बार के लिए और उसके लिए मैं जम्मू जा रहा हूँ। मेरा अपराधियों में खौफ है। यहाँ मुझे एनकाउंटर स्पेशलिस्ट कहा जाता है। आज तक मैंने 32 एनकाउंटर किये हैं। ऐसे अपराधी जो देश और जनता के लिये घातक होते हैं, उन्हें मैं मार देना पसन्द करता हूँ। बड़ा खान ने मुझे स्पष्ट धमकी दी कि अगर मैंने जम्मू जाने का प्रोग्राम रद्द नहीं किया तो वह मुझे और मेरे परिवार को मार देगा। परन्तु मैंने उसकी धमकी की परवाह नहीं की। ऐसी धमकियाँ मुझे अक्सर मिलती रहती हैं। हर दो घण्टे में बड़ा खान का धमकी भरा फोन आने लगा। बीती रात मुझे जम्मू के लिए रवाना होना था। दो दिन से मुझे बड़ा खान की धमकियों भरे फोन आ रहे थे, परन्तु ये जानकर कि उसका ही फोन है, मैं फोन काट देता। इतना तो मैं समझ चुका था कि बड़ा खान के लोग पुलिस डिपार्टमेंट में मौजूद हैं, तभी तो उसे तुरन्त ये बात पता चल गई कि उसे मारने का काम मेरे हवाले करके मुझे जम्मू भेजा जा रहा है।"

"तो इसी कारण गोलियाँ लगने के बाद तुमने अस्पताल जाने से मना कर दिया और पुलिस को खबर न देने को कहा।"

"हाँ। मैं अस्पताल ले जाया जाता तो मौका पाकर, बड़ा खान के हाथों बिका पुलिस वाला ही मुझे बेहोशी की हालत में मार देता। इसमें कोई शक नहीं कि बड़ा खान के हाथ बहुत लम्बे हैं।"

सूरजभान गहरी-गहरी साँसे लेने लगा।

"तुम आराम करो, अभी तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं।" देवराज चौहान ने कहा।

परन्तु सूरजभान पुनः कह उठा।

"कल मैं जम्मू जाने की तैयारी कर रहा था। कुछ चीजें खरीदने बाजार निकला था और मुझे मारने की कोशिश की गई। ऐसी कोशिश कि मैं बच न सकूँ। परन्तु तुम दोनों की मेहरबानी से मैं बच गया।"

सूरजभान को देखते हुए दोनों कॉफी के घूँट भर रहे थे।

सुधा उदास सी, कॉफी का प्याला थामे बैठी थी।

कुछ चुप रहकर सूरजभान कह उठा ।

"तुम कौन हो ?"

जगमोहन ने देवराज चौहान को देखा । देवराज चौहान मुस्कुराया ।

"तुम आराम करो ।" देवराज चौहान बोला ।

"मुझे बताओ तुम दोनों कौन हो ? तुम लोग साधारण इंसान नहीं हो सकते । कल जो हालात थे, उन हालातों को देखते ही लोग भाग जाते हैं परन्तु तुम लोग खाली हाथों से ही हथियारबंद बदमाशों से भिड़ गए । ये हौसला आम इंसान में नहीं हो सकता । तुम में से एक ऐसा करता तो मैं सोचता कि अचानक हिम्मत आ गई होगी । परन्तु तुम दोनों ने ही तब... ।"

"हमारे बारे में जानोगे तो हमारा एनकाउंटर करने के बारे में सोचने लगोगे ।" देवराज चौहान मुस्कुराकर कह उठा ।

सूरजभान ने देवराज चौहान को देखा । देवराज चौहान ने कॉफी का घूँट भरा ।

"गलत मत कहो । तुम लोग जो भी हो, इतने बुरे नहीं हो सकते कि मैं एनकाउंटर के बारे में सोचूँ । ऐसा होता तो तुम दोनों एक पुलिस वाले को बचाने की खातिर अपनी जान दाँव पर नहीं लगाते ।"

देवराज चौहान खामोश रहा ।

"आप आराम कीजिये ।" सुधा कह उठी ।

"बताओ ?" सूरजभान बोला, "अपने बारे में बताओ ? मेरा अनुभव कहता है कि तुम लोग बुरे नहीं हो ।"

"अभी तुम आराम करो ।" देवराज चौहान ने कहा ।

"नहीं ! पहले तुम मेरी बात का जवाब दो ।" सूरजभान ने जिद जैसे स्वर में कहा ।

तभी सूरजभान की वर्दी में पड़ा मोबाइल बजने लगा । फोन पैंट की जेब में था ।

"निकालो मेरा फोन ।" सूरजभान कह उठा ।

देवराज चौहान ने फोन निकाला और उसके सामने किया ।

बेड पर लेटा सूरजभान स्क्रीन पर आया नम्बर देखता रहा फिर बोला- "ये... ये शायद बड़ा खान का ही फोन है।"

ये सुनते ही देवराज चौहान ने जाने क्या सोचकर कॉल रिसीव कर ली।

"हैलो !" देवराज चौहान बोला।

"कौन बोल रहा है ?" बड़ा खान की ही आवाज थी। परन्तु देवराज चौहान आवाज को पहचानता नहीं था।

देवराज चौहान चुप रहा और फोन सूरजभान के कानों से लगा दिया।

"कौन हो तुम ?" इस बार बड़ा खान की आवाज, सूरजभान के कानों में पड़ी।

सूरजभान ने आँखों की सहमति से देवराज चौहान को बताया कि ये बड़ा खान ही है।

"तुम जिससे बात करना चाहते हो, वह ही बोल रहा हूँ।" देवराज चौहान ने फोन कान से लगाकर कहा।

"सूरजभान यादव ?"

"हाँ !"

"तुम्हारी आवाज कुछ बदली लग रही.... ।"

"सच बात तो ये है कि मुझे जिन्दा पाकर तुम्हारे कान खराब हो गए हैं बड़ा खान, जो मेरी आवाज को भी नहीं पहचान रहे। मैं इंस्पेक्टर सूरजभान यादव एनकाउंटर स्पेशलिस्ट।" देवराज चौहान ने कठोर स्वर में कहा।

"ओह ! तुम अभी जिन्दा हो।"

"पूरी तरह सलामत भी हूँ।" देवराज चौहान गुर्रा उठा।

"ये नहीं हो सकता। मेरे आदमी कहते हैं कि उन्होंने तुम्हें मार दिया है।"

"फिर तो तुम मेरे भूत से बात कर रहे हो।" देवराज चौहान कठोर स्वर में बोला, "मैं जरूर मारा जाता अगर कार में लगा बम दस सेकेण्ड पहले फट जाता। लेकिन तुम्हें मारने के लिए मैं जिन्दा रहा।"

"साले, कुत्ते तू मुझे मारेगा ! बड़ा खान को मारेगा।" बड़ा खान की गुर्राहट भरी आवाज कानों में पड़ी।

"एनकाउंटर स्पेशलिस्ट हूँ। तुम जैसों को खत्म करना ही मेरा फर्ज है।"

"तुम शायद बड़ा खान की हस्ती नहीं जानते जो ऐसा कह रहे हो ।"

"तुम जैसे आतंकवादी की कोई हस्ती है ही नहीं ।"

"बहुत जल्द तुम्हें पता चल जायेगा । तुमने अपने परिवार को कहाँ छिपा दिया है ?"

"तो तुम मेरे परिवार को भी खत्म करना चाहते हो ।"

"मैंने तुमसे कहा था कि जम्मू मत आओ । ये केस छोड़ दो । परन्तु मेरी धमकी को, महज शब्द मानकर उसे हवा में उड़ा दिया । फिर तुमने मेरा फोन रिसीव करना ही बन्द कर दिया । बड़ा खान तुम्हें बर्बाद कर देगा । तुम्हारे परिवार को भी जिन्दा नहीं छोड़ेगा । अभी भी वक्त है, मेरी बात मान जाओ ।"

"जम्मू न आऊँ ?" देवराज चौहान दाँत भींचकर बोला ।

"हाँ ! मेरे मामले में दखल मत दो ।"

"तुम मुझसे इतना घबरा क्यों रहे हो ?"

"मैं नहीं चाहता कि जम्मू आकर तुम मेरे लिए कोई परेशानी खड़ी करो । मैं जल्दी ही जब्बार मलिक को जेल से निकाल ले जाऊँगा और ऐसे मौके पर तुम्हें जम्मू में नहीं देखना चाहता ।"

"एनकाउंटर स्पेशलिस्ट को धमकी दे रहे हो और सोचते हो कि मैं तुम्हारी बात मान लूँगा ।"

"कल तुम बच गए परन्तु जरूरी नहीं कि दोबारा हुए हमले में तुम बच जाओ । तुम्हारा परिवार भी मरेगा । इस वर्दी की कीमत इतनी नहीं है कि तुम अपने को, अपने परिवार को मरवा डालो ।"

"तुम्हें क्या पता कि वर्दी की कीमत क्या... ।"

"ऐसे सैकड़ों वर्दी वाले, मेरे लिए काम करते हैं इंस्पेक्टर । इस वर्दी की कीमत कुछ भी नहीं है ।"

"इस वर्दी से तो अब तुम डर रहे हो ।" देवराज चौहान का लहजा कठोर था ।

"तो तुम नहीं मानोगे ?"

"अपनी खैर मनाओ बड़ा खान ! मैं जम्मू आ रहा हूँ। सिर्फ तुम्हारे लिए।" देवराज चौहान गुर्रा उठा।

"तो तुम फैसला कर चुके हो कि मेरे हाथों ही मरना है तुम्हें।" बड़ा खान का खतरनाक स्वर कानों में पड़ा।

देवराज चौहान ने फोन बन्द कर दिया। परन्तु चेहरे पर कठोरता नाच रही थी।

"क्या कहता है वह हरामी ?" सूरजभान ने पूछा।

"जम्मू न आने की धमकी दे रहा है।"

"हरामजादा !" सूरजभान गुस्से से कह उठा, "काश, मैं घायल न होता।"

अभी तक देवराज चौहान के दाँत भींचे हुए थे। जगमोहन की गम्भीर निगाह देवराज चौहान के चेहरे पर थी।

तभी पारस नाथ, डॉक्टर के साथ वहाँ आ पहुँचा। डॉक्टर, सूरजभान की देखभाल में इंजेक्शन लगाने में व्यस्त हो गया। मौका मिलते ही जगमोहन, देवराज चौहान को एक तरफ ले जाकर बोला-

"बड़ा खान को लेकर तुम क्यों परेशान हो रहे हो ?"

"मैंने उससे बात की है। वह सच में खतरनाक है। सूरजभान पर हुआ हमला तो तुम देख ही चुके हो।"

"इन बातों से हमें क्या मतलब ? ये पुलिस और बड़ा खान के बीच का मामला है।"

"वह खतरनाक आतंकवादी है।"

"तो ?"

"ऐसे लोगों को मैंने कभी पसन्द नहीं किया।" देवराज चौहान ने दाँत भींचकर कहा।

"तुम आखिर कहना क्या चाहते हो ?"

"मैं बड़ा खान से दो-दो हाथ करने जम्मू जाऊँगा।"

"ये क्या कह रहे हो ?" जगमोहन चौंका।

"मैं जाऊँगा।"

"ये बहुत लम्बा मामला हो जायेगा । बड़ा खान से हमारा क्या वास्ता ?"

देवराज चौहान के चेहरे पर दृढ़ता झलक रही थी ।

तभी पारस नाथ पास पहुँचा और देवराज चौहान के चेहरे के भाव देखकर बोला- "क्या हुआ ?"

"बड़ा खान का फोन आया था सूरजभान को । देवराज चौहान ने बात की । वह धमकी दे रहा था ।" जगमोहन ने कहा, "सूरजभान तो घायल है और ये कहता है की बड़ा खान के लिए जम्मू जाएगा ।" "

"तुम्हें क्या जरूरत है ?" पारस नाथ गम्भीर स्वर में देवराज चौहान से बोला ।

"बड़ा खान से बात करके मुझे अचानक ही जरूरत महसूस होने लगी जम्मू जाने की ।" देवराज चौहान ने कड़वी मुस्कान के साथ कहा, "वह आतंकवादी है और इस पुलिस वाले के परिवार के पीछे पड़ चुका है । ये इस तरह कब तक रहेंगे । कभी तो इन्हें बाहर निकलना होगा । तब बड़ा खान इन्हें मार देगा ।"

"तुम्हें इसके परिवार की चिंता है, ये अच्छी बात है । परन्तु बड़ा खान के सामने शायद तुम टिक न सको । इस बात की तरफ भी तुम्हें सोच लेना चाहिए । ये आसान मामला नहीं है ।" पारस नाथ ने कहा ।

"मैं जानता हूँ कि बड़ा खान का सामना करना आसान नहीं होगा । लेकिन मैं उसे देख लूँगा ।" देवराज चौहान ने कहा और कमरे से बाहर निकलता चला गया ।

पारस नाथ और जगमोहन की नजरें मिलीं । वह डॉक्टर सूरजभान के साथ व्यस्त था । सुधा बेड के पास ही खड़ी थी ।

"अब देवराज चौहान नहीं मानने वाला ।" जगमोहन ने गहरी साँस ली ।

"तुम उसे समझाने की चेष्टा करना ।" पारस नाथ बोला, "कुछ ही देर में डिसूजा आएगा । वह तुम सबके लिए खाने-पीने का सामान ला रहा है । इस घायल के लिए सूप और जूस भी है ।" पारस नाथ ने सिर हिला दिया ।

"ये पुलिसवाला है। इसे और इसके परिवार को बचाना पुलिस डिपार्टमेंट का काम है।" पारस नाथ ने कहा।

"उसका कहना है कि पुलिस डिपार्टमेंट में ऐसे कई लोग हैं जो बड़ा खान के लिए काम करते हैं।" जगमोहन ने गंभीर स्वर में कहा, "और देवराज चौहान व्यक्तिगत तौर पर आतंकवादियों को पसन्द नहीं करता। मेरे ख्याल में तो अब देवराज चौहान लाख समझाने पर भी नहीं मानेगा और बड़ा खान से टकराने जम्मू जरूर जायेगा।"

"बड़ा खान खतरनाक है। मैंने उसके बारे में काफी कुछ सुन रखा है।"

जगमोहन गहरी साँस लेकर रह गया।

"कोशिश करना कि देवराज चौहान को समझाकर, जम्मू जाने से रोक सको।" पारस नाथ ने कहा और डॉक्टर की तरफ बढ़ गया।

कुछ देर बाद डॉक्टर और पारस नाथ चले गए।

सूरजभान के पास सुधा बैठी थी। उनके बच्चे भी जाग गए थे और कमरे में आ गए थे। कुछ ही देर में डिसूजा सबके लिए खाने-पीने का सामान ले आ गया।

□□□

दोपहर के एक बज रहे थे।

इस दौरान कमरे में जगमोहन ने देवराज चौहान को समझाने की चेष्टा की कि हमें बड़ा खान और पुलिस के बीच नहीं आना चाहिए। यह हमारा मामला नहीं है। परन्तु देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा कि वह जम्मू जायेगा।

लंच के वक्त देवराज चौहान और जगमोहन, सूरजभान के पास पहुँचे। सूरजभान बेड पर पीठ के बल लेटा हुआ था। तीन दिन तक डॉक्टर ने ऐसे ही लेटे रहने को कहा था।

"तुम जल्दी ही ठीक हो जाओगे।" देवराज चौहान कुर्सी पर बैठते कह उठा।

"डॉक्टर ने पंद्रह दिन कहा है। पूरी तरह ठीक होने में महीना लगेगा।" सूरजभान क्षीण स्वर में बोला।

"ये ही शुक्र है कि चार गोलियों के बाद भी तुम बच गए।"

"तुमने अपने बारे में नहीं बताया ?" सूरजभान ने पूछा।

"मैं देवराज चौहान हूँ। डकैती मास्टर देवराज चौहान।" देवराज चौहान बोला।

"ओह !" सूरजभान चौंका, "सच में ?"

"हाँ !" देवराज चौहान मुस्कुराकर बोला, "अब तुम मेरा एनकाउंटर कर देने के बारे में सोचोगे।"

"मुझे यकीन नहीं आ रहा तुम... तुम डकैती मास्टर देवराज चौहान ही हो।" वह कह उठा।

"मैं ही हूँ।"

"तुम जगमोहन हो ?" सूरजभान ने जगमोहन को देखकर कहा।

"हाँ !"

सूरजभान ने गहरी साँस ली और आँखें बन्द कर लीं।

आधे मिनट बाद आँखें खोलीं और गम्भीर स्वर में बोला।

"तुम जब भी मेरे सामने आते, मैं तुम्हारा एनकाउंटर नहीं करता।"

"क्यों ?"

"क्योंकि तुम जनता और देश के लिए खतरनाक नहीं हो। तुम सिर्फ डकैतियाँ डालते हो। पैसा लूटते हो। कई बार तुम अंडरवर्ल्ड की लड़ाईयों में भी शामिल पाये गए, परन्तु तुमने उन्हीं को मारा, जो अपराधी थे। ऐसे लोगों को जो गैरकानूनी काम में शामिल थे। मैंने कभी नहीं सुना कि तुमने किसी आम इंसान को मारा हो। मैं तुम्हारा एनकाउंटर नहीं करता। अगर मौका मिलता तो तुम्हें गिरफ्तार करने की चेष्टा कर सकता था। परन्तु मेरा ध्यान एनकाउंटर करने पर ही रहता है। मैं उसी अपराधी पर हाथ डालता हूँ जिसका जिन्दा रहना अब ठीक न हो।"

देवराज चौहान ने सिगरेट सुलगा ली।

"तुमने कई बार पुलिस की सहायता की। मैंने सुना है ऐसा कुछ।"

"जो काम मुझे ठीक लगता है मैं वह ही करता हूँ।" देवराज चौहान शांत स्वर में बोला, "अब भी मैं कुछ करने की सोच रहा हूँ, शायद तुम्हें मेरी बात पसन्द न आये।"

"क्या ?"

"मैं जम्मू जाऊँगा, बड़ा खान के लिये।"

सूरजभान चौंककर उसे देखने लगा।

कई पलों तक उसे देखता रहा फिर होंठ भींचकर कह उठा।

"हाँ, तुम कर सकते हो ये काम। देवराज चौहान ये काम कर सकता है।"

"बड़ा खान माना हुआ आतंकवादी है। हम दो भला क्या कर लेंगे ?" जगमोहन बोला।

सूरजभान ने जगमोहन को देखने के बाद देवराज चौहान को देखा।

"खतरा तो है ही।" देवराज चौहान ने कहा, "ये इसलिए ऐसा कह रहा है। परन्तु मेरा जाना पक्का है इंस्पेक्टर !"

जगमोहन गहरी साँस लेकर रह गया।

"इस काम में तुम्हें कहीं पैसा नहीं मिलेगा देवराज चौहान।" सूरजभान बोला।

"मैं पैसे के लिए ये काम नहीं कर रहा। अपने मन की शांति के लिए कर रहा हूँ। आतंकवाद को मैंने कभी पसन्द नहीं किया। क्योंकि इसमें मासूमों की जान जाती है। जहाँ तक हो सका, मैंने आतंकवादियों को खत्म किया है।"

सूरजभान कुछ पल देवराज चौहान को देखता रहा फिर बोला- "कैसे जाओगे जम्मू ? कुछ सोचा है इस बारे में ?"

"अभी नहीं सोचा। मैं...।"

"तुम सूरजभान यादव बनकर क्यों नहीं जाते वहाँ ?"

देवराज चौहान चौंका।

जगमोहन के माथे पर बल पड़े। सुधा वहाँ बैठी अवश्य थी, परन्तु उसकी सारी चिंता अपने पति के लिए थी।

"तुम क्या कहना चाहते हो ?" देवराज चौहान ने पूछा, "मैं तुम्हारे रूप में जम्मू जाऊँ ?"

"हाँ, इंस्पेक्टर सूरजभान यादव बनकर ! वहाँ मुझे कोई नहीं जानता। मैं पहली बार जम्मू जा रहा था। मेरे रूप में तुम बड़ा खान तक जल्दी पहुँच सकोगे। परन्तु खतरा भी ज्यादा होगा। बड़ा खान तुम्हें मारने की चेष्टा कर सकता है। मेरे रूप में तुम सफल रहे तो, जेल में बन्द जब्बार मलिक तक भी पहुँच जाओगे। तुम्हें काफी फायदा मिलेगा। पुलिस की पूरी सहायता मिलेगी। इस बारे में ऑर्डर की कॉपी मेरे पास है। मैं तुम्हें दे दूँगा।"

"अगर मैं जम्मू में इंस्पेक्टर सूरजभान यादव बन पाने में सफल रहा तो ?"

"हाँ ! तुम पर भी बहुत कुछ निर्भर करता है। इसके लिए तुम्हें अपनी तस्वीर वाला आई कार्ड बनवाना होगा। बेशक मेरा कार्ड ले लो। उस पर अपनी तस्वीर लगाकर, उसे सही कर सकते हो तो कर लेना। वर्दी मैं तुम्हें बता दूँगा कहाँ से मिलेगी। वहाँ से तुम अपने नाप की ले लेना। बाकी जैसा तुम चाहो। जम्मू में मेरी एक पहचान वाला राठी है। एक बार एनकाउंटर के दौरान मैंने उसकी जान बख्श दी थी। वह मेरा एहसान मानता है। तुम्हें उसका पता दे दूँगा। वह तुम्हारी हर सम्भव सहायता करेगा। फिर वह.... ।"

"तुम इसे मुसीबत में भेज रहे हो।" जगमोहन झल्लाकर कह उठा।

"मैंने जबरदस्ती तो नहीं की।" सूरजभान ने कमजोर स्वर में कहा, "ये डकैती मास्टर देवराज चौहान है, कोई बच्चा तो नहीं कि मैं इसे बातों में फँसा लूँगा। जम्मू जाने के बारे में इसी ने कहा है कि.... ।"

"तुम इसे समझाओ कि जम्मू में बड़ा खान का कितना खतरा है।"

"मैं क्या समझाऊँ, क्या यह ये बात जानता नहीं ? अगर देवराज चौहान जम्मू में इंस्पेक्टर सूरजभान यादव बनने में कामयाब रहा तो पुलिस की सहायता भी इसके पास होगी। मैंने इसके बारे में बहुत सुन रखा है। ये हिम्मती है।"

जगमोहन कुछ कहने लगा तो देवराज चौहान ने टोका- "तुम अब इस बारे में कुछ नहीं कहोगे।"

जगमोहन उखड़े मूड के साथ कमरे से बाहर निकल गया।

"इसे तुम्हारी चिंता है।" सूरजभान ने मुस्कुराने की चेष्टा की।

"तुम मुझे अपने बारे में बातें बताओ। अपने करीबियों के बारे में बताओ। ताकि सूरजभान बनने में मुझे कोई दिक्कत न आये।" देवराज चौहान ने कहा।

सूरजभान उसे अपने बारे में बताने लगा।

उसके बाद देवराज चौहान दो दिन तक इंस्पेक्टर सूरजभान यादव बनने की तैयारी करने में लगा रहा। जब भी वक्त मिलता सूरजभान से बातचीत करने में लग जाता। उसके बारे में बातें करके जानकारी हासिल करता। वर्दी ले आया था और आई कार्ड पर अपनी फोटो लगाकर, उसे ठीक-ठाक ढंग से तैयार कर लिया था। फोटो खिंचवाने से पहले नकली मूंछें लगा ली थीं। इसके लिए उसे बाजार से एक नकली मुहर बनवानी पड़ी थी। जम्मू के लिए ट्रेन में टिकट बुक करा ली थी। सूरजभान ने नम्बर देकर देवराज चौहान से, जम्मू ए.सी.पी. संजय कौल को फोन कराया और कल सुबह अपने पहुँचने की खबर दी। कौल ने कहा कि वह पुलिस वालों को, उसे रिसीव करने स्टेशन भेज देगा।

"क्या तुम सच में कामयाब रहोगे देवराज चौहान ?" सूरजभान ने गंभीर स्वर में पूछा।

"तुम्हें शक क्यों है ?"

"बड़ा खान खतरनाक आदमी है।"

"मेरी पूरी कोशिश होगी कि मैं सफल रहूँ। परन्तु वहाँ मैं अपने ढंग से काम करूँगा।"

"इस मामले में तुम हर तरह से काम करने को आजाद हो। परन्तु जम्मू पुलिस को तुमने ही संभालना है।"

"हाँ। ये देखना मेरा काम है। इंस्पेक्टर सूरजभान यादव बनकर मैंने गलत काम किये तो तुम फँसोगे।"

"बिल्कुल भी नहीं।"

"कैसे ?"

"तुम्हें वहाँ सब देखेंगे। पहचानेंगे और बाद में मेरे सामने आने पर वे समझ जायेंगे कि वह मैं नहीं था। मेरे रूप में कोई और था। तब मैं ये भी कह सकता हूँ कि किसी ने मुझे कैद कर लिया था।"

"मतलब कि तुम पर कोई आँच नहीं आएगी।" देवराज चौहान ने कहा।

"नहीं!"

उधर जगमोहन गुस्से से भरा बैठा था। देवराज चौहान के कमरे में प्रवेश करते ही भड़ककर कह उठा।

"एक तो तुम मेरी मर्जी के बिना बड़ा खान के मामले में टाँग अड़ाने जा रहे हो और मुझे भी साथ नहीं ले जा रहे।"

देवराज चौहान मुस्कुराकर कुर्सी पर जा बैठा। जगमोहन ने आगे कहा-

"जानते हो वहाँ कितना खतरा है। पारस नाथ बता रहा था कि बड़ा खान खतरनाक है। उसका एक कारनामा मैं तब देख चुका हूँ जब उसने सूरजभान को मार डालना चाहा। मैं तुम्हारे साथ जाऊँगा तो ठीक होगा। कम से कम... ।"

"मैं वहाँ इंस्पेक्टर सूरजभान यादव बनकर जा रहा हूँ।" देवराज चौहान ने कहा।

"तो ?"

"अगर मैं वहाँ इंस्पेक्टर सूरजभान यादव बनकर जा रहा तो मुझे तुम्हारी सहायता की जरूरत नहीं पड़ेगी।"

"न बने रहे तो ?"

"तो तुम्हें बुला लूँगा और हम खुले तौर पर बड़ा खान के खिलाफ जंग छेड़ देंगे।"

"जानते हो तुम्हें दो तरफ का खतरा है। एक बड़ा खान का और दूसरी तरफ पुलिस। पुलिस की वर्दी पहनकर तुम पुलिस वालों के बीच रहोगे। कोई भी तुम्हें पहचान सकता है कि तुम देवराज चौहान हो।"

"ये आसान नहीं होगा।"

"क्यों ?"

"क्योंकि मैं दिल्ली से आया पुलिस वाला बनकर पुलिस वालों के बीच रहूँगा। वर्दी मेरे जिस्म पर होगी। आई कार्ड मेरे पास है। मूंछें मैंने लगा रखी हैं। ऐसे में किसी को शक हो पाना भी आसान नहीं।" देवराज चौहान ने कहा।

"तुम खामखाह ही इस मामले में.... ।"

"मैं बड़ा खान को खत्म करने जम्मू जा रहा हूँ। पहले मैं बड़ा खान के बारे में नहीं जानता था, परन्तु सूरजभान से उसके बारे में अब जाना है। वह देश के लिए सच में खतरनाक है और सूरजभान और उसके परिवार के पीछे हाथ धोकर पड़ा है। उसके बच्चों को देख रहे हो, बड़ा खान उन्हें खत्म करने को ढूंढ रहा है। क्या तुम चाहते हो कि वह मर जाएँ ?"

"मैं ऐसा सोच भी नहीं सकता।" जगमोहन होंठ भींचकर कह उठा।

"बड़ा खान एक के बाद एक आतंकवादी वारदातें कर रहा है। भरे बाजार में बम विस्फोट करा देता है या उसके आदमी मासूम जनता पर गोलियाँ चलाकर भाग जाते हैं। क्या तुम चाहते हो कि बड़ा खान ऐसी वारदातों को करता रहे ?"

"कभी नहीं। परन्तु उससे निबटने को पुलिस भी तो है।"

"पुलिस कोशिश तो कर रही है। अगर हम भी कोशिश कर लें तो क्या हर्ज है। सूरजभान पर किस बुरी तरह हमला कराया गया है, ये तो तुमने देखा ही है अब.... ।"

"यही तो डर है मुझे कि जम्मू में तुम पर हमला न हो जाये।"

"मैं सतर्क रहूँगा। तुम आशंका में मत घिरे रहो।"

"मैं भी तुम्हारे साथ जम्मू चलता... ।"

"जब मेरा पुलिस वाला बनने का राज खुल गया तो तुम्हें बुला लूँगा।"

"मतलब कि तुम सोच चुके हो कि अकेले ही जम्मू जाओगे ?"

"ऐसा ही समझ लो।"

"तो ये वादा है तुम्हारा कि पुलिस वाला नहीं होने का राज खुलते ही तुम मुझे बुला लोगे ?"

"वादा।"

उसके बाद देवराज चौहान उसी रात ट्रेन से जम्मू आ गया था। फिर जो हुआ, वह सामने ही है।

देवराज चौहान ने गहरी साँस लेकर लैपटॉप की स्क्रीन पर नजर मारी। जम्मू के नक्शे पर नजर आ रहा बिंदु अब खैबर इलाके से दूर जा रहा था। खैबर इलाके में जब्बार मलिक जहाँ रुका था, वह जगह नक्शे के सहारे देखकर, देवराज चौहान ने एक कागज पर नोट कर ली थी। और अब देखना चाहता था कि जब्बार कहाँ जाता है। चमकीला बिंदु हौले-हौले सरक रहा था लैपटॉप के नक्शे पर।

देवराज चौहान ने मोबाइल निकाला और जगमोहन का नम्बर मिलाने लगा। फौरन ही जगमोहन से बात हो गई।

"सूरजभान कैसा है ?" देवराज चौहान ने पूछा।

"पहले से बेहतर है। इतना भी बेहतर नहीं कि चल-फिर सके। जख्मों पर टांके लगे हैं। अब वह बैठकर खाने लगा है और उसकी पत्नी-बच्चे उसका ध्यान रख रहे हैं। उसका परिवार अच्छा है। डॉक्टर सुबह-शाम आता है। इंजेक्शन लगा जाता है। कुछ दवायें भी दे दी हैं अब खाने को। पारस नाथ भी दिन में एक चक्कर लगा जाता है। डिसूजा हम सबकी जरूरतों का पूरा ख्याल रख रहा है और मुझे तुम्हारी चिंता लगी हुई है। और कुछ पूछना है।"

देवराज चौहान मुस्कुरा पड़ा।

"तुम उखड़े हुए क्यों हो ?"

"जब से तुम जम्मू गए हो मुझे कुछ नहीं बताया कि तुम क्या कर रहे हो और... ।"

"वह ही बताने के लिए अब तुम्हें फोन किया है। वादा जो किया था तुमसे।" देवराज चौहान ने कहा।

"तो तुम्हारे नकली पुलिस होने का राज खुल गया ?" उधर से जगमोहन ने बेचैनी से कहा।

"मैंने खोल दिया।"

"खोल दिया का क्या मतलब ?"

"मैं तुम्हें सब कुछ बताता हूँ। यहाँ मैंने जो किया वह सुन लो।"

उसके बाद देवराज चौहान ने सब कुछ बता दिया।

पूरी बात सुनने के बाद उधर से बौखलाया सा जगमोहन कह उठा- "ये तुमने क्या किया। जब्बार मलिक को जेल से फरार करवा दिया।"

"ये ही तो मेरी चाल है। हालाँकि रिवॉल्वर में लगी माइक्रो चिप की वजह से मैं उस पर नजर रखे हुए हूँ। परन्तु वह शीघ्र ही मुझसे सम्बन्ध बनाएगा। मुझे फोन करेगा। मुझसे सहायता माँगेगा।"

"क्यों ?"

"क्योंकि बड़ा खान, अब जब्बार मलिक को स्वीकार नहीं करेगा।"

जब्बार मलिक ने मुझे बड़ा खान के बारे में बताया और समझौते के तहत मैंने उसे जेल से फरार करवा दिया है।"

"लेकिन जब्बार ने तुम्हें तो कुछ बताया ही नहीं ?" उधर से जगमोहन की आवाज कानों में पड़ी।

"सही कहा। परन्तु ये बात जब्बार जानता है, मैं जानता हूँ परन्तु बड़ा खान नहीं जानता। जब्बार बड़ा खान को कितना भी यकीन दिला ले कि उसने इंस्पेक्टर सूरजभान को कुछ नहीं बताया, परन्तु बड़ा खान उसकी बात पर कभी भी यकीन नहीं करेगा। वह ये ही सोचेगा कि जब्बार को मैंने खामखाह जेल से नहीं निकाला होगा। कुछ बात तो है ही। बड़ा खान सतर्क हो जायेगा। वह जब्बार को अपने पास भी नहीं फटकने देगा।"

"इससे तुम्हें क्या फायदा हुआ ?"

"बड़ा खान, मेरी चाल में फँसकर अपने एक खतरनाक आदमी से हाथ धो बैठा। जब्बार पर वह शक करेगा और हो सकता है कि वह जब्बार को ये सोचकर मारने की कोशिश करे कि कहीं जब्बार पुलिस का जासूस तो नहीं बन गया और अब उसे फँसाने या मारने आ रहा हो।"

"हूं।" जगमोहन की गम्भीर आवाज कानों में पड़ी, "बड़ा खान ने जब्बार को मार दिया तो ? खेल खत्म ?"

"जब्बार कम चालाक और फुर्तीला नहीं है। वह चौकस रहने वाला इंसान है। जल्दी ही उसे हालातों का आभास हो जायेगा। अंत में जब्बार

को एक रास्ता दिखेगा जो मेरी तरफ आता है। वह मुझे फोन जरूर करेगा। मेरा नम्बर याद है उसे।" देवराज चौहान ने विश्वास भरे स्वर में कहा।

"बहुत गहरी चाल खेली तुमने।" जगमोहन के गहरी साँस के लेने की आवाज आई, "मान लो कि जब्बार अपनी जान बचाने की खातिर तुम्हें फोन करे। परन्तु इससे तुम्हें क्या फायदा होगा?"

"मैं जब्बार की जान बड़ा खान से तभी बचाऊँगा, जब वह मुझे बड़ा खान के बारे में बताना शुरु करेगा। तब तक जब्बार टूट चुका होगा और आसानी से अपना मुँह खोल देगा।" देवराज चौहान ने कहा।

"मैं जम्मू आ रहा हूँ। अब तुम मुझे आने से रोकना नहीं।" जगमोहन की आवाज कानों में पड़ी।

"स्टेशन से मुझे फोन करना। तब तुम्हें बताऊँगा कि तुम्हें कहाँ आना है और सूरजभान को ये सब बातें बता दो। ताकि जब्बार मलिक के जेल से फरार होने की खबर सुनकर वह उखड़े नहीं।"

□□□

जब्बार मलिक जानता था कि उसके जिस्म पर पड़ी पुलिस की वर्दी उसके लिए मुसीबत बन सकती है। वह सबसे पहले वर्दी से छुटकारा पा लेना चाहता था। देवराज चौहान ने अलग होकर वह गली से निकलकर सड़क पर आया और सड़क पार करके दूसरी तरफ जा पहुँचा। जेल से आजाद होकर वह खुश था। मन ही मन वह इंस्पेक्टर सूरजभान यादव को धन्यवाद दे रहा था कि उसने उसे जेल से फरार करवा दिया। वरना छः महीने से आठ फुट लम्बी-चौड़ी कोठरी में बन्द रहकर वह पागल सा हो गया था।

जब्बार ने गर्दन उठाकर खुले आसमान को देखा और ऊपर वाले का शुक्रिया अदा किया। वह जानता था कि जेल से काफी दूर आ चुका है परन्तु खतरा अभी सिर पर था। कभी भी पुलिस उसकी तलाश में जम्मू की सड़कों पर भागी दिखाई दे सकती थी।

जब्बार सड़क के किनारे तेजी से आगे बढ़ा जा रहा था। उसे ऑटो या टैक्सी की जरूरत थी।

पाँच मिनट बाद उसे ऑटो मिल गया। जब्बार मलिक ऑटो वाले को खैबर चलने को कहकर उसमें बैठ गया।

जब्बार सावधान था। जेब में मौजूद रिवॉल्वर का हौसला था उसे। उसने मन ही मन एक बार फिर देवराज चौहान का शुक्रिया अदा किया कि उसने उसे रिवॉल्वर दी। पैसे दिए। इस वक्त सच में उसे इन दोनों चीजों की जरूरत थी। परन्तु मन में भारी उलझन थी।

इंस्पेक्टर सूरजभान यादव ने उसे इतनी आसानी से कैसे फरार करवा दिया। वह इस बात के प्रति सावधान था कि कोई उसके पीछे न लगा हो। लेकिन अपने पीछे किसी के होने का उसे शक भी नहीं हुआ कि कोई पीछे हो सकता है। जरूर कोई बात तो है ही जो इंस्पेक्टर यादव ने उसे जेल से निकाला। बड़ा खान उसे 30–35 करोड़ की रकम दे रहा था। उसे जेल से निकालने को, परन्तु उसने वह रकम नहीं ली और उसे यूँ ही जेल से निकाल दिया।

सूरजभान यादव ने कहा कि वह चाल चल चुका है।

जब्बार को समझ नहीं आई कि इंस्पेक्टर किस चाल के बारे में कह रहा था। बहरहाल जब्बार मलिक बहुत खुश था कि वह जेल से बाहर आ गया है। बाकी सब बातें, खासतौर से जेल की बातें वह भूल जाना चाहता था। आगे की सोचना चाहता था कि बड़ा खान के साथ मिलकर आतंक के बड़े-बड़े खेल खेलकर, लोगों को और हिन्दुस्तान की पुलिस को हिलाकर रख देगा। आतंक की दुनिया में नाम कमायेगा। इन सोचो के दौरान वह ये भूल गया कि वह खुद हिन्दुस्तानी है। कठुआ में पला-बढ़ा हुआ।

आधे घण्टे बाद ऑटो रुका। जेब में पड़े देवराज चौहान के नोटों में से पाँच सौ का नोट ऑटो वाले को देकर सामने मकानों की तरफ बढ़ गया। बाकी पैसे लेने की उसे परवाह ही कहाँ थी।

पाँच मिनट बाद जब्बार ने एक घर की बेल बजाई। फौरन ही दरवाजा खुला। दरवाजा खोलने वाला व्यक्ति पुलिस वाले को आया पाकर घबरा उठा।

"घबरा मत महबूब ।" उसे पीछे करके भीतर प्रवेश करता जब्बार बोला, "ये मैं हूँ ।"

जब्बार ने सिर पर पड़ी टोपी उतारी ।

महबूब नाम का वह व्यक्ति जब्बार मलिक को सामने पाकर चिहुँका । फौरन उसने दरवाजा बन्द किया ।

"जब्बार तुम... ।तुम जेल से भाग आये ?" उसके होंठों से हैरान स्वर निकला ।

"हाँ ! जेल से पीछा छूटा ।" जब्बार हँसकर बोला ।

"बड़ा खान ने तुम्हें जेल से निकलवाया होगा । उसने पुलिस को धमकी दी थी कि तुम्हें जेल से... ।"

"उसकी नौबत ही नहीं आई । मैं पहले ही निकल आया ।" जब्बार जिस्म पर पड़ी वर्दी उतारता कह उठा, "मेरे को कपड़े दे पहनने को । जेल के कपड़े पहन-पहनकर मेरा दिमाग खराब हो गया है ।"

"तेरे पीछे तो कोई नहीं था ?"

"नहीं । कपड़े दे ।"

जब्बार ने सादी पैंट-कमीज पहन लीं ।

"अब ठीक है । अब मैं इंसान लग रहा हूँ ।" जब्बार हँसकर कह उठा ।

"निकला कैसे जेल से ?"

"एक पुलिस वाले ने निकाला । ये बातें छोड़, एक कहवा पिला । जेल में ये सब चीजें कहाँ मिलती हैं ।" जब्बार मलिक कुर्सी पर बैठ गया । चेहरे पर गम्भीरता थी ।

महबूब किचन में कहवा बनाने चला गया । दस मिनट बाद दोनों कहवा पी रहे थे ।

"तेरी बीवी लौटी नहीं वापस ?"

"नहीं । महबूब ने मुँह बनाया, "एक साल से अपने बाप के घर बैठी है । कहती है मैं वहाँ आकर रहने लगूँ ।

"मैं तेरे बारे में सोच रहा हूँ जब्बार । पुलिस तेरी तलाश में शहर भर में भाग-दौड़ रही होगी ।"

"पता नहीं।" कहवे का घूँट भरते जब्बार ने कहा, "उन्हें मेरी फरारी का पता चल गया होगा तो ये ही हो रहा होगा।"

"मेरे पास छिपकर रहेगा?"

"नहीं! कहवा पीकर यहाँ से निकल जाऊँगा।" जब्बार ने कहा।

"बाहर तुझे पुलिस का खतरा है।" महबूब ने कहा।

"परवाह मत कर। अपना मोबाइल मुझे दे दे।"

महबूब ने फोन उसे दे दिया।

कहवा समाप्त करके जब्बार उठता हुआ बोला- "अब मैं चलूँगा।"

"अपना ध्यान रखना और मेरे लिए कोई काम हो तो बताना। पैसे की तंगी चल रही है।"

जब्बार मलिक महबूब के घर से बाहर निकला और सड़क की तरफ बढ़ते फोन पर अपने घर कठुआ का नम्बर मिलाने लगा। पहली बार में ही नम्बर लग गया। फोन उसके पिता ने उठाया था।

"अब्बू मैं जेल से बाहर आ गया।" जब्बार ने खुशी भरे स्वर में कहा।

"मैं जानता था कि तुझे कोई भी जेल ज्यादा देर कैद नहीं रख सकती जब्बार।"

"घर में सब ठीक हैं?"

"सब ठीक हैं। फिक्र नहीं कर। तेरे जेल से बाहर आने की खुशखबरी सब को सुना देता हूँ।"

"अब दो-चार बार घर पर पुलिस आएगी मेरी तलाश में।"

"कोई फर्क नहीं पड़ता।"

"मैं ठीक समय देखकर घर पर आऊँगा।" कहकर जब्बार ने फोन बन्द कर दिया और दूसरा नम्बर मिलाने लगा।

जब्बार सड़क पर आ पहुँचा था। दूसरा नम्बर उसने बड़ा खान को मिलाया था।

दो-तीन बार मिलाने पर भी नम्बर नहीं लगा।

जब्बार ने फोन जेब में डाला और ऑटो की तलाश में नजरें घुमाने लगा। कुछ देर बाद उसे टैक्सी मिल गई तो एक जगह चलने को कहा।

बीस मिनट बाद उसने टैक्सी छोड़ दी और पैदल ही आगे बढ़ने लगा। ये पुराने जम्मू का पुराना और तंग इलाका था। पुरानी बड़ी-बड़ी इमारतें बनी हुई थीं जिनकी गलियाँ तीन-चार फुट जितनी तंग थीं। जब्बार उन्हीं गलियों के जाल में जा घुसा। कोई नया इंसान हो तो इन गलियों की भूल-भुलैया में खो जाये।

परन्तु जब्बार यहाँ के चप्पे-चप्पे से वाकिफ था। फिर जब्बार एक गली से ही इमारत में ऊपर जाने वाली सीढ़ियों पर चढ़ता चला गया। जल्दी ही वह तीसरी मंजिल पर जा पहुँचा। सामने का दरवाजा खुला था। जब्बार भीतर प्रवेश कर गया। ये आठ कमरों का घर था और वह जानता था कि यहाँ अक्सर बड़ा खान के लोग मौजूद रहते हैं। परन्तु इस वक्त उसे वहाँ सुनसान ही महसूस हुई।

जब्बार ने ठिठककर उस बड़े हॉल में हर तरफ देखा। पुराने सोफे वहाँ पहले की तरह सजे थे। सब कुछ वैसा ही था जैसा उसने पहले देखा था।

"अनीस !" जब्बार ने ऊँचे स्वर में पुकारा।

चंद पलों के बाद ही दरवाजे से एक पचास बरस का आदमी आया। उसे देखते ही जब्बार के चेहरे पर मुस्कान खिल गई।

"जब्बार, मेरे भाई।" अनीस बाहें फैलाकर आगे बढ़ता कह उठा।

"अनीस !" जब्बार भी बाहें खोलकर उसकी तरफ बढ़ा।

दोनों गले लगे।

"जेल से निकल आने की मुबारकबाद।"

"जेल से बाहर आकर मुझे भी बहुत अच्छा लग रहा है।" जब्बार हँसा।

दोनों कुर्सियों पर बैठे।

"यहाँ खाली-खाली क्यों है। तुम्हारे अलावा कोई आदमी नहीं है। यहाँ तो बहुत.... ।"

"बड़ा खान ने मेरे अलावा सबको, तीन दिन पहले ही यहाँ से हटा दिया।" अनीस ने शांत स्वर में कहा।

"ऐसा क्यों ?"

"तुम्हारे लिए। बड़ा खान को शक था कि तुम जेल से बाहर निकल सकते हो और यहाँ आ सकते हो।"

"तो आदमियों को यहाँ से हटाने की क्या जरूरत थी ?"

"मैं नहीं जानता।" अनीस ने गहरी निगाहों से उसे देखते हुए कहा।

"तुम जानते हो। तुम सब जानते हो कि बड़ा खान ने ऐसा आदेश क्यों दिया ?"

"ये बात तो तुम बड़ा खान से भी पूछ सकते हो।"

"बड़ा खान का नम्बर नहीं लग रहा।" जब्बार बोला, "मैंने कई बार उसका नम्बर... ।"

"मेरे पास दूसरा नम्बर है। उस पर मैं तुम्हारी बड़ा खान से बात करा देता हूँ।"

जब्बार ने फोन निकाला और कहा- "बताओ नम्बर।"

"तुम्हें नम्बर बताने की मनाही है। मैं अपने फोन से नम्बर मिला देता हूँ।" कहकर अनीस ने मोबाइल निकाला।

जब्बार की आँखें सिकुड़ी।

"मुझे नम्बर बताने की मनाही है ?" जब्बार अजीब से स्वर में कह उठा।

"हाँ ! बड़ा खान ने मना किया है।"

"हैरानी है कि बड़ा खान ने जब्बार मलिक के लिए ऐसा कहा। तुम्हें सुनने में गलती तो नहीं हुई ?"

"नहीं !"

"मेरे जेल से बाहर आने का अंदेशा पाकर बड़ा खान ने यहाँ से आदमी हटा दिये। तुम्हें मना कर दिया कि दूसरा नम्बर तुम मुझे न बताओ। ये सब क्या हो रहा है अनीस ?" जब्बार मलिक के माथे पर बल नजर आने लगे थे।

अनीस दो पल जब्बार को देखने के बाद बोला- "वह पुलिस वाला बाहर है ?"

"कौन ? किसकी बात कर रहे हो ?"

"इंस्पेक्टर सूरजभान यादव। एनकाउंटर स्पेशलिस्ट।"

"वह बाहर क्यों होगा ?" जब्बार के होंठों से निकला।

"उसी ने तुम्हें जेल से निकाला है न ?"

"हाँ ! उसी ने... ।"

"उसने बड़ा खान से तीस-पैंतीस करोड़ लेने को और तुम्हें जेल से निकालने को मना कर दिया था ।"

"तो ?"

"अब उसने तुम्हें यूँ ही जेल से बाहर निकाल दिया ?"

"इसमें मैं क्या कह सकता हूँ । ये उसकी मर्जी है कि उसने मुझे जेल से.... ।"

"पता चला कि तुम्हारा उस पुलिस इंस्पेक्टर के साथ समझौता हुआ है कि... ।"

"बकवास ।" जब्बार मलिक उखड़े स्वर में कह उठा, "ऐसा कुछ भी नहीं हुआ ।"

"तो तुम कहना चाहते हो कि सूरजभान नाम के पुलिस वाले ने तुम्हें यूँ ही जेल से निकाल दिया ।"

"हाँ !"

अनीस मुस्कुरा पड़ा ।

"कौन विश्वास करेगा तुम्हारी बात पर ?"

जब्बार मलिक अनीस का चेहरा देखने लगा ।

"तुम यूँ ही जेल से नहीं निकाले गए जब्बार । आखिर कोई बात तो बीच में है ही । मुझे पता चल चुका है कि इंस्पेक्टर सूरजभान यादव के साथ तुम्हारा समझौता हुआ था कि तुम उसे बड़ा खान के बारे में बताओगे और वह तुम्हें जेल से बाहर निकालेगा । हो सकता है वह समझौता यहाँ तक हो कि तुम बड़ा खान को कानून के हाथों में फँसा दोगे ।"

"मैं तुम्हारा मुँह तोड़ दूँगा अनीस ।" जब्बार गुर्रा उठा, "तुम मुझे गद्दार कह रहे हो ।"

"गद्दारी जैसा कुछ काम तो तुमने किया ही है जो पुलिस द्वारा जेल से फरार करवाये गए ।"

"मैंने ऐसा कुछ नहीं किया ।" जब्बार चिल्लाने वाले ढंग में कह उठा ।

"मतलब कि तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारी बात मान लूँ।"

"मेरा विश्वास करो कि मैंने बड़ा खान के बारे में एक शब्द भी किसी से नहीं कहा।"

"तो फिर तुम मुफ्त में ही जेल से कैसे निकाल दिए गए ?"

जब्बार दाँत भींचकर अनीस को देखने लगा।

कई पलों तक उनके बीच खामोशी रही।

एकाएक जब्बार मलिक की आँखों के सामने देवराज चौहान का चेहरा नाच उठा। उसके शब्द याद आ गए कि वह चाल चल चुका है। ये सवाल उसने अपने आप से भी किया कि इंस्पेक्टर सूरजभान यादव ने उसे जेल से फरार क्यों करवा दिया ? परन्तु इस सवाल का जवाब खुद उसके पास भी नहीं था।

जब्बार मलिक को लगा जैसे वह किसी अनजाने जाल में फँस गया है।

"बताओ जब्बार। इंस्पेक्टर सूरजभान के साथ तुम्हारा क्या समझौता हुआ। उसने तुम्हें किस शर्त पर जेल से निकाला है ?" अनीस ने सपाट स्वर में कहा। नजरें जब्बार मलिक के चेहरे पर टिकी हुईं थी।

"मेरा यकीन करो अनीस।" जब्बार मलिक होंठ भींचकर बोला।

"तुम्हारा यकीन क्यों नहीं करूँगा। तुम मेरे भाई जैसे हो।" अनीस मुस्कुरा पड़ा।

"मैंने इंस्पेक्टर सूरजभान को कुछ नहीं बताया।" जब्बार ने व्याकुल स्वर में कहा।

"मुझे यकीन है कि तुम मुझसे झूठ नहीं बोलोगे।"

"मैं सच कह रहा हूँ...।"

"फिर एक सच और बता दो कि उस पुलिस वाले ने तुम्हें जेल से फरार क्यों करवा दिया ?"

"मैं नहीं जानता।" जब्बार मलिक से कुछ कहते न बना।

"वह पुलिस वाला पागल है ?"

"नहीं !"

"कुछ तो वजह होगी कि उसने जब्बार मलिक को जेल से फरार करवा दिया ।"

जब्बार मलिक ने गहरी साँस ली और फिर आँखें बन्द कर लीं । अनीस की पैनी निगाह उसके चेहरे पर थी । जब्बार ने आँखें खोली और बेचैनी भरे स्वर में कह उठा ।

"मैं फँस चुका हूँ ।"

"वह कैसे ?"

"क्योंकि मेरे पास इस बात का जवाब नहीं है कि सूरजभान ने मुझे जेल से फरार क्यों करवाया ?" कहकर जब्बार ने गहरी साँस ली, "मुझे अब लग रहा है कि उस पुलिस वाले ने मुझे बुरी तरह फँसा दिया है ।"

"किसी ने तुम्हें नहीं फँसाया जब्बार ।" अनीस बोला, "तुम सच्चाई मुझे बता क्यों नहीं देते । हम बचने का रास्ता निकाल लेंगे ।"

जब्बार मलिक ने अनीस की आँखों में झाँका ।

"मैं तुम्हारी बात बखूबी समझ रहा हूँ ।" जब्बार गंभीर स्वर में बोला, "लेकिन सच ये है कि इंस्पेक्टर सूरजभान यादव को मैंने कुछ नहीं बताया और उसने मुझे यूँ ही जेल से फरार करवा दिया है ।"

"क्या ये विश्वास करने लायक बात है ?"

जब्बार के होंठ भिंच गए ।

"कोई इस तरह जेल से निकलकर आता तो क्या तुम उस पर भरोसा कर लेते ।"

"ये ही तो मुसीबत है कि मैं अपनी बात का सच नहीं दिखा सकता कि ये ही सच है । अब मैं समझा कि सूरजभान ने क्या खेल खेला मेरे साथ । उसने मुझे अपनों के बीच ही पराया बना दिया ।"

"क्या इस वक्त बाहर पुलिस का घेरा है ?" अनीस ने पूछा ।

"ये तुम कैसी बातें कर रहे हो अनीस ।" जब्बार दाँत भींचकर बोला, "क्या मुझ पर भरोसा उठ गया ?"

"इंस्पेक्टर सूरजभान तो कहता है कि तुमने उसे बड़ा खान के बारे में सब कुछ बता दिया है ।"

"वह बकवास करता है ।" जब्बार मलिक ने दाँत भींचकर कहा ।

"लेकिन बड़ा खान तो उसकी बात को बकवास नहीं मानेगा । जबकि तुम्हें जेल से बाहर निकाल दिया उसने और एक भी पैसा नहीं लिया । बड़ा खान उसे पैंतीस करोड़ दे रहा था लेकिन उसने नहीं लिया ।" अनीस बोला ।

"इंस्पेक्टर ने झूठ बोला है ।" जब्बार खीझ उठा, "तुम ही बताओ कि अब मैं क्या करूँ अनीस ?"

"सच कह दो ।"

"कह तो दिया है ।"

"ये सच नहीं है । सच ये है कि तुमने पुलिस वाले को बड़ा खान के बारे में बहुत कुछ बताया और उसने तुम्हें जेल से निकाल दिया ।"

"ये सच नहीं है ।"

"तुम्हारी बात कोई नहीं मानेगा जब्बार कि पुलिस वाले ने तुम्हें मुफ्त में जेल से बाहर निकाला है । या तो तुम इस बारे में तसल्ली बख्श जवाब दे दो कि पुलिस वाले ने तुम्हें क्यों जेल से बाहर निकाला ।"

"बता तो चुका हूँ, तुम मेरी बात का विश्वास... ।"

"तुम्हारी बात को सच कोई नहीं मानेगा । जेल में हंगामा मचा हुआ है कि जब्बार मलिक जेल से फरार हो गया । पुलिस तुम्हें और उस पुलिस वाले को ढूंढ रही है । वह पुलिस वाला कौन है जब्बार ?"

"कौन है ? मैं समझा नहीं ?"

"उस पुलिस वाले की हकीकत क्या है ?"

"हकीकत क्या ! वह दिल्ली से आया इंस्पेक्टर सूरजभान यादव है । एनकाउंटर स्पेशलिस्ट के तौर पर जाना... ।"

"वह पुलिस वाला नहीं है ।"

जब्बार मलिक चिहुँक उठा ।

"वह पुलिस वाला नहीं है ?" जब्बार के होंठों से निकला, "ये तुम्हें किसने कहा ?"

"पुलिस डिपार्टमेंट में इस बात को लेकर हड़कम्प मचा हुआ है कि वह नकली इंस्पेक्टर सूरजभान यादव था। ए.सी.पी. कौल की उससे मोबाइल पर बात हुई। उसी कौल ने बताया कि वह पुलिस वाला नहीं है।"

"ये कहकर तुम मेरा दिमाग खराब कर रहे हो।" ठगा सा जब्बार कह उठा।

"तुम जानते हो कि मैं तुमसे कोई बात भी झूठ नहीं कहूँगा। मजाक नहीं करूँगा।"

"मुझे... मुझे तुम्हारी बात पर विश्वास नहीं आ रहा।"

"तो बाहर से पता कर लो कि मैं सही कह रहा हूँ या झूठ।"

"वह।" जब्बार मलिक ने अपना माथा पकड़ लिया, "असली पुलिस वाला नहीं। इंस्पेक्टर सूरजभान यादव नहीं। नहीं, ये नहीं हो सकता। वह... वह रोज मुझसे जेल में मिलता था। सख्त पहरेदारी थी वहाँ। भला नकली पुलिसवाला वहाँ मुझ तक कैसे पहुँच सकता है। मैं इस बात पर किसी कीमत पर विश्वास नहीं कर...।"

"तो पता कर लो। जम्मू के हर पुलिस वाले के लिए ये चर्चा की बात है इस वक्त कि तुम्हारा जेल से फरार हो जाना और इंस्पेक्टर सूरजभान यादव का नकली होना। ये बात तुम किसी भी पुलिस वाले से पूछ सकते हो।"

जब्बार मलिक अपना माथा पकड़े बैठा रहा।

"तुम जेल से बाहर कैसे आये ? किस शर्त पर तुम्हें उस पुलिस वाले ने जेल से फरार करवाया और उसकी असलियत क्या है ? हकीकत में वह है कौन ? इन बातों का जवाब तुम्हारे पास है और मैं जानना चाहता...।"

"मेरे पास नहीं है इन बातों का जवाब।" जब्बार चीखा, "मैं कुछ नहीं जानता।"

"ये मुमकिन नहीं। क्या तुमने उससे पूछा नहीं कि वह क्यों तुम्हें जेल से फरार करवा रहा है ?" अनीस का स्वर शांत था।

"पूछा। कई बार पूछा। हर बार उसने ये ही कहा कि उसका मन करता है कि मुझे बाहर निकाल दे। उसने ये भी कहा कि अगर मैं नहीं निकलना चाहता तो मत निकलूँ। जेल से निकलने का लोभ मैं नहीं छोड़ सकता था।

लेकिन अब मुझे लगता है कि उसने मुझे फँसा दिया है। वह जानता था कि वह जो कर रहा है, उस तरह मैं फँस जाऊँगा। उसने बहुत सोच समझकर ये सब कुछ किया और मुझे अपने लोगों में ही फँसा दिया। अब तुम ही मेरी बात का विश्वास नहीं कर रहे तो मैं क्या कर सकता हूँ। वह बहुत शातिर इंसान है। खतरनाक भी। मैं उसे मामूली पुलिस वाला ही समझता रहा। लेकिन वह अपनी चाल खेल गया।"

"तुम्हारी बातों में कोई दम नहीं।" अनीस ने शांत स्वर में कहा।

"बड़ा खान भी यही सब समझता है न ?"

"उसे भी इन दो सवालों का जवाब चाहिए। पैंतीस करोड़ लेने की अपेक्षा उसने तुम्हें मुफ्त में जेल से क्यों फरार करवा दिया। स्पष्ट है कि तुम्हारे और उसके बीच सूचनाओं का आदान-प्रदान हुआ है। समझौते के तहत ही उसने तुम्हें जेल से फरार करवा दिया। दूसरी बात ये है कि हकीकत में वह कौन है ?"

माथा छोड़कर जब्बार ने गहरी साँस ली।

"तो इसका मतलब बड़ा खान से मेरा रिश्ता खत्म।"

"अभी तो ऐसा कुछ नहीं है।"

"तो मैं कहाँ रहूँ। मुझे ठिकाना चाहिए।" जब्बार मलिक बोला, "पुलिस मुझे तलाश कर रही है।"

"जूबी के पास चले जाओ। वहाँ तुम सुरक्षित रहोगे।"

जब्बार उठ खड़ा हुआ।

"अब मुझे लगता है कि बड़ा खान के पास से मेरी जगह छीन गई है।"

"तुम्हें सच बात कह देनी चाहिए।"

"मैंने सच ही कहा है, जिसे कि तुम झूठ मान रहे हो। उस नकली पुलिस वाले ने मुझे बुरी तरह फँसा दिया है।"

"बड़ा खान से बात करनी है ?" अनीस ने पूछा।

"अभी नहीं।"

"अब कहाँ जा रहे हो ?"

"जूबी के पास ही जाऊँगा।" कहने के साथ ही जब्बार आगे बढ़ा और बाहर निकलता चला गया।

अनीस ने हाथ में दबे मोबाइल से नम्बर मिलाकर बात की।

"जब्बार बाहर निकला ?"

"अभी-अभी निकला है।" उधर से आवाज आई।

"आस-पास पुलिस तो नहीं।"

"ऐसा कुछ नहीं है।"

"उस पर नजर रखो। वह जहाँ जाये, जिससे बात करे, सब बातों की रिपोर्ट मिलती रहनी चाहिए।" कहकर अनीस ने फोन बन्द किया और अब बड़ा खान के नम्बर मिलाने लगा। चेहरे पर गंभीरता थी।

जल्द ही बड़ा खान से बात हो गई।

"जनाब ! जब्बार गद्दार हो चुका है।" अनीस ने कहा।

"तुमने बात की उससे ?"

"हाँ। परन्तु ये बात बताने को तैयार नहीं कि उस नकली पुलिस वाले ने किन शर्तों पर उसे जेल से फरार करवाया है।"

"क्या कहता है ?" बड़ा खान की आवाज कानों में पड़ी।

"कहता है उसने बिना किसी शर्त के, मुफ्त में जेल से निकाला है उसे।"

"ये सम्भव नहीं।" बड़ा खान की आवाज पुनः आई, "वह नकली पुलिस वाला कौन है ?"

"मेरे सामने उसने ये ही जाहिर किया कि ये खबर उसे अभी पता चली है।"

"मतलब कि वह कुछ भी बताने को तैयार नहीं।"

"जब्बार कभी भी हमारे लिए बड़ा खतरा बन सकता है। इसमें कोई शक नहीं। वह नकली पुलिस वाले से मिला हुआ है। और आपके खिलाफ दोनों कुछ कर सकते हैं। मुझे लगता है कि जब्बार आपकी टोह लेता फिर रहा है।"

"अब कहाँ है वह ?"

“छिपने के लिए जगह मांग रहा था। जूबी के पास जाने को कहा है मैंने। पता नहीं वह गया है या नहीं। मेरे आदमी उसके पीछे लग चुके हैं। उसकी खबर मुझे मिलती रहेगी। पहले वह आपसे बात करना चाहता था। परन्तु मेरे से बात करने के बाद उसने बात करने को मना कर दिया। मेरे ख्याल में वह सतर्क हो गया है। वह नकली पुलिस वाला जो भी है, वह जरूर जब्बार के सहारे आप तक पहुँचना चाहता होगा। ये ही सौदा हुआ होगा उन दोनों के बीच में।”

“निश्चिन्त रहो। मुझ तक कोई नहीं पहुँच सकता।” इतना कहकर उधर से बड़ा खान ने फोन बन्द कर दिया था।

□□□

जब्बार मलिक का सिर घूम रहा था।

उन तंग गलियों में वह किसी यांत्रिक मानव की तरह आगे बढ़ता जा रहा था। जितनी खुशी के साथ वह अनीस के पास गया था , उससे ज्यादा परेशानी के साथ लौटा था।

वह शुरू से ही इस बात को नहीं समझ पा रहा था कि सूरजभान उसे जेल से क्यों निकाल रहा है। चूँकि उसका सारा ध्यान जेल से निकल जाने पर था, इसलिए गहराई से उसने कुछ भी नहीं सोचा। बल्कि तब तो सूरजभान को बेवकूफ समझ रहा था। परन्तु अनीस के सवालों ने उसे जमीन पर ला पटका था।

जेल में उसके सामने ही सूरजभान बड़ा खान से कहता रहा था कि वह, उसके बारे में उसे सब कुछ बता रहा है और बदले में उसे जेल से बाहर निकाल देगा। तब जब्बार को ये बातें फालतू की बकवास लगी थीं। परन्तु उन बातों का असर अब देख रहा था। वह जेल से बाहर आ गया था। स्पष्ट था कि बड़ा खान ये ही सोचेगा कि उसने पुलिस वाले के सामने मुँह खोल दिया है। तभी उसने, उसे जेल से फरार करवाया है। या अभी भी वह पुलिस वाले के साथ, बड़ा खान के खिलाफ किसी योजना पर काम कर रहा है।

जाहिर था कि उसकी सच बात पर कोई यकीन नहीं करेगा।

वह जबरदस्त खेल में फँस गया था। जहाँ इशारे पर सब कुछ हो जाता था, आज वह वहीं पराया हो गया था। अनीस जैसे लोग उसके सामने संभलकर बात करते थे। आज वह सिर उठाकर बात कर रहे थे। दूसरी बात जिसने उसे और भी हैरान-परेशान कर दिया था, वह ये कि वह इंस्पेक्टर सूरजभान यादव नहीं था। वह पुलिस वाला नहीं था।

"तो फिर वह कौन था ? वह कैसे सबकी आँखों में धूल झोंककर जेल में उसके पास आ पहुँचता था ?

इन सब बातों ने जब्बार मलिक को बुरी तरह परेशान कर दिया था। जब्बार का मन मानने को तैयार नहीं था कि वह नकली पुलिस वाला है।

उन गलियों के जाल से निकलकर जब्बार सड़क पर पहुँचा। वह जानता था कि इस तरह खुले में घूमना उसके लिए खतरे से खाली नहीं था। पुलिस पूरे जम्मू और आसपास के इलाके में उसकी तलाश शुरू कर चुकी होगी। वह फँसकर फिर जेल नहीं पहुँचना चाहता था। टैक्सी पर नजर दौड़ाते जब्बार आगे बढ़ने लगा। इस वक्त उसे छिपने के लिए जगह चाहिए थी और जूबी के पास वह सुरक्षित रह सकता था। अनीस ने उसे जूबी के पास जाने की इजाजत दे दी थी। वह जानता था कि अनीस उसके साथ जैसा व्यवहार कर रहा है वह बड़ा खान के इशारे पर ही हो रहा है। जूबी का ठिकाना ऊधमपुर जाने वाले रास्ते पर, पहाड़ी इलाके में पड़ता था। जूबी बड़ा खान के लिए काम करती थी और अपने परिवार के साथ रहती थी। जिस किसी खास को छिपने की जरूरत पड़ती तो उसे जूबी के घर भेज दिया जाता था। जूबी का घर ऐसी जगह पर था जहाँ इधर-इधर बिखरे घर बने हुए थे। वहाँ कोई भी बाहरी बंदा आसानी से रह सकता था और किसी को शक भी नहीं होता था।

जब्बार मलिक ने फोन निकाला और देवराज चौहान को याद किया। नम्बर मिलाने लगा। अगले ही पल दूसरी तरफ बेल जाने लगी।

"हैलो !" देवराज चौहान की आवाज कानों में पड़ी।

"तुम बहुत हरामजादे हो।" जब्बार मलिक दाँत किटकिटाकर कह उठा।

उधर से देवराज चौहान के हँसने की आवाज आई।

"तुमने मुझे बुरी तरह फँसा दिया है। मेरे ही लोग मुझ पर विश्वास नहीं कर रहे हैं।" जब्बार का चेहरा सुलग रहा था।

"मैंने तो तुमसे कह दिया था कि मैं चाल खेल चुका हूँ।"

"मैं बहुत खुश था कि मैं जेल से बाहर आ गया, लेकिन तुमने मुझे कहीं का नहीं छोड़ा।"

"तुमने सोचा कि मैंने तुम्हें मुफ्त में ही जेल से बाहर निकाल दिया।" देवराज चौहान की मुस्कुराती आवाज कानों में पड़ी, "हर चीज की कीमत होती है। कुछ भी मुफ्त नहीं मिलता। तुम भी इस वक्त जेल से फरार होने की कीमत चुका रहे हो।"

"बड़ा खान सोचता है कि मैंने तुम्हें उसके बारे में सब कुछ बता दिया है, तभी तुमने मुझे जेल से निकाला।"

"जब मैं तुम्हारे सामने बैठकर, उसे बताता था कि तुम मुझे सब कुछ बता रहे हो तो तुमने मुझे बेवकूफ समझा होगा।"

"हाँ। तब मैंने ऐसा ही समझा था। मुझे नहीं पता था कि तुम इतने बड़े कुत्ते हो।"

देवराज चौहान के हँसने की आवाज कानों में पड़ी।

"मुझे ये भी सुनने को मिल रहा है कि तुम इंस्पेक्टर सूरजभान यादव नहीं हो। नकली पुलिस वाले हो।"

"हाँ। मैं पुलिस वाला नहीं हूँ।"

"तो तुम जेल के भीतर मुझ तक कैसे पहुँच गए?"

"नकली इंस्पेक्टर सूरजभान यादव बनकर।"

"मतलब कि इस नाम का कोई दूसरा पुलिस वाला है।"

"हाँ। उसने जम्मू आना था और मैं पहुँच गया उसके रूप में।"

"तुम बहुत ही कमीने हो। आखिर तुम चाहते क्या हो?" जब्बार ने कठोर स्वर में कहा, "तुमने बड़ा खान को मेरे खिलाफ भड़काकर मुझे जेल से फरार करवा दिया। मेरी और बड़ा खान की बिगाड़ दी। वह मुझ पर शक

कर रहा है। ऊपर से तुम असली पुलिस वाले नहीं हो। आखिर ये सब करके तुम करना क्या चाहते हो ?"

"मेरा खेल शुरू हो चुका है जब्बार !" देवराज चौहान की आवाज कानों में पड़ी।

"कैसा खेल ?"

"अभी तुम मेरे खेल को समझ नहीं पाओगे।"

जब्बार मलिक के दाँत भिंच गए।

"तुम हो कौन ?"

"मेरा नाम जानकर तुम्हें कोई फायदा नहीं मिलेगा। तुम्हें अपनी चिंता करनी चाहिए।"

"क्या चिंता ?" जब्बार सुलग रहा था।

"अभी तुम किसी से मिले ? बड़ा खान या उसके आदमी से ?"

जब्बार ने दाँत भींच लिए फिर बोला।

"हाँ !"

"अब कहाँ हो ?"

"कहीं पर हूँ। सड़क पर।"

"तुम्हारे पीछे बड़ा खान के आदमी लग चुके हैं।" देवराज चौहान की आवाज कानों में पड़ी।

जब्बार चौंका।

"बड़ा खान मेरे पीछे आदमी क्यों लगाएगा ?"

"क्योंकि उसकी निगाह में तुम बेईमान हो। वह ये सोच रहा है कि तुमने मुझे बड़ा खान के बारे में बताया और मैंने तुम्हें जेल से फरार करवा दिया। ऐसे में वह देखना चाहता है कि अब तुम क्या करते हो ?"

जब्बार ने परेशानी भरी निगाहों से आगे-पीछे देखा।

लोग आ-जा रहे थे। परन्तु ऐसा कोई न दिखा जो उस पर नजर रख रहा हो।

बातें करते हुए जब्बार सड़क के किनारे-किनारे आगे बढ़ता जा रहा था। तभी खाली आती टैक्सी को उसने हाथ देकर रुकवाया और भीतर बैठ गया। टैक्सी आगे बढ़ गई।

"दिखा कोई ?" देवराज चौहान की आवाज कानों में पड़ी।

"नहीं। तुम अपने बारे में बात करो। क्या चाहते हो मुझसे ?"

"कुछ भी नहीं।"

"तुम जरूर कुछ चाहते हो। तभी मुझे इस तरह बड़ा खान की नजरों में फँसा दिया।"

"मैं कुछ भी नहीं चाहता। तुम जेल से निकलना चाहते थे। मैंने तुम्हें निकाल दिया और अब तुम अपने को मुसीबत में महसूस करो तो कभी भी फोन करके मेरी सहायता ले सकते हो। ऐसे मौके पर मुझे फोन करना भूलना नहीं।"

"तुम आखिर चाहते क्या...।"

तब तक देवराज चौहान ने उधर से फोन बन्द कर दिया था।

"हरामजादा !" दाँत भींचकर जब्बार बड़बड़ा उठा।

"कहाँ जाना है ?" टैक्सी ड्राइवर ने पूछा।

"अभी सीधा ही चलो।" कहकर जब्बार पीछे नजर रखने लगा। जल्दी ही उसे वह कार नजर आई, जो उसका पीछा कर रही थी। जब्बार के दाँत भींच गए। मन ही मन उसने नकली सूरजभान की तारीफ की कि कहीं दूर बैठे हुए भी वह उसके हालातों को समझ रहा है। पीछा करने वालों के बारे में वह समझ गया कि उन्हें अनीस ने उस पर नजर रखने को पीछे लगाया होगा।

"साला, कुत्ता।" जब्बार ने अनीस को गाली दी।

टैक्सी मध्यम रफ्तार से दौड़ी जा रही थी। जब्बार सोच चुका था कि उसे क्या करना है।

"बस, यहीं रोक दो।" जब्बार बोला।

टैक्सी सड़क के किनारे रुक गई।

जब्बार ने पीछे वाली कार भी सत्तर-अस्सी कदम पहले रुकती देखी। जब्बार ने ड्राइवर को पाँच सौ का नोट दिया और बाहर निकलकर पैदल ही

आगे बढ़ गया। अब उसने पीछे नहीं देखा। परन्तु ये समझ चुका था उसका पीछा करने वाला अब पैदल ही उसके पीछे आएगा। आगे सड़क के किनारे गली देखी तो जब्बार उसी गली में प्रवेश करके तेज-तेज कदमों से चल पड़ा। कुछ आगे जाकर गली दायें-बायें मुड़ रही थी। जब्बार तुरन्त दायें मुड़ा और वहीं दीवार से सटकर खड़ा हो गया।

करीब आधे मिनट बाद एक आदमी गली के मोड़ पर आकर ठिठका। दूसरे ही पल दीवार से सटे खड़े जब्बार से उसकी आँखें टकराई। जब्बार शांत मुद्रा में अपनी जगह से बाहर निकलकर उसकी तरफ बढ़ा। चेहरे पर खतरनाक भाव थे।

वह जब्बार को सामने पाकर घबरा गया था।

"तुम मेरा पीछा कर रहे हो।" उसके पास पहुँचकर जब्बार गुर्राया।

"म...मैं...।"

"क्यों कर रहे हो पीछा ?"

"अनीस ने कहा था कि तुम पर नजर रखूँ।" वह कह उठा।

"तो अनीस के आदमी हो। हूं, तो जब्बार का पीछा करने का दम है तुझ में ?" जब्बार के चेहरे पर खतरनाक भाव नाचे।

"मैं... मैं अब तुम्हारा पीछा नहीं करूँगा।"

जब्बार ने रिवॉल्वर निकाल ली।

"तुम मुझे मार नहीं सकते। मैं अनीस का आदमी हूँ।" वह घबराकर कह उठा।

"लेकिन मैं तो नहीं जानता कि तुम अनीस के आदमी हो।" जब्बार दरिंदगी से कह उठा।

"मैंने तुम्हें बताया तो है कि मैं...।"

"ये बात अनीस तो नहीं जान पायेगा कि तुमने मुझे ये बात बताई है।" जब्बार ने दाँत भींचकर कहा और ट्रैगर दबा दिया।

तेज धमाके के साथ गोली उसकी छाती पर, दिल वाले हिस्से पर जा लगी।

वह उछलकर नीचे जा गिरा। वहाँ से गुजरते लोगों ने ये मंजर देखा तो वह सहम कर दूर हटने लगे। जब्बार ने उसके सिर से रिवॉल्वर की नाल सटाई और ट्रैगर दबा दिया।

दूसरा धमाका गूँजा और उसके सिर में सुराख हो गया। वह शांत हो गया। जब्बार ने रिवॉल्वर जेब में डाली और गली में वापस सड़क की तरफ चल पड़ा। तेज-तेज कदमों से चलता वह सड़क पर पहुँचा और किनारे पर खड़ी पीछा करने वाली कार को देखा।

वह अभी तक वहीं खड़ी थी। जब्बार उस कार की तरफ बढ़ गया।

कुछ ही आगे बढ़ा कि उसने कार के स्टार्ट होने की आवाज सुनी। उसी पल जब्बार ने रिवॉल्वर निकाली और पास पहुँचते हुए कार को रुके रहने का इशारा किया। कार वहीं खड़ी रही। जब्बार ने पास पहुँच कर भीतर झाँका।

स्टेयरिंग सीट पर एक आदमी डरा-सा बैठा उसे देख रहा था।

"तुम !" जब्बार बोला, "मैं तुम्हें जानता हूँ। तुम अनीस के लिए काम करते हो।"

उसने तुरन्त सिर हिला दिया।

"तो तुम मेरा पीछा कर रहे हो। वह आदमी तुम्हारा साथी था जो मेरा पीछा करते गली में गया था।"

उसने पुनः सहमति से सिर हिला दिया।

"ओह, मैं नहीं जानता था कि वह अनीस के लिए काम करता है। मैंने उसे मार दिया।" जब्बार का स्वर शांत था।

उसका चेहरा फक्क पड़ गया।

"अनीस ने कहा कि तुम मेरा पीछा करो ?"

उसने सहमति से सिर हिलाया।

"ये गलत किया। अनीस को ऐसा नहीं करना चाहिए था। चलो तुम कार से बाहर निकलो और वापस अनीस के पास जाओ। उसे कह देना कि मेरा पीछा करने की जरूरत नहीं। मैं जूबी के पास जा रहा हूँ।"

वह आदमी जल्दी से दरवाजा खोलकर बाहर आ गया।

जब्बार कार में बैठ। कार पहले से स्टार्ट थी। उसने कार आगे बढ़ा दी। उसका चेहरा कठोर हो गया था।

□□□

अनीस ने होंठ भींचकर सामने खड़े कार वाले आदमी की बात सुनी फिर बोला।

"तुम जाओ।"

वह बाहर निकल गया तो अनीस ने जूबी को फोन किया।

"कहो।" जूबी की खनकती आवाज कानों में पड़ी।

"वह गद्दार तुम्हारे पास छिपने के लिए आ रहा है।" अनीस ने कड़वे स्वर में कहा।

"जब्बार ?"

"हाँ, वही। मेरे दो आदमी उसका पीछा कर रहे थे। उनमें से एक को जब्बार ने मार दिया।"

"जब्बार इतनी हिम्मत तो नहीं कर सकता।"

"जब्बार ने मेरे आदमी से कहा कि वह उसे पहचानता नहीं था। इसलिए वह मारा गया।"

"और एक को छोड़ दिया उसने।"

"हाँ ! मैं चाहता हूँ कि वह तुम्हारे पास ज्यादा देर न टिके।" अनीस बोला।

"ऐसी बात थी तो उसे मेरे पास भेजते ही नहीं।"

"भेज दिया तो भेज दिया। तुमसे जो कहा है, वह ध्यान रखना। वह ज्यादा देर तुम्हारे पास न टिके।"

"ऐसा क्यों ? बताओगे ?"

"मैं चाहता हूँ उसे छिपने का ठिकाना न मिले और पुलिस उसे मार दे।"

"ये बात है तो बड़ा खान ही उसे क्यों नहीं मार देता ?"

"इस बारे में बड़ा खान से मेरी बात नहीं हुई। बात करके देखता हूँ।" कहकर अनीस ने फोन बन्द किया और बड़ा खान का नम्बर मिलाने लगा। दो बार की कोशिश के बाद नम्बर लगा।

"कहो अनीस ?" बड़ा खान का स्वर कानों में पड़ा।

"मैंने दो आदमी जब्बार के पीछे लगाये थे। एक को जब्बार ने मार दिया।"

"हूं!"

"जब्बार हमारे लिए खतरा बन चुका है। उसे खत्म कर देना चाहिए जनाब।"

"अभी नहीं।"

"क्यों ?"

"जब्बार अकेला नहीं है। उसके साथ वह नकली पुलिस वाला भी है, जिसकी हकीकत हम नहीं जानते। पहले मैं उसकी हकीकत जान लेना चाहता हूँ और इन दोनों की प्लानिंग समझ लेना चाहता हूँ।"

"जब्बार कभी भी हमारे लिए मुसीबत खड़ी कर सकता है।" अनीस ने कहा।

"मेरी नजर उस पर है।"

"ओह!"

"इस वक्त वह कार पर जूबी के घर, ऊधमपुर जाने वाले रास्ते पर है।" बड़ा खान का स्वर शांत था, "जब्बार हमसे दूर नहीं जायेगा। वह नकली पुलिस वाले के साथ मिलकर जिस प्लानिंग पर भी काम कर रहा है, वह प्लानिंग उसे हमारे आसपास रहने पर ही मजबूर करेगी। मेरे ख्याल में जब्बार मुझे मरवा देना चाहता है या पुलिस के हाथों फँसायेगा। मेरे ही खिलाफ है उसकी प्लानिंग।"

"आप ठीक कह रहे हैं जनाब।"

"मैं उसे सफल नहीं होने दूँगा। वह हर वक्त मेरी नजरों में है।"

"क्या वह उस नकली पुलिस वाले से मिला ?"

"अभी नहीं। उससे मिलते ही मेरे आदमी नकली पुलिस वाले को पकड़ लेंगे या उसे मार देंगे।"

"आपने अच्छा प्लान कर रखा है।"

"तुम अपने कामों की तरफ ध्यान दो। जब्बार को संभालना मेरी ड्यूटी है।"

□□□

देवराज चौहान की निगाह लैपटॉप की स्क्रीन पर नजर आते चमकते बिंदु पर थी जो कि तेज रफ्तार से आगे बढ़ा जा रहा था। स्पष्ट था कि जब्बार किसी वाहन पर था। नक्शे में नजर आता जा रहा था कि वह किन-किन रास्तों से गुजर रहा है। बाहर शाम हो रही थी। कुछ ही देर में अँधेरा हो जाना था।

इसी वक्त उसका मोबाइल बज उठा।

"हैलो!" देवराज चौहान ने बात की।

"कैसे हो नकली पुलिस वाले?" बड़ा खान की आवाज कान में पड़ी।

देवराज चौहान के होंठों पर मुस्कान बिखर गई।

"मैं अच्छा हूँ।"

"तुम्हारा मोहरा कैसा है?"

"जब्बार मेरा मोहरा नहीं है। मैं नहीं जानता कि इस वक्त वह कहाँ है। तुम तक पहुँच गया होगा।"

"तुम्हारा क्या ख्याल है कि मैं अब जब्बार को गले लगाऊँगा?"

"वह तुम्हारी मर्जी है कि तुम उसका क्या करते हो।"

"वह तो कहता है कि उसने तुम्हें या पुलिस वालों को कुछ नहीं बताया।" बड़ा खान ने उधर से कहा।

"तुम्हें उसकी बात का भरोसा करना चाहिए। वह तुम्हारा आदमी है।"

"तुम कहते हो कि उसने तुम्हारे सामने मुँह खोल दिया है।"

"हाँ।"

"तुम्हारी बात यकीन करने लायक नहीं है।"

"क्यों ?"

"जब्बार ने मुँह खोला होता तो अब तक मुझे काफी नुकसान हो चुका होता ।"

"तुम्हें अपने आदमी का भरोसा करना चाहिए ।"

"तुमने मेरे मन में वहम का बीज डाल दिया है कि उसने तुम्हें सब बता दिया । बात यहीं तक होती तो मैं सच-झूठ को पहचान लेता, परन्तु सबसे बड़ी बात तो ये है कि तुमने मेरे से पैंतीस करोड़ न लेकर, उसे मुफ्त में जेल से फरार करवा दिया । मैं तो सिर्फ इस बात के पीछे का राज जानना चाहता हूँ ।"

"मैं जो कहूँगा तुम्हें उस पर विश्वास तो होगा नहीं ?"

"नहीं होगा । न तुम पर विश्वास है, न जब्बार पर । लेकिन कुछ बात तो है ही जो तुमने उसे जेल से... ।"

देवराज चौहान हँस पड़ा ।

"कहीं तुम जब्बार का पीछा कर रहे हो और उसके जरिये मुझ तक पहुँचना चाहते हो ।"

"कोई भी जब्बार का पीछा नहीं कर रहा । वह पूरी तरह आजाद है ।"

"मैं नहीं मानता कि उसे जेल से निकालकर तुम हाथ पर हाथ रखकर बैठ गए ।"

"ये सच भी हो सकता है ।"

"कोई बात तो है जो मेरी समझ में नहीं आती । तुम कौन हो ? अपने बारे में बताओ ।"

"मैं जरूरत नहीं समझता ।"

"पुलिस वाले हो ?"

"बिल्कुल नहीं ।"

"तुम मुझसे चाहते क्या हो ?"

"कुछ नहीं । मैंने तो तुमसे कुछ भी नहीं चाहा । तुम्हें कभी फोन नहीं किया । तुम ही मुझे फोन... ।"

जब्बार से तुमने जो जानकारी हासिल की है उसका क्या करोगे ?"

"कुछ भी नहीं ।"

"और तुम चाहते हो की मैं तुम्हारी बात पर यकीन कर लूँ ।"

"तुम्हारी इच्छा पर है कि तुम मेरी किस बात को किस रुप में लेते हो ।" देवराज चौहान ने कहा ।

"इंस्पेक्टर सूरजभान यादव कहाँ है ? क्या वह मेरे आदमियों के हमले से दिल्ली में मर गया था ?"

"वह जिन्दा है । घायल है । उसे चार गोलियाँ लगी थीं । परन्तु अब वह ठीक हो रहा है ।"

"लेकिन मेरे पास तो इस बात की खबर नहीं आई ।"

"वह मेरी पनाह में अपना इलाज करवा रहा है । उसका परिवार भी उसके साथ है ।"

"समझा । तुम उसके सगे वाले हो ?"

"नहीं । मेरा सूरजभान से कोई नाता नहीं । बस, यूँ ही हम मिल गए ।"

"तुम मेरे लिए जम्मू आये थे ?"

"मैं जब्बार से मिलने आया था । बस, ये ही काम था मुझे ।"

"चाहते क्या हो ?"

"कुछ भी नहीं ।" देवराज चौहान मुस्कुराया ।

"ये तो हो ही नहीं सकता कि इस खेल के पीछे तुम्हारी कोई चाहत न हो । कभी-कभी मुझे लगता है कि जब्बार ने तुम्हें कुछ भी नहीं बताया । वह सच कहता है । परन्तु ये बात आड़े आ जाती है कि तुमने उसे जेल से क्यों फरार करवाया ? पैंतीस करोड़ क्यों न लिए ?"

"तुम इन बातों को कभी नहीं समझ सकोगे बड़ा खान ।"

"तुम जो भी हो बहुत शातिर हो । तुमने तो मेरा दिमाग भी खराब कर दिया है । अपना नाम बता दो ।"

"मैं तुम्हें अपने बारे में कुछ नहीं बताने वाला ।"

"मैं तुम्हारे मकसद के बारे में सोच रहा हूँ । लेकिन समझ नहीं पा रहा । तुम... ।"

"बड़ा खान ।" देवराज चौहान बोला ।

"हाँ ।"

"बहुत जल्दी हमारी मुलाकात होने वाली है ।"

"मैं तुम्हारी बात पर यकीन इसलिए नहीं कर सकता, क्योंकि मुझ तक कोई नहीं पहुँच सकता ।" बड़ा खान की आवाज देवराज चौहान के कानों में पड़ी, "तुम ये तो नहीं सोच रहे कि जब्बार का पीछा करके मुझ तक पहुँच जाओगे ।"

"जब्बार से मेरा अब कोई मतलब नहीं है ।" देवराज चौहान ने कहकर फोन बन्द कर दिया ।

बातों के दौरान देवराज चौहान की निगाह स्क्रीन पर चमकते बिंदु पर थी ।

वह बिंदु ऊधमपुर जाने वाले रास्ते पर आगे बढ़ रहा था ।

"तो क्या जब्बार जम्मू से बाहर जा रहा है ?" देवराज चौहान बड़बड़ा उठा ।

देवराज चौहान का फोन पुनः बजने लगा ।

"बोलो ।" देवराज चौहान ने बात की ।

"तुम अपने को और जब्बार को कानून के हवाले कर रहे हो या नहीं ?" ए.सी.पी. कौल को आवाज कानों में पड़ी, "तुम दोनों बच नहीं सकते । पुलिस जम्मू के चप्पे-चप्पे पर फैली है । खुद को पुलिस के हवाले कर दो ।"

"कमिश्नर ! मैंने तुम्हें पहले भी कहा था कि जब्बार अब मेरे पास नहीं है ।" देवराज चौहान बोला ।

"तो कहाँ है ?"

"जेल से निकलकर हम अलग हो गए थे ।"

"जब्बार जैसे लोग कानून से ज्यादा देर बचे नहीं रह सकते । तुम खुद को पुलिस के हवाले करो ।"

"बचकानी बातें मत करो ।"

"तुम्हें कानून से खेलने की सजा भुगतनी पड़ेगी । तुमने जो किया वह... ।"

"मैंने तुम्हें पहले भी कहा था कि मैंने कुछ गलत नहीं किया खाकी पहनकर। मैं... ।"

"बकवास बन्द करो। खाकी का नाम तुम अपनी जुबान पर भी मत लाओ। तुमने खाकी पहनकर, खाकी से गद्दारी की है। जब्बार जैसे खतरनाक मुजरिम को जेल से फरार करवा दिया।"

"इस मामले का सच मैं नहीं बता सकता तुम्हें।"

"क्यों?"

"क्योंकि बड़ा खान के लोग पुलिस वालों में शामिल हैं। उसने पुलिस वालों को खरीद रखा है। शर्मा तो याद है तुम्हें।"

"उसे कैसे भूल सकता हूँ जो बड़ा खान के आदमियों का शिकार हो।"

"उसे मैंने मारा था।"

"क्या?" कौल की अजीब सी आवाज कानों में पड़ी।

"मैंने उसे उस वीराने में ले जाकर गोली मारी थी। क्योंकि वह बड़ा खान के हाथों बिक चुका था। खाकी पहनकर बड़ा खान के इशारों पर नाच रहा था। बड़ा खान के कहने पर उसने मुझे खाने में जहर देकर मारने की कोशिश की।"

"ये नहीं हो सकता।" ए.सी.पी. कौल की हैरानी भरी आवाज आई।

"ये ही हुआ था। उसने सब कुछ अपने मुँह से कबूला। पुलिस वालों की सारी बातें वह बड़ा खान तक पहुँचा रहा था। पुलिस में बड़ा खान के आदमी भरे पड़े हैं। तुम भी बड़ा खान के आदमी हो सकते... ।"

"क्या बकवास कर रहे हो तुम। अपने को पुलिस के हवाले कर रहे हो या नहीं?"

"नहीं!"

"तुम बड़ा खान के आदमी हो?" उधर से कमिश्नर से पूछा।

"नहीं!"

"मुझे तो लगता है कि तुमने तगड़ा पैसा लेकर जब्बार को जेल से फरार करवाया है। मैंने दिल्ली बात की है। उन्हें यकीन नहीं आ रहा कि तुम नकली सूरजभान हो। अगर तुम नकली हो तो असली क्यों नहीं मिल रहा?"

"उसे बड़ा खान ने मारने की कोशिश की थी। वह घायल है और अपना इलाज करा रहा... ।"

"बकवास। तुम ही इंस्पेक्टर सूरजभान यादव हो। तुम्हीं असली... ।"

"दिल्ली से सूरजभान यादव की तस्वीर मँगाकर देख लो। मेरी बात का यकीन आ जायेगा।" कहकर देवराज चौहान ने फोन बन्द कर दिया।

स्क्रीन पर नजर आ रहे चमकीले बिंदु की वही स्थिति थी। वह ऊधमपुर की तरफ बढ़ रहा था।

आधा घण्टा बीता कि एकाएक देवराज चौहान चौंका।

ऊधमपुर आने से पहले ही चमकीला बिंदु अन्य रास्तों की तरफ मुड़ गया था। नक्शे से देवराज चौहान उन रास्तों को स्पष्ट तौर पर पहचान रहा था, जहाँ से जब्बार निकल रहा था।

देवराज चौहान का मोबाइल फिर से बजने लगा।

"हैलो !" देवराज चौहान ने बात की।

"मैं चार घण्टों में जम्मू पहुँच ज" जगमोहन की आवाज कानों में पड़ी।

"कार पर आ रहे हो ?" देवराज चौहान ने पूछा।

"हाँ ! तुमसे बात होने के आधे घण्टे बाद ही मैं पारस नाथ की कार लेकर चल पड़ा था।"

"आ जाओ। मुझे तुम्हारी जरूरत भी महसूस होने लगी है।" देवराज चौहान ने स्क्रीन पर नजरें टिकाये हुए कहा।

□□□

जब्बार ने एक सूनसान पहाड़ी के पास कार रोकी और इंजन बन्द करके पैदल ही आगे बढ़ गया था। वह जानता था कि जूबी के घर छिपना है तो कार को पहले ही छोड़ देना ठीक रहेगा। अँधेरा छा चुका था। यहाँ पर कुछ ठंडक भी थी। उसका मस्तिष्क देवराज चौहान में उलझा हुआ था कि आखिर वह उससे चाहता क्या है ?

बड़ा खान के बारे में उसके मन में ये ही था कि देर-सवेर में बड़ा खान को यकीन दिला देगा कि सब ठीक है। उसने नकली सूरजभान को कुछ नहीं

बताया और उसने उसे मुफ्त में जेल से निकाल दिया। लेकिन वह ये भी जानता था कि बड़ा खान को यकीन दिलाना आसान नहीं होगा। क्योंकि बड़ा खान ने नकली सूरजभान को पैंतीस करोड़ के नोटों की ऑफर दी थी। पैंतीस करोड़ न लेकर, वह मुफ्त में उसे जेल से क्यों निकालेगा ?

जब्बार खुद को चक्रव्यूह में फँसा महसूस कर रहा था। नकली सूरजभान ने उसे फँसा दिया था।

वहाँ आधा घण्टा पैदल चलने के बाद वह छोटी सी पहाड़ी पर पहुँचा। जहाँ इधर-उधर पंद्रह बीस मकान बने दिख रहे थे। रौशनी हो रही थी उन मकानों में। जब्बार एक मकान के दरवाजे पर पहुँचा और हाथ से दरवाजा खटखटाया।

कुछ ही पलों में दरवाजा खुला।

दरवाजा खोलने वाली 28-29 बरस की जूबी थी। खूबसूरत थी। वह अपने बूढ़े माँ-बाप और छोटे भाई-बहन के साथ रहती थी। कमाई का साधन बड़ा खान से मिलने वाले पैसे ही थे।

“आ जब्बार।” जूबी पीछे हटती बोली, “मैं तेरा ही इंतजार कर रही थी।”

“किसने बताया तुझे कि मैं आ रहा हूँ।” जब्बार भीतर आ गया।

“अनीस ने।” दरवाजा बन्द करते जूबी ने कहा, “आज तो सर्दी ज्यादा हो रही है। चल पीछे वाले कमरे में... ।”

दोनों घर के भीतर जाते रास्ते पर बढ़ गए।

“तेरे माँ-बाप, भाई-बहन कैसे हैं ?” जब्बार ने पूछा।

“ठीक है। भाई-बहन पढ़ रहे हैं। माँ-बाप एक कमरे में पड़े रहते हैं। काम बढ़िया चल रहा है।”

दोनों पीछे वाले कमरे में पहुँचे। वहाँ बेड लगा था।

जब्बार एक बार पहले भी पंद्रह दिन के लिए यहाँ आकर रहा था।

जब्बार कुर्सी पर जा बैठा।

“अलमारी में कपड़े रखे हैं। अपनी जरूरत के कपड़े ले ले। क्या पियेगा ?”

"एक-दो पैग लगा लूँगा। व्हिस्की है ?"

"मिल जायेगी।"

दस मिनट के बाद जब्बार कपड़े बदले रजाई में बैठा व्हिस्की के घूँट भर रहा था। घर के कामों से फुर्सत पाकर जूबी आधे घण्टे बाद कमरे में कुर्सी पर आ बैठी।

"सुना है, तू गद्दार हो गया है।" जूबी गंभीर थी।

"किसने कहा तेरे से ?" जब्बार ने तीखे स्वर में कहा।

"अनीस ने।"

"भौंकता है कमीना।" जब्बार ने गुस्से से कहा।

"तो फिर जेल से कैसे निकला ?"

"उस नकली पुलिस वाले ने निकाला।"

"तूने कीमत क्या चुकाई ?"

"कुछ भी नहीं।"

"मुझे पता चला है कि कीमत के बदले तूने बड़ा खान की जानकारियाँ उसे दीं।" जूबी ने गंभीर स्वर में कहा।

"ये भी तेरे को अनीस ने कहा ?"

"सब ही कह रहे हैं।"

जब्बार जूबी को देखने लगा। कुछ देर उनके बीच चुप्पी रही।

"मैं गद्दार नहीं हूँ। हालातों का शिकार हो गया हूँ। ये सारी गड़बड़ उस नकली इंस्पेक्टर सूरजभान ने की है। वह जेल में मुझसे मिलने आता था। तब बड़ा खान का फोन आता था। वह मेरे सामने बड़ा खान से कहता था कि मैं बड़ा खान के बारे में उसे सब बता रहा हूँ और इसके बदले में वह मुझे जेल से फरार करवा देगा। मैं सोचता था वह यूँ ही भौंक रहा है। परन्तु अंत में उसने मुझे जेल से फरार करवा दिया जबकि मैंने उसे बड़ा खान के बारे में कुछ भी नहीं बताया। बाहर आकर अनीस से मिला तो मुझे पता चला कि बड़ा खान मुझ पर शक कर रहा है। वह ये जानना चाहते हैं कि नकली पुलिस वाले ने मुझे जेल से फरार क्यों करवाया ? मैंने उसे बड़ा खान के बारे में नहीं बताया ? मैं पाक-साफ हूँ। मैंने बड़ा खान के बारे में किसी के सामने

मुँह नहीं खोला। मैं बड़ा खान का वफादार था और हूँ। ये सारी चाल उस नकली सूरजभान ने चली है। उसने मेरी ऐसी स्थिति बना दी है कि बड़ा खान मुझ पर किसी भी हाल में भरोसा न करे।"

"क्यों किया उसने ऐसा ?" जूबी ने पूछा।

"मैं नहीं जानता।"

"तुमने ये बातें अनीस को बताई ?"

"बताई, परन्तु वह मुझ पर भरोसा करने को तैयार नहीं। यही पूछता है कि मुझे किस शर्त पर उस नकली पुलिस वाले ने जेल से फरार करवाया ?" जब्बार तीखे स्वर में बोला, "पहले अनीस मुझसे संभलकर बात किया करता था और अब चौड़ा होकर बात कर रहा है। वक्त बदलते देर नहीं लगती।"

"बड़ा खान से बात की ?"

"नहीं। बड़ा खान भी तो मुझसे ये ही पूछेगा कि उसने मुझे जेल से फरार क्यों करवाया ? जबकि हकीकत ये है कि उसने मुझे बड़ा खान से दूर करने की चाल खेली और कामयाब भी हो गया।"

"चाहता क्या है वह ?"

"मैं नहीं जानता।"

"बड़ा खान ने उसे पैंतीस करोड़ की ऑफर दी थी कि तुम्हें जेल से निकाल दे। परन्तु उसने पैंतीस करोड़ लिए बिना ही तुम्हें जेल से फरार करवा दिया। ऐसे में स्पष्ट है कि तुममें और उसमें समझौता हुआ है।"

"ये ही तो खेल खेला उसने कि बड़ा खान मुझ पर किसी भी हाल में विश्वास न करे।"

"मेरे ख्याल में ऐसा नहीं है।"

"क्या मतलब ?" जब्बार जूबी को देखने लगा।

"बड़ा खान को तुम पर भरोसा न होता तो तुम मेरे पास आ नहीं आ सकते थे। बड़ा खान को तुम्हारी गद्दारी पर यकीन होता तो वह अब तक तुम्हें खत्म कर चुका होता। परन्तु उसने ऐसा कुछ नहीं किया।" जूबी गम्भीर थी।

जब्बार जूबी को देखता रहा। सोचता रहा।

"तुम्हें बड़ा खान से बात करनी चाहिए। जितनी देर करोगे बाकी लोग तुम्हारे खिलाफ हो जायेंगे। अनीस ने मुझसे कहा था कि मैं तुम्हें ज्यादा देर घर में न रखूँ। वह चाहता है कि तुम्हें छिपने का ठिकाना न मिले और तुम पुलिस के हाथों मारे जाओ।"

"बड़ा खान मेरी बात पर यकीन नहीं करेगा।"

"मुझे यकीन है कि तुम सच कह रहे हो।" जूबी बोली।

"तुम बड़ा खान को यकीन दिलाओ कि... ।"

"मुझे इस मामले में आने का हक नहीं है। मेरा जितना काम है, उतना काम ही मैं करती हूँ। मैंने अपने परिवार को पालना है। लेकिन तुम्हें सलाह दे सकती हूँ कि तुम सीधे बड़ा खान से बात करो।" जूबी गंभीर थी।

"मैंने बड़ा खान से उस नम्बर पर बात की, परन्तु वह नम्बर काम नहीं कर रहा। जानबूझकर वह नम्बर बन्द कर... ।"

"जानबूझकर कह लो या सावधानी के नाते। क्योंकि तुम ऐसे हालातों में घिरे हो कि लगता है जैसे पुलिस के साथ मिल गए हो। बड़ा खान का सतर्क हो जाना लाजिमी है।" जूबी ने कहा, "तुम बात करो बड़ा खान से। मैं तुम्हें दूसरा नम्बर तो नहीं दे सकती परन्तु अपने फोन से तुम्हारी बात करा सकती हूँ।"

"अनीस ने भी ऐसा ही कहा था।" जब्बार गिलास खाली करके मुस्कुराया।

जूबी की निगाह जब्बार पर थी।

"मैं गद्दार नहीं हूँ। मैंने कोई गद्दारी नहीं की। बड़ा खान के बारे में किसी को कुछ नहीं बताया। नकली इंस्पेक्टर सूरजभान की खतरनाक साजिश का शिकार हो गया हूँ मैं। समझ नहीं पाया कि उसने ऐसा क्यों किया ?"

"बड़ा खान से बात करना चाहो तो कह देना।" जूबी उठ खड़ी हुई।

जब्बार सोच भरी नजरों से जूबी को देखता रहा।

"और जब खाना खाने का मन हो बता देना।" कहकर जूबी जाने को हुई तो जब्बार कहने लगा।

"बड़ा खान से मेरी बात करा दो।"

जूबी ठिठकी और फोन निकालकर नम्बर मिलाने लगी।

जब्बार ने बिस्तर छोड़ा और अपने लिए नया गिलास तैयार कर लिया।

जूबी का नम्बर लगा और बात हो गई।

"जब्बार आपसे बात करना चाहता है।" जूबी ने कहा।

"कराओ।"

जूबी ने मोबाइल जब्बार की तरफ बढ़ाया। जब्बार ने फोन थामा। उसने दूसरे हाथ में गिलास पकड़ा था।

"मैं जेल से बाहर आ गया हूँ बड़ा खान।" जब्बार ने गंभीर स्वर में कहा।

"मुझे खुशी हुई। तुम जैसे काबिल इंसान का जेल में बन्द रहना ठीक नहीं।" बड़ा खान का मुस्कुराता स्वर कानों में पड़ा।

"मैं फिर से काम पर लग जाना चाहता हूँ।" जब्बार बोला।

"क्यों नहीं जब्बार। हमने योजना बना रखी है उस काम की। उसे पूरा करना है।"

जूबी की निगाह एकटक जब्बार पर थी।

"उस योजना पर हम कब से काम शुरू करेंगे?"

"जल्दी ही। बहुत जल्द।"

चंद पल चुप रहकर जब्बार कह उठा।

"बड़ा खान। हमें सीधे-सीधे बात कर लेनी चाहिए।"

"क्यों नहीं।"

"तुम मुझ पर शक कर रहे हो। ये बात है न बड़ा खान?"

"है।"

"शक करने की वजह भी ये है कि मैं कैसे जेल से बाहर आ गया। उस पुलिस वाले ने तुमसे पैंतीस करोड़ न लेकर मुफ्त में क्यों मुझे जेल से निकाला। कोई बात तो होगी ही।"

"ये बात तो है।"

"जेल से निकलने के बाद मुझे पता चला कि वह नकली पुलिस वाला था।"

"ये गंभीर बात है।" उधर से बड़ा खान ने कहा।

"मैं अनजाने जाल में फँस गया हूँ बड़ा खान ।"

"कैसे ?"

"उस नकली पुलिस वाले के ताने-बाने में मैं अनजाने में जा फँसा हूँ । तुम्हें मेरा भरोसा करना चाहिए ।"

"किस बात का ?"

"मैंने उसे तुम्हारे या संगठन के बारे में कुछ नहीं बताया ।"

"मुझे भरोसा है कि तुम सही कह रहे हो । परन्तु उसने तुम्हें जेल से फरार क्यों करवाया ?"

"मैं नहीं जानता ।"

"तुम्हारा जवाब तसल्ली बख्श नहीं है ।"

"जानता हूँ । परन्तु इसके अलावा मेरे पास कहने को कुछ भी नहीं है ।"

"फिर तो मुश्किल हो जायेगी ।"

"मैं सच कह रहा हूँ कि मैंने उसे कुछ नहीं बताया ।"

"मेरे से पैंतीस करोड़ न लेकर उसने तुम्हें मुफ्त में जेल से फरार करवा दिया और तुमने उसे कुछ नहीं बताया । इस बात को कोई भी मानने को तैयार नहीं होगा ।" बड़ा खान की शांत आवाज कानों में पड़ी ।

"तो अब मैं क्या करूँ ?"

"तुम्हें सच कह देना चाहिए ।"

"यकीन करो, मैंने सच कहा है ।"

"इस तरह बात नहीं बनेगी । वह तुम्हें यूँ ही जेल से फरार नहीं करवाएगा । तुम्हारे सामने बैठा जो मुझसे कहा करता था कि तुम उसे, मेरे बारे में सब बता रहे हो ।"

"हाँ । वह ऐसा कहता था ।"

"तो मैं कैसे तुम पर भरोसा करूँ कि तुमने उसे कुछ नहीं बताया ?"

"मेरा विश्वास नहीं रहा तुम्हें ?"

"इस धंधे में विश्वास जमाये रखना पड़ता है । भरोसे का खेल ही है ये धंधा । वह पुलिस वाला नहीं है । तुम्हें तो उसने बताया होगा कि वह कौन है ?" बड़ा खान ने उधर से कहा ।

"मैं उसे इंस्पेक्टर सूरजभान यादव ही समझ रहा था।"

"मेरे लिए ये जानना जरूरी है कि वह कौन है ?"

"उसने मुझे अपने बारे में नहीं बताया।"

"मुझे जिन बातों का जवाब चाहिए, वह तुम नहीं बता रहे।"

"क्योंकि जवाब मेरे पास भी नहीं है।"

"इस तरह तो हम मिलकर काम नहीं कर सकेंगे जब्बार।"

जब्बार मलिक ने गहरी साँस ली फिर बोला।

"तो मैं यूँ समझूँ कि हममें विश्वास नहीं रहा।"

"तुम्हारे सामने ही हैं सारे हालात। तुम मुझे गलत नहीं कह सकते।"

"फिर तो मुझे किसी और संगठन का साथ लेना पड़ेगा।"

"कोशिश बेकार होगी। क्योंकि गद्दार को कोई अपने पास नहीं बैठाता। आतंकवाद का धंधा विश्वास का खेल है। तुम पर से सबका विश्वास उठ गया है। कई संगठनों से मेरी बात हुई है।"

"तो तुमने ये बात सबसे कह दी ?" जब्बार के माथे पर बल पड़े।

"जरूरी था। मैं जानता था कि मेरे विश्वास न करने पर तुम दूसरे संगठन में जाना चाहोगे। ऐसे में तुम्हारे लिए दरवाजे को बन्द करना जरूरी था।" बड़ा खान की आवाज में शांत भाव थे।

"क्या कहा तुमने दूसरे संगठनों से ?"

"इतना ही कहा कि तुम्हें एक पुलिस वाले ने जेल से फरार करवाया है। हो सकता है तुम पुलिस के खबरी बन गए हो। इतना सुनने के बाद कोई भी तुमसे काम नहीं लेगा।"

"तुमने मेरे सारे रास्ते बन्द कर दिए।"

"ठीक बात तो ये ही होगी कि मुझे सच-सच बता दो कि किस शर्त पर तुम्हें उसने जेल से फरार करवाया ?"

"कोई शर्त नहीं थी।"

"तुम सच नहीं बताना चाहते तो तुम्हारी इच्छा।"

"ये ही सच है बड़ा खान। मुझ पर विश्वास न करके तुम गलती कर रहे हो।"

कुछ चुप्पी के बाद बड़ा खान की आवाज कानों में पड़ी।

"सच बात तो ये है जब्बार कि मुझे तुम्हारी गद्दारी पर पूरी तरह यक़ीन नहीं है। अगर यकीन होता तो तुम अब तक जिन्दा न होते। जूबी के यहाँ न होते। अनीस के यहाँ ही तुम्हें खत्म कर दिया जाता।"

जब्बार ने गहरी साँस ली।

"अब मैं क्या करूँगा ?" जब्बार बोला।

"मैं तुम्हारे लिए कोई रकम देखूँगा। इस बीच अगर तुम मुझे जेल से फरारी का सच बताना चाहो तो बता देना।"

"मैंने तुमसे कुछ भी झूठ नहीं बोला।

"जो भी बोला है, उस पर यकीन नहीं किया जा सकता।" इसके साथ ही बड़ा खान ने उधर से फोन बन्द कर दिया था।

जब्बार ने कान से फोन हटाया और जूबी की तरफ बढ़ा दिया।

जूबी ने फोन थामा। नजरें जब्बार पर थीं। जब्बार मुस्कुराकर कह उठा-

"बड़ा खान को मेरी सच बात पर भरोसा नहीं।"

"मुझे यकीन है कि तुम सच्चे हो। मैं सामने वाले के चेहरे को पढ़ना जानती हूँ।" जूबी ने कहा।

"बड़ा खान ने दूसरे संगठनों को भी ये बात बता दी कि कहीं मैं बड़ा खान को छोड़कर उनके पास न चला जाऊँ। मेरे सारे रास्ते बड़ा खान ने बन्द कर दिए हैं।" जब्बार ने व्याकुल स्वर में कहा।

"तुम तो फँस गए जब्बार।"

"पता नहीं बड़ा खान मेरा क्या करना चाहता है।" जब्बार ने गहरी साँस ली।

जूबी बाहर निकल गई।

जब्बार ने गिलास खाली करके एक तरफ रखा और आँखें बन्द कर लीं। चेहरे पर सोच के भाव नाच रहे थे। पाँच मिनट बाद आँखें खोलीं। मोबाइल निकाला और नम्बर मिलाने लगा।

तुरन्त ही बात हो गई। मर्दाना स्वर कानों में पड़ा।

"हैलो !"

"रजाक !" जब्बार शांत स्वर में बोला, "कैसा है तू ?"

"कौन ? जब्बार ?" रजाक की आवाज कानों में पड़ी ।

"हाँ, मैं जब्बार ही हूँ ! याद है हमने कई काम एक साथ किये थे ।"

"तेरे को कैसे भूल सकते हैं ।" रजाक का मुस्कान से भरा स्वर सुनाई दिया, "सुना है तू जेल से फरार हो आया ।"

"हाँ ! मुझे तेरे से काम था ।"

"बोल ।"

"अपने संगठन में मेरे को भी जगह दिलवा दे ।"

कुछ खामोशी के साथ आवाज आई रजाक की ।

"बड़ा खान से पट नहीं रही क्या ?"

"नहीं !"

"तेरे बारे में कुछ सुना है जब्बार । तूने पुलिस वालों से सौदेबाजी करके, उन्हें बड़ा खान के बारे में बताकर ही तू जेल से फरार हो सका है । ये तूने ठीक नहीं किया । पुलिस से दोस्ताना हमारे धंधे में नहीं चलता ।"

जब्बार के दाँत भींच गए ।

"झूठ कहा है, जिसने भी ये कहा है ।"

"हमारे संगठन के बड़ों के पास बड़ा खान का फोन आया था । उसने ही बताया ये सब ।"

"बकवास करता है बड़ा खान । मैंने उसके बारे में किसी को कुछ नहीं बताया ।" जब्बार गुर्रा उठा ।

जब्बार के चेहरे पर गुस्से से भरे भाव नाच उठे थे ।

बड़ा खान ने उसे हर जगह बदनाम कर दिया था कि उसे कहीं भी जगह न मिले ।

जब्बार ने दूसरी जगह फोन मिलाया ।

"मैं जब्बार बोल रहा हूँ ।" बात होते ही उसने कहा ।

"जो जेल से आज भाग निकला है, वह जब्बार ?" उधर से पूछा गया ।

"हाँ, मैं ।"

"सुना है तूने पुलिस को बड़ा खान के बारे में बताया और उन्होंने तेरे को जेल से फरार करवा दिया।"

"ये बकवास है।"

"हर कोई ये ही कह रहा है। बता इधर क्यों फोन किया ?"

"काम चाहिए था।"

"तेरे लिए हमारे पास कोई काम नहीं है।" कहकर फोन बन्द कर दिया गया।

"हरामजादे।" जब्बार गुर्रा उठा।

बड़ा खान ने उसके लिए सारे दरवाजे बन्द करा दिए थे। कोई भी उसे अपने पास बैठाने को राजी नहीं था।

उस नकली सूरजभान ने उसके साथ खेल खेला है और बाकी कसर बड़ा खान ने पूरी कर दी।

"सब कमीने-कुत्ते हैं।" जब्बार पुनः गुर्राया।

उसके हर तरफ परेशानी ही परेशानी थी। वह समझ नहीं पा रहा था कि क्या करे ?

जब्बार ने देवराज चौहान को फोन किया।

"तूने बहुत गलत किया मेरे साथ।" जब्बार ने दाँत भींचकर कहा, "कोई मुझे अपने पास बिठाने को तैयार नहीं।"

"ये तो होना ही था।" देवराज चौहान की आवाज कानों में पड़ी।

"क्यों किया तूने मेरे साथ ऐसा ?" जब्बार पागल हो रहा था।

"तेरे को जेल से फरार करवाने की मैंने अपनी कीमत वसूल ली।" उधर से देवराज चौहान ने हँसकर कहा, "अगर अब के हालात तुझे पसन्द नहीं आ रहे तो वापस जेल में चला जा। वहाँ आराम से रहेगा।"

"बकवास मत कर। बड़ा खान ने सब संगठन वालों से कह दिया है कि मैं गद्दार हूँ। अब कोई भी मुझे अपने पास नहीं लगने दे रहा। जबकि पहले सब चाहते थे कि मैं उनके लिए काम करूँ।"

"तेरा वक्त बदल गया है।"

"ये सारी गड़बड़ तूने की मेरे साथ। आखिर तू है कौन ?" जब्बार गुर्राया।

"तेरे को जेल से फरार करवाने वाला।"

"मैं तुझे जिन्दा नहीं छोड़ूँगा। मैं तुझे... ।"

"ये बात इतनी जल्दी भूल गया कि मैंने तुझे जेल से निकाला है।"

"तूने मुझे बर्बाद कर दिया।"

"बर्बाद तो तू उस दिन ही हो गया था जब तूने आतंकवाद के रास्ते पर पैर रखा था।"

"तू चाहता क्या है ?"

"कुछ नहीं। मैं तुझे खुश देखना चाहता हूँ।" देवराज चौहान के स्वर में मुस्कान के भाव थे।

"मैं तुझे छोड़ूँगा नहीं। ये बात याद रखना हरामजादे।" जब्बार ने चीखकर कहा और फोन बन्द करके उठा और गुस्से से कांपते हाथों से एक गिलास और तैयार करने लगा।

तभी जूबी ने भीतर प्रवेश किया।

"लगता है तुम फोन पर किसी से चीखकर बात कर रहे थे ?"

गिलास तैयार करके जब्बार ने सुलगती निगाहों से जूबी को देखा।

"बड़ा खान ने मुझे सब जगह बदनाम कर दिया है।" जब्बार ने दाँत भींचकर कहा, "उसने सब संगठनों से कह दिया है कि मैं गद्दार हूँ। मैं पुलिस के साथ समझौता करके जेल से फरार हुआ हूँ। कोई मेरे पास बैठने को तैयार नहीं।"

जूबी ने गंभीरता से सिर हिलाकर कहा।

"अब तू क्या करेगा ?"

"मुझे कुछ भी समझ नहीं आ रहा।"

"ये बात है तो बड़ा खान तुझे यहाँ क्यों रहने दे रहा है।" जूबी बोली।

"पता नहीं वह क्या करना चाहता है।" जब्बार ने उखड़े भाव से घूँट भरा।

"तेरे को अपना रास्ता खुद ही तलाश करना होगा।"

"रास्ता बचा ही कहाँ है मेरे पास ।" जब्बार गुर्रा उठा ।

"खाना लाऊँ ?"

"अभी नहीं ।"

□□□

रात के बारह बज रहे थे ।

जगमोहन अभी-अभी देवराज चौहान के पास पहुँचा था । सबसे पहला काम उसने नहाने का किया और दूसरा काम खाना खाने का ।

लम्बी ड्राइविंग की वजह से वह थका हुआ था ।

"मैंने सूरजभान को बताया कि तुमने जब्बार मलिक को जेल से फरार करवा दिया है । परन्तु सुनकर वह शांत रहा ।" जगमोहन ने बताया ।

"कुछ कहा नहीं ?"

"इतना ही कहा कि देवराज चौहान ने जो किया है, सोच-समझकर ही किया होगा ।"

देवराज चौहान ने सिगरेट सुलगाई ।

"अब क्या चल रहा है यहाँ ?" जगमोहन ने पूछा ।

"जब्बार को जेल से फरार करवाने से पहले मुझे बड़ा खान के फोन आते रहे । वह पैंतीस करोड़ मुझे दे रहा था । जब्बार को जेल से निकालने के । परन्तु मैंने कहा कि मेरा जब्बार के साथ समझौता हो गया है कि वह तुम्हारे बारे में सब कुछ बताएगा और मैं उसे जेल से फरार करवा दूँगा । तब शायद बड़ा खान मेरी बात को गंभीरता से नहीं ले रहा था । मैंने जब्बार को जेल से फरार करवा दिया और बड़ा खान जब्बार पर शक करने लगा कि उसने मुझे उसके बारे में सब बता दिया है ।"

"ये बातें तुम मुझे पहले भी बता चुके हो ।" जगमोहन ने कहा ।

"जब्बार को जेल से फरार करवाकर, उसे एक रिवॉल्वर दी । रिवॉल्वर के हत्थे पर माइक्रोचिप लगी हुई थी ।" कहते हुए देवराज चौहान ने लैपटॉप की तरफ इशारा किया, "उस माइक्रोचिप के दम पर मैं जब्बार की लोकेशन

लैपटॉप की स्क्रीन पर देख रहा हूँ। इस वक्त वह ऊधमपुर से कुछ पहले कहीं पर रुका हुआ है।"

"वह घर है कोई?"

"ये मैं नहीं जानता। स्क्रीन पर नजर आने वाला चमकीला निशाना उसी माइक्रोचिप का है।"

जगमोहन ने लैपटॉप की स्क्रीन पर नजर मारी।

"कुछ देर पहले मुझे जब्बार का फोन आया। वह परेशान था इस बात को लेकर कि अब बड़ा खान उसका भरोसा नहीं कर रहा। वह गुस्से में पागल था और मुझे मार देने को कह रहा था। जब्बार समझ चुका है कि मेरी चाल की वजह से ही वह अपना विश्वास खो बैठा है। उसका कहना है कि बड़ा खान ने बाकी सब संगठनों से कह दिया है कि वह पुलिस का आदमी बनकर जेल से फरार हुआ है। इसलिए कोई संगठन उसे पास बिठाने को तैयार नहीं है।"

"तो जब्बार का पूरा ही काम हो गया।" जगमोहन ने कहा।

"मैं ऐसा ही चाहता था। मैं उसे अकेला कर देना चाहता था। बड़ा खान ने मेरा काम और भी आसान कर दिया।"

जगमोहन गंभीर दिखने लगा।

"अब तुम क्या करना चाहते हो?"

"जब्बार टूट रहा है। ऐसे में उस पर हाथ डालना आसान है। लोहा गर्म हो रहा है। मैं उसके भीतर छिपी बड़ा खान की सारी जानकारी जान लेना चाहता हूँ। जितना वह थकेगा, उतनी आसानी से बताएगा।"

"समझा। तो मैं क्या करूँ? मेरे लायक कुछ काम है?"

"बहुत काम है। मैं तुम्हें एक संगठन का नेता बना देना चाहता हूँ ताकि तुम जब्बार को अपने संगठन में शामिल कर सको।"

"क्या?" जगमोहन चौंका।

"हमें जब्बार के भीतर से बड़ा खान की जानकारी निकालनी है जगमोहन।"

"समझा।"

"मैं तुम्हें भी एक माइक्रोचिप दूँगा। इस तरह तुम भी चमकीले बिंदु की तरह, लैपटॉप पर मेरी निगाहों में रहोगे। साथ ही तुम फोन पर मेरे संपर्क में रहोगे। मैं तुम्हें आगे का रास्ता दिखाता रहूँगा।"

"लेकिन संगठन मैं तैयार कैसे करूँगा ?"

"इस काम में राठी हमारी मदद करेगा। वह अपने आदमी देगा। हमें जब्बार के सामने ऐसा दिखावा करना है कि उसे लगे वह सही हाथों में आ पहुँचा है। वह हमारे कश्मीर को आजाद कराने की बात पर खुश होता है। बेवकूफ ये नहीं जानता कि हिन्दुस्तान का कश्मीर आजाद है। आजाद कराना ही है तो कश्मीर के उस हिस्से को आजाद कराये जो पाकिस्तान के हाथों में है। परन्तु ये बात उसकी समझ में नहीं आएगी। वह पाकिस्तान में तीन साल की ट्रेनिंग ले चुका है और उन लोगों ने जब्बार के दिमाग में भर दिया है कि हिन्दुस्तान ने कश्मीर पर कब्जा कर रखा है। इसलिए कश्मीर को आजाद कराना है। मैं तुम्हें सब समझाता हूँ कि कल सुबह से तुम कैसे काम करोगे।"

"राठी कहाँ है ?" जगमोहन ने पूछा।

"अभी वह आया नहीं। कभी भी आ सकता है।"

"ठीक है। तुम मुझे बताओ कि कल मुझे कैसे काम करना होगा और क्या-क्या करना होगा ?"

"तुम्हारे संगठन का नाम होगा आजादी-ए-कश्मीर... ।"

देवराज चौहान ने समझाना शुरू किया।

□□□

अगले दिन सुबह जब्बार मलिक गहरी नींद में था। आठ बज रहे थे। तभी जूबी ने मोबाइल थामे भीतर प्रवेश किया और जब्बार को नींद से उठाया।

"बात करो। तुम्हारे लिए बड़ा खान का फोन है।" जूबी बोली।

जब्बार की आँख उसी पल खुल गई। वह उठ बैठा। उसने फोन थामा।

"हैलो !" जब्बार बोला, "बड़ा खान ?"

"हाँ !" बड़ा खान की आवाज जब्बार के कानों में पड़ी, "मैंने तुम्हारे लिए कुछ सोचा है।"

"हुक्म कीजिये।"

"मैं तुम्हारा नाम रोशन कर देना चाहता हूँ जब्बार।"

"मैं हाजिर हूँ।"

"तुम्हारे माथे पर जो कलंक लग गया है, मैं उसे भी धो देना चाहता हूँ।"

"इससे अच्छी बात और क्या होगी।" जब्बार मलिक मुस्कुराया, "आप हुक्म देकर देखिये।"

"मैं तुम्हें ऐसा काम सौंपना चाहता हूँ कि जिससे तुम शहीद होकर तारे की तरह आसमान में चमकने लगोगे।"

जब्बार मलिक के मस्तिष्क को तीव्र झटका लगा। चंद पलों के लिए तो वह ठगा सा खड़ा रह गया।

"जब्बार।" बड़ा खान की आवाज कानों में पड़ी तो वह संभला।"

"ये आप क्या कह रहे हैं। मुझे शहीद बनाना चाहते हैं ?" जब्बार के होंठों से निकला।

"शहीद बनना तो सबसे अच्छी बात है जब्बार। शहीद बनोगे तो तुम्हें हर कोई याद.... ।"

"पर मैं तो जिन्दा रहकर कश्मीर को आजाद कराना चाहता हूँ।"

"शहीद होने के बाद तुम तारे बनकर ऊपर से देखना। कश्मीर आजाद हो जायेगा। मैं तुमसे इस बात का वादा करता हूँ। जब तक कश्मीर आजाद नहीं होगा, तब तक हम चैन से नहीं बैठेंगे। आज शाम को मैं तुम्हें शहीद होने की योजना बताऊँगा। बहुत जबरदस्त योजना है। शहीद होने के साथ-साथ तुम कम से कम सौ लोगों को बम विस्फोट में सजा भी दे दोगे। वह सब मारे जायेंगे और तुम शहीद हो जाओगे।"

"जी।" जब्बार के होंठों से निकला।

"मैं शाम को तुम्हें फोन करके योजना बताऊँगा।" इसके साथ ही फोन बन्द हो गया।

जब्बार का मस्तिष्क सुन्न सा हो उठा था।

बड़ा खान उससे पीछा छुड़ाना चाहता है। उसे मार देना चाहता है। तभी तो उसे शहीद बनने को कह रहा है। कहता है शाम को अपनी योजना बताएगा। पहले सब दरवाजे उसके लिए बन्द कर दिए, अब उसे घेरकर खत्म कर देना चाहता है।

नहीं, वह शहीद नहीं बनेगा। जिन्दा रहेगा और कश्मीर को आजाद करायेगा। जब कश्मीर आजाद हो जायेगा तो कश्मीर का राष्ट्रपति बनेगा। उसे शहीद नहीं होना है। बहुत काम करने है उसने।

तभी कहवे का गिलास थामे जूबी ने भीतर प्रवेश किया।

"कहवा लो जब्बार।" जूबी बोली।

जब्बार सोचो से बाहर निकला। जूबी ने उसे कहवा दिया और अपना मोबाइल वापस लेकर बोली।

"क्या कहा बड़ा खान ने ?"

"क्या कहा ? कुछ नहीं। तुम्हारे काम की बात नहीं है।" जब्बार के चेहरे पर चिंता बरसने लगी थी।

"मत बता।" जूबी कहकर बाहर निकल गई।

कहवे के घूँट भरता जब्बार परेशान सा बैठा रहा।

कहवा खत्म हो गया तो मोबाइल उठाकर देवराज चौहान का नम्बर मिलाने लगा।

"तुमने तो मुझे बहुत बुरी तरह फँसा दिया है। इतना तो मैंने सोचा ही नहीं था।" जब्बार ने फोन पर कहा।

"बहुत ठंडे-ठंडे लग रहे हो ? क्या बात है ?" उधर से देवराज चौहान ने पूछा।

"बड़ा खान ने मेरे लिए सब रास्ते बन्द कर दिए और अब मुझे शहीद बनने को कह रहा है।"

"शहीद ? वह कैसे ?"

"अपने शरीर पर बम बाँधकर लोगों में घुस जाऊँ और खुद को उड़ा लूँ।"

"ओह। बात यहाँ तक पहुँच जायेगी, मैंने नहीं सोचा था।"

"अब तो बता दो कि तुमने ये सब मेरे साथ क्यों किया ?"

"मैंने तुम्हारे साथ कुछ नहीं किया। तुम जेल से फरार होना चाहते थे, मैंने तुम्हें फरार करवा दिया।"

"मुझे तुम्हारी मदद की जरूरत है।" जब्बार थके स्वर में कह उठा।

"मदद ?"

"हाँ ! बड़ा खान मुझे मार देना चाहता है और मैं मरना नहीं चाहता।"

"तो इसमें मैं क्या कर... ।"

"तुमने ही तो कहा था कि जब मैं मुसीबत से निकलना चाहूँ तो तुम्हें फोन करूँ।" जब्बार बोला।

"मैंने तो सोचा कि तुम मेरी बात भूल गए होगे।"

"तुम मुझे मुसीबत से बचा सकते हो।"

"मुफ्त में नहीं।"

"क्या चाहते हो। मेरे पास काफी पैसा है। मैं तुम्हें पैसा... ।"

"पैसा नहीं चाहिए।"

"तो ?"

"मुझे बड़ा खान के बारे में पूरी जानकारी चाहिए। क्या तुम सब कुछ मुझे बताने को तैयार हो ?"

जब्बार के होंठ भिंच गए।

"अगर तुम्हारी हाँ है तो पहले तुम मुझे बड़ा खान की जानकारी दोगे तब मैं तुम्हें... ।"

"नहीं ! मैं गद्दार नहीं बनना चाहता।" जब्बार कह उठा।

"वह तुम्हें मार देना चाहता है।" देवराज चौहान की आवाज कानों में पड़ी, "मैं तुम्हें उससे बचा लूँगा।"

"मैं तुम्हें बड़ा खान के बारे में नहीं बता सकता।" सूखे होंठों पर जीभ फेरकर जब्बार ने कहा।

"वह तो तुम्हारी जान ले लेगा।"

"तुम मेरी सहायता नहीं करना चाहते तो न सही, मैं खुद को बचाने की चेष्टा करूँगा। पर मैं समझ गया कि तुमने मुझे जेल से निकाला क्यों। बड़ा

खान को मेरा दुश्मन बनाया। तुम पुलिस के ही आदमी हो और बड़ा खान के बारे में जानकारी पाना चाहते हो। यही खेल खेला तुमने। परन्तु जब्बार गद्दार नहीं है। तुम मेरे मुँह से कुछ नहीं जान सकते। अब मैं तुम्हें फोन भी नहीं करूँगा। ये लड़ाई मेरी अपनी है। मैं ही लड़ूँगा।"

"बेवकूफी मत करो जब्बार। तुम बड़ा खान से नहीं टकरा सकते। मेरी सहायता से तुम...।"

"पुलिस वाले की सहायता नहीं चाहिए मुझे।"

"मैं पुलिस वाला नहीं हूँ।"

"तुम हो। मुझे बेवकूफ नहीं बना सकते। तुम पुलिस वाले ही हो। तभी तो जेल में आ सके और जेल वालों के साथ मिलकर तुमने मुझे जेल से फरार करवा दिया। बाहरी आदमी ये काम नहीं कर सकता था। बाद में तुमने ये बात फैला दी कि तुम पुलिस वाले नहीं हो। जबकि तुम इंस्पेक्टर सूरजभान यादव ही हो।" जब्बार गुर्रा उठा।

"नहीं। मैं सूरजभान नहीं हूँ।"

"तो कौन हो?"

"ये बात तुम्हें बताने की जरूरत नहीं समझता। मुसीबत में तुम हो, मैं नहीं। तुम्हें मेरी सहायता चाहिए तो मुझे बड़ा खान के बारे में सब कुछ बताना...।"

जब्बार मलिक ने फोन बन्द कर दिया। जबड़े भिंच चुके थे। अब वह सब कुछ भूलकर एक ही बात सोच रहा था कि बड़ा खान के खतरनाक इरादों से कैसे बचे?

□□□

देवराज चौहान के सामने दो लैपटॉप पड़े थे। दोनों पर जम्मू कश्मीर के नक्शे दिखाई दे रहे थे। दोनों पर चमकते बिंदु नजर आ रहे थे। एक बिंदु एक जगह ठहरा हुआ था। परन्तु दूसरा बिंदु तेजी से ऊधमपुर जाने वाली सड़क पर बढ़ता दिखाई दे रहा था। सुबह के दस बज रहे थे। सामने कुर्सी पर बैठा राठी उसे देख रहा था।

देवराज चौहान मोबाइल कान से लगाये जगमोहन से बात कर रहा था।

“ताजा खबर मैंने तुम्हें बता दी है कि बड़ा खान, जब्बार को शहीद होने को कह रहा है। वह उसे मार देना चाहता है। उसे इस बात का शक है कि जब्बार ने मुझे उसके बारे में बताया है। स्पष्ट बात तो ये है कि जब्बार पर बड़ा खान यकीन नहीं कर पा रहा। अब इसी हिसाब से अपनी योजना को थोड़ा बदल लो। अपने आदमियों को नए ढंग से सब कुछ समझा दो और तुम भी जान लो कि जब्बार इस वक्त थक और टूट चुका है। उस पर समझदारी से काबू पाना।

“मैं उसे संभाल लूँगा।”

“सब कुछ याद है तुम्हें जो मैंने समझाया है?” देवराज चौहान ने पूछा।

“कुछ भी भूला नहीं हूँ। तुम मेरे रास्ते का ध्यान रखो। कहाँ से मुझे मुड़ना है?” जगमोहन की आवाज कान में पड़ी।

“ऐसे ही चलते रहो। अभी वह जगह कुछ दूर है, जहाँ से जब्बार मुड़ा था।” देवराज चौहान ने फोन कान पर लगाये सामने बैठे राठी से पूछा, “तुम्हारे सब आदमी बढ़िया हैं न?”

“एकदम बढ़िया।” राठी बोला, “मैंने अपनी पसन्द के आदमी दिए हैं। दिमाग और काम के तेज।”

मोबाइल कान से लगाये देवराज चौहान की निगाह उस लैपटॉप पर थी जहाँ जगमोहन से वास्ता रखता चमकीला बिंदु सरकता नजर आ रहा था। तभी राठी कह उठा।

“तुम खतरनाक खेल खेल रहे हो।”

“हाँ!” देवराज चौहान मुस्कुराया।

“बड़ा खान बेहद खतरनाक माना जाता है। आतंकवाद की दुनिया में उसका नाम है। उसका नेटवर्क पूरे हिन्दुस्तान में फैला हुआ है और आतंकवादी संगठनों से पैसे लेकर वह आतंकवादी कार्यवाहियाँ करता है। ऐसे में जिस संगठन ने पैसे देकर बड़ा खान से काम लिया होता है, वह ही संगठन उस आतंकवादी कार्यवाही पर ये घोषणा कर देता है कि वह उसके

संगठन ने की है। मेरे ख्याल में तो कम से कम तुम्हें बड़ा खान से नहीं टकराना चाहिए।"

देवराज चौहान मुस्कुराया और उसकी उँगलियाँ उस लैपटॉप पर चलने लगीं, जिस पर जब्बार की चिप वाला बिंदु चमक रहा था। मिनट भर बाद ही अब उस स्क्रीन पर दो बिंदु दिखने लगे थे। जब्बार वाला चमकीला बिंदु स्थिर था और जगमोहन वाला चमकीला बिंदु तेजी से आगे बढ़ा जा रहा था।

"तुमने अभी तक अपने बारे में बताया नहीं ?" राठी बोला।

"अभी मैं बताना नहीं चाहता। मुझे आशा है कि तुम बुरा नहीं मानोगे।"

राठी खामोश रहा।

"अपनी रफ्तार धीमी करो।" देवराज चौहान ने कान पर लगे मोबाइल में कहा, "अब वह रास्ता पास ही है, जहाँ से तुम्हें मुड़ना है। अपने बाईं तरफ देखते रहो। वहाँ कई मोड़ दिखेगा।" देवराज चौहान की निगाह स्क्रीन पर थी।

तेजी से आगे बढ़ता चमकीला बिंदु अब धीमे से आगे बढ़ने लगा था।

"रास्ता दिखा ?" देवराज चौहान ने पूछा।

"अभी नहीं।"

"देखते रहो। वहाँ कोई रास्ता है, जहाँ से जब्बार मुड़ा... ।"

"शायद वह रास्ता है... । हाँ रास्ता मिल गया। एक कच्चा चौड़ा रास्ता पहाड़ी पर जा रहा है।" जगमोहन की आवाज आई।

□□□

लैपटॉप की स्क्रीन पर दोनों बिंदु अब काफी पास-पास दिखने लगे थे।

"तुम इस वक्त कहाँ हो ?" देवराज चौहान ने पूछा।

"हम एक पहाड़ी पर पहुँच गए हैं, जहाँ पंद्रह-बीस मकान इधर-उधर बिखरे बने दिखाई दे रहे हैं।"

"जब्बार भी वहीं है। तुम्हारे बाईं तरफ फासले पर कुछ है क्या ?"

"हाँ, उधर मकान है।" जगमोहन की आवाज कानों में पड़ी।

"उधर ही उसी में जब्बार मौजूद है।"

"पक्का ?"

"पूरी तरह पक्का। तुम आजादी-ए-कश्मीर के बड़े हो। ये संगठन तुम्हारा है। खुद को मालिक बनाकर रखो और वैन में जाकर बैठो या फिर कार में। जो आदमी तुम्हारे साथ में हैं, उन्हें समझाकर काम पर भेजो।"

"ऐसा ही करता हूँ मैं।" कहकर जगमोहन ने फोन बन्द कर दिया था।

□□□

दिन के ग्यारह बज चुके थे। नहा-धोकर जब्बार नाश्ता कर चुका था। वह गहरी सोच में डूबा हुआ था और उसने फैसला कर लिया था कि जूबी के घर से चला जायेगा। बड़ा खान उसे शहीद करना चाहता है, परन्तु वह जिन्दा रहेगा और हालातों से लड़ेगा। अपनी जिंदगी को इस तरह खत्म नहीं होने देगा। वह कश्मीर की आजादी का सिपाही है और उसकी लड़ाई तभी जारी रहेगी जब वह स्वयं को जिन्दा रखेगा। वह जानता था कि बड़ा खान उसका दुश्मन बन जायेगा। परन्तु अब वह अपना इरादा पक्का कर चुका था कि अपनी जिंदगी वह खुद जियेगा। आतंकवाद की दुनिया में उसका कम नाम नहीं था। हर कोई जानता था कि जब्बार बड़े से बड़े काम करने का हौसला रखता है। वह अपना संगठन बनाएगा। लोगों को अपने संगठन में शामिल करेगा। बड़ा खान उसके रास्ते में आया तो उससे भी लड़ेगा। जब्बार ने जेबों में रखा अपना सामान चैक किया और कमरे से बाहर निकल आया। वह अब यहाँ से निकल जाना चाहता था। जानता था कि बड़ा खान के आदमी उस पर नजर रखते हो सकते हैं। परन्तु उसे किसी की परवाह नहीं थी। घर में उसने जूबी को पुकारा। उसे आवाज लगाई। उसी पल जूबी का छोटा भाई आकर बोला।

"आपा बाहर, पौधों को पानी दे रही हैं।"

जब्बार बाहर निकला। सामने जूबी पौधों की क्यारियों में पानी दे रही थी। धूप खिली हुई थी। ठंडी हवा चल रही थी।

"तुम्हें बाहर नहीं आना चाहिए।" जूबी उसे देखते ही कह उठी।

“मैं जा रहा हूँ यहाँ से ।” जब्बार पास पहुँच कर ठिठका ।

जूबी ने पानी देना छोड़ा और जब्बार को देखकर बोली ।

“बाहर तुम्हारे लिए खतरा है ।”

“तुमने पूछा था कि बड़ा खान मेरे पे भरोसा नहीं कर रहा तो उसने मुझे तुम्हारे यहाँ क्यों रखा है । दरअसल वह मेरी मौत चुन रहा था । उसे सोचने का वक्त चाहिए था और मेरी मौत से भी वह फायदा उठा लेना चाहता है । वह मुझे शहीद होने को कह रहा है । बम बाँधकर भीड़ में जाऊँ और खुद को उड़ा दूँ ।”

“ओह !” जूबी चौंकी ।

“बड़ा खान पागल हो गया है । उसे मेरी बात पर भरोसा करना चाहिए । मैंने सच में किसी को कुछ नहीं बताया । मानव बम बनना मेरा काम नहीं है । मेरा काम तो बड़े-बड़े कामों को अंजाम देना है ।” जब्बार कठोर स्वर में कह उठा ।

“तुम यहाँ से गए तो बड़ा खान तब भी तुम्हें नहीं छोड़ेगा ।” जूबी गंभीर स्वर में कह उठी ।

“इतना आसान नहीं है मुझे मारना ।” जब्बार दरिंदगी से कह उठा ।

“तुम बड़ा खान का मुकाबला करोगे ?”

“मैं सिर्फ अपने को बचाऊँगा ।” जब्बार के चेहरे पर वहशी भाव थे, “मैं हर हाल में... ।”

जब्बार कहते-कहते ठिठका । उसकी आँखें सिकुड़ी ।

वे छः लोग थे जो एकाएक दिखने लगे थे पहाड़ी पर । सब इधर ही तेजी से आ रहे थे । हाथों में गनें थाम रखी थीं । दो ने सिर पर साफा बांध रखा था । सबके चेहरे पर ही दाढ़ी थी । शरीर पर पठानी कमीज-सलवार था और वे खतरनाक नजर आ रहे थे । तेज हवा में आगे बढ़ते उनके कपड़े उड़ से रहे थे ।

जूबी ने उधर ही देखा ।

“ये... कौन लोग हैं ?” जूबी के होंठों से निकला ।

“कम से कम बड़ा खान के लोग नहीं हैं ।” जब्बार कठोर स्वर में बोला ।

"ये तुम कैसे कह सकते हो ?" जूबी परेशान नजर आने लगी थी ।

"मेरी और बड़ा खान की ऐसी कोई बात नहीं हुई कि उसे आदमी भेजने पड़े ।"

"मेरे घर पर पहली बार इस तरह हथियारबंद आदमी आ रहे हैं । भीतर मेरा परिवार... ।"

"चिंता मत करो ।" जब्बार दाँत भींचकर कह उठा, "ये मेरे लिए आ रहे हैं ।"

"किसी को कैसे पता कि तुम यहाँ हो ।"

जब्बार दाँत भींचे उन्हें आते देख रहा था । वह काफी पास आ चुके थे ।

जब्बार ने कपड़ों में छिपा रखी रिवॉल्वर पर हाथ फेरा ।

"जब्बार !" जूबी व्याकुल सी कह उठी, "यहाँ मेरा परिवार है ।"

"मैं कोशिश करूँगा कि कुछ न हो लेकिन मैं नहीं जानता कि वह क्या करने आ रहे हैं ।"

फिर देखते ही देखते वह पास आ गए । दोनों के गिर्द घेरा बनाकर खड़े हो गए ।

जब्बार आँखें सिकोड़े सबको देख रहा था । इन लोगों को उसने पहले नहीं देखा था ।

"तू जब्बार मलिक है ?" एक ने गन थामे शांत स्वर में पूछा ।

"हाँ !" जब्बार के होंठ भिंच गए, "मुझे मारने आये हो ?"

"नहीं ! तेरे को इज्जत के साथ लेने आये हैं । हमें ये भी कहा गया है कि तू साथ न आये तो जबरदस्ती कर सकते हैं हम ।"

"किसने भेजा है तुम लोगों को ?"

"हम आजादी-ए-कश्मीर नाम के संगठन से वास्ता रखते हैं ।"

"आजादी-ए-कश्मीर ?" जब्बार के माथे पर बल पड़े, "ये नाम मैंने पहले नहीं सुना ।"

"तू क्या कश्मीर घाटी के सारे संगठनों को जानता है । सबका नाम सुन रखा है तूने ?" वह सख्त स्वर में बोला ।

"शायद सबका नाम नहीं सुन रखा।" जब्बार के माथे पर बल नजर आ रहे थे, "आजादी- ए- कश्मीर मुझसे क्या चाहता है ?"

"हम नहीं जानते। हमें पता बताकर कहा गया कि तुम यहाँ मिलोगे तो हम तुम्हें लेने आ गए।"

"ये कैसे पता चला कि मैं यहाँ... ।"

"हमें कुछ नहीं पता। जो पूछना हो, संगठन के बड़ों से पूछना। हमारे साथ चलने को तैयार हो ?"

जब्बार ने दाँत भींच लिए। जूबी घबराई सी खड़ी थी।

"अगर तुमने इंकार किया तो हम जबरदस्ती करेंगे। हमारा मुकाबला करने की मत सोचना।"

"मैं तुम्हारे साथ चलूँगा।" जब्बार कह उठा।

"अभी इसी वक्त चलना होगा तुम्हें।"

"चलो।" जब्बार तो खुद भी यहाँ से निकलने वाला था।

उस आदमी ने जूबी को देखकर कहा।

"बड़ा खान से कह देना कि वह कश्मीर की आजादी का सिपाही नहीं है। वह तो सिर्फ आतंकवाद का धंधा करने वाला है, जो दूसरों से पैसे लेकर आतंक फैलाता है। परन्तु हम कश्मीर को आजाद कराने वाले सच्चे सिपाही हैं। हम ही कश्मीर को आजाद करवायेंगे और ये बहुत जल्दी होने वाला है।"

जूबी खामोश रही।

"चलो जब्बार।" वह जब्बार से बोला।

"तुम्हारा नाम क्या है ?" जब्बार उनके साथ चल पड़ा।

"कलाम कहते हैं मुझे।"

"बड़ा खान के आदमी मुझ पर नजर रखते हो सकते हैं।" जब्बार ने कहा।

"दो थे, चाकू से खत्म कर दिया उन्हें। उधर लाशें पड़ी हैं। देखना चाहोगे ?" कलाम खतरनाक स्वर में बोला।

"क्या फायदा देखने का। तुम्हारा संगठन मुझसे क्या चाहता है ?"

"पता नहीं।"

"तुम्हारे संगठन के बड़े कौन हैं ?"

"कुछ देर बाद मिल लेना ।"

"संगठन पाकिस्तान से वास्ता रखता है ?"

"ये बातें तुम ठिकाने पर चलकर पूछ लेना ।"

"तुम लोगों के पास कार या कोई वाहन... ।" जब्बार ने कहना चाहा ।

"पहाड़ी के उस तरफ सड़क पर वैन और कार खड़ी है हमारी ।" कलाम कह उठा ।

अगले तीन मिनट में वे सब कच्चे रास्ते पर खड़ी वैन के पास पहुँचे ।

दो हथियारबंद आदमी वैन के पास मौजूद थे । एक ने वैन का पीछे का दरवाजा खोल दिया ।

वह छः के छः जब्बार के साथ वैन के भीतर जा बैठे । दरवाजा बन्द कर लिया । दोनों हथियारबंद वैन के आगे जा बैठे । वैन के ड्राइवर ने वैन आगे बढ़ा दी । वैन की नम्बर प्लेटें गायब थीं ।

वैन के आगे बढ़ते ही पीछे खड़ी कार भी चल पड़ी । कार की पीछे वाली सीट पर जगमोहन बैठा था ।

वहाँ से रवाना होते ही जगमोहन ने देवराज चौहान को फोन करके कहा ।

"जब्बार हमारे साथ है ।"

"ये बढ़िया खबर है । क्या तुम जब्बार के साथ हो ?" उधर से देवराज चौहान ने पूछा ।

"नहीं ! मैं कार में हूँ ।"

"जब्बार ने साथ चलने पर कोई एतराज किया ?"

"लगता तो नहीं । अपने आदमियों के बीच वह शांत लग रहा था ।"

"आगे तुमने उससे कैसे बात करनी है, उसे कैसे संभालना है और क्या करना है, तुम जानते हो ।"

"मैं उसे संभाल लूँगा ।" जगमोहन ने विश्वास भरे स्वर में कहा ।

"इतना आसान नहीं है जब्बार मल्लिक । वह खतरनाक और दृढ़ इरादों वाला व्यक्ति है ।"

"मैं उसे शीशे में उतार लूँगा ।"

□□□

उनके जाते ही जूबी घर के भीतर गई और मोबाइल से बड़ा खान को फोन किया।

"कहो जूबी।"

"आजादी-ए-कश्मीर संगठन के छः लोग जब्बार को अपने साथ ले गए। वह हथियारबंद थे।" जूबी ने कहा।

"ये क्या कह रही हो। आजादी-ए-कश्मीर नाम का कोई संगठन नहीं है।" बड़ा खान की आवाज कानों में पड़ी।

"वह आजादी-ए-कश्मीर का ही नाम ले रहे थे।" जूबी कह उठी।

"हूं! जब्बार ने साथ जाने पर एतराज नहीं किया?"

"वह एतराज करने की स्थिति में नहीं था।"

"तुम उन लोगों में से किसी को पहचानती हो?"

"नहीं! मैंने उन्हें पहली बार देखा था।" जूबी ने कहा।

"वहाँ दो आदमी जब्बार के लिए, तुम्हारे घर पर नजर रखे हुए थे।"

"मैं उनके बारे में कुछ नहीं जानती।"

उधर से बड़ा खान ने फोन बन्द कर दिया था।

□□□

वैन अब मुख्य सड़क पर आ चुकी थी और ऊधमपुर की तरफ बढ़ने लगी थी।

वैन के बन्द शीशों से बाहर देखता जब्बार कह उठा- "ठिकाना किधर है तुम लोगों का?"

"हमारे ठिकाने हर जगह पर फैले हैं, परन्तु इस वक्त हम ऊधमपुर जा रहे हैं। आधे घण्टे में हम ठिकाने पर होंगे। तुम्हारी रिवॉल्वर जेब से बाहर दिख रही है, उसे भीतर कर लो।" कलाम ने कहा।

जब्बार ने रिवॉल्वर भीतर की और कलाम को गहरी नजरों से देखा।

"तुम दोस्तों में हो जब्बार!" कलाम मुस्कुरा पड़ा।

"दोस्त ?" जब्बार गंभीर स्वर में बोला, "मेरे हालात मुझे किसी पर यकीन नहीं करने दे रहे ।"

"सब ठीक हो जायेगा । तुम इस वक्त मुसीबत में फंसे पड़े हो । हमारा संगठन सब ठीक कर देगा ।"

"तो तुम मेरे हालातों के बारे में जानते हो ?"

"सब कुछ ।"

"मुझसे चाहते क्या हो ?"

"ठिकाने पर चल रहे हैं । वहाँ तुमसे आजादी-ए-कश्मीर का बड़ा बात करेगा ।"

"तुम कुछ नहीं बताओगे ?"

"मैं ज्यादा जानता भी नहीं हूँ । परन्तु तुम दोस्तों में हो । ये याद रखो ।"

"वहाँ बड़ा खान के दो लोग थे ?" जब्बार बोला ।

"हाँ । वह उस मकान पर नजर रख रहे थे, जहाँ तुम थे । हमने उन्हें मार दिया ।"

"तुमने बड़ा खान को दुश्मन बना लिया अपना ।"

"हमारा संगठन बड़ा खान की परवाह नहीं करता । हमें सिर्फ अपने मकसद की चिंता है ।"

"कैसा मकसद ?"

"कश्मीर को आजाद कराना चाहता है हमारा संगठन । कश्मीर आजाद देश बन जाये । उस पर न तो हिन्दुस्तान की हुकूमत रहे, न पाकिस्तान की । तब हमारे मुसलमान भाई चैन से रह पायेंगे ।"

"हिन्दुस्तान कश्मीर को अपना कहता है ।"

"कश्मीर हिन्दुस्तान का ही है ।" कलाम ने कहा, "लेकिन हम कश्मीर को अलग करके, उसे आजाद देश बनाना चाहते हैं । फिर कश्मीर पर हुकूमत करना चाहते हैं । सिर्फ हमारे संगठन को ही असल में कश्मीर की चिंता है । बाकी संगठन तो दौलत बनाने में लगे हैं । नाम लेते हैं कश्मीर का और अपनी जेबें भरते रहते हैं ।"

"आजादी-ए-कश्मीर नाम का संगठन, कितना पुराना है ?"

कलाम चंद पल चुप रहकर बोला।

"बहुत पुराना है। परन्तु तुमने पहले ये नाम नहीं सुना ?"

"नहीं सुना।"

"वह ही तो कह रहा हूँ।" कलाम बोला, "ये बातें मुझसे तुम मत करो। मुझे नहीं पता कि संगठन तुम्हें क्या बताना चाहता है और क्या नहीं। मेरा चुप रहना ही ठीक है। जो बात करनी हो, ठिकाने पर पहुँचकर करना।"

जब्बार खामोश रहा। वह अपने हालातों के बारे में सोच रहा था।

उसे किसी संगठन की सुरक्षित पनाह चाहिए थी। बड़ा खान ने उसके सारे रास्ते बन्द कर दिए थे। आजादी-ए-कश्मीर नाम के इस संगठन से उसने मन ही मन आशा लगा ली कि ये लोग उसे पनाह दे सकते हैं। परन्तु अभी वह जानता नहीं था कि ये लोग उससे चाहते क्या हैं ? क्यों उसे अपने साथ ले जा रहे हैं और उसे दोस्त कह रहे हैं।

□□□

देवराज चौहान की निगाह स्क्रीन पर थी। उसने सिगरेट सुलगा रखी थी। राठी इस वक्त वहाँ नहीं था कि उसका मोबाइल बजने लगा।

"हैलो !" देवराज चौहान ने बात की।

"मुझे समझ में नहीं आता कि तुम्हें किस नाम से पुकारूँ ?" बड़ा खान की आवाज कानों में पड़ी।

"कोई भी नाम रख लो मेरा।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा।

"तुम अपनी हकीकत क्यों नहीं बता देते ?"

"जरूरत नहीं समझता।"

"इतना ही बता दो कि पुलिस वाले हो या किसी संगठन से वास्ता रखते हो ?"

"तुमने कैसे सोच लिया कि मैं किसी संगठन से वास्ता रखता हो सकता हूँ ?"

"जब्बार मलिक मेरे किसी ठिकाने पर था, वहाँ से उसे आजादी-ए-कश्मीर नाम के संगठन वाले ले गए हैं।"

"तो मैं क्या कर सकता हूँ।"

"आजादी-ए-कश्मीर से तुम्हारा वास्ता तो नहीं ?"

"मेरा किसी से कोई वास्ता नहीं।"

"तुम जम्मू में ही हो ?"

"हाँ !"

"जब्बार को जेल से निकालने के बाद तुम्हें जम्मू से चले जाना चाहिए था।"

"तुम्हें इसमें क्या परेशानी है ?"

"मैं तुम्हारे बारे में जानना चाहता हूँ।"

"जल्दी बताऊँगा। तुम्हारे पास पहुँच के बताऊँगा।" देवराज चौहान मुस्कुराया।

"मेरे पास तुम नहीं पहुँच सकते। पहुँचना होता तो तुम मुझ तक पहुँच चुके होते। परन्तु ऐसा लगता है कि जब्बार ने तुम्हें मेरे बारे में कुछ नहीं बताया। तुमने मुझसे झूठ ही कहा कि उसने बता दिया है।"

"सच बात कहूँ ?" देवराज चौहान के होंठ सिकुड़ गए।

"कहो !"

"जब्बार पूरी तरह तुम्हारा वफादार है। उसने मुझे कुछ नहीं बताया।"

बड़ा खान की आवाज फौरन नहीं आई।

"तो तुमने उसे जेल से बाहर क्यों निकाला ?" बड़ा खान की आवाज आई।

"कोई वजह नहीं थी। मैं उसे जेल से बाहर निकाल सकता था, तो निकाल दिया।"

"तुम्हारी ये बात मैं इसलिए नहीं मान सकता कि उसे जेल से निकालने के लिए 35 करोड़ तुम्हें दे रहा था परन्तु तुमने पैसा नहीं लिया और जब्बार को जेल से निकाल दिया। इसी बात का रहस्य मैं जानना चाहता हूँ।"

"जो बताना था, तुम्हें बता दिया। यकीन करो जब्बार ने मुझे कुछ नहीं बताया।"

बड़ा खान की आवाज कुछ ठहरकर आई।

"इंस्पेक्टर सूरजभान यादव और उसके परिवार वाले कहाँ हैं ?"

"दिल्ली में ।"

"मेरे आदमियों को वह नहीं मिल रहे ।"

"मैंने उन्हें छिपा रखा है । सूरजभान यादव का इलाज चल रहा है ।"

"तुम कोई शातिर इंसान हो । पुलिस वाले भी हो सकते हो । परन्तु मैं तुम्हें ढूँढ लूँगा । मेरे आदमी जम्मू में तुम्हें ढूँढ रहे हैं । तुम मेरे हाथों से बच नहीं सकते ।" बड़ा खान की कठोर आवाज कानों में पड़ी ।

"तुम्हें अपनी चिंता करनी चाहिए । तुम कहते हो कि जब्बार को कोई और संगठन ले गया है । अब जब्बार तुम्हारे बारे में जानता है तो वह जानकारी दूसरे संगठन वालों को दे सकता है ।"

"अब तक उसने मुँह नहीं खोला तो मेरे बारे में अब भी वह कुछ नहीं बताएगा ।"

"भूल में हो । पुलिस के सामने वह चुप रहा । किसी संगठन को तो तुम्हारे बारे में बता ही सकता है ।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा, "खासतौर से तब जबकि तुम उसे शहीद बनाने जा रहे थे ।"

"तुम्हें कैसे पता कि मैं उसे शहीद बनाने जा रहा था ?" बड़ा खान के स्वर में बुरी तरह हैरानी के भाव थे ।

"अपने काम की बातें मैं जान लेता हूँ ।"

"तुम्हारी और जब्बार की बात होती है । ये बात जब्बार ने ही तुम्हें बताई । तो मेरा ख्याल ठीक था कि जब्बार अब पुलिस के लिये काम कर रहा है । तुम... ।"

"मैं पुलिस वाला नहीं हूँ । जब्बार से मेरी बात नहीं होती । खबरें पाने के लिए मेरे अपने रास्ते हैं ।"

"तुम जो भी हो सच में खतरनाक हो और तुम्हारी किसी बात का मैं भरोसा नहीं कर सकता ।"

"तुमने जब्बार को गलत समझा है । तुम उसकी हत्या की सोचे बैठे हो । तभी उसे शहीद बना रहे... ।"

"मेरे आदमी तुम्हें ढूँढ लेंगे।" इसके साथ ही उधर से बड़ा खान ने फोन बन्द कर दिया था।

देवराज चौहान ने फोन कान से हटाया। चेहरे पर सोच के भाव नाच रहे थे।

□□□

ऊधमपुर इंडस्ट्रियल एरिया में वैन एक बन्द पड़ी फैक्ट्री में पहुँची, जिसकी दीवारें 12 फुट ऊँची थी और फैक्ट्री की हालत बता रही थी कि वहाँ लम्बे समय से काम नहीं हुआ है। हर तरफ धूल और मिट्टी थी। फैक्ट्री के गेट पर चौकीदार मौजूद था। उसी ने फाटक खोला था और वैन भीतर प्रवेश कर गई। उसके पीछे जगमोहन वाली कार भी भीतर आ गई। फाटक बन्द हो गया। आगे जाकर दोनों वाहन रुके तो जगमोहन कार में बैठे दोनों आदमियों से बोला।

"जब जब्बार भीतर चला जायेगा, तब मैं निकलूँगा। मैं चाहता हूँ जब्बार मुझे भीतर ही देखे।"

"ठीक है! हम बाहर निकलते हैं।"

वह दोनों आदमी बाहर निकल गए।

जब वैन वाले जब्बार को भीतर ले गए तो जगमोहन बाहर निकला और उस तरफ बढ़ गया, जहाँ जब्बार को ले जाया गया था। वहाँ सीढ़ियाँ थी, जिन्हें तय करके वह पहली मंजिल के बड़े हॉल में पहुँचा। सीमेंट के फर्श का बना वह हॉल साफ-सुथरा था। वहाँ कई जगह टेबल-कुर्सियाँ लगी थीं। टेबल इस तरह सजे हुए थे जैसे वहाँ दिन-रात कोई काम होता हो। कुछ लोग टेबलों पर बैठे काम भी कर रहे थे। ऊधमपुर पहाड़ी इलाका होने के कारण ठण्ड रहती थी।

हॉल में एक तरफ पच्चीस के करीब कुर्सियाँ लगी थीं कि मीटिंग वहाँ से हो सकती थी। ये जगह राठी की ही थी। आदमी उसके थे। इंतजाम उसका था। हथियार उसके थे। जब्बार को कुर्सियों के पास ले जाया गया।

"बैठ जाओ ।" कलाम ने कहा और एक आदमी से बोला, "जब्बार के लिए चाय लाओ ।"

"कहवा मंगा लो ।" जब्बार हॉल में नजरें दौड़ाते हुए कह उठा ।

"सुना । कहवा लाओ ।"

"ये तुम लोगों का ठिकाना है ?" जब्बार ने कलाम को देखा ।

"चालू ठिकाना है ये । मैंने पहले ही कहा है कि हमारे ठिकाने हर जगह हैं ।"

"तुम भी बैठो ।"

"मैं खड़ा रहूँगा । मियांजी यहाँ कभी भी पहुँच सकते हैं ।"

"मियांजी कौन ?"

"आजादी-ए-कश्मीर के संस्थापक हैं । वह किसी से नहीं मिलते । कामों में व्यस्त रहते हैं । परन्तु तुमसे मिलने यहाँ पहुँच रहे हैं । आने ही वाले होंगे ।" कलाम ने कहा ।

जब्बार की नजरें हर तरफ जा रही थीं ।

"यहाँ पर संगठन का क्या काम होता है ?"

"ये बात तुम्हें नहीं बताऊँगा । ज्यादा सवाल मत पूछो और चुप रहो ।"

जब्बार खामोश बैठा रहा ।

कुछ ही देर में जब्बार के लिए कहवा आ गया । वह कहवे के घूँट भरने लगा ।

आधा ही कहवा पिया होगा कि कलाम कह उठा ।

"मियांजी आ गए । खड़े हो जाओ जब्बार ।"

जब्बार फौरन कहवे का गिलास रखकर खड़ा हो गया था ।

वहाँ मौजूद हर कोई मियांजी की शान में उठकर खड़ा हो गया था । वह जगमोहन था जो कि अस्सी बरस के बुजुर्ग के रूप में दिखाई दे रहा था ।

हाथों में लाठी । आँखों पर नजर का चश्मा । सफेद कुर्ता-पायजामा, शेरवानी । चेहरे पर सफेद दाढ़ी-मूंछें । दाढ़ी छाती तक जा रही थी । लाठी टेकते हुए इस तरफ आते वह दूसरे हाथ से सबको बैठने का इशारा भी कर

रहा था। कलाम फौरन जगमोहन के पास पहुँचा और सलाम करके बोला-"जब्बार वहाँ है मियांजी ?"

"चलो, चलो। वहीं चलो।" जगमोहन धीरे-धीरे बढ़ता कह उठा।

जगमोहन कुर्सियों के पास जा पहुँचा। एक कुर्सी पर बैठा। चश्मे में से जब्बार को देखा।

जब्बार ने थोड़ा सा झुककर सलाम किया।

"बैठ जाओ।" जगमोहन ने बूढ़े की मध्यम आवाज में कहा।

जब्बार बैठ गया।

तभी छः गनमैन आये और जगमोहन के पास जा पहुँचे। उसके पीछे खड़े हो गए।

"तुम्हारा बहुत नाम सुना है जब्बार।" जगमोहन ने बूढ़े के मध्यम से स्वर में कहा।

"मुझे खुशी है कि आपने मेरे बारे में सुन रखा है। परन्तु मैंने आपके संगठन का नाम नहीं सुना।"

"मैंने संगठन का नाम फैलने नहीं दिया। हमें मशहूरी नहीं चाहिए थी, अपना काम चाहिए था। हम कश्मीर को आजाद देश बना देना चाहते हैं। उसी के लिए लड़ते-लड़ते बूढ़ा हो गया। मेरा पूरा परिवार इसी काम में लगा रहा। परन्तु पाकिस्तान ने तो कश्मीर का सत्यानाश कर दिया है। घुसपैठ करा-कराकर आतंकवादियों को कश्मीर भेज देता है। वह यहाँ के स्थानीय लोगों को भर्ती करके अपना संगठन खड़ा कर लेते हैं, फिर कश्मीर के नाम पर आतंक पैदा करके, पैसा इकट्ठा करते हैं। लोगों की जान ले लेते हैं।"

"हम लोगों को नहीं मारेंगे तो, हिन्दुस्तान की सरकार हमारी बात नहीं सुनेगी।"

"किसी की जान लेना गुनाह है। हमारा संगठन ये काम नहीं करता। कश्मीर की आजादी के लिए हम गंभीर हैं और इसे एक नया देश बनाकर ही रहेंगे। खैर, तुम अपनी कहो।"

"क्या ?" जब्बार के होंठों से निकला।

"तुम्हारे बारे में बहुत गलत-गलत अफवाहें फैल रही हैं कि तुम्हें पुलिस वाले ने जेल से फरार करवा दिया।"

"ये सच है।" जब्बार ने कहा।

"ये भी सुनने को मिल रहा है कि तुम पुलिस के आदमी बन गए हो।"

"ये झूठ है।" जब्बार के चेहरे पर गुस्सा दिखने लगा।

"मैं जानता हूँ कि जब्बार ऐसी गद्दारी नहीं कर सकता। ये अफवाह किसने फैलाई कि... ।"

"बड़ा खान ने।"

"बड़ा खान! ये तो निहायत ही गिरा हुआ इंसान है। आतंकी गुटों के लिए किराये पर काम करता है। खूब पैसा लेता है। बड़ा खान ने हमें कई बार बहुत नुकसान पहुँचाया। वह हमसे चिढ़ता है कि हम खून-खराबा क्यों नहीं करते। पैसा देकर उससे काम क्यों नहीं कराते। यही कारण है कि बड़ा खान ने कई बार हमारे काम खराब किये।"

जब्बार ने बेचैनी से पहलू बदला। जगमोहन सिर हिलाकर कह उठा-

"छोड़ो। हम तुम्हारी बात कर रहे थे। सुना है कि बड़ा खान ने आतंकी गुटों से कह दिया है कि तुम गद्दार हो।"

"हाँ! ऐसा किया उसने।"

"हमसे भी कहा, परन्तु हमने बड़ा खान की बात पर भरोसा नहीं किया। हमें मालूम है कि बड़ा खान ठीक आदमी नहीं है। वह जो भी बात करता है, अपने फायदे की करता है। लेकिन अभी भी तुम बड़ा खान के ठिकाने पर ही थे। मेरे आदमियों ने तुम्हें ढूँढ निकाला। एक खबर हमें और मिली सुनने को कि बड़ा खान के लिए तुम शहीद होने जा रहे हो।"

"मैं नहीं हो रहा शहीद।" जब्बार के दाँत भिंच गए।

"फिर ये बात किसने उड़ाई?"

"बड़ा खान ने। वह मुझे मार देना चाहता है। गद्दार समझता है मुझे। मुझे मारने का तरीका भी उसने ही सोचा कि खुद को बम से उड़ाकर मैं शहीद बन जाऊँ। आज सुबह ही उसने ये बात मुझसे कही।"

"बड़ा खान सच में कमीना है। तुमने कितनी सेवा की उसकी और अब वह तुम्हें मार देना चाहता है।"

जब्बार के दाँत भिंचे रहे।

"क्या करोगे अब तुम ? तुम्हें तो कोई संगठन लेने को भी तैयार नहीं। लेकिन हम तुम्हें लेने को तैयार हैं। हमें तुम पर पूरा यकीन है कि तुम कश्मीर की आजादी के लिए सच्चे दिल से लड़ रहे हो।"

"हाँ ! मैं कश्मीर को आजाद करा के रहूँगा।"

"हम कश्मीरी हैं। कश्मीर हमारा है। परन्तु ये लोग कौन हैं, जो यहाँ अपने-अपने संगठन चला रहे हैं।"

"ज्यादातर बाहरी लोग हैं। पाकिस्तान से आये हैं। वहाँ की सरकार भेजती है कि ये लोग कश्मीर में हिंसा फैलाते रहें और हिन्दुस्तान की सरकार परेशान होती रहे।"

"यानी कि इन्हें कश्मीर से कोई लेना-देना नहीं।"

"आप ठीक कह रहे हैं।"

जगमोहन ने सिर हिलाया और कुछ पल रुककर बोला।

"मैं इन संगठनों से तंग आ चुका हूँ और मैंने इरादा किया है कि कश्मीर की आजादी का काम रोककर पहले इन संगठनों को खत्म किया जाये। ये संगठन खत्म हो जायेंगे तो हम आराम से काम कर सकेंगे।"

"ये तो खतरनाक कदम होगा।"' जब्बार के होंठों से निकला।

"मेरे पास जांबाज हैं जो ये काम कर सकें।"

"दूसरे संगठन भी ताकत रखते हैं। वह कमजोर नहीं हैं कि हम उन्हें मिटा सकें।"

"बेशक वे कमजोर नहीं हैं। परन्तु हम उनसे ज्यादा ताकतवर हैं और उन्हें खत्म कर सकते हैं।"

जब्बार बेचैन सा जगमोहन को देखता रहा।

"खैर, पहले हम तुम्हारी बात कर लें। हमारे संगठन को जब्बार जैसा जांबाज चाहिए। तुम इस वक्त ऐसी बुरी स्थिति में फंसे पड़े हो कि कोई भी संगठन तुम्हें लेने को तैयार नहीं। बड़ा खान से तुम्हें बचाया जायेगा। बल्कि

बड़ा खान को खत्म भी कर दिया जायेगा। तुम हमारे लिए काम करोगे तो दूसरे संगठनों की नजरों में तुम्हारी छवि भी बेहतर होगी। पैसा भी तुम्हें दिया जायेगा।"

"मुझे एतराज नहीं, परन्तु...। आप लोग दूसरे संगठनों से टकराने का इरादा रखते हैं।" जब्बार कह उठा।

"इसमें एतराज क्यों तुम्हें?"

"उनमें कई बड़े खतरनाक हैं और हम शायद उनका मुकाबला न कर सकें।"

"ये तुमने कैसे सोच लिया?" बूढ़े के रूप में जगमोहन मुस्कुराया, "शायद तुम्हें हमारी ताकत का अंदाजा नहीं है।"

जब्बार के चेहरे पर सोच के भाव दिखते रहे।

"क्या तुम हमारे संगठन में आने को तैयार हो?"

"जरूर। मुझे तो किसी का सहारा चाहिए। बड़ा खान ने मुझे अकेला कर दिया है। हर जगह मुझे बदनाम कर...।"

"फिक्र मत करो। हम जानते हैं कि तुम आतंकवाद के प्रति वफादार हो।" बूढ़े के रूप में जगमोहन मुस्कुराकर उठ खड़ा हुआ, "तुम्हारी वफादारी पर हमें पहले भी शक नहीं था और अब भी शक नहीं है। बड़ा खान बेवकूफ है जो ये सोचता है कि तुम पुलिस से मिल गए हो। तुम्हारे कारनामे मुझे बहुत अच्छे लगते हैं जब्बार।"

"शुक्रिया!" जब्बार भी खड़ा हो गया।

"मैं तो अब बूढ़ा हो गया हूँ। भागदौड़ नहीं कर सकता। मेरा बेटा अब्दुल्ला ही अब संगठन के कामों को संभाल रहा है। तुम्हें उसके साथ ही मिलकर काम करना होगा। हमारी ताकत को कम नहीं आँकना। धीरे-धीरे तुम्हें मेरी बात का सच पता भी चल जायेगा। रुपये-पैसे की चिंता मत करना। जो कहोगे वही मिलेगा। अब्दुल्ला आता ही होगा। कलाम!"

"जी मियांजी?" पास खड़ा कलाम फौरन बोला।

"अब्दुल्ला कहाँ है?"

"वह पहुँचने ही वाला है। रास्ते में है।"

"अब्दुल्ला जब आये तो जब्बार से मिलवा देना। मैं चलूँगा अब। मेरी कार तैयार करो।"

"तैयार है मियांजी। जाकिर... !" कलाम ने पुकारा।

फौरन एक आदमी आगे आया।

"मियांजी को कार तक ले जाओ।"

जाकिर मियांजी उर्फ जगमोहन को लेकर चला गया।

कलाम ने मुस्कुराकर जब्बार से कहा।

"तुम बहुत किस्मत वाले हो।"

"क्यों ?" जब्बार वहाँ मौजूद हथियारबंद लोगों को देखता कह उठा।

"मियांजी किसी नए को संगठन में आसानी से शामिल नहीं करते। तुम्हें आसानी से ले लिया उन्होंने।"

"मैं नया नहीं हूँ।"

"आजादी-ए-कश्मीर के लिए तो नए ही हो। हमारे साथ जो एक बार जुड़ जाता है, फिर वह हमसे अलग नहीं होता। क्योंकि हमारा संगठन बहुत अच्छा है। यहाँ का हर आदमी पुराना और संगठन का वफादार है।"

"ये तो अच्छी बात है।"

"परन्तु ये अब तुम्हारे इम्तिहान का वक्त है।"

"कैसा इम्तिहान ?"

"तुम्हें खुद को साबित करके दिखाना होगा कि तुम संगठन के प्रति वफादार हो। इसके लिए तुम्हें बड़े-बड़े काम करके दिखाने होंगे। मियांजी ने जो भरोसा तुम पर किया है, उस भरोसे को सलामत रखना होगा।"

"मुझे अपनी काबिलीयत पर शक नहीं है।"

"हमें भी शक नहीं है। परन्तु बातों से काम नहीं चलेगा। करके दिखाना होगा तुम्हें।" कलाम बोला।

"मियांजी का बेटा अब्दुल्ला कैसा इंसान है ?"

"जांबाज। खतरनाक। अपने संगठन के लिए कुछ भी कर देने वाला। उसे कश्मीर से प्यार है।"

तभी एक आदमी दूर से ही कह उठा।

"जनाब अब्दुल्ला आ गए हैं।"

□□□

जगमोहन ने साधारण पैंट-कमीज पहन रखी थी। वह क्लीन शेव्ड था। कलाम ने उसे जब्बार से मिलवाया।

"ये जब्बार साहब हैं।"

जगमोहन जब्बार के गले मिला।

"कई बार तुम्हारा नाम सुना। आज तुमसे मिलना भी हो गया।" जगमोहन बोला।

"तुम तो किसी भी तरफ से कश्मीरी नहीं लगते।" जब्बार मुस्कुराकर बोला।

"उसी का तो मुझे भरपूर फायदा मिलता है।" जगमोहन ने कहा, "कश्मीर की आजादी के सिलसिले में मुझे अक्सर कश्मीर से बाहर रहना पड़ता है। मेरा कश्मीरी चेहरा तो कब का गायब हो चुका है। मुझे इस बात का भी बहुत फायदा मिलता है। कश्मीर में ये लोग मुझे बाहर का समझते हैं। मैं अपने संगठन के कामों को बहुत अच्छी तरह निभा रहा हूँ। कलाम, अब्बा कहाँ हैं?"

"वह कुछ देर पहले ही गए हैं।"

जगमोहन और जब्बार दो कुर्सियों पर आमने-सामने बैठ गए।

"कॉफी के लिए कहो।" जगमोहन बोला।

कलाम ने आवाज लगाकर कॉफी लाने को कहा।

"तुम आजकल बुरी स्थिति से गुजर रहे हो जब्बार।" जगमोहन बोला।

"हाँ, मेरा वक्त खराब चल रहा है।" जब्बार ने गहरी साँस ली।

"बड़ा खान का फोन अब्बा को आया था। परन्तु न तो अब्बा ने इस बात पर भरोसा किया, न मैंने। हम जानते हैं कि जब्बार गद्दार नहीं हो सकता।"

"मुझ पर भरोसा करने का शुक्रिया।" जब्बार ने उखड़े स्वर में कहा, "बड़ा खान ने मुझे बदनाम कर दिया है सब जगह।"

"चिंता मत करो। अब तुम हमारे साथ हो। सब ठीक हो जायेगा। ये भी सुना है कि तुम शहीद होने जा रहे हो।"

"ये भी बड़ा खान की बकवास है।"

"मैंने तुम्हारी तलाश में आदमी लगा दिए थे। उन्होंने तुम्हें ढूँढ निकाला। अब तुम सही हाथों में आ गए हो।"

"बड़ा खान जानता है कि मैं तुम लोगों के पास हूँ?"

"अभी वह कुछ नहीं जानता। हमें उसकी परवाह भी नहीं है। हमें सिर्फ अब अपने कामों से मतलब रखना है।" जगमोहन ने सिर हिलाकर कहा, "क्या मैं तुम पर भरोसा कर सकता हूँ?"

"पूरी तरह।" जब्बार ने दृढ़ स्वर में कहा।

"हमारे संगठन में कोई छोटा-बड़ा नहीं है। सब बराबर हैं और दिल लगाकर काम करते हैं। मैं चाहता हूँ कि तुम भी वैसा ही बन जाओ। तुम हम पर भरोसा करो और हम तुम पर।" जगमोहन ने गंभीर स्वर में कहा।

तभी कॉफी आ गई। दोनों ने एक-एक प्याला थाम लिया।

कलाम पास ही खड़ा था।

"मुझे क्या काम करना होगा?" जब्बार ने कॉफी का घूँट भरकर कहा।

"तुम कश्मीर को आजाद देश देखना चाहते हो?"

"हाँ!"

"हमारा भी ये ही इरादा है परन्तु ये बात हमें किसी भी कीमत पर भूलनी नहीं चाहिए कि कश्मीर, हिन्दुस्तान का हिस्सा है। हम किसी देश का एक टुकड़ा अलग करने के ख्वाब देखेंगे तो, सफर कठिन हो जायेगा। बात यहीं तक होती तो अब तक हमारे संगठन ने कोई रास्ता निकाल लेना था, परन्तु पाकिस्तान ने कश्मीर में गंदगी डाल दी है।"

"कैसे?"

"कभी वक्त था कि एक या दो संगठन होते थे। वे अपनी कहते और सरकार उनकी सुनती थी। बातचीत होती थी। परन्तु जब से पाकिस्तान ने कश्मीर में घुसपैठ कराकर आतंकवादियों को भेजना शुरू किया है। तब से ही परेशानी आ गई है और हम सही मुद्दे से भटक गए हैं। पाकिस्तान से

आने वाले लोगों ने अपने-अपने संगठन खड़े कर लिए हैं। हर रोज ही कहीं न कहीं खून-खराबा होता है। ऐसे में हिन्दुस्तान ने असल मुद्दे पर बातचीत बन्द करके कश्मीर में सेना लगा दी कि यहाँ के हालातों को संभाला जा सके। यानी कि जो असली मुद्दा था, वह धमाकों में ही गुम होकर रह गया है।"

जब्बार कॉफी के घूंट भरता, जगमोहन को देखता रहा।

"संगठनों की ज्यादा संख्या ने कश्मीर के हालात खराब कर दिए हैं और सच बात तो ये है कि हकीकत में कोई भी संगठन कश्मीर का भला नहीं चाहता। वह जानते ही नहीं कि मुद्दा क्या है। उन्हें सिर्फ खून-खराबा करना है, क्योंकि इसी बात के लिए पाकिस्तान से पैसा मिलता है उन्हें। अगर वे खून-खराबा बन्द कर देंगे तो उन्हें पैसा नहीं मिलेगा। तुम ही कहो, मैंने ठीक कहा या गलत ?"

"ठीक कहा।" जब्बार ने सिर हिला दिया।

"अब बड़ा खान को ही लो। उसने आतंकवाद की दुकान खोल रखी है। पैसा दो और बम विस्फोट करा लो। संगठन उसे पैसा देते हैं और अपने नाम पर विस्फोट करा लेते हैं। संगठन भी खुश और बड़ा खान भी खुश।" जगमोहन बोला, "इसलिए अब हम कश्मीर की आजादी के सारे काम रोककर इन खामख्वाह के संगठनों को खत्म कर देना चाहते हैं।"

"ये खतरनाक काम है।" जब्बार के होंठों से निकला, "उन्हें इस तरह खत्म नहीं किया जा सकता। वह ताकत रखते हैं।"

"ताकत तो हम भी रखते हैं।" जगमोहन ने सख्त स्वर में कहा।

"लेकिन ये करना सच में खतरनाक है।"

"परन्तु हमारा ये ही कहना है कि हम इन संगठनों को खत्म करेंगे। खत्म न कर सके तो कमजोर करेंगे। हम चाहते हैं कि एक वक्त ऐसा आये कि सबसे ऊपर हमारा ही संगठन हो और सरकार तब हमसे बात करे।

"इन संगठनों से भी खतरनाक है अपनी दुकान खोले बैठा बड़ा खान। कई संगठन उसी के भरोसे कश्मीर में, देश में, आतंकवाद फैला रहे हैं। खुद संगठनों में मक्खी मारने का दम नहीं और बड़ा खान को पैसे देकर, आतंक

अपने नाम पर फैला देते हैं। तीन महीने पहले दिल्ली में विस्फोट हुए, याद है ?"

"तब मैं जेल में था, परन्तु उन विस्फोटों का पता चल गया था।"

"वह विस्फोट एक ऐसे संगठन ने, बड़ा खान के दम पर कराये, जिनकी संख्या ही मात्र बीस-पच्चीस है और दुकान के साइज का एक ठिकाना है, जहाँ वे इकट्ठा होते हैं और बातें करते हैं। पैसे दिए और बड़ा खान से विस्फोट कराकर, ऊपर अपनी मुहर लगा दी। यानी कि बड़ा खान न हो तो कश्मीर की आधी मुसीबत हल हो जाये।"

जब्बार गंभीर निगाहों से जगमोहन को देख रहा था।

"हम सबसे पहले बड़ा खान से ही अपना काम शुरु करेंगे।" जगमोहन बोला।

"बड़ा खान से ?" जब्बार के होंठों से निकला।

"हाँ, पहले उसे और उसके संगठन को खत्म करेंगे।"

"वह बहुत खतरनाक है। मैं उसके साथ काम कर चुका हूँ। वह आसान नहीं है।"

"इसी बात का तो हमें फायदा मिलेगा कि तुम उसके साथ काम कर चुके हो।" जगमोहन ने कठोर स्वर में कहा, "तुम उसके आदमी रह चुके हो और उसके बारे में बहुत कुछ जानते हो। ये सब हमें फायदा देगा।"

जब्बार के होंठ भिंच गए।

"क्या बड़ा खान के लिए तुम्हारे दिल में नरमी है ?"

"ऐसा तो कुछ नहीं है अब।"

"मत भूलो कि बड़ा खान ने तुम्हें हर जगह गद्दार करार करवा दिया है। कोई भी संगठन तुम्हें अपने पास बैठाने को तैयार नहीं, जबकि वही संगठन हमेशा ये चाह रखते थे कि तुम उनके लिए काम करो।"

जब्बार का चेहरा सख्त हो गया।

"बड़ा खान ने तुम्हारे लिए भी मौत चुन ली। वह तुम्हें आत्मघाती बम बनाकर मार देना चाहता था। ये हम ही थे जो तुम्हें यहाँ ले आये। हमारे संगठन से जुड़ने का सबसे पहला मंत्र है वफादारी।"

"मैं वफादार हूँ तुम्हारे संगठन का ।"

"ये बात तुम्हें साबित करनी होगी । हमारे साथ कदम से कदम मिलाकर बड़ा खान के खिलाफ चलना होगा कि उसे खत्म कर सके । अगर तुम्हें बड़ा खान का खौफ है तो बेशक हमसे अलग हो सकते हो । अलग होने का वक्त अभी भी तुम्हारे पास है ।"

"ये इरादा नहीं है मेरा ।" जब्बार के चेहरे पर कठोरता थी ।

"तो आज से हम मिलकर बड़ा खान के खिलाफ काम करेंगे । उसे कश्मीर से उखाड़ फेंकेंगे ।" जगमोहन तेज स्वर में बोला ।

"अल्लाह जो करेगा, ठीक ही करेगा ।" कलाम कह उठा ।

"तैयार हो तुम जब्बार मलिक ?" जगमोहन ने पूछा ।

"हाँ !"

"ये खुशी की बात है कि अब तुम हमारे संगठन में आ गए हो ।" जगमोहन गर्व भरे अंदाज में मुस्कुराया ।

जब्बार भी मुस्कुरा पड़ा ।

"तुम बड़ा खान के बारे में सब कुछ मुझे बताओगे । उसके बाद हम ये फैसला करेंगे कि हम कैसे काम करें । कलाम !"

"जी !"

"हमारे लिए लंच का इंतजाम करो । मैं और जब्बार एक साथ दोपहर का खाना खायेंगे ।"

"ये तो बहुत खुशी की बात है ।" कलाम ने कहने के बाद अपने आदमियों से लंच का इंतजाम करने को कहा ।

"लंच लेने तक तुम बड़ा खान के बारे में वह सारी जानकारियाँ तैयार कर लो, जो मुझे बतानी है । मुझे पता है कि तुम उसके काफी खास थे ।"

"हाँ !"

"फिर तो बड़ा खान को खत्म करना और भी आसान होगा । तुम्हारा क्या ख्याल है ।"

"ये काम इतना आसान नहीं, परन्तु नामुमकिन भी नहीं कहा जा सकता ।" जब्बार ने सोच भरे स्वर में कहा ।

"बड़ा खान को जानते हो ?"

"नहीं ! परन्तु मैं इतना जानता हूँ जो कि बड़ा खान को जान लेने के ही बराबर है।" जब्बार गंभीर स्वर में बोला।

"इस बारे में लंच के बाद बात करेंगे।" जगमोहन ने सिर हिलाकर कहा।

□□□

लंच उन दोनों ने अलग कमरे में किया। कलाम उस दौरान पास ही मौजूद रहा और दो आदमी खाने के दौरान उनकी जरूरतें पूरी करते रहे। इस बीच उनमें खास बात नहीं हुई। खाना समाप्त हो गया। बर्तन उठा लिये गए। कलाम इस दौरान कमरे में ही रहा। जगमोहन बोला।

"अब कहो जब्बार। बड़ा खान के बारे में मुझे बताओ।"

"बड़ा खान की उम्र 50-52 के करीब है।" "जब्बार गंभीर स्वर में कह उठा।

"तुमने देखा है उसे ?"

"शायद, परन्तु यकीन के साथ कुछ नहीं कह सकता।"

"वह कैसे ?"

"एक दिन मैं सात-आठ लोगों से मिला था। सब लगभग इसी उम्र के थे। बाद में मुझे बड़ा खान ने फोन पर बताया कि वह उन्हीं लोगों में से कोई एक था। हमारी बात फोन पर ही होती थी।" जब्बार ने बताया।

"फिर तो हम आसानी से बड़ा खान को तलाश कर सकते हैं उन सात-आठ आदमियों में से।"

"ये मतलब नहीं। जैसा कि मैंने पहले भी कहा है कि किसी काम के सिलसिले में मैं कहीं पर उन लोगों से मिला था। एक ही बार मिला उनसे। मुझे नहीं मालूम था कि वह कहाँ से आये और कहाँ चले गए।"

"हिन्दुस्तानी है बड़ा खान ?"

"पाकिस्तान से आया है। वह यहाँ आतंक पैदा करने ही आया था। कश्मीर में वह आतंक फैलाने का ठेकेदार बन गया और संगठनों से पैसा ले-लेकर हिन्दुस्तान में आतंक फैलाने लगा।" जब्बार ने बताया, "तीन साल

की जब मैं पाकिस्तान में ट्रेनिंग ले रहा था तो वहाँ भी मैंने बड़ा खान का नाम सुना था कि वह बहुत शातिर इंसान है वहाँ का ।"

"हूं ! तुमने अगर बड़ा खान तक पहुँचना हो तो कैसे पहुँचोगे ?" जगमोहन ने पूछा ।

"मैंने ऐसा कभी सोचा नहीं ।"

"सोचो कि अगर तुम ऐसा करना चाहो तो कैसे करोगे ?"

जब्बार खामोश रहा । सोच में डूबा लगा ।

"उसका कोई खास ठिकाना ?"

"मैं एक बार वहाँ गया था जो कि उसका खास ठिकाना माना जाता है । परन्तु वहाँ मुझे रात को काले शीशों वाली कार में ले जाया गया और मेरे आसपास आदमी बैठे थे । वह रात कोहरे की रात थी और मैं रास्ता नहीं देख पाया । सफर लम्बा था ।"

"बड़ा खान तुम पर भरोसा नहीं करता था ?"

"करता था ।"

"तो फिर तुम्हें उसने अपने ठिकाने के बारे में क्यों नहीं बताया ।"

"कुछ चीजें वह सबसे छिपाकर रखता था । एक बार उसके ठिकाने की खबर बाहर चली गई थी । जो कि उसके उन दस आदमियों में से किसी एक ने खबर बाहर लीक की थी जो उसके करीब ही रहते थे तब बड़ा खान ने उन दसों को ही शूट कर दिया था ।"

"तुम बड़ा खान के किन ठिकानों के बारे में जानते हो ?" जगमोहन ने पूछा ।

"मैं उसके कई ठिकानों से वाकिफ हूँ । जैसे कि हथियार रखने का ठिकाना । वह ठिकाना जहाँ उसके आदमी मौजूद रहते हैं या फिर वह ठिकाना जहाँ आत्मघाती दस्ते के लोग रहते... ।"

"आत्मघाती दस्ते के लोग ?"

"हाँ ! उन्हें वह तीन-चार लाख में पाकिस्तान से खरीद कर लाया जाता है । सीमा पार करया जाता है और जब भी उसे कोई संगठन आत्मघाती विस्फोट का ऑर्डर देता है तो उनमें से किसी का इस्तेमाल करता है । ये

वह लोग हैं जो पाकिस्तान में बहुत गरीब हैं और खाने को रोटी नसीब नहीं होती। दो-चार लाख के लालच में वह अपने परिवार के किसी सदस्य को बेच देते हैं। कई बार तो ये सौदा महज पच्चीस हजार में हो जाता है। बड़ा खान के लोग पाकिस्तान में भी हैं और ऐसे लोगों की तलाश में लगे रहते हैं जो कि अपने परिवार के किसी सदस्य को बेचना चाहते हैं। ऐसे लोग जब चार-पाँच हो जाते हैं तो वहाँ के लोग सीमा पार कराकर ले आते हैं। इधर बड़ा खान आत्मघाती हमला कराने के लिए संगठनों से पचास लाख की कीमत लेता है।"

जगमोहन ने सिर हिलाया। नजरें जब्बार पर थीं।

"बड़ा खान हर काम बहुत पक्के तरीके से करता है। प्लानिंग बनाकर करता है। दो लोग उसके बेहद खास हैं, जो कि पाकिस्तान से ही उसके साथ आये हैं। एक का नाम रशीद है, दूसरा मस्तान है। बड़ा खान के कामों को ये दोनों ही सँभालते हैं।"

"क्या इन दोनों तक पहुँचा जा सकता है?"

"कोशिश की जाये तो पहुँचा जा सकता है।" जब्बार ने सिर हिलाया, "मैं बड़ा खान के आठ-दस ठिकाने जानता हूँ और मस्तान, रशीद के चक्कर इन ठिकानों पर मौजूद लोगों से बात करने के लिए लगते ही रहते हैं।"

"इन दोनों के मरने से बड़ा खान को नुकसान होगा?"

"हाँ! उसे इन दोनों पर भरोसा है।"

"तुम बड़ा खान की आठ-दस जगह जानते हो।"

जब्बार ने सहमति से सिर हिलाया।

"रशीद और मस्तान पर हाथ डालने के लिए अभी उन जगहों को सलामत रखना होगा।"

"जैसा तुम ठीक समझो।"

"रशीद और मस्तान कहाँ रहते हैं, ये तुम नहीं जानते?"

"नहीं! बड़ा खान मेरे से फोन पर बात करके ही मुझे बता देता था कि कहाँ पर, क्या काम करना है। जरूरत के मुताबिक हथियार, आदमी और पैसा पहुँच जाते थे। रशीद और मस्तान से मेरा कभी वास्ता नहीं पड़ा।"

"रशीद और मस्तान जानते हैं कि बड़ा खान कौन है और कहाँ रहता है ?"

"कह नहीं सकता । ख्याल है कि जानते होंगे । क्योंकि वह भी पाकिस्तान के हैं ।"

"संगठन, बड़ा खान से कैसे सम्बन्ध बनाते हैं ?"

"तुम्हें नहीं मालूम ?" जब्बार ने जगमोहन को देखा ।

"मालूम है !" जगमोहन मुस्कुराया, "मेरा अपना संगठन है । तुमसे इसलिए पूछा कि शायद तुम कोई नई बात बताओ ।"

"जिस संगठन ने भी बड़ा खान से आतंकवादी कार्यवाही करानी होती है, वह रशीद या मस्तान से फोन पर बात करता है । वे इस खबर को बड़ा खान तक पहुँचा देते हैं और बड़ा खान बात कर लेता है संगठन से ।"

"यानी कि रशीद और मस्तान, बड़ा खान के लिए जरूरी लोग हैं ।"

"हाँ ! मैंने पहले ही कहा है कि सारा काम इन दोनों ने संभाल रखा है ।"

"काम की कीमत भी ये दोनों ही लेते हैं ?"

"ये बात तुम्हें पता होनी चाहिए ।"

"पता है, लेकिन हमारे संगठन ने बड़ा खान से कोई काम नहीं लिया । तुमसे पूछकर बात पक्की कर रहा हूँ ।"

"बड़ा खान सामने नहीं आता । ये दोनों ही सब कुछ करते हैं ।"

"बड़ा खान की नजरों में तुम्हारी क्या कीमत थी ?"

"बहुत कीमत थी । मुझसे बिगाड़कर वह पछता रहा होगा । मैं उन बड़े कामों को पूरा करता था, जो कि कोई दूसरा नहीं कर पाता था । वह मेरे हवाले काम करके निश्चिन्त हो जाता था और उसे पता होता था कि काम ठीक से पूरा हो जायेगा । उसे इस बात का बेसब्री से इंतजार था कि मैं जेल से कब बाहर आता हूँ । करने वाले कई काम मेरे जेल में चले जाने की वजह से अधूरे पड़े थे । परन्तु मेरे जेल से बाहर आते ही उसे इस बात का शक हो गया कि मैं पुलिस से मिल गया हूँ । वह मुझे खत्म कर देना चाहता था कि मैं उसके बारे में कुछ भी किसी को न बता सकूँ । वह मुझे इज्जत की मौत देना चाहता था, तभी उसने मेरे को शहीद बनाने का विचार किया । वरना वह सीधे-सीधे मुझे आसानी से मार सकता था ।"

"बड़ा खान को यकीन था कि तुम गद्दार हो या... ।"

"उसे इस बात का शक रहा । यकीन होता तो वह मुझे कब का मार देता ।"

"इंस्पेक्टर सूरजभान यादव कौन है ?" जगमोहन ने पूछा ।

"मैं उसे पुलिस वाले के तौर पर जानता था जो दिल्ली से आया है मेरे लिए । बाद में पता चला कि वह पुलिस वाला नहीं है ।"

"सुना तो यही है कि वह पुलिस वाला नहीं है । उसने तुम्हें बाहर क्यों निकाला ?"

"ये उसकी मर्जी ।" जब्बार ने गंभीर स्वर में कहा, "लेकिन वह जो भी है शातिर इंसान है । उसने ये सब इसलिए किया कि बड़ा खान मुझे शक भरी नजरों से देखे और ऐसा ही हो गया ।"

"वह है कौन ?"

"मैं नहीं जानता । मैं उसकी चाल में फँसकर बदनाम हो गया ।"

"रशीद और मस्तान के हुलिये क्या हैं ?"

"दोनों 40-45 की उम्र के हैं । मस्तान सामान्य कद-काठी का है । और रशीद थोड़ा मोटा । दोनों खतरनाक हैं । काम की बातें करते हैं । फालतू नहीं बोलते । रौब से रहते हैं । रौब से काम लेते हैं । अक्सर दोनों साथ ही आते-जाते हैं । कम ही ऐसा होता है कि कोई अकेला दिखे ।"

"पक्की जोड़ी है !"

"ऐसा ही समझ लो ।"

जगमोहन के चेहरे पर सोच के भाव नाच रहे थे । जब्बार गंभीर था ।

"मैं बड़ा खान के बारे में सब कुछ जानने को उत्सुक हूँ ।" जगमोहन कह उठा ।

"उसके बारे में तो रशीद या मस्तान ही सब कुछ बता सकते हैं ।"

"कभी कुछ सुना हो बड़ा खान के बारे में ?"

"वह श्रीनगर रहता है । यही सुना है ।"

"और रशीद व मस्तान ?"

"ये भी कश्मीर में ही हैं । जम्मू में तीन-चार ठिकाने हैं बड़ा खान के ।"

"तुम्हारा मतलब कि हमें कश्मीर जाना होगा।"

"हाँ! क्या वहाँ पर तुम्हारे लोग हैं?"

"बहुत!" जगमोहन ने शांत स्वर में कहा, "हमारे लोग हर जगह हैं। तुम जम्मू के उन ठिकानों के बारे में बताओ जो बड़ा खान के हैं।"

जब्बार ने तीन-चार जगहों के बारे में बताया। जगमोहन ने पास खड़े कलाम से कहा-

"तुमने इन जगहों के बारे में सुना है?"

"जी जनाब!"

"अपने आदमी इन चारों ठिकानों पर लगा दो जब जरूरत पड़ेगी हम ठिकानों को तबाह कर देंगे।"

कलाम ने सिर हिला दिया।

"छः महीने पहले पुलिस ने मुझे पकड़ा था। तब मैं कश्मीर से ही जम्मू काम के लिए आया था।" जब्बार बोला।

"कलाम!" जगमोहन बोला, "हमें कश्मीर जाना होगा। बड़ा खान की जड़ें वहीं पर हैं।"

"जब भी आप जाना चाहें?"

"शाम को कश्मीर के लिए चलेंगे।" जगमोहन उठता हुआ बोला, "तुम शाम तक आराम कर लो जब्बार।"

"ठीक है! अगर बड़ा खान को पता चल गया कि हम उस तक पहुँचने के चक्कर में हैं तो वह और भी खतरनाक होकर हम पर हमला करेगा।"

"हम पर यकीन रखो जब्बार। हमारे यहाँ बातें बाहर नहीं निकलती।" जगमोहन बोला।

"कमजोरी हर संगठन में होती है।"

"हमारे संगठन में ऐसा कुछ नहीं है। धीरे-धीरे तुम्हें ये बात समझ में आ जायेगी।"

जब्बार को उसी कमरे में छोड़कर जगमोहन और कलाम बाहर निकले।

"कश्मीर में राठी का कोई ठिकाना नहीं है क्या?" जगमोहन ने पूछा।

"दो-तीन जगहें हैं। आदमी भी इकट्ठे हो जायेंगे।" कलाम बोला।

"उन आदमियों को ये पता न चले कि हम किस फेर में हैं। जो लोग यहाँ हमारे साथ हैं, वह ही वहाँ साथ रहेंगे।"

"ऐसा ही होगा।"

"राठी को बता दो कि हमारा क्या प्रोग्राम है और कश्मीर में जिस जगह पर हमें जाना है। वहाँ पंद्रह-बीस आदमी पहले से ही हों।"

"राठी साहब से कह देता हूँ।"

"हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं रशीद और मस्तान। वह हमें बड़ा खान के बारे में बता सकते हैं।"

"मुझे भी ऐसा ही लगता है कि वह जानते होंगे बड़ा खान को।"

"ये हमारे हाथ में बढ़िया मौका है बड़ा खान तक पहुँचने का। मैं ये मौका हाथ से नहीं जाने देना चाहता। जम्मू में बड़ा खान के चारों ठिकानों पर गुप्त तौर पर आदमी लगा दो कि वह वहाँ की सारी खबर हम तक पहुँचाते रहें।"

"जी! लेकिन बड़ा खान भी तो अपने ठिकानों का दौरा करता होगा।"

"जरूर! ये मैं पहले ही सोच चुका हूँ। परन्तु बड़ा खान को चेहरे से कोई जानता नहीं। वह किसी काम के बहाने से आता होगा और नजर मारकर वापस चला जाता होगा। वह हर तरफ पैनी नजर रखने वाला इंसान है।"

"ये बात हमारे लिए खतरनाक भी हो सकती है।"

"कैसे?"

"हम बड़ा खान को पहचानते नहीं और बड़ा खान कभी भी हमारे बीच आकर खड़ा हो सकता है।"

"इतना खतरा तो हमें उठाना ही होगा।" जगमोहन ने सोच भरे स्वर में कहा।

"जब्बार पर आपको पूरा भरोसा है कि वह सब सच बता रहा है।"

"भरोसा है और इसके अलावा हम कुछ भी नहीं कर सकते। ये तो आने वाला वक्त बताएगा कि वह हमें कितना सच बता रहा है।"

"उसके पास मोबाइल है। अगर वह हमारे खिलाफ कोई चाल चलना चाहे तो आसानी से चल सकता है। बड़ा खान से संपर्क बना सकता है।" कलाम बोला।

"हम उससे मोबाइल ले भी नहीं सकते। ऐसा किया तो वह उखड़ जायेगा। क्या पता वह सच में हमारा साथ दे रहा हो।"

कलाम वहाँ से चला गया। जगमोहन ने मोबाइल निकाला और देवराज चौहान से बात की।

देवराज चौहान को सब कुछ बताकर कहा कि वह जब्बार के साथ श्रीनगर जा रहा है।

तो देवराज चौहान ने कहा कि वह उन्हें श्रीनगर में ही मिलेगा।

□□□

उसी दिन श्रीनगर में।

दोपहर के तीन बज रहे थे। सर्दी थी, परन्तु धूप खिली हुई थी जो कि हल्की थी।

सड़क किनारे से ही ऊँची दीवार के साथ सीढ़ियाँ ऊपर जा रही थी। वाहन से लोग नीचे भी आ रहे थे और ऊपर भी जा रहे थे। ऊपर जहाँ सीढ़ियाँ समाप्त होती थी, वहाँ सामने का नजारा स्पष्ट दिखाई दे रहा था। वह गरीबों की कॉलोनी थी और अधिकतर वहाँ पक्की जैसी झोंपड़ियाँ बनी दिख रही थीं। जैसे बनाने वाले को जहाँ भी जगह ठीक लगी, वहीं झोंपड़ी बना ली। यही वजह थी कि झोंपड़ियाँ इधर-उधर बिखरी लग रही थी। उन्हीं में से एक झोंपड़ी थी जो कि कुछ हटकर थी, उसके भीतर का नजारा ही और था।

एक आदमी के हाथ बांधकर उसे झोंपड़ी में बैठा रखा था। उसकी उम्र चालीस के करीब थी। चेहरे पर दाढ़ी थी। उसने गर्म कमीज-पायजामे के ऊपर गर्म जैकिट डाल रखी थी। वह घबराया सा लग रहा था। उसके साथ झोंपड़ी में दो लोग और थे।। जिनमें से एक रिवॉल्वर थामे कुर्सी पर बैठा

था। दूसरा चारपाई पर टाँगे लटकाये बैठा था। दोनों ही खतरनाक लग रहे थे।

"मुझे जाने दो।" बंधा हुआ कह उठा, "मैं तुम लोगों को पैसा दूँगा।"

"तू पैसा देगा हमें ?"

"हाँ ! पाँच-पाँच लाख तुम लोगों को दूँगा। अभी चलो मेरे साथ।" वह जल्दी से बोला।

रिवॉल्वर वाले ने मुस्कुराकर अपने साथी से कहा।

"सुना तुमने। ये हम दोनों को पाँच-पाँच लाख देगा।"

"गफ्फार।" चारपाई पर बैठा व्यक्ति व्यंग्य से कह उठा , "अपनी जान की कीमत तुमने बहुत कम लगाई है।"

"मैं... मैं तुम दोनों को दस-दस लाख दूँगा। मुझे यहाँ से निकल जाने दो।"

"ये भी कम है।"

गफ्फार नाम का बंधा व्यक्ति और भी परेशान हो उठा।

"आखिर तुम लोग कितनी रकम चाहते हो ?" वह बोला।

"पैसा है तुम्हारे पास ?"

"बहुत !"

"तो बड़ा खान को पैसा क्यों नहीं दिया।"

"तुम इन बातों में क्यों पड़ते हो। अपनी जेब भरने के बारे में सोचो।" गफ्फार बेचैनी से बोला।

"तू हमें गद्दारी सिखा रहा है।"

"मैं तुम दोनों को तुम्हारे फायदे की बात बता रहा हूँ। ठीक है मैं 15-15 लाख दोनों को दूँगा।"

रशीद और मस्तान कभी भी यहाँ पहुँच सकते हैं।" रिवॉल्वर वाला बोला।

"तभी तो कह रहा हूँ कि जल्दी से मुझे खोल दो और मेरे साथ चलकर पैसा ले लो।"

“बहुत प्यारी है तुझे अपनी जान ।” चारपाई पर बैठा आदमी कड़वे स्वर में कह उठा ।

“जान किसे प्यारी नहीं होती । इन बातों को छोड़ो और मुझे खोल दो । मैं... ।”

“जान से इतना प्यार था तो बड़ा खान का पैसा क्यों दबा लिया । तूने क्या सोचा कि बड़ा खान तुझे छोड़ देगा या फिर तू कभी बड़ा खान की पकड़ में नहीं आएगा । तूने भी श्रीनगर में रहना है । हम भी यहीं के हैं । फिर तूने कैसे सोचा कि पैसा दबा लेगा बड़ा खान का । तब तुझे मौत का डर नहीं लगा जब पैसे दबाने की सोची ।”

“अब इन बातों का वक्त नहीं रहा । मुझे खोलो और... ।”

“हम गद्दार नहीं हैं । वफादार हैं बड़ा खान के ।”

“तुम भी कश्मीरी । मैं भी कश्मीरी । हम लोग भाई हैं । बड़ा खान तो पाकिस्तानी है वह... ।”

“हम अपने काम के प्रति ईमानदार हैं गफ्फार ।” चारपाई पर बैठे व्यक्ति ने कड़वे-तीखे स्वर में कहा, “हमें गद्दारी सिखाने की चेष्टा मत कर । तूने जो किया है, उसकी सजा तेरे को जरूर मिलेगी ।”

गफ्फार का चेहरा सफेद पड़ गया ।

तभी बाहर कदमों की आहटें गूंजी ।

“मस्तान और रशीद आ गए शायद ।”

कुर्सी और चारपाई छोड़कर वे दोनों उठ बैठे ।

तभी झोपड़ी का पर्दा उठाकर तीन लोगों ने प्रवेश किया । उनमें से दो मस्तान और रशीद थे ।

मस्तान चोंचदार नाक वाला पतला, फुर्तीला इंसान था । रशीद थोड़ा सा मोटा था परन्तु चेहरे से ही वह खतरनाक दिखता था । उसकी नाक मोटी थी और सिर पर गर्म टोपी रखी हुई थी जबकि मस्तान ने साफा बांध रखा था ।

उन्हें देखकर गफ्फार की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। परन्तु तीसरे आदमी को देखकर उसके चेहरे पर राहत के भाव आ गए। वह उसका भाई मोती खान था।

"मोती !" गफ्फार बोला, "मुझे बचा लो। ये सब नहीं होना चाहिए।"

मोती खान ने गंभीर नजरों से रशीद और मस्तान को देखा।

"कहाँ से पकड़ा इसे ?" रशीद की खतरनाक निगाह गफ्फार के चेहरे पर टिक गई।

"आजाद स्वीट्स के यहाँ पूड़ी आलू खा रहा था कि हम वहाँ पहुँच गए। हमें देखकर भागने लगा। पर हमने पकड़ लिया।"

"मुझे छोड़ दो। मैं तुम्हारे सारे पैसे दे दूँगा।" गफ्फार कह उठा।

मस्तान ने जेब से रिवॉल्वर निकाली और दूसरी जेब से साइलेंसर निकालकर नाल पर चढ़ाने लगा।

"मुझे मत मारो।" गफ्फार काँप उठा।

"इसे माफ कर दो।" मोती खान बेचैन स्वर में कह उठा, "ये तुम्हारा पैसा दे देगा।"

"हाँ-हाँ मोती ठीक कहता है। मैं सारा पैसा देने को तैयार हूँ।"

रशीद कुर्सी पर बैठता कह उठा- "तू हमारे धंधे में दलाल का काम करता है गफ्फार।"

"ह... हाँ !"

"दलाल अपनी जुबान का पक्का होता है। दलाल की जुबान पर ही दोनों पार्टियों के बीच बड़े-बड़े सौदे तय हो जाते हैं। तूने दो महीने पहले हमें कहा कि बरकत की तरफ से पहलगाम में, विदेशी लोगों पर हमला करना है। उस हमले में कम से कम चार विदेशी जरूर मरने चाहिए और इस काम के साठ लाख रुपये, सप्ताह बाद देगा। ये ही बात थी न ?"

"ह... हाँ , मैं... ।"

"हमने वैसा ही काम किया जैसा कि बरकत चाहता था, जैसा कि तूने हमें कहा। किया कि नहीं ?"

"किया।" गफ्फार ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी।

"अब तेरे को चाहिए था कि तू सप्ताह बाद हमें साठ लाख दे देता। आठवें दिन फोन करने पर तूने कहा कि अभी बरकत कहता है पाँच दिन और लगेंगे। इसी तरह तूने महीना निकाल दिया। आखिरकार हमने बरकत को फोन किया तो उसने बताया कि उसने तो हाथों हाथ गफ्फार को साठ लाख दे दिए थे। हमें समझते देर न लगी कि तेरे मन में बेईमानी आ गई है। तू हमारा साठ लाख हड़प लेना चाहता है। इधर बरकत ने तुझे फोन करके साठ लाख के लिए पूछा कि तूने वह पैसा बड़ा खान के हवाले क्यों नहीं किया तो तू समझ गया कि बात खुल गई है। उसके बाद हमारे आदमियों ने तुझे ढूँढा तो तू कहीं छिप गया। और महीने बाद अब तू हमारी पकड़ में आया।"

"मुझसे भूल हो गई।" गफ्फार डरे स्वर में कह उठा, "सारा पैसा मैंने संभाल के रखा है, मैं तुम्हें दे दूँगा।"

"दलाल इस तरह की गद्दारी नहीं करते गफ्फार।" रशीद के दाँत भिंचे हुए थे।

"मुझे माफ कर दो। मोती मुझे बचा ले। मैं...।"

"मोती !" रशीद कठोर स्वर में बोला, "जानता है कि तुझे हमने क्यों बुलाकर साथ लिया ?"

"नहीं जानता।"

"ताकि तू अपने भाई की लाश को यहाँ से ले जा सके।"

उसी पल मस्तान ने रिवॉल्वर वाला हाथ सीधा किया और ट्रेगर दबा दिया।

गोली मध्यम सी आवाज के साथ गफ्फार के सिर पर जा लगी। मोती खान ने आँखें बन्द कर लीं।

गफ्फार तड़पा और धीरे-धीरे शांत पड़ता चला गया। मोती खान ने आँखें खोली। उसके चेहरे पर गफ्फार की मौत का दुःख नजर आ रहा था।

"साठ लाख तुम्हें मिल जाएँ तो वह हमारे हवाले कर देना मोती।" रशीद कहने के साथ ही उठ खड़ा हुआ।

"हाँ !" रुपया मिला तो जरूर दूँगा ।" मोती खान ने रशीद को देखा, "तुम इसे चेतावनी देकर छोड़ सकते थे ।"

मस्तान ने नाल पर लगा साइलेंसर घुमा-घुमाकर उतारना शुरू कर दिया था ।

"दलालों की नियत बेईमान नहीं होनी चाहिए । वरना हमारा धंधा भी बेईमान हो जायेगा । इसे पैसे की जरूरत थी तो हमसे कहता, शायद हम ही इसे दे देते । परन्तु दलाल को हेराफेरी नहीं करनी चाहिए ।"

मोती खान ने फिर कुछ नहीं कहा ।

"चलो !" रशीद बोला और झोंपड़ी से बाहर निकल गया ।

मस्तान ने रिवॉल्वर और साइलेंसर जेब में रखे और बाहर आ गया । वे दोनों आदमी भी बाहर निकले और रशीद-मस्तान से विदा लेकर चले गए ।

रशीद-मस्तान सीढ़ियों वाले रास्ते पर पहुँचे और सीढ़ियाँ उतरकर सड़क पर पहुँचे जहाँ एक कार खड़ी थी । स्टेयरिंग पर एक आदमी बैठा था । उन्हें आता देखकर उसने कार स्टार्ट कर दी ।

मस्तान-रशीद भीतर बैठे तो कार आगे बढ़ गई ।

"सर्किट हॉउस चलो ।" रशीद ने कहा । ड्राइवर ने सिर हिला दिया ।

इसी पल मस्तान का फोन बजा ।

"हैलो !" मस्तान ने मोबाइल निकालकर बात की ।

"मस्तान मैं गाजी बोल रहा हूँ ।"

"तेरे ही काम पे जा रहे हैं ।" मस्तान कह उठा ।

"चार बज रहे हैं । छः बजे जलसा है । काम वक्त पर हो जायेगा कि नहीं ?"

"तूने चालीस लाख दिए काम के ?"

"हाँ ! कल ही दे दिए थे । तुझे ही तो दिए थे ।"

"फिर काम वक्त पर क्यों नहीं होगा । !" मस्तान मुस्कुरा पड़ा ।

"ओह ! मैंने सोचा कि एक बार तेरे को याद दिला दूँ कि... ।"

"काम की कीमत हमें मिल जाये तो फिर हमें याद दिलाने की जरूरत नहीं होती ।"

“समझ गया। समझ गया।”

मस्तान ने फोन बन्द कर दिया।

कार दौड़ी जा रही थी। रशीद कार से बाहर देख रहा था।

“मोती खान हमें साठ लाख दे देगा ?” मस्तान ने पूछा।

“गफ्फार का हाल देख लिया है उसने। वह जरूर देगा। गफ्फार ने कहा था कि पैसा उसने रखा हुआ है। मोती उस पैसे को ढूँढ लेगा।”

“गफ्फार की मौत से दूसरे दलाल सबक लेंगे कि उन्हें बेईमानी नहीं करनी है।” मस्तान बोला।

“कभी-कभी कोई बेईमानी कर जाता है। पैसा चीज ही ऐसी है।” रशीद मुस्कुरा पड़ा।

“लेकिन हमारे साथ कोई बेईमानी न करे। हम ये ही चाहते हैं। अपना दबदबा हमें बनाये रखना है।”

“हाँआ जब तक हमारा दबदबा कायम है, तभी तक हम हैं, हमारी हुकूमत है। हम जब भी यहाँ धमाका करते हैं, उसके बाद जितने लोग मरते हैं पाकिस्तान वाले उतने ही लाख रुपया हमारे बैंक खाते में डाल देते हैं। यानी कि एक काम की कीमत हमें दो तरफ से मिलती है। यहाँ से भी और पाकिस्तान से भी। बड़ा खान के हाथ बहुत लम्बे हैं। देश के हर कोने में अपने आदमी फैला रखे हैं। उन्हें भी तो पैसा भेजना होता है। जितना आता है, उतना चला जाता है। बचता भी बहुत है। सब कुछ बढ़िया चल रहा है।” मस्तान हँस पड़ा, “हिन्दुस्तान में हमने दहशत फैला रखी है। सरकार डरती रहती है कि अब जाने कहाँ विस्फोट हो जाये। जाने कितने लोग मरेंगे। जब ऐसा होता है तो हो-हल्ला मचता है फिर सब कुछ शांत पड़ जाता है।”

“हिन्दुस्तान के सरकारी तंत्र में भ्रष्टाचार का फायदा हमारे साथियों को मिलता है। हमारे आदमियों को जब अपनी पहचान के लिए राशनकार्ड, वोटरकार्ड यहाँ तक आयकर कार्ड भी बनवाना होता है तो पैसे देकर बन जाता है। इन चीजों का उन्हें बहुत फायदा मिलता है। वह आसानी से आम भारतीयों में शामिल हो जाते हैं। उन पर कोई शक नहीं कर पाता।

पाकिस्तान से आये लोगों ने हिन्दुस्तान में कितनी जगह अपने ठिकाने बना रखे हैं। कइयों ने तो स्थानीय युवतियों से निकाह भी कर लिया है। ऐसे में उन पर शक कौन करेगा।"

कार दौड़े जा रही थी।

"गाजी को उस नेता से समस्या है। क्या नाम है उसका ? हाँ जमाल से।"

"क्योंकि जमाल पाकिस्तान की शह पर चलने वाले संगठनों के बारे में बहुत बोलता है। पंद्रह दिन पहले उसने कुपवाड़ा में जो जलसा किया था उसमें वह बड़ा खान के बारे में बहुत बोला था। मैंने तो तब बड़ा खान से कहा कि उसे खत्म कर देते हैं। परन्तु बड़ा खान ने ये कहकर मना कर दिया कि हम किसी को मुफ्त में क्यों मारें। कोई न कोई जल्दी ही बड़ा खान को मार देना चाहेगा और बड़ा खान की ये बात सही साबित हुई। दूसरे ही दिन गाजी का फोन आ गया कि जमाल को खत्म करना है, वह बोलता बहुत है।"

"हम सिर्फ पैसे लेकर काम करते हैं। हमारी व्यक्तिगत दुश्मनी किसी से नहीं है।" रशीद मुस्कुराकर बोला, "पाकिस्तान ने हमें भेजा है आतंकवाद फैलाने को और वह हम फैला रहे हैं। हर धमाके के साथ हिन्दुस्तान कमजोर होता जा रहा है।"

"कमजोर ही तो करना है हिन्दुस्तान को। दोनों देश एक साथ ही अलग हुए थे। पाकिस्तान वहीं का वहीं है और हिन्दुस्तान तरक्की कर गया है। हमें हिन्दुस्तान की तरक्की हर हाल में रोकनी है।"

"हम इसी तरह काम करते रहें तो एक दिन हिन्दुस्तान कमजोर होकर ही रहेगा।"

कुछ ही देर में कार एक मंजिला इमारत के भीतर जाकर रुक गई। इस इमारत को सर्किट हॉउस का नाम दे रखा था। यहाँ बड़ा खान के ही काम होते थे। दोनों कार से उतरकर भीतर प्रवेश कर गए। वहाँ आदमी अपने काम में व्यस्त आ जा रहे थे। वे इन दोनों को सलाम करने लगे। जवाब में सिर हिलाते दोनों ऊपरी मंजिल के एक कमरे में जा पहुँचे।

वहाँ तीन आदमी मौजूद थे। बड़ी सी टेबिल पर एक जैकिट फैलाकर रखी हुई थी। जिसके भीतर जगह-जगह पर बारूद लगा चमक रहा था। वह काफी ज्यादा मात्रा में बारूद था जिसे जैकिट के भीतर फिट किया गया था। लाल-पीली तारें वहाँ नजर आ रही थीं।

उन तीनों में से एक व्यक्ति की टाँग नहीं थी। वहाँ नकली टाँग लगी हुई थी।

वह पैंतीस बरस का पतला सा था। बमों का विशेषज्ञ माना जाता था वह। बाकी दो उसके सहायक थे। रशीद और मस्तान को आया पाकर नकली टाँग वाला मुस्कुराया।

"मुझे मालूम था कि तुम दोनों आने वाले हो।"

"कैसे हो नकवी ?" रशीद मुस्कुराकर कह उठा।

"ऊपर वाले की मेहरबानी है। पाकिस्तान जाने का मन हो रहा है। पूरा एक साल हो गया है वहाँ से आये।"

"तुम चले गए तो हमारा काम कौन करेगा ?" मस्तान हँस पड़ा।

"किसी के जाने से काम नहीं रुकते हैं मस्तान भाई। फिर मैंने तो महीने भर के लिए जाना है। निकाह है भाई का।"

"कब ?"

"अगले महीने।"

"चले जाना। बड़ा खान से कह दूँगा मैं।"

"शुक्रिया ! तुम्हारा दिल बहुत नर्म है। तुम अपने साथियों की मजबूरी समझते हो।" नकवी मुस्कुराया।

"लड़के की जैकिट तैयार हो गई ?"

"उसी में लगा हूँ। बस, दस मिनट और दे दो मुझे।"

"बारूद ज्यादा से ज्यादा लगाना जैकिट में।" रशीद बोला।

"ज्यादा ही लगाया है। जब फटेगा तो पंद्रह फुट के घेरे में तबाही मच जायेगी।"

"लड़का कौन सा चुना ?"

"जैकिट के साइज के हिसाब से लड़का चुना है। 15 बरस का है। जैकिट उसे पूरी आती है।" नकवी ने कहा।

नकवी अपने दोनों सहायकों के साथ पुनः जैकिट में व्यस्त हो गया।

मस्तान और रशीद एक तरफ कुर्सियों पर जा बैठे।

"जमाल के मरने से खुशी होगी मुझे।" मस्तान ने कहा, "साला बड़ा खान के खिलाफ बोलता था।"

रशीद हँस पड़ा।

तभी मस्तान का फोन बजा। दूसरी तरफ बड़ा खान था। मस्तान ने बात की।

"सलाम हुजूर !"

"कैसे हो मस्तान ?" बड़ा खान की आवाज कानों में पड़ी।

"आपके हाथ के नीचे बढ़िया कट रही है। लाल चौक के पास जमाल आज मंच पर भाषण देने जा रहा है। परन्तु ये उसका अंतिम भाषण होगा। यहाँ तैयारी हो रही है।" मस्तान ने कहा।

"मैंने तुम्हें पहले ही कह दिया था कि जमाल जैसे इंसान ज्यादा देर जिन्दा नहीं रहते। गाजी को उस पर गुस्सा आ ही गया।"

"आज वह मर जायेगा।"

"मेरठ में हमारे साथी हमारे हुक्म के इंतजार में बैठे हैं।"

"मेरठ के लिए अभी हमारे पास कोई काम नहीं है। मैं उन्हें समझा दूँगा। जब्बार के बारे में पूछना चाहता हूँ।"

"क्या ?"

"उसकी कोई खबर मिली कि वह... ।"

"आजादी-ए-कश्मीर नाम का संगठन उसे ले गया। उसके बाद उसकी कोई खबर नहीं आई।"

"आजादी-ए-कश्मीर नाम का कोई संगठन नहीं है। कभी ये नाम नहीं सुना जनाब।"

"शायद कोई नया संगठन हो।" बड़ा खान की आवाज कानों में पड़ी।

"ये सम्भव हो सकता है। मेरे ख्याल में जब्बार को वक्त रहते ही खत्म कर देते तो बेहतर रहता। वह हमारे बीच में कई बातें जानता है। मुँह खोला तो हम पर भी मुसीबत आ सकती है।"

"अगर वह किसी संगठन के सामने मुँह खोलता है तो उसकी हमें परवाह नहीं। परन्तु ये तो पक्का है कि जम्मू पुलिस के सामने उसने मुँह नहीं खोला है। खोला होता तो हमारे ठिकानों पर पुलिस की कार्यवाही हो गई होती।"

"उस नकली पुलिस वाले ने उसे जेल से बाहर निकाला क्यों ? वह है कौन ?"

"नहीं पता। हम खुद भी इन बातों से अंजान हैं।"

"वह नकली पुलिस वाला अभी तक पकड़ा भी नहीं गया।"

"हमारे आदमी जम्मू में उसे ढूंढ रहे हैं। वह पकड़ा जायेगा। तुम जमाल का काम खत्म करो और मुम्बई में अपने लोगों से रात में बात करना। वहाँ पर उन्होंने बम विस्फोट की पूरी तैयारी कर ली है। हमारे इशारे की देर है उन्हें।"

"मुम्बई में अभी काम नहीं करना है जनाब।"

"क्यों ?"

"पाजा खान से चार करोड़ में सौदा हुआ था मुम्बई ब्लास्ट करने का और अभी उसने ढाई करोड़ ही दिया है। बाकी का डेढ़ करोड़ उसने बीत गए परसो तक देना था। दो दिन ऊपर हो गए परन्तु उसकी कोई खबर नहीं आई।"

"जैसा तुम ठीक समझो, वैसा ही करो। मुम्बई में हमारे आदमी तैयार हैं। जब कहोगे, वह काम कर देंगे। दिल्ली में मुस्तफा को हथियारों की जरूरत है। उससे भी बात कर लेना।"

"दिल्ली में हमारा हथियार-बारूदों का जखीरा पड़ा है। उसे जो चाहिए मैं दे दूँगा जनाब।"

"ठीक है ! दिल्ली मुस्तफा को फोन करके बता देना कि उसे कहाँ से हथियार मिलेंगे।"

इसके साथ ही बातचीत बन्द हो गई। मस्तान ने मोबाइल जेब में रखकर नकवी और उसके सहायकों को देखा। वे तीनों जैकिट पर झुके अपना काम पूरा कर रहे थे। रशीद मस्तान से कह उठा।

"जब्बार को ढूंढकर हमें ही मारना पड़ेगा।"

"वह ज्यादा देर गुम नहीं रह सकता। वह चुप बैठने वालों में से भी नहीं है।"

"हाँ! परन्तु उस नकली पुलिस वाले से उसकी कोई बात तय हुई ही है तभी उसने जब्बार को जेल से बाहर निकाला।"

"उसकी असलियत जाने क्या है।"

"पता चल जायेगा। जब्बार एक बार हमारे हाथ आ जाये तो सब बताएगा।"

तभी नकवी की आवाज उनके कानों में पड़ी।

"मेरा काम पूरा हो गया।"

□□□

वह पंद्रह बरस का युवक था।

मस्तान और रशीद जब उस कमरे में पहुँचे तो वह खाना खा रहा था। एक आदमी उसे खाना खिलाने में व्यस्त था। उन दोनों को देखकर फौरन खड़ा हुआ और सलाम किया।

"बैठो! खाना खाते रहो।" मस्तान ने मुस्कान के साथ कहा।

वह बैठ गया और खाने लगा।

"नाम क्या है तुम्हारा?" रशीद ने पूछा।

"वसीम।"

"तुम जानते हो कि आज तुम्हारा शहीद दिन है।" रशीद का स्वर मीठा था।

"हाँ! जनाब नकवी साहब ने बताया मुझे।"

"तुम बहुत किस्मत वाले हो जो तुम्हें शहीद होने का सुनहरा मौका मिल रहा है। बहुत कम नसीब वाले होते हैं जो शहीद होते हैं। मौत तो सबको आती है, परन्तु शहीद की मौत मरना गर्व की बात है।"

वह युवक खाना खाता रहा।

"तुम्हें घबराहट तो नहीं हो रही ?"

"नहीं ! बस इतना है मन में कि आज मैं मर जाऊँगा।" वसीम कह उठा।

"मन में डर मत रखो मौत का। फिर तुम ये मत भूलो कि तुम शहीद होकर हमारे कई दुश्मनों को मार दोगे। तुम्हारा नाम कश्मीर में, पाकिस्तान में जिन्दा रहेगा। तुम मरकर भी हमारे दिलों में राज करोगे। ऊपर वाला तुम्हें जन्नत में बैठायेगा।"

"ऐसा होता है ?"

"हाँ ! ऐसा ही होता है। शहीदों को तो ऊपर वाला भी खास इज्जत देता है। अपने पहलू में बैठाता है। वह दोबारा फिर तुम्हें पाकिस्तान में ही पैदा करेगा कि बड़े होकर तुम फिर हिन्दुस्तान पहुँचो और दुश्मनों की जान ले सको।"

"अगले जन्म में मैं तुम जैसा बनूँगा।" वसीम खाते-खाते कह उठा, "तब मुझे मरना नहीं पड़ेगा।"

"हाँ ! अगली बार तुम हम जैसा ही बनना। तुम्हारे अब्बा ने तुम्हें दो लाख रुपये के बदले हमारे हवाले किया था कि हम तुम्हें शहीद बना दें। इस बारे में तुम्हारे अब्बा ने तुम्हें कुछ नहीं बताया ?"

"बताया था। कहा था कि मैं सबका कहना मानूँ और ये लोग जैसा कहें वैसा ही करना। तभी तो मैंने शहीद बनने से इंकार नहीं किया।"

"शाबाश ! तुम बहुत समझदार हो। पाकिस्तान में क्या करते थे ?"

"मजदूरी करता था।"

"लेकिन हमने तुमसे मजदूरी नहीं कराई। तुम्हें रोज खाना देते हैं। अच्छे-अच्छे कपड़े देते हैं। नर्म बिस्तर पर नींद लेते हो। क्योंकि वक्त आने पर हम तुम्हें शहीद बनाना चाहते थे और आज वह मुबारक दिन आ गया वसीम बेटे।"

वसीम खाना खाकर उठ खड़ा हुआ। हाथ-मुँह साफ करके कमरे में पुनः आ पहुँचा।

तभी नकवी ने जैकिट उठाये भीतर प्रवेश किया। उसने सावधानी से जैकिट उठा रखी थी। नकली टाँग होने की वजह से वह लंगड़ाकर चल रहा था।

"लो।" मस्तान वसीम से कह उठा, "तुम्हारी जैकिट भी आ गई।"

"आओ वसीम!" नकवी मुस्कुराकर बोला, "मेरे पास आओ और जैकिट पहनो।"

वसीम नकवी के पास पहुँचा।

नकवी ने सावधानी से उसे जैकिट पहनाई और आगे की जिप बन्द की। वसीम जैकिट को पहनकर सेहतमंद दिखने लगा था।

जैकिट के पीछे की तरफ तारों में बंधा एक नन्हा सा स्विच लटक रहा था। नकवी ने सावधानी से उस स्विच को थामा और वसीम को दिखाता कह उठा।

"ये देखो। ये स्विच है। जब तुम उस नेता के पास पहुँच जाओ तो इस स्विच को पूरी ताकत से दबा देना। बटन दबाने के मामले में ये स्विच कुछ सख्त होते हैं। इसलिए कि जरा सा दबाव पड़ते ही गलती से न दब जाये स्विच। तुम्हें ताकत लगाकर स्विच दबाना होगा और उसके बाद खेल खत्म।" नकवी मुस्कुराकर कह उठा।

वसीम ने गंभीरता से सिर हिलाया। नकवी बाहर निकल गया।

वसीम ने वह स्विच जैकिट की जेब ने डाल लिया था। पीछे से थोड़ी सी तार निकली दिखाई दे रही थी, परन्तु उस पर फौरन किसी की निगाह नहीं पड़ सकती थी।

रशीद और मस्तान के चेहरों पर मुस्कान फैली थी।

"तुम अपने माँ-बाप से कुछ कहना चाहते हो तो हमें बता दो। हम कह देंगे।" मस्तान बोला

"अब्बा से ये ही कहना कि मैंने तुम लोगों की सारी बातें मानी हैं।" वसीम गंभीर स्वर में कह उठा।

"कह देंगे। परन्तु क्या इतना ही कहना चाहते हो ?"

"हाँ ! क्योंकि अब्बा मेरे से परेशान रहते थे कि मैं उनकी बात नहीं मानता।"

"ओह ! ये बात है तो कह देंगे।"

"वक्त निकला जा रहा है। इसे यहाँ से भेज देना चाहिए।" रशीद बोला।

"तो तुम अब चलने को तैयार हो ?" मस्तान मुस्कुराया।

"हाँ !"

"तुम यहाँ से अकेले ही जाओगे। परन्तु तुम्हारे आसपास हमारे आदमी होंगे। इसलिए कि अगर तुम पर रास्ते में कोई मुश्किल आये तो उसे वह संभाल सकें। लाल चौक के पास सभा होनी है आज। एक घण्टे में वहाँ सब नेता पहुँच जायेंगे। जमाल नेता की तस्वीर तो तुम्हें दिखा ही दी है। तुम उसे पहचान जाओगे। वह मंच पर बोलेगा। उसके बोलने के बीच ही तुम माला लेकर मंच पर चढ़ जाओगे। ऐसा दिखावा करोगे कि तुम उसे माला पहनाना चाहते हो। उसके पास पहुँचकर हाथ की उँगलियों की पूरी ताकत लगाकर उस स्विच के बटन को दबा देना, जो कि इस वक्त तुम्हारी जेब में है।"

"मैं समझ गया।"

"ऐसा ही करना। वक्त पर कहीं तुम घबरा तो नहीं जाओगे ?" मस्तान ने पूछा।

"नहीं ! मैं अपना काम पूरा करके दिखाऊँगा।"

"वाह ! तुममें तो बहुत हिम्मत है। आओ मेरे साथ। मैं तुम्हें उन लोगों के हवाले कर दूँ जो तुम्हें आगे का रास्ता बतायेंगे।"

रशीद और मस्तान, वसीम के साथ कमरे से बाहर निकले और नीचे जाने वाली सीढ़ियों की तरफ बढ़ गए।

वे नीचे पहुँचे तो वहाँ पाँच आदमी उन्हीं के इंतजार में खड़े मिले।

"इसका नाम वसीम है।" मस्तान ने एक से कहा, "इसे हिफाजत से नेताओं के सभा स्थल तक पहुँचा दो।"

"जी जनाब !"

"तुम्हें सब कुछ याद है न कि वहाँ पर कैसे काम करना है ?" रशीद ने पूछा, "भूल तो नहीं जाओगे ?"

"मेरा दिमाग बहुत तेज है। मैं कुछ भी नहीं भूलता।" वसीम ने मासूम स्वर में कहा।

□□□

लाल चौक के पास ही एक सड़क बन्द करके वहाँ टेबलों का मंच बना रखा था। जिस पर दरियाँ बिछी थीं। एक तरफ सीढ़ियों जैसा रास्ता था मंच के ऊपर जाने का। सामने कुर्सियाँ और दरियाँ लगी थीं। शाम के साढ़े पाँच से ऊपर का वक्त हो रहा था। सूर्य कब का छिप चुका था और अब अँधेरा हो रहा था। मंच के आसपास लगी रौशनी जलने लगी थी। मंच पर रखे माइक के सामने बारी-बारी से नेता और कार्यकर्ता आकर अपने विचार जाहिर कर रहे थे।

फिर बारी आई जमाल की।

जमाल जो कि पार्टी का मुख्य नेता था। काफी लोगों की भीड़ थी वहाँ और वे लोग जमाल को सुनने ही यहाँ आये थे। आसपास पुलिस भी मौजूद थी। गर्मा-गर्मी का जोश था।

जमाल के कुर्सी से उठते ही लोगों ने तालियाँ बजानी शुरू कर दीं। जमाल दोनों हाथ ऊपर करके उन्हें हिलाते मंच पर जा पहुँचा और माइक पर बोला-

"मैंने कभी भी अपनी चिंता नहीं की। चिंता की तो सिर्फ कश्मीर की। ये हमारा स्वर्ग है। कभी वह भी वक्त था जब कश्मीर में चैन और अमन था। हर तरफ खुशियाँ थीं। पूरे हिन्दुस्तान से लोग कश्मीर घूमने आया करते थे। जिससे कि यहाँ के कश्मीरी भाइयों को भरपूर आमदनी होती थी। और वे अपनी जरूरतें पूरी करते थे। हमारी खुशहाली देखकर पाकिस्तान को बहुत तकलीफ होती थी कि हमारा कश्मीर खुश क्यों है और इसी कारण उसने आतंकवादियों की घुसपैठ करानी शुरू कर दी। जहाँ फूलों की खुशबू

महकती थी, वहाँ लाशें गिराने लगे आतंकवादी। धीरे-धीरे वह हम लोगों में घुस गए और खुद को कश्मीरी कहने लगे।

"पहले उन्होंने छोटे-छोटे दल बनाये फिर बड़े संगठन बना लिए। मकसद था कश्मीर के चैन को खत्म करना और हिन्दुस्तान को तंग करना और मुझे दुःख के साथ कहना पड़ रहा है कि वह आतंकी अपने मकसद में कामयाब भी रहे।" जमाल की आवाज तेज हो गई, "हमारे कश्मीर का अमन-चैन छीन लिया पाकिस्तान से आये लोगों ने। आज वह खुद को कश्मीरी कहकर कश्मीर में जमे हुए हैं, जबकि वह कश्मीरी नहीं हैं। कश्मीर के दुश्मन हैं।"

इस पर लोगों ने तालियाँ बजानी शुरु कर दी। जमाल ने माइक पर बोलना जारी रखा-

"ऐसे लोगों में एक है गाजी। गाजी जो कि खुद को कश्मीर का सिपाही बताता है। हकीकत में वह पाकिस्तान के मुल्तान शहर का रहने वाला है। उसकी बीवी और बच्चे वहाँ बसते हैं। दो बेटियों की तो शादी भी हो चुकी है और वह पाकिस्तान आता-जाता रहता है। मैं ये बात यूँ ही नहीं कह रहा। मेरे पास पाकिस्तान से दो दिनों में सबूत आ रहे हैं इस बात के और मैं उन्हें अपने अखबार में छपवा कर गाजी का चेहरा बेनकाब करूँगा कश्मीर के लोगों के सामने।"

तालियाँ फिर बजने लगीं।

ठीक इसी समय वसीम भीड़ में से आगे आया और हार थामे मंच की सीढ़ियों की तरफ बढ़ने लगा।

जमाल ने बोलना जारी रखा-

"इसी तरह मैं बड़ा खान का नाम लूँगा जो कि अपने हत्यारे संगठन का मालिक है। बड़ा खान कौन है, कोई नहीं जानता। सिर्फ उसके नाम का ही सिक्का चलता है। हकीकत में बड़ा खान पाकिस्तान की सरकार का भेजा आदमी है। वह कश्मीर में तबाही मचाने आया है और मचा भी रहा है। हिन्दुस्तान के कई हिस्सों में बड़ा खान ने आतंक पैदा कर रखा है। संगठन

अपना खतरनाक रुतबा कायम रखने के लिए बड़ा खान को पैसे देकर आतंकी कार्यवाही कराते हैं और... ।"

तब तक वसीम, हार थामे जमाल के पास पहुँच चुका था ।

भाषण देते-देते जमाल ठिठका और बच्चे से हार डलवाने के लिए सिर थोड़ा नीचे किया । अगला पल जैसे कायनात से भरा था । वसीम ने हाथ में दबे स्विच के बटन को पूरी ताकत से दबा दिया था ।

□□□

रात के दस बज रहे थे । तेज सर्दी और शरीर को हिला देने वाली सर्द हवाएँ चल रही थीं । रशीद और मस्तान इस वक्त अपने घर में मौजूद थे । बोतल खुली हुई थी और चेहरे खुशी से चमक रहे थे । एक गिलास समाप्त करने के बाद दूसरा गिलास तैयार कर रहे थे ।

अभी-अभी मस्तान बड़ा खान से बात करके हटा था । बड़ा खान ने शाम की सफलता के लिए उन्हें शाबाशी दी थी ।

मस्तान गिलास उठाता हँसकर कह उठा ।

"जमाल खत्म । उसके सारे साथी भी बम की चपेट में आकर मारे गए । अब जमाल का संगठन सिर नहीं उठाएगा कभी और जमाल जैसे दूसरे लोगों को भी अक्ल आएगी जो कश्मीर से पाकिस्तान को निकाल देना चाहते हैं ।"

"कश्मीर पाकिस्तान का है ।" नशे में झूमता रशीद कह उठा ।

"बिल्कुल पाकिस्तान का है । हिन्दुस्तान से हम कश्मीर छीन के रहेंगे ।" मस्तान ठठाकर हँस पड़ा ।

"बड़ा खान हिन्दुस्तान के लिए दहशत बन जायेगा । बहुत जल्द वह वक्त आएगा जब हिन्दुस्तान की सरकार हमसे रजामंदी के लिए बातचीत करेगी और तब हम कश्मीर को माँगेंगे । हिन्दुस्तान को हमारी बात माननी ही पड़ेगी ।"

"हम जिंदाबाद !" मस्तान शराब का गिलास हवा में ऊँचा करके कह उठा ।

"हम जिंदाबाद तो पाकिस्तान भी जिंदाबाद। बड़ा खान भी जिंदाबाद। कहर बरपा देंगे हिन्दुस्तान में।"

एक तो शराब का नशा। ऊपर से शाम के विस्फोट में सफल हो जाने की खुशी।

दोनों एक साथ ही इस मकान में रहते थे। बड़ा खान के अलावा कोई नहीं जानता था इस ठिकाने के बारे में। किसी को उनके ठिकाने के बारे में पता न चले, इस बारे में वे खास सावधानी बरतते थे।

"मस्तान !" रशीद घूंट भरकर कह उठा, "मैंने आज पाकिस्तान घर पर फोन किया। मेरा बेटा 16 साल का हो गया है और उसने अभी से ही हाजी के संगठन में प्रवेश पा लिया है।"

"तरक्की करेगा तेरा बेटा।" मस्तान हँसा।

"मेरे बेटे की बचपन से ही इच्छा है कि वह कश्मीर में आकर काम करे। अपने अब्बा के साथ काम करे।"

"अभी से ऊँचे ख्याल हैं उसके।"

"वह भी मेरी तरह ये ही चाहता है कि कश्मीर को हिन्दुस्तान से छीनकर पाकिस्तान में मिला दिया जाये।" रशीद ने पुनः घूँट भरकर कहा "मैंने आज हाजी को फोन करके बोल दिया है कि वह जल्दी से जल्दी मेरे बेटे को तैयार कर दे।"

"वह क्या बोला ?"

"उसने कहा कि दो साल लगेंगे। दो साल में उसे पूरा ट्रेंड कर देगा।"

"दो साल अभी बीत जायेंगे।" मस्तान बोला, "रशीद, मैं कोई बड़ा काम करना चाहता हूँ।"

"बड़ा काम ?"

"हाँ ! जैसे कि हिन्दुस्तान के प्रधानमंत्री पर हमला। राष्ट्रपति पर हमला या फिर ऐसा ही कोई बड़ा काम।"

रशीद के चेहरे पर गंभीरता नजर आने लगी।

"किस सोच में पड़ गया तू ?"

“ऐसे काम के लिये लम्बी तैयारी चाहिए होगी । आसान नहीं होगा ये काम ।”

“दिल्ली में हमारे लड़के बैठे हैं । बैठे-बैठे खा रहे हैं । वह भला कब काम आयेंगे ?”

“बड़ा खान से इस बारे में बात करें ?”

“बड़ा खान तो ये ही कहेगा कि हम मुफ्त में कोई काम क्यों करें ।”

“मेरे ख्याल में हमें दिल्ली में तैयारी शुरु करवा देनी चाहिए इस काम की और बड़ा खान से कहते हैं कि हम इस काम के लिये संगठनों से बात करें । कोई न कोई संगठन इस काम को करवाने के लिये तैयार हो जायेगा ।”

“ये ठीक रहेगा ।”

“दिल्ली में चुनाव आने वाले हैं । प्रधानमंत्री के चुनावी भाषण के दौरे अवश्य होंगे ।”

“हाँ ! होंगे । तब हम मौके का फायदा उठा सकते हैं । तू जरा दिल्ली फोन लगा आसिफ को । उससे बात करते हैं । लड़कों को वह ही संभालता है । उसे इस बारे में तैयारी शुरु करने को कह देते हैं ।”

“ये काम बच्चों का खेल नहीं है जो उसे कह देते हैं ।”

“तो ?”

“इस बारे में बड़ा खान की सलाह लेना जरूरी है । वरना बड़ा खान हमें उल्टा लटका देगा ।”

“ठीक है !” मस्तान ने सिर हिलाया, “बड़ा खान से बात कर लेंगे ।”

“काफी वक्त हो गया बड़ा खान से मिले ।”

“दो-ढाई महीने हो गए ।”

“मैं बड़ा खान से बात करूँगा कि हमें मिलना चाहिए ।”

“वह मना कर देगा ।” मस्तान बोला, “बिना वजह मिलते रहना बड़ा खान को पसन्द नहीं ।”

“बड़ा खान की हिम्मत है जो उसने पूरे हिन्दुस्तान में दो सालों में ही अपना नेटवर्क फैला लिया । किस तेजी से काम किया है उसने । पुलिस का ऐसा कोई डिपार्टमेंट नहीं, ऐसा कोई शहर नहीं, जहाँ उसकी पहुँच न हो ।”

हम पाकिस्तान से ही जानते थे कि वह काबिल इंसान है। तभी तो उसके साथ काम करना गंवारा किया।"

"हम भी काबिल हैं।" रशीद ने हँसकर कहा, "तभी तो बड़ा खान ने हमें अपने साथ लिया।"

"एक बात मुझे खटक रही है रशीद।"

"वह क्या ?"

"हमने गफ्फार को मोती के सामने मारा। मोती खान को अपने भाई की मौत का दुःख तो होगा।"

"जरूर होगा।"

"दोनों भाई ही हमारे लिए दलाल का काम करते थे। मोती खान की इच्छा तो जरूर होगी अपने भाई की मौत का बदला लेने की।"

"मोती खान ऐसा सोच भी नहीं सकता। वह अपनी जान नहीं गंवाना चाहेगा।"

"मोती खान कम खतरनाक नहीं।" मस्तान बोला।

"लेकिन हमसे पंगा नहीं लेगा।" रशीद गिलास खाली करके बोला, "आज सर्दी ज्यादा है। एक-एक पैग और हो जाये।"

□□□

अगले दिन दोपहर के बाद शाम चार बजे एक बड़ी सी वैन और धूल से अटी दो कारें एक बंगले में प्रवेश करके लम्बे पोर्च में जा रुकी। वैन और कार के दरवाजे खुलने लगे। उसमें से जगमोहन, कलाम, जब्बार और पंद्रह बाकी लोग बाहर निकले। सबके चेहरे थके हुए लग रहे थे। बारह घण्टे का पहाड़ी सफर तय करके वह यहाँ पहुँचे थे।

बंगले के भीतर से भी पाँच-सात आदमी वहाँ पहुँचे जो कि सामान उतारने लगे।

"ये मेरा कश्मीर है।" जब्बार खुशी भरे अंदाज में कलाम को देखता कह उठा, "छः महीने बाद अपने कश्मीर में लौटा हूँ।"

"तुम्हें यहाँ आना अच्छा लग रहा है ?" जगमोहन मुस्कुराकर बोला।

"बहुत । घर वापसी की खुशी किसे नहीं होती ।" जब्बार हँस पड़ा ।

एक घण्टे बाद, बन्द कमरे में जगमोहन, जब्बार और कलाम मौजूद थे ।

"जब्बार !" जगमोहन बोला, "मैं चाहता हूँ कि हम वक्त बर्बाद न करें और काम शुरू कर दें ।"

"बोलो, मैं क्या करूँ अब्दुल्ला !" जब्बार बोला ।

"हमें उन ठिकानों के बारे में बताओ, जहाँ रशीद और मस्तान अक्सर आते-जाते रहते हैं ।"

"सर्किट हॉउस, संसद भवन, पार्लियामेंट, ऊँचा भवन, जहाँआरा, दीवान-ए-खास, मुबारक गली । ऐसी कई जगहें हैं जहाँ वह दोनों कभी भी पहुँच जाते हैं ।" जब्बार कह उठा ।

"ये किन जगहों के नाम लिए तुमने ?"

"बड़ा खान ने अपने ठिकानों के नाम रखे हुए हैं ।" जब्बार ने बताया ।

"तो ये बात है ।" जगमोहन ने सिर हिलाया, "बड़ा खान कश्मीर में ही होता है ?"

"अक्सर । बहुत कम वह कश्मीर से बाहर जाता है । जाने की जरूरत नहीं पड़ती । आदमी जो हैं, सब काम पूरा करने के लिए । हर शहर में उसके लोग हैं । फोन पर ही काम पूरा हो जाता है ।"

"और तुम्हें अंदाजा भी नहीं कि कश्मीर में वह कहाँ पर होता है ?"

"मुझे नहीं पता । रशीद और मस्तान को शायद इस बात की जानकारी हो ।"

"ठीक है ! तुम इन सब ठिकानों के बारे में बताओ कि ये कहाँ-कहाँ पर हैं ?" जगमोहन ने कहा ।

जब्बार बताने लगा । दस मिनट में उसने करीब दस ठिकानों के नाम पते बताये । जगमोहन ने कलाम को देखकर कहा-

"सब पते सुने तुमने ?"

"जी जनाब !" कलाम बोला ।

"हर जगह पर अपने दो-दो आदमी लगा दो। हमें रशीद और मस्तान की तलाश है। ये कहीं मिले तो सावधानी से इनका पीछा किया जाये और उस दौरान हमें फोन पर खबर दे दी जाये।"

कलाम ने सिर हिलाया और बाहर निकल गया।

"तुम्हें यकीन है कि तुम बड़ा खान तक पहुँचकर उसे मार दोगे?" जब्बार बोला।

"पूरा यकीन है।" जगमोहन के होंठ भिंच गए।

"परन्तु मुझे यकीन नहीं।" जब्बार ने गहरी साँस ली।

"हमारे साथ रहो और देखते रहो। क्या तुम पहली गोली बड़ा खान के सिर में मारना चाहोगे?"

"मैं?"

"हाँ! ये मौका तुम्हें दिया जा सकता है अगर तुम चाहो तो।" जगमोहन मुस्कुरा पड़ा।

"मुझे नहीं लगता कि ऐसा मौका आएगा।"

"तो तय रहा कि बड़ा खान के सिर में पहली गोली तुम ही मारोगे।"

"बहुत आसानी से तुम ये बात कह रहे हो।"

"जब्बार अभी तुम आजादी-ए-कश्मीर की ताकत नहीं जानते। बहुत जल्दी हमारे बारे में जान जाओगे।"

"मुझे अभी तक तुमसे कोई पैसा नहीं मिला?" जब्बार कह उठा।

"तुमने कहा नहीं। अब कहा है। कहो कितना पैसा चाहिए?" जगमोहन बोला।

कुछ देर चुप रहकर जब्बार ने कहा।

"कुछ दिन बाद ले लूँगा।"

"जब भी लेना चाहो कह देना। अपने साथियों के लिए हमारे पास पैसे की कमी नहीं है। अब तुम आराम कर लो तो बेहतर होगा।"

"मैं जरा बाहर घूमने जाना चाहता हूँ। मेरा बचपन भी इन्हीं सड़कों पर बीता है।"

"अभी तुम्हारा बाहर जाना ठीक नहीं। बड़ा खान का कोई भी आदमी तुम्हें पहचान सकता है। इससे बड़ा खान सतर्क हो जायेगा कि तुम कश्मीर में हो। जबकि हम बड़ा खान तक खामोशी से पहुँचना चाहते हैं।"

"तो मैं यहाँ कैदी की तरह रहूँ ?"

"ऐसा मत कहो। तुम्हारे सामने ही सारे हालात हैं। अभी तुम आराम करो। बहुत जल्दी ये मामला खत्म हो जायेगा।"

□□□

मोती खान अपने भाई गफ्फार की मौत से बहुत दुखी था। वह मंजर बार-बार उसकी आँखों के सामने आ रहा था, जब मस्तान ने गफ्फार को गोली मारी थी। बात यहीं तक होती तो वह सह लेता परन्तु गफ्फार की पत्नी गफ्फार की मौत का उसे ही दोषी मान रही थी, क्योंकि तब वह वहाँ मौजूद था।

शाम हो रही थी। उदास सा मोती खान अपने घर के एक कमरे में बैठा था कि उसकी पत्नी शबनम ने भीतर प्रवेश किया और लाइट ऑन करते कह उठी-

"इस तरह अँधेरे में क्यों बैठे हो ?"

मोती खान ने गहरी साँस लेकर शबनम को देखा।

"गफ्फार की मौत से दुखी हो।" शबनम कह उठी।

"हाँ ! कल वह मेरी आँखों के सामने मारा गया। मैं उसे बचा नहीं सका।" मोती खान ने दुखी स्वर में कहा।

पास आकर शबनम ने उसके कन्धे पर हाथ रखा।

"नसीमा कहती है कि मेरी वजह से ही गफ्फार मरा। मुझे उसको बचाना चाहिए था। परन्तु उस वक्त मैं कुछ नहीं कर सकता था। ज्यादा एतराज करता तो वह मुझे भी गोली मार देते।"

"नसीमा दुखी है अपने शौहर की मौत से। बाद में वह ठीक हो जायेगी।"

"मैं भी गफ्फार की मौत सहन नहीं कर पा रहा हूँ। परन्तु सारी गलती गफ्फार की ही थी। अपनी मौत के रास्ते पर उसने ही कदम बढ़ाये थे। मैंने उसे कितना समझाया था कि हमारे धंधे में गद्दारी नहीं चलती। परन्तु उसने मेरी एक बात न मानी।"

"मैं तो कब से आपसे कह रही हूँ कि ये बुरा काम है। छोड़ दीजिये इसे। आपने काफी पैसा कमा लिया है। कोई दुकान वगैरह खोलकर जिंदगी आराम से बसर कर सकते हैं।" शबनम ने कहा।

"अब तो गफ्फार के परिवार का खर्चा भी मुझे ही उठाना पड़ेगा।"

"वह तो है।" शबनम ने कहा, "नसीमा और उसके दो बच्चे... ।"

"लालच ले डूबा गफ्फार को। किसी की अमानत को इस तरह हजम नहीं किया जा सकता जबकि आसपास खतरनाक लोग मौजूद हों। परन्तु गफ्फार सोचता था कि बड़ा खान देर-सवेर में उसकी गद्दारी को भूल जायेगा। वह कितने खतरनाक हैं, इसी से सोचो कि गफ्फार को मारने जा रहे रशीद और मस्तान ने मुझे फोन करके बुला लिया कि उसकी लाश को मैं संभाल सकूँ।" मोती खान ने गुस्से से कहा, "दिल तो करता है कि उन दोनों पर जाकर गोलियाँ चला दूँ।"

"उससे क्या होगा। क्या इस तरह आप बच पायेंगे ?" शबनम बोली, "गफ्फार ने गलती की तो वह मारा गया। अब आप ऐसी कोई गलती न करें कि वह आपकी भी जान ले ले।"

मोती खान ने आँखें बन्द कर लीं।

"हौसला रखिये। जो होना था, वह तो हो ही गया।"

"नसीमा बहुत दुखी है।"

"मैं उसे भी समझाऊँगी कुछ दिनों के लिए उसे अपने पास ले आऊँगी। उसने पैसा आपको दे दिया ?"

"हाँ ! पूरा साठ लाख है। गफ्फार ने पैसा घर पर ही रखा था। पैसे कल उनके हवाले करूँगा।"

"सच में गफ्फार ने खामख्वाह ही जान गँवा दी।"

"बच्चे कब आयेंगे नसीमा के यहाँ से ?"

"आज रात वह वहीं रहेंगे। नसीमा का दिल बहल जायेगा। आप कहें तो मैं भी वहीं चली जाऊँ ?"

"हाँ ! तुम्हारा नसीमा के पास चले जाना ही ठीक होगा। गली ही में तो रहती है वह।"

"खाना बना रखा है। खा लीजियेगा। मैं नसीमा के पास जा रही हूँ। किसी चीज की जरूरत पड़े तो फोन कर दीजियेगा।" उसके बाद शबनम नसीमा के यहाँ जाने के लिए घर से बाहर निकल गई।

मोती खान ने बोतल निकाली और गिलास तैयार करने लगा। फिर घूँट भरा और सिगरेट सुलगाकर खिड़की पर आया और खिड़की खोली।

सर्द हवा का झोंका शरीर से आ टकराया। मोती खान खिड़की बन्द करने लगा कि ठिठक गया।

सामने सड़क खाली थी। इतनी सर्दी में किसी के बाहर निकलने की हिम्मत कम ही होती थी। परन्तु सड़क के उस पार एक आदमी को खड़े देखा जो कि इधर ही देख रहा था। उसने जैकिट पहन रखी थी। मोती के मस्तिष्क में ये ही आया कि वह बड़ा खान का आदमी होगा। उस पर नजर रख रहा होगा कि 60 लाख के साथ वह भी भागने की न सोचे। अँधेरा होने की वजह से वह उसका चेहरा नहीं देख पाया था।

हाथ में पकड़े गिलास से उसने घूंट भरा कि तभी उस आदमी को सड़क पार करके इस तरफ आते देखा। मोती खान की आँखें सिकुड़ गईं। नजर उस पर ही रही। वह पास आया। खिड़की के नीचे पहुँचा और नजर उठाकर खिड़की पर खड़े उसे देखा। फिर सामने की सीढ़ियों की तरफ बढ़ गया जो कि ऊपर उसके घर पर आकर ही खत्म होती थी। मोती चौंका। उसके होंठ भिंच गए। उसने फौरन खिड़की बन्द की और गिलास एक तरफ रखकर टेबल की दराज से रिवॉल्वर निकालकर हाथ में ले ली। कुछ भी हो सकता था।

तभी बाहर आहट गूंजी। वह जो भी था। घर के भीतर आ गया था। उसे याद आया कि शबनम के जाने के बाद उसने घर का दरवाजा बन्द नहीं किया था। मोती रिवॉल्वर थामे कमरे में खड़ा कह उठा-

"इधर आ जाओ। मैं यहाँ हूँ।"

वह कमरे के दरवाजे पर आ खड़ा हुआ।

रौशनी उसके चेहरे पर पड़ी। वह देवराज चौहान था।

मोती खान रिवॉल्वर थामे खड़ा कह उठा।

"कौन हो तुम?"

"देवराज चौहान नाम है मेरा।"

"देवराज चौहान, तो हिन्दू हो।"

"हाँ!" देवराज चौहान ने दो कदम और भीतर प्रवेश किया तो नजर टेबल पर रखी बोतल पर पड़ी, "मैं काफी देर से सर्दी में खड़ा था। मैंने तुम्हारी पत्नी, शायद वह तुम्हारी पत्नी ही थी, उसे घर से निकलकर चार घर दूर एक घर के भीतर जाते देखा। रिवॉल्वर जेब में रख लो और मेरे लिए भी एक गिलास तैयार कर दो।"

आँखें सिकोड़े मोती खान देवराज चौहान को देखता रहा।

"रिवॉल्वर जेब में रख लो। मैं बड़ा खान की तरफ से नहीं आया मोती खान। निश्चिन्त रहो।"

"कौन हो तुम?"

"रिवॉल्वर जेब में रखकर, मुझे पैग तैयार करके दोगे तो हम आराम से बात कर लेंगे। मेरे से तुम्हें कोई खतरा नहीं है।"

"और तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारी बात मान लूँ?" मोती खान कड़वे स्वर में बोला।

"तुम्हारी इच्छा है कि तुम मानो या न मानो।"

"मुझे कैसे जानते हो?"

देवराज चौहान ने आगे बढ़कर शीशे की अलमारी से गिलास निकाला। उसे हाथों से साफ किया और टेबल के पास पहुँचकर अपना गिलास तैयार करता कह उठा-

"कश्मीर अच्छी जगह है, परन्तु यहाँ सर्दी बहुत होती है।"

"यहाँ बारूद की गर्मी भी बहुत है।"

"हाँ !" देवराज चौहान ने घूंट भरा और मुस्कुराकर बोला, "बारूद की गर्मी भी है ।"

"क्या चाहते हो मुझसे ?"

"मैं तुम्हारे भाई गफ्फार की मौत का अफसोस करने आया हूँ ।" देवराज चौहान ने कहा ।

मोती खान के होंठ भिंच गए ।

"रशीद और मस्तान ने उसे तुम्हारे सामने मारा और तुम अपने भाई को बचा भी न सके ।" देवराज चौहान कुर्सी पर जा बैठा, "ये बात तो तुम्हें तकलीफ दे रही होगी । क्या तुमने अपने भाई को बचाने की कोशिश नहीं की ?"

"की ।" मोती खान के होंठों से निकल गया ।

"परन्तु रशीद और मस्तान ने तुम्हारी बात की परवाह नहीं की और गफ्फार को मार दिया । बुरा हुआ ।"

"तुम कौन हो ?"

"देवराज चौहान ।"

मोती खान फुर्ती से आगे बढ़ा और रिवॉल्वर की नाल उसकी छाती पर रख दी ।

देवराज चौहान ने घूंट भरकर चेहरा ऊपर उठाया और मोती खान से कह उठा ।

"जब तुम्हें कुछ करना चाहिए था, तब तो तुमने कुछ किया नहीं और अब बेकार की कोशिश में... ।"

"अपने बारे में बताओ ।" मोती खान का चेहरा खतरनाक हो गया था ।

"देवराज चौहान नाम है मेरा । बड़ा खान का दुश्मन हूँ मैं ।"

"बकवास कर रहे हो तुम ।"

"जब्बार मलिक के बारे में खबर है तुम्हें ?" देवराज चौहान बोला ।

"जब्बार ? वह तो जम्मू जेल से फरार हुआ है हाल ही में ।"

"हाँ ! उसे मैंने ही जेल से फरार करवाया था ।"

मोती खान चौंका ।

"ओह, तुम पुलिस वाले हो।"

"मैं पुलिस वाला नहीं हूँ। पुलिस वाला होता तो किसी भी कीमत पर जब्बार को जेल से बाहर नहीं निकालता। मैं बड़ा खान का दुश्मन हूँ इसलिए जब्बार को जेल से फरार करवाया। बड़ा खान मुझे पैंतीस करोड़ दे रहा था जब्बार को जेल से फरार करवाने के, परन्तु मैंने उसे मुफ्त में भगा दिया। इसी कारण जब्बार और बड़ा खान के रिश्ते खराब हो गए। बड़ा खान सोचता है कि जब्बार के और मेरे बीच जरूर कुछ समझौता हुआ है तभी तो मैंने उसे जेल से फरार करवाया।"

"हाँ! ऐसा ही सुना है मैंने।" मोती खान के होंठों से निकला, "परन्तु मैं कैसे यकीन करूँ कि तुम वही हो।"

"ये यकीन तो तुम्हें करना ही पड़ेगा कि मैं वही हूँ। मेरी तस्वीर लेकर जम्मू जेल के कर्मचारियों से पूछ लो कि मैं वही हूँ या नहीं। वह मैं ही हूँ मोती खान और तुम्हारे भाई का अफसोस करने आया हूँ।"

दाँत भिंच गए मोती खान के। उसने रिवॉल्वर देवराज चौहान की छाती से हटाई और वापस जेब में रखकर सामने वाला गिलास उठाकर कुर्सी पर जा बैठा। वह बेचैन दिख रहा था।

"मैं आज सुबह ही कश्मीर पहुँचा। बड़ा खान के बारे में जानकारी पानी शुरू कर दी तो पता चला किसी से कि कल रशीद और मस्तान ने मोती खान के सामने उसके भाई गफ्फार को मार दिया। ये भी पता चला कि तुम बड़ा खान को वह साठ लाख रुपया लौटाओगे जिसकी हेराफेरी करने की चेष्टा गफ्फार ने की थी।"

मोती खान ने एक ही साँस में गिलास खाली कर दिया।

"तुम क्या वह साठ लाख मुझसे लेने आये हो?" मोती खान ने पूछा।

"नहीं! मैं ऐसा सोच भी नहीं सकता। मैं तो चाहता हूँ कि अगर तुम अपने भाई की मौत का बदला लेना चाहते हो तो मेरे साथ मिल जाओ। हम दोनों का दुश्मन एक ही है।"

"तुम्हारी क्या दुश्मनी है बड़ा खान से?"

"कुछ तो होगी ही, जो मैं उसके पीछे हूँ।"

“मैं बड़ा खान के खिलाफ नहीं जा सकता।” मोती खान ने कठोर स्वर में कहा।

“क्यों ?”

“वह ताकतवर है। उसे पता भी चल गया कि मैं उसके खिलाफ सोचता हूँ तो वह मुझे मार देगा।”

“मैं भी ताकतवर हूँ।” देवराज चौहान ने कहा।

“तुम्हारी ताकत मैंने नहीं देखी, परन्तु बड़ा खान की देखी है। उसके सामने मेरी हैसियत कुछ भी नहीं है।”

“तुमने साठ लाख देना है बड़ा खान को, कैसे दोगे ?”

“रशीद-मस्तान ही पैसा सँभालते हैं। उन्हें दूँगा।”

“ये दोनों कहाँ रहते हैं ?”

“मैं नहीं जानता।”

“तुम मेरा इतना साथ दे सकते हो कि जब उन्हें पैसा दो, तो वह जगह-वक्त मुझे बता दो।”

“क्यों ?”

“मैं उन पर नजर रखूँगा।”

“इससे क्या हो जायेगा ?”

“ऐसा करके मैं बड़ा खान तक पहुँच जाऊँगा।”

“बचकानी बात मत करो। इस तरह कोई भी बड़ा खान तक नहीं पहुँच सकता।”

“मैं पहुँच जाऊँगा।”

“ऐसी घटिया बात पर मैं यकीन नहीं कर सकता। बेहतर होगा कि तुम यहाँ से चले जाओ। मैं नहीं चाहता कि तुम ऐसा कुछ करो कि बड़ा खान मेरी जान ले ले।” मोती खान ने गंभीर स्वर में कहा और दोबारा गिलास बनाने लगा।

“कम से कम तुम मुझे वह वक्त और जगह बता सकते हो जहाँ तुम 60 लाख उन्हें दोगे।”

“मैं खतरा नहीं उठाना चाहता।”

"अपने भाई की मौत का कुछ तो बदला लो । कहीं तो मेरी सहायता करो मोती ।" देवराज चौहान ने कहा ।

मोती खान बेचैन दिखने लगा ।

"मैं तुम्हारा दोस्त हूँ ।"

"जब्बार कहाँ है ?"

"यहीं, श्रीनगर में । आज ही पहुँचा है ।"

"तुम्हारे साथ ?"

"नहीं । मैंने उसे जेल से निकालकर भगा दिया था । उसके बाद मैं उससे नहीं मिला । परन्तु उसके बारे में मुझे खबर रहती है कि वह क्या कर रहा है । कम से कम वह बड़ा खान के साथ नहीं है । दोनों में दूरियाँ बन गई हैं मेरी वजह से । यही मैं चाहता था । बड़ा खान ने संगठनों से कहा कि जब्बार गद्दार है, पुलिस के साथ मिल गया है । बड़ा खान का इरादा जब्बार को शहीद कर देने का था । इस बात से जब्बार नाराज हो गया । अब वह कश्मीर-ए-आजादी नाम के संगठन के साथ है ।"

"मैंने इस संगठन का नाम नहीं सुना कभी ।"

"परन्तु वह इसी संगठन के साथ है ।"

"तुम्हारे साथ कितने लोग हैं ?" मोती खान ने पूछा ।

"बहुत ।"

"बहुत कितने ?"

"तुम सोच भी नहीं सकते । बड़ा खान को खत्म करने निकला हूँ तो खाली हाथ नहीं हूँ ।"

मोती खान ने नया गिलास भरकर घूँट भरा ।

"मुझे बताओ कि कब तुम 60 लाख रशीद-मस्तान को दोगे ?" देवराज चौहान ने पूछा ।

"मैं तुम्हारा साथ देकर फँस न जाऊँ ।" मोती खान ने गहरी साँस ली ।

"मेरा विश्वास करो कि ऐसा कभी नहीं होगा ।"

"तुम हकीकत में हो कौन ?"

"तुमने कभी डकैती मास्टर देवराज चौहान का नाम सुना है ?"

“शायद, शायद सुना है। सुना है, हाँ... ।”

“वह मैं ही हूँ।”

“ओह !” मोती खान अब कुछ संभला सा दिखा, “तुम आतंकवाद की दुनिया में कैसे आ गए ?”

“मैं बड़ा खान को मारने इधर आया हूँ, उसके बाद वापस चला जाऊँगा।”

“तुम जो सोच रहे हो, वह शायद हो न सके। बड़ा खान को शायद कोई नहीं मार सकता। क्योंकि कोई जानता ही नहीं कि वह कौन है। कहाँ रहता है। कोई भी उसके बारे में नहीं जानता।”

“रशीद-मस्तान उसके बारे में जानते हैं ?”

“कुछ कह नहीं सकता।” मोती खान बेचैन दिखा।

“तुम देवराज चौहान पर पूरा भरोसा कर सकते हो मोती खान। मैं तुम्हारे भाई की मौत का बदला लूँगा।”

मोती खान व्याकुलता भरे अंदाज में कुछ देर चुप रहा फिर कह उठा-

“कल मैं रशीद और मस्तान को 60 लाख दूँगा।”

“कहाँ ?”

“अभी कुछ तय नहीं है। कल सुबह ही उन्हें इस बारे में फोन करूँगा।”

“ठीक है, तुम मुझे अपना फोन नम्बर दे दो और मेरा ले लो। जो भी बात तय हो फोन पर मुझे बता देना।”

दोनों ने एक-दूसरे के नम्बर लिए।

“मैं जानता हूँ कि तुम सफल नहीं होगे। बड़ा खान का कोई मुकाबला नहीं कर सकता।”

देवराज चौहान मुस्कुराया फिर बोला-

“तुमने गफ्फार को बचाने की चेष्टा तो की होगी ?”

“हाँ ! परन्तु ज्यादा न कर सका। वरना वह मुझे भी मार देते।”

“तुम गलत धंधे में हो। अभी भी वक्त है कि इस काम से दूर हो जाओ। वरना कल को कोई और आएगा तुम्हें ढूंढता हुआ कि तुम्हें मार सके। इस काम का अंत मौत पर आकर ही खत्म होता है।” देवराज चौहान ने कहा।

"मुझे इस बात का एहसास हो चला है।"

देवराज चौहान उठ खड़ा हुआ।

"तुम्हें गफ्फार की मौत और मेरे बारे में जानकारी किसने दी ?"

"पता चल जाता है। कहीं भी कोई भी बात छिपी नहीं रहती। फिर ये तो गफ्फार की मौत की बात थी।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा, "कल मुझे फोन जरूर करना, जब तुम 60 लाख देने जाओ। मैं भी फोन करके तुमसे पूछता रहूँगा।"

मोती खान ने आहिस्ता से सिर हिला दिया।

देवराज चौहान बाहर निकल गया।

□□□

अगले दिन सुबह देवराज चौहान होटल के कमरे में गहरी नींद में था। सुबह के साढ़े आठ बज रहे थे। तभी उसका मोबाइल बजने लगा। देवराज चौहान ने आँखें खोलीं। हाथ बढ़ाकर मोबाइल उठा लिया।

"हैलो !" देवराज चौहान ने बात की।

"देवराज चौहान ?" मोती खान की आवाज कानों में पड़ी।

"कहो मोती खान।"

"अभी मेरी रशीद से बात हुई। मैंने उसे पैसे देने को कहा तो उसने कहा बारह बजे तक मुबारक गली पहुँचा दूँ।"

"मुबारक गली कहाँ है ?"

"ये बड़ा खान के एक ठिकाने का नाम है। उसने अपने हर ठिकाने को कोई नाम दे रखा है।"

"समझा। ये कहाँ पर है ?"

मोती खान ने मुबारक गली के बारे में बताया।

"तो तुम बारह बजे तक पैसा वहाँ पहुँचा दोगे ?"

"हाँ ! अब तुम जो भी करो। लेकिन मेरा नाम बीच में न आये। मैंने तुम पर विश्वास किया है।"

"भरोसा रखो। तुम इस मामले में हो ही नहीं।"

देवराज चौहान ने फोन बन्द करके, जगमोहन को फोन किया।

"तुम कब आये श्रीनगर ?" जगमोहन ने पूछा।

"कल ही पहुँचा था। काम कैसा चल रहा है ?" देवराज चौहान ने पूछा।

"कल शाम को ही काम शुरू कर दिया था। मेरे आदमी बड़ा खान के ठिकानों पर नजर रखे हैं कि रशीद-मस्तान वहाँ आयें तो उन पर हाथ डाला जा सके।" जगमोहन की आवाज कानों में पड़ी।

"जब्बार कैसा चल रहा है ?"

"सहयोग कर रहा है।"

"अब मेरी बात सुनो। बड़ा खान के एक ठिकाने का नाम मुबारक गली है।" देवराज चौहान ने कहा, "मोती खान नाम का आदमी दिन के बारह बजे तक वहाँ साठ लाख पहुँचा देगा। उसके बाद उस ठिकाने का आदमी साठ लाख को रशीद-मस्तान को देने जायेगा या रशीद-मस्तान उस पैसे को लेने आयेंगे।"

"समझ गया।"

"मुबारक गली के नाम के ठिकाने पर नजर रखो। शायद हम रशीद-मस्तान तक पहुँच सकें।"

"ठीक है ! लगता है तुमने श्रीनगर पहुँचते ही अपना काम शुरू कर दिया है।"

"हाँ ! अब तुम्हें बताता हूँ कि मुबारक गली कहाँ पर...।"

"मेरे ख्याल में इस ठिकाने के बारे में जब्बार जानता है। मैं उससे पूछ लूँगा।"

□□□

जगमोहन ने कमरे में प्रवेश किया तो जब्बार को नाश्ता करते पाया।

"मैंने तो सोचा था कि तुम नींद में होगे।"

जब्बार ने जगमोहन को देखा। वह नाश्ते में व्यस्त रहा।

"अब्बा हुजूर का फोन आया अभी।" जगमोहन ने बैठते हुए कहा, "उन्होंने एक सूचना दी है।"

"क्या ?" खाते-खाते जब्बार ने जगमोहन को देखा।

"मोती खान नाम का आदमी... ।"

"मोती खान ?" जब्बार के होंठों से निकला।

"तुम जानते हो इसे ?"

"हाँ ! ये बड़ा खान के लिए दलाली का काम करता है। इसका भाई गफ्फार भी बड़ा खान के लिए दलाली का काम करता है। कश्मीर में आतंकवादी दल इन दोनों भाइयों के जरिये भी बड़ा खान से काम करवाते हैं।"

"मैं उसी के बारे में बता रहा हूँ। अब्बा जान ने बताया है कि मोती खान 60 लाख रुपया बारह बजे तक मुबारक गली में पहुँचाने जायेगा। पैसे का काम रशीद और मस्तान सँभालते हैं। वह वहाँ से कभी भी पैसा लेने आ जायेंगे या फिर अपना आदमी भेजकर पैसा कहीं और मँगवायेंगे हमारे पास मौका है रशीद-मस्तान को पा लेने का।"

"जरूरी तो नहीं।"

"परन्तु मौका तो है।"

"मैं क्या करूँ ?"

"तुम मुबारक गली का ठिकाना जानते हो ?"

"हाँ !"

"फिर तो तुम्हें साथ चलना होगा। तुम काले शीशे वाली कार में बैठे रहना और हमें मुबारक गली के ठिकाने के बारे में और वहाँ जाते मोती खान को पहचानकर हमें बताना, क्योंकि हम उसे पहचानते नहीं। समझ रहे हो न मेरी बात ?"

"ठीक है। मैं साथ चलूँगा।"

"तैयार हो जाओ।" जगमोहन उठते हुए कह उठा, "मैं भी बाकी तैयारी कर लूँ।"

□□□

उस समय 11.30 बजे थे जब एक सड़क के किनारे काले शीशे वाली कार में बैठा जब्बार पास बैठे जगमोहन से बोला और हाथ का इशारा सामने की तरफ किया।

"वह रहा मोती खान।"

जगमोहन ने उस तरफ देखा। फुटपाथ पर कई लोग आ जा रहे थे।

"कौन सा ?" जगमोहन की नजर बाहर ही थी।

"काली जैकिट वाला। जिसने हाथ में बड़ा सा ब्रीफकेस उठा रखा है।" जब्बार बोला।

जगमोहन की निगाह काली जैकिट वाले पर जा टिकी जो कि मोती खान ही था, और देखते ही देखते फुटपाथ से लगी सीढ़ियाँ चढ़कर नजरों से ओझल हो गया।

"उस ब्रीफकेस में 60 लाख रुपया था।" जगमोहन बोला।

जब्बार की नजर उन सीढ़ियों की तरफ ही थी।

"तुम इस ठिकाने पर कभी आये हो ?" जगमोहन ने पूछा।

"बहुत बार।"

"कैसा है ये ठिकाना। क्या होता है यहाँ ?"

"ये ठिकाना खबरों का लेन-देन करता है। चार कमरे हैं ऊपर। जहाँ बड़ा खान के कुछ आदमी रहते हैं।"

"खबरों का लेन-देन कैसे ?"

"किसी आदमी के पास बड़ा खान के काम की खबर है तो वह खबर देकर पैसे ले जाता है और जिसे खबर देनी हो उसे बुलाकर खबर दे दी जाती है। इस जगह को बड़ा खान का पोस्ट ऑफिस कह सकते हो।"

"रशीद-मस्तान यहाँ आते हैं ?"

"वह हर जगह जाते हैं।"

तभी जगमोहन का फोन बजने लगा।

"हैलो !" जगमोहन ने मोबाइल निकालकर बात की।

"मोती खान को ऊपर जाते देखा ?" देवराज चौहान की आवाज कानों में पड़ी।

"ओह, अब्बा जान! जब्बार पास में है। उसने मोती खान की पहचान करा दी है।" जगमोहन बोला।

"मेरे ख्याल में तुम्हें वहीं रहकर नजर रखनी चाहिए। शायद वे दोनों आयें।"

"प्रोग्राम तो यही है।" जगमोहन ने कहा।

जब्बार की निगाह बाहर थी।

देवराज चौहान ने फोन बन्द किया उधर से तो जगमोहन ने फोन जेब में रखा।

"क्या कह रहे थे मियांजी ?"

"मोती खान के बारे में बता रहे थे कि वह अभी ऊपर गया है।"

"मियांजी भी यहाँ नजर रखवा रहे हैं ?"

"ये उनकी पुरानी आदत है कि वह कभी भी चैन से नहीं बैठते।"

"मियांजी कश्मीर में हैं या जम्मू में ?"

"उनका कुछ पता नहीं चलता कि वह कब कहाँ पर हों। जब जरूरत पड़ती है मेरे से मिल लेते हैं।" जगमोहन ने कहा और मोबाइल निकाल कलाम को फोन करके कहा, "तुम सब अपनी जगह पर हो ?"

"जी हाँ!"

"वहीं रहो। हम ठिकाने पर नजर रख रहे हैं, कुछ हुआ तो बताएँगे।" कहकर जगमोहन ने फोन बन्द किया।

"मोती खान अब बाहर आ गया। वह खाली हाथ है। ब्रीफकेस भीतर दे आया है।"

"हम यहीं पर नजर रखेंगे। मोती खान से हमें कुछ भी मतलब नहीं।"

"तुम्हारे अब्बा को कैसे पता चला कि मोती खान पैसा लेकर इस ठिकाने पर आएगा ?" जब्बार ने पूछा।

"ऐसी बातें मैं अब्बा जान से नहीं पूछता।

□□□

डेढ़ बजे एक आदमी उन्हीं सीढ़ियों से उतरकर फुटपाथ पर आया। उसने वह ही ब्रीफकेस थाम रखा था जो कि मोती खान लाया था। उस पर सबसे पहले जगमोहन की नजर पड़ी।

"उसने वही ब्रीफकेस थाम रखा है जो मोती खान लाया था।" जगमोहन मोबाइल निकालते कह उठा।

जब्बार ने उधर देखा और कह उठा-

"हाँ, वही ब्रीफकेस है! वह रशीद-मस्तान को पैसा पहुँचाने जा रहा है।"

जगमोहन ने मोबाइल पर कलाम से बात की।

"तुमने उस आदमी को देखा, जो अभी-अभी सीढ़ियाँ उतरकर फुटपाथ पर पहुँचा है?"

"हाँ, वह मेरी नजर में है।"

"उसके पीछे जाना है। ब्रीफकेस में पैसा है। वह रशीद-मस्तान के पास जा रहा है।"

"ठीक है! हम उसके पीछे जायेंगे।"

"हम भी हैं पीछे कलाम। परन्तु वह नजर से खिसकना नहीं चाहिए। मैं रशीद-मस्तान तक पहुँचने का मौका गंवाना नहीं चाहता।" कहकर जगमोहन ने मोबाइल जेब में रखा और पीछे से बाहर निकलकर ड्राइविंग सीट पर आ बैठा।

जब्बार पीछे बैठा उस आदमी पर नजर रख रहा था।

वहाँ पहले से ही खड़ी सफेद मारुति में वह बैठ रहा था। वह अकेला था। ब्रीफकेस उसने बगल की सीट पर रख दिया था।

जगमोहन ने कार स्टार्ट की। वह सफेद मारुति आगे बढ़ी तो जगमोहन ने भी अपनी कार आगे बढ़ा दी।

पीछा शुरू हो गया।

दोनों कारों के बीच दो पहिया वाहन थे। कारों में फासला था।

"कलाम की गाड़ी देखो, कहाँ पर है?" जगमोहन बोला।

जब्बार ने काले शीशों के पार आगे-पीछे नजरें दौड़ाई। फिर कह उठा।

"हमारे पीछे उसकी वैन है।"

जगमोहन सावधानी से कार के पीछे लगा रहा। सफेद मारुति कई मोड़ों से मुड़ रही थी।

"तुम्हारा क्या ख्याल है जब्बार कि ये रशीद-मस्तान के पास ही जा रहा होगा।" जगमोहन ने पूछा।

"कह नहीं सकता। परन्तु पैसा तो उन दोनों के पास ही जाना है।"

"इसका मतलब वह दोनों बड़ा खान का ठिकाना जानते हैं।"

"कैसे ?"

"अंत में पैसा बड़ा खान तक ही पहुँचाया जाता होगा।"

"हाँ ! क्या पता बड़ा खान किस तरह इनसे पैसा लेता होगा। अपने आदमी भी भेज सकता है पैसा लेने के लिए। बड़ा खान सतर्क रहने वाला इंसान है और ये दोनों हर वक्त फिल्ड में रहते हैं। ऐसे में जरूरी नहीं कि ये दोनों बड़ा खान का ठिकाना जानते हों।"

जगमोहन कुछ नहीं बोला।

"परन्तु ये दोनों बड़ा खान के बारे में काफी जानकारी रखते होंगे।"

आधे घण्टे तक पीछा जारी रहा। सफेद मारुति वाले को पीछा करने के बारे में पता नहीं चल सका। वह सावधान नहीं था और सोच भी नहीं सकता होगा कि उसका पीछा भी किया जा सकता है।

सफेद मारुति वाला ऐसे शो रूम पर पहुँचा जहाँ टी०वी०, फ्रिज मिलते थे। उसने बाहर ही गाड़ी रोकी और ब्रीफकेस थामे उतरकर शो रूम में प्रवेश कर गया। जगमोहन ने सफेद मारुति के पीछे ही कार रोकी और इंजन बन्द करके उतरता हुआ बोला।

"मैं अभी आया।" इसके साथ ही जगमोहन तेज-तेज कदमों से शो रूम में प्रवेश कर गया।

जब्बार शो रूम पर नजरें टिकाये कार में ही बैठा रहा।

जगमोहन ने शो रूम के भीतर प्रवेश किया और ठिठककर हर तरफ नजरें घुमाई।

काफी बड़े हॉल में वह शो रूम था। कतारों में फ्रिज और टी०वी० रखे हुए थे। दस-पंद्रह ग्राहकों की भीड़ भी थी वहाँ। जगमोहन हौले-हौले आगे बढ़ने लगा। उसकी निगाह सफेद मारुति वाले को ढूंढ रही थी।

जल्दी ही वह नजर आ गया, जो कि हॉल के कोने में बने एक केबिन से बाहर निकला था। अब वह खाली हाथ था। यानी कि ब्रीफकेस केबिन के भीतर किसी को दे आया था।

अब वह बाहर की तरफ बढ़ रहा था।

जगमोहन ने फोन निकालकर कलाम से बात की।

"वह बाहर आ रहा है, उसे जाने दो। अब उसका पीछा करने की जरूरत नहीं।"

तभी शो रूम का सेल्समैन उसके पास पहुँचा।

"कहिये जनाब, क्या दिखाऊँ ?"

"दो बड़े फ्रिज लेने हैं, परन्तु मेरी बीवी अभी तक नहीं आई। उसने यहीं मिलना था।"

"तब तक मैं आपको फ्रिज दिखा देता हूँ।"

"कोई फायदा नहीं। मेरी पसन्द की चीज मेरी बीवी को पसन्द नहीं आती। वह ही आकर पसन्द करे तो बेहतर होगा।" जगमोहन मुस्कुराया।

सेल्समैन उसके पास से हट गया।

जगमोहन बाहर पहुँचा। सफेद मारुति वहाँ नहीं थी। जगमोहन कार को स्टेयरिंग सीट पर आ बैठा और पीछे बैठे जब्बार से कहा।

"ये जगह क्या है ?"

"मैं नहीं जानता। मैंने पहली बार जाना है कि ये ठिकाना भी है बड़ा खान का।" जब्बार बोला।

"इसका मतलब तुम बड़ा खान के सब ठिकाने नहीं जानते।"

"मैं बड़ा खान का आदमी नहीं हूँ। उसके काम अवश्य करता था। ऐसे में मुझे जितनी जानकारी होनी चाहिए, उतनी ही है। तो वह आदमी ब्रीफकेस शो रूम के भीतर किसे दे गया है ?" जब्बार ने पूछा।

"भीतर बने केबिन से मैंने उसे निकलते देखा । तब वह खाली हाथ था ।" जगमोहन ने कहा ।

"अब हम किस पर नजर रखेंगे ?"

"ब्रीफकेस पर ।" जगमोहन ने गंभीर स्वर में कहा, "वह बड़ा ब्रीफकेस है । छिपाकर नहीं ले जाया जा सकता । मुझे पूरा यकीन है कि जल्दी ही कोई आदमी वह ब्रीफकेस लेकर यहाँ से निकलेगा । हमें उसके पीछे जाना होगा । परन्तु एक बात समझ नहीं आई ।"

"क्या ?"

"साठ लाख जैसी मामूली रकम को इतने रहस्य-भरे ढंग से क्या इधर-उधर किया जा सकता है ?"

"क्योंकि ये पैसा रशीद-मस्तान के हवाले करना है । मोती खान ने दिया है । इतनी सावधानी तो जरूरी है ।

तभी उसकी कार के पीछे एक कार आ रुकी । जगमोहन ने पीछे देखने वाले शीशे पर नजर मारी । पीछे वाली कार में उसे ड्राइवर के अलावा पीछे सीट पर दो आदमी बैठे दिखे । जगमोहन ने वहाँ से नजर हटाकर शो रूम पर नजर मारी फिर कह उठा-

"यहाँ हमें लंबा इंतजार करना पड़ सकता है ।"

पीछे रुकी कार का ड्राइवर बाहर निकला और शो रूम की तरफ बढ़ गया । दो मिनट बाद जब वह वापस शो रूम से बाहर निकला तो उसके हाथों में वही ब्रीफकेस दबा था । जब्बार उसका चेहरा देखते ही चिहुँक पड़ा । आँखों में खतरनाक चमक नाची । उसके होंठ से निकला-

"ये तो रशीद-मस्तान का ड्राइवर है ।"

"ब्रीफकेस इसके पास है, ओह ! ये तो पीछे रुकी कार का ड्राइवर है । उस कार में पीछे दो आदमी बैठे हैं ।" जगमोहन के होंठों से निकला ।

जब्बार ने फौरन गर्दन घुमाकर पीछे के काले शीशे के पार, पीछे खड़ी कार में देखा । अगले ही पल उसके बदन में चीटियाँ रेंगती चली गई । रशीद और मस्तान पीछे की कार में, पीछे की सीट पर बैठे दिख गए थे ।"

"वह... वह पीछे बैठे हैं ।" जब्बार के होंठों से निकला ।

"कौन ?"

"रशीद-मस्तान ।" जब्बार ने वापस गर्दन घुमा ली । चेहरे पर कठोरता आ गई थी ।

जबकि जगमोहन की आँखों में खतरनाक चमक लहरा रही थी ।

"हमने बहुत जल्दी उन्हें ढूंढ निकाला ।" जगमोहन ने तुरन्त मोबाइल निकाला और कलाम का नम्बर मिलाया ।

कार के काले शीशे होने की वजह से बाहरी लोग, भीतर ठीक से नहीं देख पा रहे थे ।

"कहो ।" कलाम के कानों में आवाज पड़ी ।

"मेरी कार के पीछे एक कार खड़ी है ।"

"हाँ । देखा है उसे ।"

"रशीद और मस्तान उसमें हैं । उसका ड्राइवर भीतर से वही ब्रीफकेस लाया है ।"

"समझ गया । हाँ, मैंने उस आदमी को देख लिया जो ब्रीफकेस कार के खुले शीशे में से भीतर रख रहा है ।"

"इस वक्त वह लापरवाह है ।" जगमोहन सख्त स्वर में बोला, "यहीं पकड़ लो उन्हें । ले चलो वैन में बिठाकर ।"

"ठीक है !"

जगमोहन ने फोन जेब में रखा ।

"वे दोनों खतरनाक हैं ।" जब्बार बोला, "परन्तु इस वक्त उन पर काबू पाया जा सकता है ।"

"मेरे आदमी सब काम ठीक से करना जानते हैं ।"

□□□

ड्राइवर को आते पाकर मस्तान ने पीछे का शीशा नीचे कर लिया था । पास आकर ड्राइवर ने ब्रीफकेस खिड़की से भीतर सरकाया तो मस्तान ने ब्रीफकेस थामकर रशीद की तरफ सरका दिया और खुद शीशा ऊपर करने लगा । रशीद ने ब्रीफकेस खोला तो उसे नोटों की गड्डियों से भरा पाया ।

बन्द करके उसने ब्रीफकेस पाँव के पास ही रख लिया। तब तक ड्राइवर अपनी सीट पर आ बैठा था। परन्तु कार स्टार्ट नहीं कर सका। उसके सीने पर खुली खिड़की से गन की नाल आ लगी थी। वह वैसे का वैसा ही थमकर रह गया। ये देखकर रशीद और मस्तान चौंके। रशीद ने फुर्ती से रिवॉल्वर निकाली कि तभी कारों के दोनों तरफ के दरवाजे बाहर से खोल लिये गए। गनें उन पर तन गईं। रशीद और मस्तान के चेहरों पर खतरनाक भाव दिखने लगे।

"चलो उतरो।" एक गन वाले ने दाँत भींचकर कहा।

"जानते हो तुम किससे उलझ रहे हो?" मस्तान गुर्रा उठा।

"रशीद और मस्तान से। रिवॉल्वर रख दो और बाहर आ जाओ।" वह पुनः गुर्रा उठा।

"कौन हो तुम लोग?"

"आजादी-ए-कश्मीर संगठन है हमारा।"

"तुम?" रशीद चौंका, "तुम लोगों ने ही जब्बार को हमारे हाथों से छीना था।"

"बाहर आओ।" उसने खतरनाक स्वर में कहा।

परन्तु रशीद ने हाथ में दबी रिवॉल्वर से गोली चला दी।

तेज धमाके के साथ गोली गनमैन की छाती में जा लगी।

वह चीखते हुए पलटकर जमीन पर जा गिरा।

रशीद ने दूसरी तरफ खड़े गनमैन पर गोली चलानी चाही। वह गनमैन कलाम था। मस्तान ठगा सा बैठा था। अपने आदमी को गोली लगते देखकर कलाम ने उसी पल गन वाला हाथ आगे किया। रशीद की छाती पर गन रखी और घोड़ा दबा दिया। तड़-तड़ गोलियाँ निकलीं और रशीद की छाती को उधेड़ गईं। दो पलों में ही रशीद शांत पड़ गया। मस्तान जैसे पागल सा हुआ बैठा था। उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था। पागल हुए कलाम ने मस्तान के सिर के बाल मुट्ठी में जकड़े और बाहर खिंच लिया। बाहर खड़े आदमियों ने मस्तान को थाम लिया। मस्तान की तलाशी ली गई। दो रिवॉल्वर और एक चाकू मिला। उसके बाद वह मस्तान को घेरे चंद

कदमों पर खड़ी वैन की तरफ बढ़ गए। कलाम दूसरी तरफ गिरे पड़े अपने आदमी के पास पहुँचा। गोली उसकी छाती पर लगी थी। वह कराह रहा था। दो आदमी पास आये तो उन्हें कहा, "इसे उठाकर वैन में डालो।"

घायल को फौरन उठाकर वैन में ले जाया गया।

उसने ड्राइवर की छाती से गन हटा ली और सब वैन में जा बैठे।

वैन सड़क पर पहुँचते ही तेजी से दौड़ पड़ी। सहमे से खड़े लोग ये सब देख रहे थे। चंद पलों में ही सब कुछ हो गया था। ऐसा खून-खराबा कश्मीर की सड़कों पर हो जाना बड़ी बात नहीं थी। लोग जानते थे कि यहाँ के संगठन आपस में लड़ते-झगड़ते रहते हैं। तभी जगमोहन बाहर निकला। पीछे वाली कार तक पहुँचा। रशीद मरा हुआ पसरा पड़ा था। खून सीट पर इकट्ठा हो रहा था। जगमोहन ने भीतर पड़ा ब्रीफकेस उठाया जो कि काफी हद तक रशीद के खून से रंग गया था। वापस अपनी कार में पहुँचा। बगल वाली सीट के पास पायदान पर रखा ब्रीफकेस और कार स्टार्ट करके सड़क पर दौड़ा दी।

पीछे वाले सीट पर बैठे जब्बार के चेहरे पर मुस्कान फैल गई।

"तुम्हारे आदमियों ने अच्छी तरह काम किया है।" जब्बार बोला।

"वह अच्छी तरह ही काम करते हैं।"

"रशीद मर गया। उसने तुम्हारे साथी पर गोली चला दी थी।"

"मेरे आदमी रहम करना नहीं चाहते।"

"तुमने भी मौका नहीं गंवाया और नोटों वाला ब्रीफकेस उठा लाये।"

"पैसे को छोड़ता नहीं हूँ। पैसा हमारी जरूरत है। हमारे संगठन के काम आता है।"

"मुझे ये बात भी अच्छी लगी कि तुम लोग अपने घायल साथी को, वहाँ छोड़कर भागे नहीं।"

"हम अपने साथियों की पूरी कद्र करते हैं। परन्तु ये बताओ कि हम जो जानकारी चाहते हैं, उस जानकारी को पाने के लिए रशीद की मौत के साथ हमें क्या फर्क पड़ेगा?" जगमोहन ने पूछा।

"कोई फर्क नहीं पड़ेगा। जो रशीद जानता था, वह मस्तान जानता है।"

□□□

सब ठिकाने पर पहुँचे।

सबसे पहले घायल के लिए डॉक्टर बुलाया गया। तीन गनमैन मस्तान को लेकर एक कमरे में चले गए। जगमोहन और जब्बार ने घायल को देखा। गोली दायीं तरफ छाती की हड्डियों में फंसी हुई थी। डॉक्टर फौरन उसका ऑपरेशन करने में लग गया था। कलाम को अपने घायल साथी की बहुत चिंता थी। वह गुस्से में था।

जब्बार ने जगमोहन से कहा-

"मस्तान से मैं पूछताछ करूँगा।"

"तुम ?"

"हाँ !" जब्बार के चेहरे पर दरिंदगी नाच उठी, "मुझे बड़ा खान से अपना बदला भी लेना है। उसने सूरजभान की बातों में आकर मुझे गद्दार समझा। मुझे शहीद बनाने जा रहा था वह।"

"तुम गुस्से में उसे मार भी सकते हो और हम जानकारी से मरहूम रह जायेंगे।"

"ऐसा नहीं होगा। मैं जानता हूँ कि हम उसे क्यों लाये हैं।" जब्बार गुर्रा उठा।

"ठीक है चलो। मैं तुम्हारे साथ ही रहूँगा। तुम ज्यादा आगे बढ़े तो तुम्हें रोक दूँगा।"

तभी जगमोहन का मोबाइल बजा।

"तुम क्या समझते हो कि मस्तान आसानी से मुँह खोल देगा।" जब्बार ने दाँत भींचकर कहा।

"उसके सामने रशीद को जिस तरह मारा गया, उससे वह जरूर डर गया होगा।" कहते हुए जगमोहन ने फोन निकाला, "हैलो !"

"मस्तान तुम्हारे हाथ लग गया ?" देवराज चौहान की आवाज कानों में पड़ी।

"हाँ अब्बाजान ! मस्तान हमारे पास है।"

"उसका मुँह खुलवाओ और बड़ा खान के बारे में सारी जानकारी निकलवाओ।"

"यही करने जा रहे हैं अब्बाजान! परन्तु जब्बार कहता है कि मस्तान का मुँह वह खुलवायेगा। जब्बार गुस्से में है।"

दो क्षणों की खामोशी के बाद देवराज चौहान की आवाज पुनः कानों में पड़ी।

"हो सकता है जब्बार तुमसे कोई खेल खेल रहा हो। वह अभी भी बड़ा खान का वफादार हो और मुँह खोलने से पहले ही मस्तान को मार देना चाहता हो। जब्बार पर यकीन मत करना और मस्तान के पास उसे अकेला मत छोड़ना।"

"ठीक है अब्बाजान!"

"जो भी जानकारी मिले मस्तान से वह मुझे बताना।" इधर से देवराज चौहान ने कहा और फोन बन्द कर दिया।

जगमोहन फोन को जेब में रखता जब्बार से बोला-

"अब्बाजान को जाने इतना भरोसा क्यों है तुम पर।"

"क्या कहा मियांजी ने?"

"वह कहते हैं जब्बार जो करेगा ठीक करेगा। ठीक है, चलो मस्तान के पास।"

दोनों उस कमरे से बाहर निकलकर आगे बढ़े कि सामने से कलाम आ गया।

"तुम्हारे साथी की हालत कैसी है?" जगमोहन ने पूछा।

"अभी कुछ पता नहीं। डॉक्टर ऑपरेशन करके गोली निकाल रहा है।" कलाम ने कहा।

"तुम उसका ध्यान रखो। हम मस्तान से बात करने जा रहे हैं।"

"मैंने रशीद को मारकर गलती तो नहीं की। उस वक्त मुझे गुस्सा आ गया था अपने साथी को गोली लगते देखकर।"

"रशीद की मौत से हमें नुकसान नहीं पहुँचा। अगर तुम मस्तान को भी मार देते तो तब नुकसान ही नुकसान था।"

जगमोहन और जब्बार उस कमरे में जा पहुँचे जहाँ मस्तान को रखा था। तीन आदमी गनें थामे उसके सिर पर सवार थे।

मस्तान गुस्से में दिख रहा था। परन्तु बेबस भी लग रहा था।

जब्बार पर निगाह पड़ते ही मस्तान चिहुँक उठा।

"तुम ?" मस्तान के होंठों से निकला, "गद्दार।"

जब्बार के चेहरे पर दरिंदगी नाच उठी।

"ये संगठन आजादी-ए-कश्मीर का है मस्तान।" जब्बार खतरनाक लहजे में कह उठा, "इस संगठन ने मुझे सहारा दिया। वरना बड़ा खान ने तो मेरे लिए सारे दरवाजे बन्द करवा दिए थे।"

मस्तान के होंठों से गुर्राहट निकली।

"बड़ा खान ने तो मुझे शहीद बनाने की तैयारी कर ली थी। जबकि मैं गद्दार नहीं हूँ। इंस्पेक्टर सूरजभान यादव के साथ मेरी कोई गोटी फिट नहीं थी। उसने मुझे मुफ्त में ही जेल से फरार करवा दिया था और बड़ा खान सोचता रहा कि जरूर बीच में कोई बात है। लेकिन ऐसा कुछ नहीं था। मैं बड़ा खान का वफादार था।"

"और अब ?"

"अब हालात बदल गए हैं। ये बात तुम भी अच्छी तरह समझते हो कि...।"

"तो तुम आजादी-ए-कश्मीर का सहारा लेकर बड़ा खान के खिलाफ काम कर रहे हो।"

"मैं इस संगठन का सदस्य बन चुका हूँ। मेरी वफादारी की इन्हें जरूरत थी और मुझे भी साबित करना था कि मैं इनका वफादार हूँ। इस संगठन की चाहत है कि हर उस संगठन को खत्म कर दें जो कश्मीर का माहौल खराब कर रहा है और इसके लिए सबसे पहले बड़ा खान के ही संगठन को चुना गया। अब देख ही रहे हो कि क्या हो रहा...।"

"गद्दार हो तुम।"

"ये बात तब मेरे पे जमती जब मैं बड़ा खान के लिए काम करता। बड़ा खान ने तो मेरे को दूध में से मक्खी की तरह निकालकर मुझे मारने की कोशिश की। वह मेरे को खत्म कर देना... ।"

"तुम पुलिस के साथ मिल गए थे। तुम... ।"

"छोड़ो। इन बातों का कोई अंत नहीं। इससे मिलो। ये अब्दुल्ला हैं। मियांजी का बेटा।" उसने जगमोहन की तरफ इशारा किया।

"मियांजी कौन ?" मस्तान के दाँत भिंच गए।

"आजादी-ए-कश्मीर के मालिक।"

"मैंने ये नाम कभी नहीं सुने।"

"इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। रशीद को शानदार मौत मिली।" जब्बार कड़वी हँसी हँसा।

मस्तान के चेहरे पर दर्द और गुस्सा आ ठहरा।

"तुम बचोगे नहीं जब्बार। बड़ा खान की ताकत जानते हुए भी तुमने उससे पंगा लिया।"

"मुझे आजादी-ए-कश्मीर की बात बहुत अच्छी लगी कि जो संगठन कश्मीर में दहशत फैला रहे हैं पहले उन्हें खत्म करो। कश्मीर से गोला-बारूद की आवाज आनी बन्द होगी तो दिल्ली तक हमारी आवाज पहुँचेगी। वरना गोला-बारूद में ही आवाज दबकर रह जायेगी।"

"तुम कुत्ते हो जब्बार। तुम तो... ।"

तभी जब्बार ने चीते की तरह झपट्टा मारा और मस्तान के सिर के बाल मुट्ठी में जकड़ लिए।

मस्तान तड़प उठा।

जब्बार दरिंदा लग रहा था। जगमोहन होंठ भींचे सतर्क सा पास ही खड़ा था।

"तूने ठीक कहा कि मैं कुत्ता ही हूँ।" जब्बार गुर्राया, "जब्बार के खौफ को भूल गया तू, जो मुझे गालियाँ दे रहा है। मैं वही जब्बार हूँ जिसके सामने तुम और रशीद आते थे तो संभल जाते थे। वही जब्बार हूँ मैं।"

सिर के बालों के खिंचाव के कारण, पीड़ा की वजह से मस्तान का चेहरा लाल सुर्ख हो उठा था। आँखों में भी लाली भर आई थी। पानी चमक उठा। परन्तु उसके दाँत भिंचे हुए थे।

"इस बात को मत भूलना कि अब तू जब्बार के सामने है।" जब्बार दाँत किटकिटा उठा, "बता बड़ा खान कौन है और उसका ठिकाना कहाँ है। वह कहाँ मिलता है। वह... ।"

"तू मेरे से कुछ भी नहीं जान सकता।" मस्तान चीखा।

जब्बार का घूँसा उसके चेहरे पर पड़ा। वह कुर्सी सहित नीचे जा गिरा। मस्तान संभलकर उठा और खतरनाक ढंग से जब्बार पर छलांग लगा दी। जब्बार ने उसे दोनों हाथों से रोका और घुटना उसकी टांगो के बीच दे मारा। मस्तान के होंठों से बुरी चीख निकली और फर्श पर जा गिरा। गहरी-गहरी साँसे लेने लगा।

"कोई गोली नहीं चलाएगा।" जब्बार गनमैनों से बोला, "ये मेरे लिए मामूली चीज है।"

मस्तान ने करवट ली और सीधा हो बैठा। तभी जब्बार ने जूते की ठोकर उसकी छाती पर मारी। मस्तान चीख कर फर्श पर जा लुढ़का।

"बड़ा खान को याद कर। बुला उसे। मैं भी देखता हूँ कि जब्बार के हाथों से वह तुझे कैसे बचाता है।"

मस्तान फिर उठा और जब्बार ने उसे मौका दिया खड़ा हो जाने का।

"बोल! बड़ा खान के बारे में बोल।" जब्बार दाँत पीस उठा।

"तू कुत्ता है।" मस्तान ने खतरनाक स्वर में कहा।

जब्बार की टांग घूमी। परन्तु इस बार मस्तान सतर्क था। मस्तान ने फुर्ती से जब्बार की टाँग पकड़ ली।

जब्बार जोरों से लड़खड़ाया और नीचे जा गिरा। टाँग छोड़कर मस्तान उस पर झपट पड़ा। परन्तु जब्बार तेजी से करवट लेता चला गया और मस्तान फर्श से जा टकराया। अगले ही पल जब्बार उछलकर खड़ा हुआ और नीचे पड़े मस्तान की गर्दन पर जूता रखकर दबाव बढ़ा दिया। मस्तान तड़पा।

“बड़ा खान यूँ ही जब्बार का दीवाना नहीं था मस्तान ।” जब्बार कह उठा, “कुछ तो बात होगी जब्बार में । तेरे जैसे तीन को एक साथ मसल दूँ । बता, बड़ा खान के बारे में बता कि वह कहाँ मिलेगा ?”

गले पर जूते का दबाव बढ़ने से, साँस रुकने से मस्तान का चेहरा लाल हो उठा था । जब्बार ने उसकी गर्दन से जूता हटा लिया । मस्तान मुँह खोले गहरी-गहरी साँसे लेने लगा । उसकी हालत बुरी हो रही थी ।

“बता बड़ा खान कहाँ मिलता है ?” कहने के साथ ही जब्बार ने उसकी कमर में ठोकर मारी ।

मस्तान चीख उठा । तड़प उठा । फिर मस्तान हिम्मत करके उठने लगा । जब्बार खूनी नजरों से उसे देखे जा रहा था । मस्तान उठ खड़ा हुआ । गहरी-गहरी साँसे ले रहा था ।

उसी पल जब्बार की टाँग घूमी और तेज वेग के साथ उसके पेट में जा पड़ी । मस्तान गला फाड़कर चीखा और उछलकर पीठ के बल जा गिरा ।

जब्बार उसके सिर पर जा पहुँचा और गुर्राया ।

“रशीद आसान मौत मर गया । पर तेरी मौत उतनी ही बुरी होगी ।

“मैं पूछता रहूँगा, तुझे मारता रहूँगा । इसी तरह तड़प-तड़प कर तू मर... ।”

“मैं नहीं जानता बड़ा खान कहाँ रहता है ।”

“तेरा क्या ख्याल है कि तेरा झूठ सुनकर मैं शांत हो जाऊँगा । खुश हो जाऊँगा ।” जब्बार ने मौत भरे स्वर में कहा फिर पलटकर वहाँ खड़े गनमैनों से कह उठा, “चाकू और नमक मिर्च ले आओ । मैं इस हरामजादे को मरने नहीं दूँगा । तड़पाता रहूँगा ।”

गनमैन ने जगमोहन को देखा । जगमोहन के सिर हिलाने पर गनमैन बाहर निकल गया ।

“मैं सच में नहीं जानता कि बड़ा खान कहाँ रहता है । उसका ठिकाना नहीं जानता ।” मस्तान हांफता हुआ कह उठा, “जब भी वह मिलता है किसी ठिकाने पर आ जाता है या मुझे और रशीद को किसी ठिकाने पर बुला लेता था ।”

"अब तुम कहोगे कि मैं तुम्हारा भरोसा करूँ ?"

"हाँ ! मैं सच कह रहा... ।"

तभी जगमोहन कह उठा-

"हम बड़ा खान तक पहुँचना चाहते हैं। तुम हमें बताओ कि कैसे हम उस तक पहुँच सकते हैं ?"

"मैं नहीं जानता ।"

"वह कहाँ आता-जाता है ?"

"वह कभी भी, कहीं भी पहुँच जाता है। चूँकि उसे कोई पहचानता नहीं, इसलिए वह बेखौफ़ होकर घूमता है ।"

"उससे कौन-कौन लोग मिलते हैं ?"

"नहीं पता ।"

"ये हरामजादा आसानी से मानने वाला नहीं ।" जब्बार गुर्राया, "नमक-मिर्च और चाकू ले आने दो । तब मैं इसके जिस्म पर चीरा लगाऊँगा और उसमें नमक-मिर्च भरूँगा। तब देखना कैसे तड़पता है ये ।"

"मेरा विश्वास करो जब्बार, मैं सच... ।"

"चुप साले कुत्ते ।" जब्बार दाँत किटकिटा उठा ।

"ये तो हो ही नहीं सकता कि तुम बड़ा खान से मिलने वालों में से किसी को भी न जानते होगे ।"

"रोशनआरा जहाँ ?" जगमोहन के होंठ सिकुड़े, "ये कौन सी जगह है ?"

"जगह नहीं, ये औरत का नाम है । रोशनआरा श्रीनगर में लड़कियों से धंधा कराती है । बड़ा खान इससे लड़कियाँ मँगवाता रहता है रात भर के लिए। रोशनआरा बड़ा खान को मुस्तफा के नाम से जानती है। बड़ा खान लड़की मँगवाने के लिये खुद को मुस्तफा कहता है ।"

"लड़कियाँ कहाँ मँगवाता है बड़ा खान ?"

"ये मैं नहीं जानता ।"

"तो तुम कैसे जानते हो कि बड़ा खान वहाँ से लड़कियाँ मँगवाता है ?"

"मेरे और रशीद के सामने उसने कई बार रोशनआरा से बात की । इसलिए ये हमें पता है ।"

"जब्बार, इसके जख्मों पर नमक-मिर्च लगाओ और इसके मुँह से सारी बातें निकलवाओ।"

"जो भूल गया है। वह भी बताएगा।" जब्बार खतरनाक स्वर में कह उठा।

तभी दरवाजा खुला और गनमैन ने भीतर प्रवेश किया। वह चाकू, नमक-मिर्च ले आया था। जगमोहन कमरे से बाहर निकला और मोबाइल निकालकर देवराज चौहान का नम्बर मिलाने लगा। वह देवराज चौहान को जहाँ आरा के बारे में बता देना चाहता था।

□□□

जगमोहन से बात करने के बाद देवराज चौहान होटल के कमरे से निकला और पैदल ही आगे बढ़ गया। अब उसे तलाश थी एक एडवरटाइजिंग एजेंसी की, जो कि अखबारों में इश्तिहार देती हो। शाम के साढ़े चार बज रहे थे। आधे घण्टे बाद ही वह एक दुकान में मौजूद था। जहाँ फोटो स्टेट और टाइपिंग का भी काम होता था और अखबारों में इश्तिहार भी दिए जाते थे। देवराज चौहान ने वहीं से कागज-पेंसिल लेकर अखबार में इश्तिहार देने का मैटर लिख दिया। जो कि इस प्रकार था –

हकीम मुल्ख राज पंजाबी। खानदानी हकीम। अब श्रीनगर में, रॉयल होटल के कमरा नम्बर 304 में। विशेषज्ञ एच०आई०वी० और एड्स में। हकीम साहब ने निजी तौर पर एड्स और एच०आई०वी० की दवा ईजाद कर रखी है जो कि महज सात दिनों में एच०आई०वी० और एड्स के असर को खत्म कर देती है। एक सप्ताह तक हकीम जी रॉयल होटल के कमरा नम्बर 304 में सुबह से शाम तक मिलेंगे। शर्तिया इलाज। अपनी बीमारी दूर करें।

दुकान वाले ने मैटर पढ़ा तो कह उठा-

"एड्स और एच०आई०वी० की दवा सच में खोज ली है हकीम साहब ने।" उसके चेहरे पर अविश्वास था।

"हाँ! एक बार आजमाकर देखो।"

"लेकिन मुझे तो ये बीमारी है ही नहीं।"

"तो इश्तिहार बुक करो। यहाँ के स्थानीय अखबारों में पाँच दिन तक ये इश्तिहार आना चाहिए।"

उसने हिसाब लगाकर पैसे लिये और कहा कि कल के अखबारों में इश्तिहार छप जायेगा। देवराज चौहान वहाँ से बाहर आ गया।

उसके बाद देवराज चौहान रोशनआरा जहाँ का पता लगाने लगा जो लड़कियों से जिस्मानी व्यापार कराती थी। दो घण्टे बाद एक टैक्सी ड्राइवर मिला। उसने कहा कि वह उसे रोशनआरा जहाँ तक पहुँचा देगा। बदले में पाँच सौ लेगा।

देवराज चौहान उसकी टैक्सी में बैठ गया।

आधे घण्टे बाद टैक्सी वाले ने टैक्सी रोकी और उसे बताया कि सामने वाली बिल्डिंग रोशनआरा जहाँ की है और यहीं से वह अपना धंधा चलाती है। पुलिस सब जानती है, परन्तु रोशनआरा जहाँ नोटों से उसका मुँह बन्द रखती है।

देवराज चौहान ने उसे पाँच सौ का नोट दिया और उस बिल्डिंग की तरफ बढ़ गया।

शाम के साढ़े छः बज रहे थे। अँधेरा घिर चुका था। सर्दी बढ़ रही थी। इस इलाके में ज्यादा भीड़-भाड़ नहीं थी। वह तीन मंजिला फैली हुई इमारत थी। इमारत की तीसरी मंजिल लकड़ी की बनी दिख रही थी। देवराज चौहान दरवाजे पर पहुँचा। बाहर एक बल्ब जल रहा था। दरवाजा बन्द था। देवराज चौहान ने दरवाजे के पास ही लगा कॉलबेल का स्विच दबा दिया। भीतर कहीं बेल बजने की मध्यम सी आवाज आई।

कुछ पल बीते की दरवाजा खुला। दरवाजा खोलने वाली पच्चीस बरस की खूबसूरत औरत थी। वह मुस्कुराई।

"रोशनआरा जहाँ से मिलना है।" देवराज चौहान ने कहा।

"आप बिल्कुल ठीक जगह आये हैं।" वह पीछे हटती हुई बोली, "भीतर आइये। बाहर सर्दी बहुत है।"

देवराज चौहान भीतर आया तो वह दरवाजा बन्द करके बोली-

"जनाब पहली बार यहाँ आये हैं ?"

"हाँ !"

"कश्मीर के तो नहीं लगते । बाहर से आये हैं कश्मीर में ।" उसके चेहरे पर अदा से भरी मुस्कान थी ।

"ठीक समझीं आप । रोशनआरा जहाँ से मेरी बात करवा दीजिये ।"

"उनकी क्या जरूरत है, आपकी समस्या का मैं ही हल करा दूँगी । हमारे यहाँ हर तरह की लड़कियाँ आपको मिलेंगी । आठ-दस तो अभी यहीं पर मौजूद हैं । पन्द्रह साल से लेकर पच्चीस तक । सब खूबसूरत हैं और कश्मीरी हैं । दरअसल बाहर से आने वाले ग्राहकों की चाहत कश्मीरी लड़कियाँ ही होती हैं । चलिए मैं आपको लड़कियाँ दिखा दूँ ।"

"मैं रोशनआरा जहाँ से बात करना चाहता हूँ ।" देवराज चौहान के होंठों पर मुस्कान थी ।

"उनसे काम है ?" वह कुछ सम्भली ।

"हाँ !"

"मैडम को आप पहले से जानते हैं ?"

"नहीं !"

"पुलिस के अफसर हैं ?"

"नहीं !"

"आइये !" कहकर वह पलटी ।

देवराज चौहान उसके पीछे चल पड़ा ।

वह देवराज चौहान को लेकर इमारत की पहली मंजिल पर एक कमरे में जा पहुँची । वहाँ सत्तर बरस की औरत बेड पर टेक लगाये बैठी थी । उसने कमर तक कम्बल ले रखा था । एक नजर में देखने पर इस बात का एहसास हो जाता था कि उसकी टाँगे नहीं हैं घुटनों तक । यूँ वह सेहतमंद और चाक-चौबंद लग रही थी । उसने देवराज चौहान को देखा फिर युवती को ।

"मैडम ! ये आपसे बात करना चाहते हैं ।" वह बोली ।

"पुलिस वाले हो ?" मैडम ने पूछा ।

"नहीं ! कुछ व्यक्तिगत बात करनी थी अकेले में ।"

"बैठो !" उसने बेड के पास पड़ी कुर्सी की तरफ इशारा किया, "चाय-कॉफी-कहवा कुछ लोगे ?"

"हाँ ! कुछ भी मँगवा लीजिये ।"

"कहवा ले आ बन्नो !"

बन्नो चली गई । रोशनआरा देवराज चौहान को देखकर आँख का इशारा करके बोली-

"कहिये, क्या बात है ? मैंने आपको पहले कभी नहीं देखा ।"

देवराज चौहान उठा और कमीज के भीतर फँसा रखी पाँच-पाँच सौ की गड्डियाँ निकालकर बेड पर रखने लगा । पूरी दस गड्डियाँ निकालकर बेड पर रख दीं ।

रोशनआरा के चेहरे पर हैरानी के भाव उभरे । होंठ गोल हो गए । वह बोली-

"ये पाँच लाख रुपया है ।"

"हाँ !"

"इतने पैसे में तो मैं तुम्हें दो साल तक अपना दामाद बनाकर रख सकती हूँ ।"

"मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं है ।"

"हूँ !" उसकी निगाह अभी भी नोटों की गड्डियों पर थी, "क्या चाहते हो तुम ?"

"आपकी टाँगे नहीं हैं ?" देवराज चौहान ने पूछा ।

"पचास साल पहले मेरे शौहर ने काट दी थीं । क्योंकि मैं उसे छोड़कर किसी और से प्यार करने लगी थी ।" रोशनआरा जहाँ शांत स्वर में बोली, "मैं टाँगों के बिना भी खुश हूँ और अच्छा जीवन बिता रही हूँ । तुम अपनी बात कहो कि ये पाँच लाख मेरे सामने क्यों रख दिए । चाहते क्या हो ?"

"मेरा एक काम आपके द्वारा पूरा हो सकता है । वह करके आप पाँच लाख ले सकती हैं ।"

"अच्छा । बोलो क्या काम है ?" वह दिलचस्पी से बोली ।

"आपके पास ऐसी कोई लड़की होगी जो एच०आई०वी० या एड्स से पीड़ित हो ।"

रोशनआरा की आँखें सिकुड़ी । वह देवराज चौहान को देखने लगी ।

"है कि नहीं ?"

"है । दो हैं । परन्तु बीमारी की वजह से मैं उनसे धंधा नहीं कराती । वह यहीं रहती हैं । उनका खर्चा मैं ही उठाती हूँ ।"

"आपका एक कस्टमर है मुस्तफा ।"

"हाँ, है ।" रोशनआरा की आँखें सिकुड़ी ।

"उसे देखा है आपने ?"

"नहीं ! वह फोन करके ही लड़की मँगवाता है ।"

"महीने में कितनी बार ?"

"दस-बारह बार ।"

"पिछली बार कब उसने लड़की मंगवाई थी ?"

"तीन-चार दिन हो गए । आखिर तुम चाहते क्या हो ?"

"जो लड़कियाँ उसके पास जाती हैं, वह मुस्तफा को पहचानती हैं ?"

रोशनआरा कुछ पल खामोश रहकर कह उठी ।

"किसी ने भी उसका चेहरा नहीं देखा आज तक । वह किसी न किसी होटल के कमरे में लड़की को भेज देने को कहता है । उस कमरे में उसने अँधेरा कर रखा होता है । लड़की उसका चेहरा नहीं देख पाती । शुरु-शुरु में तो हमें अजीब बात लगी थी, परन्तु बाद में लड़कियों ने उसके चेहरे की परवाह करनी छोड़ दी थी । क्योंकि वह लड़कियों को हर बार काफी ज्यादा पैसा देता है ।"

"आप ये पाँच लाख रुपया कमाना चाहती हैं ?" देवराज चौहान बोला ।

"तुमने अभी तक नहीं बताया कि तुम चाहते क्या हो ?"

"मैं चाहता हूँ कि तुम एच०आई०वी० या एड्स पीड़ित लड़की को उसके पास भेजो ।"

"क्या ?" वह हैरान हुई ।

"ऐसा करोगी तो ये पाँच लाख तुम्हारा ।"

"ये... ये तो गलत बात होगी ।"

"सही-गलत छोड़कर पाँच लाख के बारे में सोचो । तुमने कहा कि पाँच लाख के बदले तुम दो साल तक मुझे दामाद बनाकर रख सकती हो । जब कि मैं तो तुम्हें बहुत ही मामूली काम करने को कह रहा हूँ ।"

रोशनआरा के चेहरे पर सोच के भाव नजर आ रहे थे ।

तभी बन्नो कहवा का गिलास थामे भीतर आई और देवराज चौहान को गिलास थमाया । उसकी नजरें नोटों की गड्डियों पर टिक चुकी थीं । वह रोशनआरा से कह उठी ।

"मैडम, ये सारा पैसा ले जाऊँ ?"

"अभी नहीं ।" देवराज चौहान बोला ।

बन्नो मुँह लटकाकर बाहर निकल गई । रोशनआरा ने देवराज चौहान को देखा । देवराज चौहान ने कहवे का घूँट भरा ।

"मुस्तफा से तुम्हारी दुश्मनी है ?"

"हाँ !"

"क्या ?"

"ये मैं नहीं बताऊँगा ।"

"तुम कौन हो ?"

"मेरे बारे में जानने की तुम्हें जरूरत नहीं । मैं छोटे से काम की तुम्हें बड़ी कीमत दे रहा हूँ । सोचो ।"

"ठीक है ! तुम्हारा काम हो जायेगा ।" रोशनआरा बोली ।

"मेरे से धोखेबाजी की तो अंजाम तुम जानती ही हो ।" देवराज चौहान ने धमकी भरे स्वर में कहा ।

"तुमने जैसा कहा है वैसा ही होगा । इस बार मुस्तफा के पास एड्स वाली लड़की ही भेजूँगी ।"

"तो ये पाँच लाख तुम्हारा । रख लो ।"

"शुक्रिया !" वह मुस्कुराई ।

देवराज चौहान ने कहवे का गिलास एक तरफ रखा और जेब से रिवॉल्वर निकाली ।

“ये देख लो। मैं टाँगे काटने में विश्वास नहीं रखता। सिर में गोली मारूँगा अगर काम मेरे मुताबिक न हुआ तो।”

“निश्चिन्त रहो। मुस्तफा के पास इस बार एड्स वाली लड़की ही भेजी जायेगी।”

“अपना मोबाइल नम्बर बताओ।”

रोशनआरा ने बताया।

“चलता हूँ। फोन करके तुमसे पूछता रहूँगा कि मुस्तफा का फोन आया कि नहीं।”

□□□

मस्तान की हालत बहुत बुरी हो रही थी।

जब्बार ने उस पर जरा भी रहम नहीं किया था। शरीर पर जगह-जगह चाकू से काटकर, वहाँ पर नमक-मिर्च डाली गई थी और मस्तान पानी बिना मछली की तरह तड़प रहा था। चीखा रहा था। उसका सारा शरीर खून से भरा पड़ा था। फर्श पर भी कुछ खून बिखरा पड़ा था। वह इस वक्त अंडरवियर में था। फर्श पर पड़ा वह रह-रहकर चीख उठता था। रो रहा था, तड़प रहा था मस्तान। परन्तु जब्बार को उस पर रहम नहीं आया था।

जगमोहन और तीनों गनमैन कमरे में ही मौजूद थे।

रात हो चुकी थी। मस्तान ने बड़ा खान के बारे में कई बातें बताई थीं, जो कि काम-धंधे से वास्ता रखती थीं, परन्तु ये नहीं बताया कि बड़ा खान का ठिकाना कहाँ है। वह कहाँ मिलेगा। इस सवाल के जवाब में ये ही कहता रहा कि वह नहीं जानता कि बड़ा खान कहाँ मिलेगा। इस वक्त मस्तान पस्त हाल में पड़ा था।

जब्बार उसके पीछे हाथ धोकर पड़ चुका था।

तभी दरवाजा खोलकर कलाम ने भीतर प्रवेश किया।

“अब तुम्हारे आदमी का क्या हाल है ?” जगमोहन ने पूछा।

“उसकी छाती से गोली निकालकर बैंडिज कर दी गई है ।” कलाम बोला, “डॉक्टर कहता है कि अगले चौबीस घण्टे निकाल गया तो बच जायेगा ।

इसने कुछ बताया बड़ा खान के ठिकाने के बारे में ?”

“नहीं ! कहता है नहीं पता कि बड़ा खान का ठिकाना कौन सा है । वह कहाँ रहता है ।”

“छोड़ना मत इस हरामजादे को ।” कलाम गुर्राया ।

“चिंता मत कर ।” जब्बार गर्दन घुमाकर कलाम को देखकर खतरनाक स्वर में कह उठा, “इसे तड़पाने का काम मेरा है और मरने भी नहीं दूँगा । कमीना मुझे गद्दार कहता है ।”

“मुझे छोड़ दो ।” मस्तान रो पड़ा ।

“बड़ा खान के लिए काम करते हुए तूने हमेशा अपने को दादा समझा । जाने कितनों को मारा तूने । लेकिन अब तू मेरे हाथ के नीचे है । जब तक तू बड़ा खान का ठिकाना नहीं बताएगा, तब तक तुझे... ।”

“मैं नहीं जानता ।” मस्तान क्षीण स्वर में कह उठा ।

“तू सब जानता है ।”

“जानता होता तो बता देता । मेरे में यातना सहने की हिम्मत नहीं है ।”

“मैं तेरी बातों में नहीं... ।”

तभी फोन बज उठा । फोन बजने की आवाज मस्तान के उतरे कपड़ों में से आ रही थी । कलाम दरवाजा खोलकर बाहर निकल गया । जगमोहन आगे बढ़ा और मस्तान की पैंट की जेब से मोबाइल निकाला ।

फोन बजे जा रहा था ।

“बड़ा खान का हो सकता है ।” जब्बार ने कहा ।

जगमोहन ने फोन कॉलिंग स्विच दबाकर कान से लगाते कहा-

“हैलो !”

दूसरी तरफ से खामोशी रही ।

“हैलो !” जगमोहन पुनः बोला ।

"कौन हो तुम ?" वह आवाज बड़ा खान की ही थी। परन्तु जगमोहन उस आवाज को नहीं पहचानता था।

"तुम कौन हो ?"

"ये फोन मस्तान का है।"

"तुम कौन हो ?" जगमोहन की आँखें सिकुड़ चुकी थीं।

"बड़ा खान।"

जगमोहन के दाँत भिंच गए।

"मस्तान कहाँ है ?" बड़ा खान की आवाज कानों में पड़ी।

"मेरे पास।"

"तुम कौन हो ?"

"अब्दुल्ला। आजादी-ए-कश्मीर नाम का संगठन मेरे अब्बा का है।" जगमोहन शांत स्वर में बोला।

जब्बार जगमोहन को ही देख रहा था।

"आजादी-ए-कश्मीर।" बड़ा खान का कठोर स्वर कानों में पड़ा, "जब्बार भी तुम लोगों के पास है।"

"हाँ! वह अब आजादी-ए-कश्मीर का सिपाही है।"

"मैंने इस संगठन का नाम कभी नहीं सुना।"

"अब तो सुन लिया।"

"जब्बार गद्दार है। वह पुलिस के साथ मिला हुआ है। तभी तो जेल से फरार हो सका।"

"वह जैसा भी है हमें मंजूर है।"

"तुम मेरी बात गंभीरता से नहीं ले रहे। जब्बार... ।"

"जब्बार एक ईमानदार इंसान है बड़ा खान। तुम उसे पहचानने में धोखा खा गए।" जगमोहन ने कड़वे स्वर में कहा, "मेरे अब्बा तुम्हारी तरह धोखा नहीं खाते।"

"तुम लोग कश्मीर के हो ?" बड़ा खान की आवाज कानों में पड़ी।

"पूरी तरह।"

"तुम्हारा लहजा कश्मीरी नहीं है।"

"मैं हर जुबान बोल लेता हूँ। तुमसे इसी जुबान में बात करूँगा।"

"रशीद को तुम लोगों ने मारा ?"

"हाँ !"

"और मस्तान को उठा लाये। ये बताओगे कि क्यों ?"

"हमने अपना काम करने का ढंग बदल लिया है। पहले हम कश्मीर को आजाद कराने की सोच रहे थे। परन्तु अब हम हर उस संगठन को खत्म करेंगे जो कश्मीर में कत्लेआम करके, हालातों को बिगाड़ रहा है। हमने पहला निशाना तुम्हें बनाने की सोची। तुमने संगठनों की आदतें बिगाड़ रखी हैं। वह पैसा देते हैं और तुम पैसा लेकर उनकी पसन्दीदा जगहों पर विस्फोट करा देते हो। लोगों को मार देते हो। हमने जरूरी समझा कि पहले तुम्हें खत्म किया जाये।"

"खूब ! तो तुम मुझे खत्म करना चाहते हो। मस्तान को इसलिए उठा लिया कि वह तुम लोगों को मेरा ठिकाना बता देगा।"

"हाँ !"

"और जब्बार ने इस काम में तुम्हारा साथ दिया।"

"ठीक समझे।"

"बेवकूफ हो तुम। मस्तान मेरे बारे में जानता ही नहीं तो बताएगा क्या। मेरा ठिकाना वह नहीं जानता।"

"ये देखना हमारा काम है। तुम बच नहीं सकोगे।"

"मुझे कोई नहीं मार सकता। कोई मुझ तक नहीं पहुँच सकता। मैंने खुद को सुरक्षित रखा है। लेकिन तुमने मेरे रास्ते में आकर बहुत बड़ी गलती कर दी। मैं तुम्हारे संगठन को खत्म कर दूँगा। तुम मेरी ताकत ठीक से नहीं जानते। मैं वह सब कुछ कर सकता हूँ। जो तुम सोच भी नहीं सकते। कश्मीर के सारे संगठन मेरे साथ हैं। चौबीस घण्टों में तुम्हारे संगठन को खत्म कर दूँगा।"

"तुम हमारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते।" जगमोहन ने खतरनाक स्वर में कहा।

"ये अब तुम्हें पता चल जायेगा।"

"हमारी ताकत का तुम्हें एहसास नहीं । हम यूँ ही नहीं बुरे संगठनों को खत्म करने निकल पड़े । हमें पता है कि हमारी ताकत का अंत नहीं है । पहले हम खामोशी से काम करते थे और अब खुलकर मैदान में आये हैं ।"

"मैं तुम्हें बहुत जल्दी बताऊँगा कि मुझमें कितनी ताकत है ।"

"क्या तुम कभी सोच सकते थे कि रशीद की इस तरह हत्या कर दी जायेगी और मस्तान को उठा लिया जायेगा ।" जगमोहन ने दाँत भींचकर कहा, "अपने खास साथी खोकर तुम्हें तकलीफ तो बहुत हो रही होगी ।"

"तुम्हारा संगठन अब अपनी मौत का इंतजार करे ।" उधर से बड़ा खान ने दरिंदगी से कहा और फोन बन्द कर दिया ।

जगमोहन ने कान से मोबाइल हटाया । उसके दाँत भिंचे हुए थे ।

"क्या कहता है बड़ा खान ?" जब्बार गुर्रा उठा ।

"वह कहता है कि हमारे संगठन को खत्म कर देगा ।"

"वह खत्म कर सकता है । वह ताकत रखता है अब्दुल्ला ।" जब्बार बोला ।

"वह हमारी हवा भी नहीं पा सकता ।"

"सारे संगठन उसकी मदद को आगे आ जायेंगे और वे आजादी-ए-कश्मीर, हमारे संगठन को ढूंढ लेंगे ।"

"उसे जरा भी सफलता नहीं मिलेगी । और ये मस्तान सच में उसका ठिकाना नहीं जानता ।"

"बड़ा खान ने कहा ये ।"

"हाँ ! उसके शब्दों की सच्चाई मैंने महसूस कर ली । ये बड़ा खान के बारे में हमें कुछ नहीं बता सकता ।"

"ऐसा है तो इसे मारकर सड़क पर फेंक देते हैं ।"

"ये ही ठीक रहेगा ।" जगमोहन ने कठोर स्वर में कहा ।

"मुझे मत मारो ।" पीड़ा से छटपटाता मस्तान चीखकर कह उठा ।

"तो हम बड़ा खान तक कैसे पहुँचेंगे ?" जब्बार ने दाँत भींचकर कहा ।

"अब्बा हुजूर से बात करता हूँ। उन्होंने जरूर कुछ सोच रखा होगा।" जगमोहन ने कहा और कमरे का दरवाजा खोलकर बाहर निकल आया। इधर-उधर मौजूद कुछ गनमैन वहाँ टहलते दिखे।

जगमोहन ने देवराज चौहान का नम्बर मिलाया। बात हुई तो मस्तान के बारे में और बड़ा खान के आये फोन के बारे में बताया।

"इसका मतलब मस्तान कुछ नहीं जानता।" देवराज चौहान की सोच भरी आवाज कानों में पड़ी।

"वह हमारे लिए बेकार रहा जबकि हमने सोचा था कि वह हमें बड़ा खान तक पहुँचा देगा। परन्तु बड़ा खान सतर्क इंसान है। उसने पहले ही इस बारे में सोच रखा होगा कि ऐसा होगा। रशीद-मस्तान से उसने अपना ठिकाना छिपाकर रखा। जब्बार ठीक कहता है कि बड़ा खान का मुकाबला करना आसान नहीं।"

"मस्तान ने एक काम की बात बताई। रोशनआरा जहाँ के बारे में।"

"ओह, तुमने कुछ किया इस बारे में?" देवराज चौहान ने जगमोहन को सब कुछ बताया। अपनी योजना बताई।

"तुम इस तरह बड़ा खान को तब पकड़ सकते हो जब वह किसी होटल में लड़की से मिले। रोशनआरा तुम्हें बता देगी।"

"मेरी योजना तुमने सुन ली?"

"हाँ!"

"तो क्या उससे तुम्हें नहीं लगता कि बड़ा खान खुद ही मेरे पास आएगा।"

"पता नहीं!" जगमोहन ने गहरी साँस ली, "मुझे तुम्हारी चिंता हो रही है। तुम अकेले हो बड़ा खान तुम्हारी योजना में फँसकर आ गया तो?"

"तो फँस जायेगा।"

"तुम भी मुसीबत में पड़ सकते हो।"

"ऐसा कुछ नहीं होगा। वह अकेला ही होगा।"

"मैं तुम्हारे पास आ जाऊँ?"

"नहीं ! तुम्हारा जब्बार के पास रहना ही ठीक रहेगा । तुम बड़ा खान तक पहुँचने की अपनी कोशिश जारी रखो । जब्बार से उसके ठिकानों के बारे में पूछो और वहाँ हमला करो । सब ठिकानों पर एक साथ ही हमला करो । उसका जो आदमी दिखे उसे शूट कर दो और आठ-दस ग्रेनेड फेंककर भाग जाओ । इससे वह और भी परेशान हो जायेगा ।"

"मेरे ख्याल में तुम्हारी योजना सही है ।" जगमोहन ने कहा ।

"मेरी योजना मेरे लिए रहने दो और तुम अपने काम पर ध्यान दो । बड़ा खान के ठिकाने तबाह करो । ऐसा होने पर हड़बड़ाहट में वह बाहर आने की गलती कर सकता है ।

अपने आदमियों को मुखबिर बनाकर फैला दो । कभी भी कहीं से भी बड़ा खान की खबर मिल सकती है । रुको मत । कुछ न कुछ करते रहो ।"

□□□

अगले दिन देवराज चौहान सुबह आठ बजे उठा ।

होटल वालों से कहकर श्रीनगर के स्थानीय अखबार मँगवा लिए । हर अखबार में आधे पेज पर उसका दिया इश्तिहार छपा था । इस इश्तिहार को देखकर एड्स या एच०आई०वी० पीड़ित एक बार तो अवश्य उसके पास दवा लेने आएगा ।

अब देवराज चौहान को इंतजार था रोशनआरा जहाँ से खबर मिलने का कि मुस्तफा ने उसके वहाँ से लड़की मंगवाई है । ये खबर आज भी मिल सकती थी और दो-चार दिन बाद भी । उसे इंतजार करना था । नाश्ते के बाद उसने रोशनआरा को फोन किया ।

"मुस्तफा की कोई खबर ?" उसकी आवाज सुनते ही देवराज चौहान ने कहा ।

"अभी तो नहीं ।" रोशनआरा की आवाज कानों में पड़ी ।

"मेरे से चालाकी मत करना । कहीं उसे तुम बता दो कि मैंने क्या करने को कहा है । ऐसा हुआ तो तुम्हारे सिर में गोली मारूँगा ।"

"पाँच लाख मेरे लिए बड़ी रकम है । तुमने जो कहा है, मैं वही करूँगी ।"

"मेरा फोन नम्बर तुम्हारे मोबाइल में आ गया है। तुम मुझे फोन पर खबर दे सकती हो मुस्तफा की।"

बात खत्म हो गई। इंतजार करने के अलावा देवराज चौहान के पास कोई रास्ता नहीं था।

□□□

शाम चार बजे बड़ा खान के चार ठिकानों पर लगभग एक ही वक्त पर हमले हुए। चारों ठिकानों पर दो-दो, तीन-तीन आदमी मरे। हर ठिकाने पर दस-बारह ग्रेनेड फेंके गए। बड़ा खान के लोगों में हलचल मच गई। वह नहीं सोच सकते थे कि कश्मीर ने उन पर ऐसा हमला हो सकता है। इन धमाकों के पश्चात कश्मीर की पुलिस भागी-दौड़ी फिरती दिखी।

□□□

उस समय रात के आठ बज रहे थे। मस्तान के मोबाइल की बेल बजने लगी। मस्तान का फोन जगमोहन के पास था। जबकि जब्बार ने मस्तान की जान ले ली थी और दोपहर में ही उसकी लाश बाहर किसी सड़क पर फेंक दी गई थी। ठिकाने पर इस वक्त जगमोहन, जब्बार और दो आदमी थे। बाकी सब लोग बड़ा खान के ठिकानों पर हमला करने के बाद, मुखबिर बने इधर-उधर फिर रहे थे कि शायद बड़ा खान से वास्ता रखती कोई खबर मिले। मस्तान के फोन पर जगमोहन ने बात की।

"बोलो, तुम बड़ा खान हो न ?" जगमोहन ने कहा।

"हाँ, तुमने... !"

"मस्तान की लाश मिल गई ? हमने उसे दोपहर में ही सड़क पर फेंक दिया था।"

"इस बारे में खबर नहीं मिली। मेरे ठिकानों पर क्या तुमने हमले करवाये हैं ?" बड़ा खान की कठोर आवाज कानों में पड़ी।

"अब तो तुमने आजादी-ए-कश्मीर की ताकत की झलक देख ली होगी।"

"ये काम तो कमजोर से कमजोर लोग भी कर सकते हैं ।" बड़ा खान खतरनाक स्वर में बोला, "मेरे उन ठिकानों के बारे में बहुत लोग जानते हैं । ये सब करके तुमने तीर नहीं मारा ।"

"मैं जानता हूँ कि हमने तीर मारा है । परन्तु तुम ये बात कभी स्वीकार नहीं करोगे ।" जगमोहन ने कठोर स्वर में कहा ।

"मेरे आदमी तुम लोगों को ढूंढ रहे हैं ।"

"उन्हें सफलता नहीं मिलेगी । परन्तु अब हम कश्मीर में तुम्हें काम नहीं करने देंगे ।"

"तो तुम मुझे कश्मीर से भगा दोगे ?" बड़ा खान मुस्कुराकर कड़वे स्वर में बोला था ।

"देखते जाओ । हर रोज तुम्हारे ठिकानों पर हमला होगा । तुम्हारे आदमी मारे जायेंगे । मैं देखता हूँ कि वह कैसे काम कर पाते हैं । जब मौत का डर सिर पर होगा तो वह काम नहीं करेंगे ।"

"मतलब कल भी हमला होगा ?" बड़ा खान गुर्राया ।

"हर रोज होगा ।"

"कल हमला करने वाले तुम्हारे आदमी जिन्दा वापस नहीं जा सकेंगे ।"

"तुम हमारा मुकाबला नहीं कर सकते । रशीद और मस्तान की मौत को मत भूलो । तुम्हारी मौत उससे भी बुरी होगी ।"

"इसका जवाब तुम्हें जल्दी ही मिलेगा ।" उधर से बड़ा खान ने दाँत पीसकर कहा और फोन बन्द कर दिया ।

जगमोहन ने गहरी साँस लेकर फोन कान से हटाया ।

"क्या कहता था ?" सामने बैठे जब्बार ने पूछा ।

"परेशान है । कलपा पड़ा है । ये तो स्पष्ट है कि उसके आदमी हमें, हमारे संगठन को ढूंढ रहे होंगे ।" जगमोहन ने कहा ।

"वह हम तक पहुँच भी सकते हैं अब्दुल्ला ।" जब्बार कह उठा, "बड़ा खान के हाथ बहुत लम्बे हैं ।"

"निश्चिन्त रहो ! बड़ा खान हमारे संगठन तक नहीं पहुँच सकता ।"

दो पल चुप रहकर जब्बार पुनः बोला ।

"मियांजी इस मामले पर क्या कह रहे हैं ?"

"अब्बा ने बड़ा खान के लिए खूबसूरत जाल फैलाया है। शायद वह उसमें फँस जाये।"

"बड़ा खान किसी के जाल में फँसने वाला नहीं है।" जब्बार सिर हिलाकर कह उठा।

"जाल मेरे अब्बा हुजूर का हो तो, उसमें वह फँस सकता है।" जगमोहन ने कड़वे स्वर में कहा।

"तुम बड़ा खान को कम आँक रहे हो।"

"तुम मेरे अब्बा हुजूर को कम आँक रहे हो। वह बूढ़े हो गए तो क्या हुआ, उनका दिमाग जवान है। बहुत कम उनके जाल से बचते देखा है किसी को। देखते हैं कि इस बार क्या होता है।"

□□□

रात बीत गई।

अगले दिन सुबह छः बजे एक साथ बड़ा खान के छः ठिकानों पर कलाम के आदमियों ने हमला किया। तब दिन का उजाला भी नहीं फैला था। सुबह-सवेरे ही धमाके गूंज उठे। ग्रेनेड फटे। गोलियों की आवाजें गूंजी। बड़ा खान के आदमियों की तरफ से हमले के लिए कोई भी तैयार नहीं था। चीख-पुकार मची। हमला करके कलाम के आदमी भाग निकले थे। बड़ा खान के कई आदमी इस हमले में मारे गए।

□□□

देवराज चौहान अगले दिन सुबह आठ बजे जगमोहन का फोन आने पर उठा।

"हैलो !" देवराज चौहान ने बात की।

"हमने आज सुबह बड़ा खान के छः ठिकानों पर हमला किया। हमला सफल रहा। उसके आठ आदमी मरे।"

"इतनी सुबह हमला क्यों किया ?" देवराज चौहान के होंठ सिकुड़े।

“ताकि बड़ा खान के आदमी, हमारे आदमियों का मुकाबला न करे। कलाम को अपने आदमियों की चिंता है।”

“हर रोज इसी तरह बड़ा खान को कहीं न कहीं चोट देते रहो।”

“हमारे आदमी श्रीनगर में फैले हैं। शायद उन्हें कहीं से बड़ा खान की खबर मिले।”

“मस्तान का क्या किया ?”

“कल दोपहर उसकी लाश सड़क पर फेंक दी गई थी।”

“बड़ा खान के आदमी आजादी-ए-कश्मीर के लोगों की तलाश कर रहे होंगे।” देवराज चौहान बोला।

“आजादी-ए-संगठन नाम का कोई संगठन है ही नहीं तो उन्हें क्या मिलेगा।” जगमोहन ने उधर से कहा, “तुम्हारा काम आगे बढ़ा। रोशनआरा का कोई फोन... ।”

“अभी कुछ नहीं।”

उसके बाद देवराज चौहान ने मोती खान को फोन किया।

“हैलो !” मोती खान की आवाज कानों में पड़ी।

“मेरी आवाज से तुमने मुझे पहचान लिया होगा।” देवराज चौहान बोला।

“हाँ !”

“रशीद की मौत की खबर सुनी होगी ?”

“कल ही पता चल गया था। सुनने में आया है कि कल कहीं से मस्तान की लाश भी मिली है।”

“ये तुम्हारे साथ देने का नतीजा है।”

“ओह ! तुमने किया ये काम।”

“तुमने मेरा साथ दिया और मैंने ये कर दिया। तुमने अपने भाई की मौत का बदला ले लिया।”

“शुक्रिया !”

देवराज चौहान ने फोन बन्द किया और नहा-धोकर तैयार हुआ और होटल से बाहर निकला तो साढ़े दस का वक्त हो रहा था। कुछ पैदल चलने के बाद एक जगह से नाश्ता किया।

दोपहर तक का वक्त ऐसे ही बीता। कुछ नहीं हुआ था।

साढ़े तीन बजे देवराज चौहान का मोबाइल बजने लगा।

"हैलो!" तब देवराज चौहान एक पार्क में बीच पर बैठा था।

"मैं रोशनआरा बोल रही हूँ।" उधर से आती रोशनआरा की आवाज कानों में पड़ी।

"कहो!"

"मुस्तफा का फोन आया है। शाम सात बजे उसने लड़की भेजने को कहा है।"

"कहाँ पर?"

"उसने कहा है साढ़े छः बजे फोन करके जगह बता देगा।"

"ठीक है! मुझे जगह जानने की जरूरत नहीं है। तुमने उसके पास एड्स वाली लड़की भेजनी है।"

"ऐसा ही होगा।"

"लड़की को समझा देना कि इस बारे में अपनी जुबान बन्द रखे कि उसे एड्स है।"

"मेरी लड़कियाँ समझदार हैं।"

"तुमने ये काम कर दिया तो पाँच लाख पूरी तरह तुम्हारे हो गए, जो मैं तुम्हें दे चुका हूँ।"

"शुक्रिया!"

बात खत्म हो गई। देवराज चौहान ने मोबाइल बन्द करके जेब में रख लिया।

□□□

रात दस बजे देवराज चौहान ने रोशनआरा को फोन किया।

"लड़की वापस आ गई?" देवराज चौहान ने पूछा।

"मैंने अभी फोन किया था उसे। वह वहाँ से चल पड़ी है।"

"ठीक है!" देवराज चौहान ने फोन बन्द किया और फोन में से वह नम्बर तलाशा, जिस नम्बर से बड़ा खान उसे फोन किया करता था। दूसरी तरफ बेल जाने लगी।

"हैलो!" फिर बड़ा खान की आवाज कानों में पड़ी।

"कैसे हो?" देवराज चौहान के चेहरे पर जहरीली मुस्कान नाच उठी।

"तुम, नकली सूरजभान यादव।"

"सही पहचाना।"

"तुम्हारा फोन आना मेरे लिए हैरानी की बात है। आखिर तुम मेरे से चाहते क्या हो?"

"जब्बार तो आजादी-ए-कश्मीर में शामिल हो गया।"

"मालूम है। लेकिन वह ज्यादा देर जिन्दा नहीं रहेगा। तुम अपने बारे में क्यों नहीं बता देते मुझे?"

"क्या करोगे मेरे बारे में जानकर?"

"ये ही बता दो कि जब्बार को जेल से निकालने के दौरान, उसके साथ क्या समझौता हुआ?"

"बता चुका हूँ तुम्हें। कोई समझौता नहीं हुआ। मैंने ये काम मुफ्त में किया है। अब तुम काम की बात पर आ जाओ।"

"काम की बात?"

"जिसके लिए मैंने फोन किया है। रोशनआरा की भेजी लड़की का स्वाद कैसा लगा?"

"तुम्हें कैसे पता?" बड़ा खान का चौंका स्वर कानों में पड़ा।

"मैंने ही तो रोशनआरा से कहकर वह लड़की भिजवाई थी।" देवराज चौहान कड़वे स्वर में बोला।

"असम्भव!"

"मैं चाहता तो तुम्हें तब गोली मार देता जब तुम उस लड़की के साथ थे। परन्तु मैंने ऐसा नहीं किया।"

"इसका क्या मतलब हुआ कि रोशनआरा से कहकर तुमने लड़की भिजवाई थी। तुम्हें कैसे पता चला कि... ।"

"जो लड़की आज तुम्हारे पास आई। वह पहले तुम्हारे पास नहीं आई होगी।"

"हाँ! ऐसा ही है, लेकिन तुम... ।"

"रोशनआरा उस लड़की को कहीं नहीं भेजती क्योंकि उसे एड्स है।"

"क्या ?" बड़ा खान का चीखने जैसा स्वर कानों से टकराया।

"मैं जानता हूँ तुम्हें मेरी बात पर भरोसा नहीं होगा। तुम ये बात रोशनआरा से क्यों नहीं पूछ लेते। मैंने रोशनआरा से ये काम करवाने के लिए उसे पाँच लाख दिए थे।"

"नहीं !" बड़ा खान का घबराया स्वर कानों में पड़ा, "ये नहीं हो सकता। तुम मुझे परेशान करना चाहते हो ये बात कहकर।"

"तुम खुद को सुरक्षित समझते रहे परन्तु तुम कभी भी सुरक्षित नहीं रहे। एच०आई०वी० के कीटाणु तुम्हारे शरीर में प्रवेश कर चुके हैं जो कि तुम्हें धीरे-धीरे अपनी पकड़ ले लेंगे। बहुत आतंकवाद फैलाया तुमने। लेकिन अब से तुम हर पल एड्स के आतंक में बाकी जिंदगी जिओगे और मौत तेजी से तुम तक पहुँचेगी।"

"तुम बकवास कर रहे हो।"

"एच०आई०वी० की दुनिया में तुम्हारा स्वागत है बड़ा खान।" देवराज चौहान ने कहा और फोन बन्द कर दिया।

चंद पल बीते कि मोबाइल पुनः बजने लगा।

बड़ा खान का फोन था।

परन्तु देवराज चौहान ने कॉल रिसीव नहीं की। फोन बजकर बन्द हो गया। देवराज चौहान जानता था कि बड़ा खान अब रोशनआरा को जिन्दा नहीं छोड़ेगा। देवराज चौहान को रोशनआरा से कोई हमदर्दी नहीं थी। वह बुरी औरत थी जिसने कि पाँच लाख के लालच में एड्स पीड़ित लड़की को बड़ा खान के पास भेज दिया। उसके शौहर ने कभी उसकी टाँगे काटी थी, जबकि उसे चाहिए था कि गला काट देता।

□□□

अगला दिन शुरू हुआ। देवराज चौहान ने सोकर उठने के बाद वेटर से कहकर आज के स्थानीय अखबार मँगवाये। हर अखबार में कल की तरह, एड्स एच०आई०वी० ठीक कराने का इश्तिहार था।

देवराज चौहान नहा-धोकर तैयार हुआ और कमरे में ही नाश्ता मँगवा लिया। उसकी योजना शुरू हो चुकी थी। बड़ा खान जानता था कि उसने एड्स पीड़ित लड़की का इस्तेमाल किया है और यकीनन उसके शरीर में एच०आई०वी० के कीटाणु प्रवेश कर चुके हैं। ऐसे में वह इलाज कराने की खातिर उसके पास आ सकता था। कल से हर अखबार में इस बीमारी के बारे में इश्तिहार जो आ रहे थे। बड़ा खान आज भी आ सकता था। कल या परसों भी आ सकता था। या फिर नहीं भी आ सकता था।

बारह बजे थे तब, जब फोन बजा।

"हैलो !" देवराज चौहान ने बात की।

"मैं हूँ !" जगमोहन की आवाज कानों में पड़ी, "अभी-अभी खबर मिली है कि रोशनआरा को और उसके साथ की सात लड़कियों को रात में किसी ने मार दिया।"

"ये काम बड़ा खान ने किया है।"

"तो तुम्हारी योजना शुरू हो गई।"

"हाँ !"

"फिर तो बड़ा खान अपना इलाज कराने कभी भी तुम्हारे पास आ सकता है। मैंने अखबारों में आये तुम्हारे इश्तिहार देखे हैं। वह काफी बड़े हैं और सीधी उन पर नजर पड़ती है। बड़ा खान श्रीनगर की अखबारें जरूर देखता होगा।"

"हाँ, जरूर देखता होगा !"

"तुमने बात की थी उससे ?"

"रात को उसे बताया कि जो लड़की उसके पास आई थी, वह एड्स पीड़ित थी।"

"ये जानने के बाद वह रात को ठीक से नींद भी नहीं ले पाया होगा।"

"तुमने आज बड़ा खान के ठिकानों पर हमला कराया ?"

"आज शाम छः बजे हमला करने का प्रोग्राम है।"

"जब्बार तुम्हारा साथ दे रहा है ?"

"पूरी तरह। मैं तुम्हारे पास आना चाहता हूँ। वहाँ अगर बड़ा खान आया तो।"

"तुम्हें जब्बार के पास रहने की जरूरत है।"

जगमोहन के गहरी साँस लेने की आवाज आई। फिर उसने कहा-

"मैं कलाम को तुम्हारे पास भेज देता हूँ।"

"अभी मुझे किसी की जरूरत नहीं है।" देवराज चौहान ने, "तुम अपने काम का ध्यान रखो।" कहकर देवराज चौहान ने फोन बन्द करके रखा और सिगरेट सुलगाकर कश लिया।

देवराज चौहान को भरोसा नहीं था कि बड़ा खान इलाज कराने उसके पास आएगा। उसने तो ये सब करके एक चांस लिया था कि इस तरह शायद बड़ा खान उसके सामने आ पहुँचे। एक कोशिश की थी उसने।

□□□

उस वक्त शाम के सवा चार बज रहे थे जब रिशेप्शन से कमरे में इंटरकॉम आया।

"हैलो !" देवराज चौहान ने रिसीवर उठाकर कहा।

"कोई साहब हकीम साहब से मिलना चाहते हैं।" रिसेप्शनिस्ट ने उधर से कहा।

"भेजो !" कहकर देवराज चौहान ने रिसीवर रख दिया।

आने वाला बड़ा खान भी हो सकता था और कोई दूसरा भी। देवराज चौहान ने कमरे का दरवाजा खोला और कुर्सी पर आ बैठा।

पाँच मिनट बीते कि एक आदमी खुले दरवाजे पर आ खड़ा हुआ। देवराज चौहान ने उसे देखा। वह भी देवराज चौहान को देखने लगा।

कई पलों तक दोनों एक-दूसरे को देखते रहे।

वह 52-53 की उम्र का होगा। क्लीन शेव्ड था। उसने पैंट-कमीज पहनी थी, चेहरा प्रभावशाली था। उसने काले जूते पहन रखे थे। सिर के बालों में कुछ सफेद बाल भी दिख रहे थे।

"आइये !" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा।

वह भीतर आया। दरवाजा बन्द कर दिया।

"हकीम मुल्ख राज पंजाबी हो तुम ?" वह मुस्कुरा पड़ा।

"हाँ, बैठिये !"

"कभी तुम इंस्पेक्टर सूरजभान यादव बन जाते हो तो कभी हकीम... ।"

देवराज चौहान बुरी तरह चौंका।

ये समझते देर न लगी कि सामने बड़ा खान ही मौजूद है।

"तुम हैरान हो रहे होगे कि मैंने तुम्हें पहचान लिया। मैंने तुम्हें जम्मू में तब देखा था जब तुम इंस्पेक्टर की वर्दी पहनकर, यादव बनकर जब्बार से मिलने जाते थे; और अब तुम यहाँ पर मेरा ही इंतजार कर रहे थे। पहले रोशनआरा को पाँच लाख देकर, एड्स पीड़ित लड़की भिजवा दी थी। साथ ही अखबारों में इश्तिहार देना शुरू कर दिया कि तुम एड्स और एच०आई०वी० का इलाज करते हो। इस आशा से कि मैं अपने इलाज के लिए तुम्हारे पास आऊँगा।"

"और तुम आ गए।" देवराज चौहान की पैनी निगाह उस पर थी।

"हाँ ! मैं आ गया। मुझे नहीं पता था कि तुम यहाँ मिलोगे।"

"तो तुम बड़ा खान हो।"

"हाँ, मैं ही हूँ बड़ा खान !" कहते हुए वह आगे बढ़ा और कुर्सी पर बैठ गया, "तुमने मुझे एड्स पीड़ित लड़की भिजवाकर तगड़ी चोट दी। एड्स का डर ही ऐसा होता है कि इंसान जीते जी मर जाये।"

"आतंकवाद से भी ज्यादा डर होता है क्या ?"

"हाँ ! एड्स का मरीज बनने से अच्छा है कि आतंकवाद का शिकार हो जाओ।" बड़ा खान बोला।

"फिर तो तुम आत्महत्या करने की सोच रहे होगे।"

"नहीं !" बड़ा खान ने इंकार में सिर हिलाया, "मैं इतना कमजोर नहीं हूँ कि आत्महत्या कर लूँ। ये ठीक है कि इससे मेरे दिमाग की शांति भंग हो गई है। परन्तु मैं अभी भी लम्बी उम्र जी सकता हूँ। मेरे पास पैसा है और इस बीमारी से मुकाबला करने के लिए मैं महंगी दवायें खरीद सकता हूँ।"

"तुम्हें तो मुझ पर गुस्सा आना चाहिए क्योंकि मैंने तुम्हें एड्स जैसी मुसीबत में डाला।"

"गुस्सा बहुत आ रहा है तुम पर। परन्तु मैं पहले तुमसे बातें करना चाहता हूँ।"

"बातें ?"

"हाँ, बातें !" बड़ा खान चुभते स्वर में बोला, "मैं तुम्हारे बारे में कुछ नहीं जानता।"

"ये बातें करना चाहते हो तुम ?"

"तुम मेरे पीछे क्यों पड़े हो। कह दो कि पुलिस वाले हो।" बड़ा खान बोला।

"मैं पुलिस वाला नहीं हूँ।"

"पुलिस से कोई नाता ?"

"इतना ही कि पुलिस को मेरी तलाश रहती है।"

"कौन हो तुम ?"

"देवराज चौहान।"

"कौन देवराज चौहान ? मैंने ये नाम पहले कभी नहीं सुना।" बड़ा खान की आँखें सिकुड़ी।

"हिन्दुस्तान में मुझे डकैती मास्टर देवराज चौहान कहा जाता है।"

"ओह ! मैंने सुन रखा है इस नाम को। डकैती मास्टर देवराज चौहान। तो वह तुम हो ?"

"हाँ !"

"दिलचस्प !" बड़ा खान ने कुर्सी पर पहलू बदला, "डकैती मास्टर देवराज चौहान। खूब। तो क्या हिन्दुस्तान में दौलत की इतनी कमी हो गई

कि तुमने डकैतियाँ छोड़कर आतंकवाद के रास्ते से दौलत इकट्ठी करनी शुरु कर दी।"

"मैं ऐसे गन्दे काम नहीं करता।"

"डकैती करने को तुम अच्छा समझते हो।"

"ये काम तुम्हारे काम से तो बहुत अच्छा है।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा।

"तुमने जब्बार को क्यों जेल से फरार करवाया। क्यों मेरे पीछे पड़े हो? क्या मैंने तुम्हारा कुछ बिगाड़ा है?"

"मेरा कुछ नहीं बिगाड़ा। परन्तु मेरे हिन्दुस्तान को बिगाड़ने की चेष्टा कर रहे हो।"

"तो ये बात है। मेरी तरफ तुम्हारा ध्यान कैसे गया?"

"जब तुमने दिल्ली में इंस्पेक्टर सूरजभान यादव पर जानलेवा हमला कराया। इत्तेफाक से तब मैं पास ही था और मेरी वजह से ही आज वह जिन्दा है। उसने मुझे यूँ ही सारा मामला बताया। मैं डकैतियाँ अवश्य डालता हूँ परन्तु आतंकवाद से मुझे सख्त नफरत है। मैं पहले भी तुम जैसे कई सौदागरों को खत्म कर चुका हूँ।"

"तो अब तुम मुझे खत्म करना चाहते हो?" बड़ा खान के चेहरे पर जहरीले भाव नाच उठे।

"हाँ! अब तुम मेरे सामने आ चुके हो।" देवराज चौहान की आवाज में खतरनाक भाव उभरे।

"मेरी ताकत जानते हो डकैती मास्टर?"

"तुम्हारी ताकत कुछ भी नहीं है। इसका एहसास तुम्हें अब हो जायेगा। वैसे तुम्हारे साथ कितने लोग हैं?"

"अभी तो एक भी नहीं।"

"आजादी-ए-कश्मीर का नाम सुना है न?"

"हाँ, क्यों?"

"वह मेरा ही संगठन है। तुम्हें खत्म करने के लिए वह संगठन बनाया है। तुम्हें खत्म करते ही वह संगठन खत्म हो जायेगा। जब्बार उसी संगठन

में शामिल हुआ है, परन्तु वह नहीं जानता कि वह मेरी चाल का शिकार हुआ पड़ा है।"

"तो जब्बार ने जेल में तुम्हें कुछ नहीं बताया मेरे बारे में?"

"नहीं! परन्तु तुम ऐसा ही समझते, इसलिए मैंने उसे जेल से फरार करवा दिया। तुम उस पर शक करने लगे। तुम्हारी और जब्बार की बिगड़ गई। मैं तुम दोनों को अलग-अलग कर देना चाहता था ताकि दोनों एक साथ काम करके देश की जनता को नुकसान न पहुँचा सको और जब्बार का मुँह भी खुलवाना चाहता था, तुम्हारे बारे में। जेल में रहकर उसने तुम्हारे बारे में कुछ नहीं बताया, परन्तु आजादी-ए-कश्मीर में शामिल होने के बाद रशीद-मस्तान के बारे में बताया। तुम्हारे ठिकानों के बारे में बताया, रोशनआरा के बारे में बताया।" देवराज चौहान का स्वर सख्त था।

"रशीद और मस्तान की मौत से मुझे नुकसान पहुँचा। तुमने शायद मुझे भी एच०आई०वी० पीड़ित कर दिया है।"

"शायद नहीं यकीनन।" देवराज चौहान के दाँत भिंच गए, "अब तुम कभी भी ठीक से नहीं जी सकोगे। एड्स का डर सोते-जागते तुम्हारे दिमाग पर हावी रहेगा। तुम बेकार होते जाओगे। परन्तु मैं वह वक्त आने नहीं दूँगा। अब तुम मेरे हाथों मारे जाओगे। तुम्हें बिल से ही तो निकालना चाहता था मैं। तुम हमेशा कहते रहे कि तुम सुरक्षित हो परन्तु तुम कभी सुरक्षित रहे ही नहीं। मैंने तुम्हें एच०आई०वी० पीड़ित बना दिया।" कहने के साथ ही देवराज चौहान ने फुर्ती से जेब से रिवॉल्वर निकाली और खड़ा हो गया। चेहरे पर खतरनाक भाव नाच उठे थे।

ये देखकर बड़ा खान मुस्कुराया।

"तुम तो बहुत जल्दी में लगते हो डकैती मास्टर।"

"बहुत कोशिशों के बाद तुम सामने आ सके हो।"

"यहीं, होटल में गोली मारोगे?"

"यहाँ मुझे कोई नहीं जानता। वैसे भी मुझे किसी की परवाह नहीं है।" देवराज चौहान सतर्क था।

“तो तुम्हें मस्तान ने बताया कि मैं रोशनआरा से कभी-कभी लड़की मँगवाता हूँ।”

“हाँ!”

“मस्तान को मुँह नहीं खोलना चाहिए था।”

“अब तुम्हें अपनी मौत के बारे में सोचना चाहिए। तुम मेरे पास एच०आई०वी० का इलाज कराने आये थे। मैं तुम्हें इस बीमारी से मुक्ति दिला रहा हूँ। तुम जीवन की सारी परेशानियों से मुक्त होने जा रहे हो।”

और बड़ा खान ने जो किया उसकी देवराज चौहान को जरा भी आशा नहीं थी।

कुर्सी पर बैठे बड़ा खान ने चीते की तरह छलांग लगाई और सीधा देवराज चौहान से जा टकराया। इस अचानक हुए हमले की वजह से देवराज चौहान के पाँव उखड़ गए। वह पीछे पड़ी कुर्सी से टकराया और नीचे जा गिरा।

रिवॉल्वर हाथ से छूटकर फर्श पर कहीं फिसल गई। बड़ा खान उसके ऊपर आ गिरा था। देवराज चौहान ने फुर्ती से बड़ा खान को अपने ऊपर से उछाल दिया।

पास ही गिरा बड़ा खान तुरन्त ही उछलकर उठ खड़ा हुआ। रिवॉल्वर हाथ में दिखने लगी। लेकिन रिवॉल्वर का इस्तेमाल न कर सका। नीचे पड़े ही देवराज चौहान ने जूते की ठोकर रिवॉल्वर वाली कलाई पर मारी।

रिवॉल्वर बड़ा खान के हाथ से निकलकर दूर जा गिरी। अगली ठोकर देवराज चौहान ने बड़ा खान की पिंडलियों पर मारी।

बड़ा खान लड़खड़ाया। संभला। तब तक देवराज चौहान खड़ा हो चुका था। दोनों खतरनाक निगाहों से एक-दूसरे को देखने लगे।

“तुम डकैती मास्टर हो। तुम्हें मुझसे नहीं उलझना चाहिए। हम दोनों ही कानून तोड़ते हैं।”

“तुम हिन्दुस्तानी नहीं हो।”

“इससे क्या फर्क पड़ता है।”

"बहुत फर्क पड़ता है।" देवराज चौहान दरिंदगी भरे स्वर में कह उठा, "मेरे देश में आकर तुम आतंकवादी हरकतें कर रहे हो।"

"मैं सिर्फ बिजनेस कर रहा हूँ। आतंकवाद से मुझे कुछ लेना-देना नहीं। दूसरे संगठन मेरे पास काम कराने आते हैं और मैं पैसे लेकर उनकी पसन्दीदा जगह पर आतंक फैला देता हूँ।"

तभी देवराज चौहान ने बड़ा खान पर छलांग लगा दी। बड़ा खान सतर्क था और देवराज चौहान से हमले की आशा कर रहा था। इससे पहले कि देवराज चौहान उससे टकराता, बड़ा खान ने दोनों हाथ आगे करके उसे रोका और घुटना वेग के साथ पेट में दे मारा।

देवराज चौहान के होंठों से चीख निकली और पेट थामे नीचे गिरता हुआ दोहरा हो गया। बड़ा खान आगे बढ़ा और जोरदार ठोकर देवराज चौहान की कमर में मारी।

देवराज चौहान छटपटा उठा।

"मैं तुझे बहुत बुरी मौत दूँगा डकैती मास्टर। तूने जब्बार के लिये मेरे मन में गलतफहमी डाली। रशीद-मस्तान को तेरे ही कारण जान गंवानी पड़ी। मेरे ठिकानों पर तेरे आदमी दो दिनों से हमला कर रहे हैं। तूने इंस्पेक्टर सूरजभान यादव और उसके परिवार को कहीं छिपा रखा है और वे मेरे से बचे हुए हैं। तू खामख्वाह ही मेरा दुश्मन बनकर मेरे रास्ते में आ गया। सबसे बड़ी बात कि तेरी वजह से मेरे शरीर में एच०आई०वी० के कीटाणु प्रवेश कर चुके हैं। इस बात से मैं बहुत परेशान हूँ। तूने मेरा चैन हराम कर दिया। मेरी जिंदगी को नर्क बना दिया। बहुत बुरी मौत दूँगा तेरे को।"

तब तक देवराज चौहान ने कुछ हद तक अपने पर काबू पा लिया था और बिल्ली की तरह झपट्टा मारकर बड़ा खान के पैरों तक पहुँचा और दोनों पिंडलियाँ पकड़कर तेजी से झटका दिया। बड़ा खान के पैर जमीन से उखड़ गए और कूल्हों के बल फर्श पर आ गिरा। पीड़ा से पूरा शरीर झनझना उठा। इससे पहले कि देवराज चौहान दोबारा उस पर झपटता, बड़ा खान दो-तीन करवटें लेता गया।

चंद कदमों पर बड़ा खान को रिवॉल्वर पड़ी दिखी । वह जल्दी से उठा और रिवॉल्वर उठाने के लिए आगे झपटा ।

देवराज चौहान ने पास ही पड़ी कुर्सी उठाई और पूरी ताकत लगाकर, बड़ा खान की तरफ उछाल दी । इससे पहले कि बड़ा खान रिवॉल्वर थाम पाता, कुर्सी उसकी पीठ पर आ लगी । कुर्सी की एक टाँग उसके सिर पर लगी । जिसकी वजह से वह चकराकर नीचे जा गिरा । दो पलों के लिए आँखों के आगे अँधेरा छा गया । देवराज चौहान तब तक खड़ा होकर बड़ा खान के पास पहुँच चुका था । उसने बड़ा खान को धक्का दिया तो बड़ा खान लड़खड़ाकर बेड से टकराता फर्श पर जा गिरा । देवराज चौहान ने रिवॉल्वर उठा ली । बड़ा खान की आँखों के सामने से अँधेरा छटा तो सम्भलकर उसने देवराज चौहान को देखा । रिवॉल्वर थामे देवराज चौहान मौत भरी निगाहों से उसे देख रहा था ।

बड़ा खान के चेहरे पर कहर भरी मुस्कान थिरक उठी ।

"अब मैं तुम्हें बताऊँगा कि मौत कितनी तकलीफ से भरी होती है ।" देवराज चौहान दाँत भींचकर कह उठा, "इस मामले में मैंने कदम ही इसलिए रखा कि तुम्हें खत्म कर सकूँ ।"

बड़ा खान संभलकर खड़ा हो गया था ।

"तुम पाकिस्तानी हो और सीमा पार करके हिन्दुस्तान में आतंक फैला रहे हो । अगर ये बिजनेस है तो तुम इस बिजनेस को पाकिस्तान में भी कर सकते थे । मेरे देश में आने की क्या जरूरत थी ?"

"हिन्दुस्तान में आतंक फैलाकर जो मजा आता है, वह पाकिस्तान में नहीं आ सकता ।" बड़ा खान बोला ।

"हिन्दुस्तान में मरने का भी बहुत मजा आता है, जैसे कि अब तुम मरने जा रहे हो ।"

"मेरे पास बहुत पैसा है डकैती मास्टर ।"

"पैसा मेरे पास भी बहुत है ।"

"मुझसे और पैसा लेकर तुम अपने पैसे को बढ़ा सकता है । मुझे मारकर तुम्हें कोई फायदा नहीं होगा ।"

"बहुत फायदा होगा। तुम्हारी मौत से मेरे देश को... ।"

कहते-कहते देवराज चौहान चौंका।

बड़ा खान ने देवराज चौहान के पीछे किसी को इशारा किया था। रिवॉल्वर थामे देवराज चौहान फुर्ती से पीछे घूमा और यहीं पर मात खा गया देवराज चौहान।

ये बड़ा खान ने चाल चली थी कि उसका ध्यान हटे उस पर से और वही हो गया था। बड़ा खान ने, देवराज चौहान के पलटने से पहले ही उस पर छलांग लगा दी।

तेजी के साथ वह देवराज चौहान से टकराया।

देवराज चौहान बुरी तरह लड़खड़ा कर नीचे गिरता चला गया। परन्तु रिवॉल्वर थामे लेटे ही लेटे फुर्ती से पलटा कि उसने बड़ा खान को भागते हुए, दरवाजा खोलकर बाहर जाते देखा।

"हम दोबारा जल्दी ही मिलेंगे देवराज चौहान।" बड़ा खान की आवाज देवराज चौहान के कानों में पड़ी।

देवराज चौहान के दाँत भिंच गए।

बड़ा खान बच निकला था। देवराज चौहान जानता था कि अब वह हाथ में नहीं आएगा। देवराज चौहान उठा और कमरे में नजरें दौड़ाने लगा। कमरे में काफी उलट-पलट हो गई थी। उसे इस बात की तकलीफ हो रही थी कि बड़ा खान उसके हाथ से फिसल गया। एक तरफ से उसे बड़ा खान की रिवॉल्वर पड़ी दिखी तो उसे उठा लिया। तभी उसकी निगाह नीचे पड़े मोबाइल पर पड़ी। वह उसका फोन नहीं था। जाहिर था कि बड़ा खान का था, जो कि झगड़े के दौरान जेब से गिर गया होगा। उसने फोन उठाकर जेब में रखा।

फिर अपना फोन निकालकर राठी को फोन किया।

"मुझे श्रीनगर में रहने को जगह चाहिए। जगह होटल न हो।" देवराज चौहान ने कहा।

राठी ने श्रीनगर के एक परिवार का पता बताया कि वहाँ चला जाये। वह उन्हें फोन कर देता है।

□□□

देवराज चौहान जब उस पते पर पहुँचा तो शाम के छः बज रहे थे। अँधेरा कब का फैल चुका था। सर्दी में बढ़ोतरी हो गई थी।

देवराज चौहान ने गर्म स्वेटर पहन रखा था। वह घर कॉलोनी के बीच में था। परिवार में मियां-बीवी के अलावा अट्ठारह साल की बेटी थी।

आदमी का नाम शौकत और उसकी बीवी का नाम रेहाना था। शौकत चालीस बरस का स्थानीय स्वस्थ व्यक्ति था। उसी ने दरवाजा खोला था उसके वहाँ पहुँचने पर।

"मुझे राठी ने यहाँ पहुँचने को कहा है। उसने तुम्हें फोन कर दिया होगा।" देवराज चौहान बोला।

"भीतर आइये जनाब। राठी साहब का फोन आ चुका है। उन्होंने कहा है कि आप में और उनमें फर्क न समझूँ।"

देवराज चौहान ने भीतर प्रवेश किया।

शौकत ने दरवाजा बन्द किया।

घर के भीतर देवराज चौहान को गर्माहट का एहसास हुआ।

"बाहर बहुत सर्दी है।" शौकत कह उठा।

"हाँ!" देवराज चौहान ने शौकत को देखकर सिर हिलाया, "मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे रहने को एक कमरा दे दो। ताकि न तो तुम्हें कोई परेशानी हो और न ही मुझे। मैं यहाँ सिर्फ दो-तीन दिन तक रहूँगा।"

"जितने दिन मन चाहे रहिये। आप राठी साहब के खास हैं। चलिए, मैं आपको कमरा दिखा दूँ।"

देवराज चौहान शौकत के पीछे चल पड़ा।

घर चार कमरों का था और साफ-सुथरा था। एक कमरे में रेहाना और उसकी बेटी दिखी। देवराज चौहान ने हाथ जोड़कर नमस्ते किया।

"अम्मी!" बेटी ने कहा, "ये तो हिन्दू है। नमस्ते करता है।"

जवाब में देवराज चौहान मुस्कुरा पड़ा।

शौकत के साथ देवराज चौहान एक कमरे में पहुँचा। डबल बेड लगा, अच्छा कमरा था वह। सर्दी का एहसास बहुत कम हो गया था। देवराज चौहान शौकत को देखकर मुस्कुराया।

"यहाँ आप आराम से रह सकते हैं। रात के लिए कपड़े भी आपको चाहिए होंगे ?" शौकत ने पूछा।

"हाँ !"

शौकत ने कपड़े लाकर उसे दिए। जिनमें गर्म स्वेटर भी शामिल था। देवराज चौहान ने कपड़े बदले।

"तुम राठी के साथ काम करते हो ?" देवराज चौहान ने पूछा।

"हाँ, मैं राठी के लिए काम करता हूँ। अफगानिस्तान से उसके लिये ड्रग्स लाता हूँ।" शौकत बोला।

देवराज चौहान ने सिर हिला दिया।

"आप रात के खाने में क्या लेना पसन्द करेंगे ?" शौकत ने पूछा।

"जो बना है, वही खा लूँगा। व्हिस्की हो तो एक पैग लेना पसन्द करूँगा।"

शौकत बाहर निकल गया।

देवराज चौहान ने बड़ा खान वाला मोबाइल निकाला और उसके भीतर 'फीड' कर रखे नामों की लिस्ट को चैक करने लगा। फोन में पचास से ज्यादा नाम और नम्बर फीड थे। ये जो लोग भी थे, बड़ा खान की खास पहचान वाले होंगे, तभी तो उनके नम्बर बड़ा खान ने अपने फोन में डाल रखे थे। ये बड़ा खान के लिए काम करने वाले लोग हो सकते थे।

शौकत ने भीतर प्रवेश किया। वह बोतल, गिलास और पानी लाया था। शौकत उसका गिलास तैयार करने लगा तो देवराज चौहान कह उठा-

"मैं तैयार कर लूँगा। तुम फ्री हो और ये सोचना भी मत कि घर में कोई है। आराम से अपने परिवार में बैठो।"

शौकत चला गया।

देवराज चौहान ने गिलास तैयार करके दो घूंट लिए कि उसका फोन बजने लगा।

देवराज चौहान ने बात की। दूसरी तरफ जगमोहन था।

"कलाम ने अपने आदमियों के साथ बड़ा खान की पाँच नई जगह छः बजे हमला किया। तीन ठिकाने पूरी तरह तबाह कर दिए। एक ठिकाने पर मुकाबला करने की चेष्टा की गई, परन्तु बाजी हमारे हक में रही। अभी इस बात का अंदाजा नहीं कि बड़ा खान के कितने आदमी मारे गए।

"तुम बताओ, बड़ा खान इलाज के लिए तुम्हारे पास आया कि नहीं ?"

"आया।"

"आया ?" जगमोहन उधर से चौंका, "बड़ा खान आया ?"

"हाँ ! परन्तु निकल भी गया। मेरी आशा से कहीं ज्यादा फुर्तीला निकला। उसने मुझे बराबर की टक्कर दी।" कहने के साथ ही देवराज चौहान ने बड़ा खान से वास्ता रखती सारी बात बताई।

"अब तो बड़ा खान सतर्क हो गया होगा।" जगमोहन ने परेशानी भरे स्वर में कहा।

"हाँ ! परन्तु वह बच नहीं सकता। उसका फोन झगड़े के दौरान गिर गया था। उसमें पचास से ज्यादा नाम और नम्बर दर्ज हैं। जो कि उसके खास आदमी ही होंगे। हम उन्हें तलाश करके, उस तक पहुँच सकते हैं। उन नम्बरों में रशीद और मस्तान का नाम भी दर्ज है। यह फोन उसके लिए खास होगा।"

"ये अच्छी बात रही हमारे लिए।"

"हाँ ! यह फोन मैं तुम्हें देना चाहता हूँ। कलाम यहाँ की स्थानीय भाषा में हर नम्बर पर बात करके, उन लोगों के ठिकाने के बारे में जानकारी हासिल करेगा। मेरा या तुम्हारा लहजा सुनकर वह सतर्क हो सकते हैं।"

"ठीक है, मैं फोन लेने कहाँ आऊँ ? अब तुमने होटल तो छोड़ दिया होगा।"

"मैं इस वक्त राठी के किसी पहचान वाले घर पर हूँ। तुम्हारा यहाँ आना ठीक नहीं होगा।" फिर देवराज चौहान ने उसे ऐसी जगह पर मिलने को कहा, जो यहाँ से ज्यादा दूर नहीं थी।

"ठीक है ! मैं एक-आधे घण्टे में तुम्हें वहीं मिलूँगा। क्या बड़ा खान एच०आई०वी० की वजह से परेशान था ?"

"बहुत ! तभी तो अखबारों में इश्तिहार देखकर, इलाज के लिए वहाँ आ पहुँचा था।" देवराज चौहान ने कहा, "तुम एक घण्टे बाद मुझे वहीं मिलना।" कहकर देवराज चौहान ने व्हिस्की का घूँट भरा और सोच में लग गया।

तभी शौकत ने भीतर प्रवेश किया। वह प्लेट में पकौड़े लाया था, जो कि गर्म थे।

"धन्यवाद !" देवराज चौहान मुस्कुराया, "तुम नहीं लोगे ?"

"मुझे अभी काम पर जाना है। आधी रात को लौटूँगा।" शौकत ने कहा।

"राठी का ही काम होगा ?"

"नहीं ! थोड़ा-बहुत किसी और का काम भी कर लेता हूँ।" शौकत ने कहा और बाहर निकल गया।

घूंट भरते देवराज चौहान की सोचें नाच रहीं थी।

□□□

अगले दिन देवराज चौहान आठ बजे सोकर उठा। गर्म पानी से हाथ-मुँह धोया। शौकत भी उठ गया था। या यूँ कहें कि उसे उठा पाकर उसकी पत्नी ने उसे भी उठा दिया था।

शौकत उसके पास दो गिलासों में चाय लिए आया और वहीं कुर्सी पर बैठ गया।

देवराज चौहान ने चाय का घूंट लेते हुए कहा-

"रात कब वापस लौटे ?"

"एक बजे। तुम नींद में थे।" शौकत ने गहरी निगाहों से उसे देखा, "तुम्हारा नाम देवराज चौहान है ?"

"तुम्हें कैसे पता ?" देवराज चौहान ने आँखें सिकोड़कर उसे देखा।

"बड़ा खान के आदमियों की जुबान पर तुम्हारे नाम का ही जिक्र है। वह तुम्हें ढूंढते फिर रहे हैं। कल बड़ा खान से तुम्हारा झगड़ा हुआ ?"

"हाँ !" देवराज चौहान शौकत को देखे जा रहा था।

"अगर मुझे पहले पता होता कि तुम बड़ा खान से उलझ चुके हो तो मैं तुम्हें अपने घर न रखता।"

"तुम्हें कोई परेशानी है तो अब मैं चला जाता हूँ।"

"राठी नाराज होगा। अब मैं तुम्हें जाने को नहीं कह सकता।"

"ये बातें तुम्हें कहाँ से पता चलीं ?"

"मेरी पहचान का है कोई जो बड़ा खान के लिए काम करता है।" शौकत ने गम्भीर स्वर में कहा।

"बड़ा खान तक पहुँचने में तुम मेरी कोई सहायता कर सकते हो ?"

"मैं किसी भी कीमत पर तुम्हारा साथ नहीं दूँगा।"

"मैं तुम्हें लाखों रुपया दे सकता हूँ।"

"नहीं !" शौकत ने इंकार में सिर हिलाया, "तुम गलत दरवाजा खटखटा रहे हो। पता चला कि तुम डकैती मास्टर हो ?"

"हाँ ! तुम मुझसे काफी पैसा कमा सकते हो, बड़ा खान के बारे में बताकर।"

"बार-बार ये मत कहो। मैं बड़ा खान के खिलाफ कुछ नहीं करूँगा।"

"क्यों ?"

"वह ताकतवर है। तुम बड़ा खान का मुकाबला करने की सोचकर गलती कर रहे हो।"

देवराज चौहान का चाय का आखिरी घूंट भरा और कह उठा-

"तुम बड़ा खान के लिए काम करते हो। झूठ मत कहना।"

"हाँ ! तुमने सही सोचा।"

"तुम बड़ा खान के लिए भी काम करते हो और राठी के लिए भी।"

"राठी का काम दो-चार दिन का होता है। अफगानिस्तान आने-जाने में चार-पाँच दिन लगते हैं। पैसे अच्छे मिल जाते हैं।"

"तुम बड़ा खान को किस हद तक जानते हो ?"

"मुझसे ऐसी बातें मत करो।" शौकत गंभीर स्वर में बोला।

"तुम सच में मेरी कोई सहायता नहीं करोगे ?"

"नहीं ! किसी भी कीमत पर नहीं। तुम पर बड़ा खान ने इनाम रखा है।"

"दिलचस्प ! कितना इनाम है ?"

"उसने अपने आदमियों को कह दिया है जो तुम्हें मारेगा उसे दस लाख मिलेगा। जो तुम्हें जिन्दा पकड़ लेगा, उसे बीस लाख।"

"ये अच्छी खबर है।" देवराज चौहान मुस्कुराया, "तो मुझे यहाँ से चले जाना चाहिए।"

"मैं तुम्हें जाने के लिए नहीं कहूँगा।"

"लेकिन तुम्हारे पास रहना भी ठीक नहीं होगा। कभी भी तुम बीस लाख कमाने की सोच सकते हो।"

"ये तुम्हारी सोच है। परन्तु मेरा इरादा ऐसा नहीं है।"

"तुम रात खाना खाने से पहले कहीं बाहर गए थे। कहाँ गए थे ?"

"सिगरेट लेने गया था।"

तब देवराज चौहान जगमोहन को बड़ा खान का मोबाइल देने गया था।

"अगर तुम बड़ा खान को मेरे घर से मिल गए तो वह मेरे साथ-साथ मेरे परिवार को भी खत्म कर देगा।"

"मैं कुछ देर में यहाँ से चला जाऊँगा।"

शौकत सिर हिलाकर उठ खड़ा हुआ।

"नाश्ता, क्या करना चाहोगे ?"

"जो भी बनेगा।" देवराज चौहान ने मुस्कुराकर कहा।

शौकत कमरे से बाहर निकला और अन्य कमरे की बालकनी में जा पहुँचा। वहाँ से बाहर का नजारा साफ दिख रहा था। इस वक्त आसमान साफ था। सूर्य निकलने की सम्भावना लग रही थी।

कुछ पल सोचो में लगा शौकत फिर मोबाइल निकालकर नम्बर मिलाने लगा। बात हुई।

"मैं शौकत बोल रहा हूँ।" शौकत ने गंभीर स्वर में कहा, "मैं तुम्हें देवराज चौहान के बारे में बता सकता हूँ।"

"कहाँ है वह ?"

"उसे जिन्दा पकड़ना । मैं बीस लाख कमाना चाहता हूँ । गोली ही मारनी होती तो मैं मार चुका होता ।"

"चिंता मत करो । हम उसे जिन्दा ही पकड़ेंगे और तुम्हें बीस लाख मिलेगा । बताओ, कहाँ है वह ?"

"कम से कम डेढ़ घण्टे तक मेरे अगले फोन का इंतजार करो ।" शौकत ने कहा और फोन बन्द करके जेब में रख लिया ।

□□□

देवराज चौहान ने नहा-धोकर अपने कल के उतारे कपड़े पहने । अब वह नाश्ता करने को तैयार था । शौकत उसे कह भी गया था कि नाश्ता तैयार है । तभी जगमोहन का फोन आ गया ।

"कलाम ने उस फोन में दर्ज कई नम्बरों पर फोन किया और कोई न कोई बहाना लगाकर, उसका पता-ठिकाना जाना है । हमारे पास कई नाम-पते इकट्ठे हो गए हैं । वह सब बड़ा खान के लिए ही काम करते होंगे ।"

"ठीक कहा । परन्तु अभी कुछ मत करो । पहले सब नम्बरों पर फोन करके उस इंसान का पता जानो । हो सकता है बाद में बड़ा खान इस बारे में सतर्क हो जाये और अपने आदमियों को भी इस बारे में सतर्क कर दे ।"

"कलाम अभी भी इसी काम पर लगा हुआ है । दोपहर तक वह सब नम्बरों पर फोन कर लेगा । कुछ लोग ऐसे भी हैं जो फोन पर अपने बारे में नहीं बता रहे । उनके लिए बाद में कोई और तरकीब लगाई जायेगी । किसी लड़की से उन लोगों को फोन कराकर उनके बारे में जानने की चेष्टा की जायेगी ।" उधर से जगमोहन ने कहा ।

"जिन लोगों के पते मिल गए हैं, उनके बारे में जानकारी पाने के लिए अपने आदमी दौड़ा दो ।"

"मैं ये काम अभी करता हूँ ।"

देवराज चौहान ने फोन बन्द किया कि तभी पुनः फोन बजने लगा ।

"कहो !" देवराज चौहान ने कहा ।

"तुमने मुझे सच में बहुत परेशान कर रखा है देवराज चौहान ।" बड़ा खान की आवाज कानों में पड़ी, "एच०आई०वी० का खौफ क्या होता है, ये मैं अब महसूस कर रहा हूँ। मैंने कुछ देर पहले ही डॉक्टर से बात की। डॉक्टर कहता है कि अभी टेस्ट करने का कोई फायदा नहीं। टेस्ट में इस बीमारी का पता लगने में दो से छः महीने का वक्त लग जाता है ।"

"उससे पहले मैं तुम्हें खत्म कर दूँगा ।" देवराज चौहान ने कठोर स्वर में कहा ।

"मैं ही तुम्हें खत्म कर दूँगा ।"

"तुमने अपने आदमियों में मेरे लिए इनाम घोषित कर दिया है ।"

"तुम्हें कैसे पता चला ?"

"इत्तेफाक से ।"

"मेरे आदमी जब किसी को ढूँढना चाहते हैं तो ढूंढ ही लेते हैं। फिर अब तो मेरे पास तुम्हारा नाम भी है और तस्वीर भी ।"

"तस्वीर ?"

"हाँ ! उस होटल के रिसेप्शन पर सी०सी०टी०वी० कैमरा लगा था। मैंने अपने आदमियों से वह मँगवा लिया। उसमें तुम थे और उससे तुम्हारी तस्वीर बनाकर अपने लोगों में बाँट दी है। बच सकते हो तो बच के दिखाओ। मेरा हर आदमी तुम्हें ढूंढ रहा है। इसके अलावा वह कोई और काम नहीं कर रहे। तुम जल्दी मरोगे ।"

ये खतरनाक बात थी। देवराज चौहान के होंठ भिंच गए।

"देखते हैं कि पहले कौन सफल होता है ।"

"बड़ा खान कभी हारता नहीं है ।"

"हारता तो देवराज चौहान भी नहीं है ।" देवराज चौहान ने दाँत भींचकर कहा, "परन्तु मेरी तस्वीर तुम्हारे आदमियों के पास है, ये बात खतरनाक है। इस तरह मैं पकड़ा जा सकता हूँ ।"

"तुम्हें किसी नाले में छलांग लगा देनी चाहिए या ऊँचे पहाड़ पर चढ़कर बैठ जाना चाहिए ।"

"मैं ऐसा ही करूँगा ।"

"मेरा मोबाइल फोन तुम्हारे पास है ?" उधर से बड़ा खान ने पूछा।

"मोबाइल फोन ? मेरे पास ?"

"कमरे में झगड़े के दौरान गिर गया था। मेरे आदमी फोन लेने गए, पर उन्हें नहीं मिला। तुम्हारे पास है क्या ?"

"मेरे पास नहीं है। हैरानी है कि तुम एक फोन के लिये भी मरे जा रहे हो।"

"मैं उस वक्त का इंतजार कर रहा हूँ जब तुम मारे जाओगे या जिन्दा पकड़ लिए जाओगे।"

"एच०आई०वी० तुम्हें घेर चुका है। सोचो जब ये बात तुम्हारे आदमी जान लेंगे तो वे तुम्हें कमजोर समझने लगेंगे। शायद वह तब तुमसे इतना खौफ भी न खायें जितना कि अब खाते हैं।"

"मैं तुझे बहुत बुरी मौत मारूँगा देवराज चौहान !" बड़ा खान उधर से दाँत किटकिटाकर कह उठा।

देवराज चौहान ने मुस्कुराकर फोन बन्द कर दिया।

परन्तु खतरे का एहसास उसे हो चुका था। उसकी तस्वीर बड़ा खान के आदमियों के पास पहुँच चुकी थी और वे श्रीनगर की सड़कों पर फैले उसे तलाश कर रहे थे।

तभी शौकत ने भीतर प्रवेश करते हुए कहा-

"नाश्ता ठंडा हो रहा है।"

"तुम्हारे पास मेरी तस्वीर भी होगी।" देवराज चौहान बोला।

"तुम्हें किसने बताया तस्वीर के बारे में ?" शौकत के होंठों से निकला।

"मैं वह तस्वीर देखना चाहता हूँ।"

शौकत ने जेब से तस्वीर निकालकर उसे दिखाई।

तस्वीर तब की थी जब वह रिसेप्शन पर खड़ा था। उसमें साफ-स्पष्ट उसका चेहरा दिख रहा था।

□□□

"मैं भी बाहर जा रहा हूँ।" शौकत नाश्ते के बाद बोला, "तुम जहाँ कहोगे तुम्हें छोड़ दूँगा।"

"ठीक है! मुझे सिर्फ इस कॉलोनी के बाहर सड़क पर छोड़ देना।" देवराज चौहान बोला।

दोनों बाहर निकले। तेज ठण्डी हवा चल रही थी। सूर्य भी निकला हुआ था। शौकत ने ड्राइविंग सीट संभाली। देवराज चौहान उसके बगल में बैठा तो शौकत ने कार आगे बढ़ा दी।

"तुम खुश लग रहे हो।" देवराज चौहान ने कहा।

"क्योंकि तुम मेरे घर से जा रहे हो। बड़ा खान तुम्हें मेरे घर से बरामद कर लेता तो मेरी खैर नहीं थी।"

"मेरी वजह से तुमने खतरा उठाया। धन्यवाद उसका।"

"राठी की वजह से मैंने ऐसा किया। तुम्हें तो मैं जानता तक नहीं।"

शीघ्र ही कार कॉलोनी से निकलकर सड़क पर आ गई।

"मुझे यहीं उतार दो।"

"थोड़ा आगे। वहाँ से तुम्हें टैक्सी मिल जायेगी।" शौकत बोला।

देवराज चौहान ने सिगरेट सुलगाई।

कुछ आगे तिराहे जैसी जगह पर शौकत ने कार रोकी।

"यहाँ तुम उतर सकते हो।" शौकत ने कहा और रिवॉल्वर निकालकर देवराज चौहान की कमर से लगा दी।

"ये क्या ?" देवराज चौहान के माथे पर बल पड़े।

"बाहर देखो।" शौकत ने होंठ भींचकर कहा।

देवराज चौहान ने बाहर देखा। अगले ही पल उसके होंठ भींचते चले गए। कार को पाँच-छः आदमी घेर चुके थे। अपने लम्बे कोटों में से दो ने गनें भी निकाल ली थीं।

देवराज चौहान ने खतरनाक निगाहों से शौकत को देखा।

"मैंने बीस लाख रुपये कमा लिए देवराज चौहान।" शौकत कठोर स्वर में बोला।

"इतना तो मैं तुम्हें दे देता।" देवराज चौहान गुर्राया।

"साथ में बड़ा खान की वफादारी भी खरीदी है तुम्हें उसके हवाले करके।"

"तुमने गलत किया।"

"बड़ा खान के दुश्मन हो तुम। मेरे लिए ठीक यही था कि तुम्हें उसके हवाले कर दूँ।"

तभी देवराज चौहान की तरफ का दरवाजा खुला और खतरनाक आवाज कानों में पड़ी।

"बाहर निकलो।" साथ ही गन की नाल भीतर आकर देवराज चौहान की छाती पर आ लगी।

"निकलो!" शौकत ने उसकी कमर में लगी रिवॉल्वर का दबाव बढ़ाया।

"ठीक है!" देवराज चौहान भिंचे दाँतों से कह उठ, "पर तुम्हारा अंदाज मुझे पसन्द नहीं आया।"

"चलो!" शौकत गुर्राया।

देवराज चौहान कार से बाहर निकला। बाहर खड़े छः के छः आदमियों ने उसे घेरे में ले लिया। एक ने उसकी तलाशी ली। रिवॉल्वर और मोबाइल निकाल लिया। दूसरा उसके हाथ पीछे करके, उन पर डोरी बाँधने लगा। इस दौरान दो गनें उसकी छाती से सटी रहीं।

शौकत की कार वहाँ से आगे बढ़ गई थी। पास ही एक और पुरानी कार खड़ी थी। देवराज चौहान को घेरे वे सब उस कार तक पहुँचे। गनों की नालों का एहसास उसे बराबर हो रहा था। वह फँस चुका था। तीन आदमी कार में आगे बैठे। तीन देवराज चौहान को लिए पीछे फँस-फँसाकर बैठे। दरवाजे बन्द हो गए। कार चल पड़ी। देवराज चौहान की आँखों के सामने शौकत का चेहरा नाच रहा था कि उसके मन में क्या चल रहा है, वह समझ नहीं सका था। शौकत ने किसी भी तरफ से जाहिर नहीं होने दिया था कि वह कुछ करने जा रहा है या करेगा।

□□□

शाम के सात बज रहे थे।

जगमोहन एक कमरे में बैठा कॉफी के घूंट ले रहा था कि कलाम ने भीतर प्रवेश किया।

"मेरे कई आदमी उन पतों से लौट आये हैं जो मैंने फोन करके हासिल किये थे।" वह बैठ गया।

"क्या पता लगाया उन्होंने ?"

"उन्होंने पता लगाया कि ज्यादातर लोग बड़ा खान के लिए ही काम करते हैं। परन्तु उन लोगों को हमें खासतौर से चैक करना पड़ेगा जो अमीर हैं, दौलतमंद हैं। जैसे कि अब्दुल करीम नाम का आदमी जो कि कश्मीर के तीन होटलों का मालिक है। परन्तु होटल नहीं चलते। जबकि होटलों में तगड़ा स्टाफ है।"

"वह होटल बड़ा खान के हो सकते हैं।" जगमोहन बोला।

"हाँ ! बड़ा खान के आदमी वहाँ ठहरते होंगे या वहाँ कोई भी सामान रखा जाता होगा। वह होटल बड़ा खान का ठिकाना हो सकते हैं। अब्दुल करीम शानो-शौकत के साथ एक बंगले में रहता है।"

"इस आदमी को चैक करना पड़ेगा।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा।

"हो सकता है बड़ा खान इससे मिलता भी हो।"

"हम बड़ा खान का चेहरा नहीं जानते। अगर वह मिलता भी हो तो हमें पता नहीं चलेगा।"

"ये समस्या तो है, परन्तु हम इसी तरह की अपनी कोशिशें करके बड़ा खान को कभी न कभी ढूंढ निकालेंगे।"

"इसके अलावा और कोई इंसान जो कि खास नजरों में आया हो ?"

"इफ्तिखार नाम का आदमी। कश्मीर में इफ्तिखार हथियारों के सौदागर के नाम से जाना जाता है। सुनने में आता है कि वह अक्सर सीमा पार जाता है और पाकिस्तान से हथियार लाता है। वह बड़ा खान के लिए ही काम करता है। जब सीमा पार से हथियार लाता है तो बड़ा खान की जरूरतें पूरी करके बाकी के हथियार आतंकवादी संगठनों को बेच देता है और पैसा बड़ा खान की जेब में जाता है।"

"बड़ा खान में कश्मीर में अपनी तगड़ी पकड़ बना रखी है।" जगमोहन ने होंठ भींचकर कहा।

"हाँ! उसने अपने काम की हर चीज सेट कर रखी है। सुना है कि वह पाकिस्तान की सरकार का भेजा आदमी है कि वह कश्मीर में आतंकवाद की आग जलाये रखे।" कलाम ने गम्भीर स्वर में कहा।

"स्थानीय नेता कुछ नहीं करते ये सब रोकने के लिए ?"

"वह क्या करें ? वह तो खुद डरे हुए हैं इन संगठनों से। आज वह संगठनों के खिलाफ बोलते हैं तो अगले दिन उनकी हत्या हो जाती है। कोई हिम्मत करे भी तो कैसे करे। कश्मीर के हालातों को सेना ने ही सब संभाल रखा है। सेना न होती तो कश्मीर में पाकिस्तान के भेजे आतंकवादी ही हर तरफ दिखते।"

"तो अभी तक खास ये दो नाम ही सामने आये हैं।" जगमोहन बोला।

"हाँ! बाकी काम जारी है। कई नाम और भी सामने आयेंगे।"

तभी जगमोहन का फोन बजने लगा। जगमोहन ने देखा। देवराज चौहान का फोन था।

"जब्बार कहाँ है ?" जगमोहन ने पूछा।

"उसी कमरे में।"

"मैं देवराज चौहान से बात करके उसे इन दोनों के बारे में बताता हूँ। तुम ध्यान रखो कि जब्बार इस तरफ न आये।"

कलाम बाहर निकल गया।

"हैलो !" जगमोहन ने बात की।

दूसरी तरफ से कोई आवाज नहीं आई।

"कहो भी, तुम चुप क्यों हो ?" जगमोहन ने पुनः कहा।

"तो ये तुम हो।" बड़ा खान की शांत आवाज कानों में पड़ी, "आजादी-ए-कश्मीर वाले।"

जगमोहन बुरी तरह चौंककर खड़ा हो गया।

"बड़ा खान ?" जगमोहन के होंठों से निकला।

"मेरी आवाज से तुमने पहचान लिया ?"

"ये... ये फोन तुम्हारे पास कहाँ से आया ? ये... ये तो... ।"

"डकैती मास्टर देवराज चौहान के पास था ।" उधर से बड़ा खान ने हँसकर कहा ।

जगमोहन सन्न सा खड़ा रह गया । कानों में बड़ा खान के शब्द गूंज रहे थे ।

"द... देवराज चौहान कहाँ है ?" जगमोहन के होंठों से निकला ।

"मेरे पास । सुबह से ही वह मेरा मेहमान बन चुका है । उसका फोन मेरे पास था और सोच रहा था कि तुम अपने यार को फोन करो । परन्तु अभी तक तुम्हारा फोन नहीं आया । तुम्हें देवराज चौहान की खैर-खबर के लिये फोन करना चाहिए था । इतने भी निश्चिन्त नहीं रहते कि तुम्हारा साथी ठीक होगा । बड़ा खान से पंगा लेकर कोई ठीक नहीं रह सकता ।"

जगमोहन के मस्तिष्क में धमाके जैसा महसूस हो रहा था । देवराज चौहान बड़ा खान के कब्जे में पहुँच गया । यकीन नहीं आ रहा था जगमोहन को । परन्तु ये सच था । क्योंकि देवराज चौहान के फोन पर बड़ा खान बात कर रहा था ।"

कई पलों तक जगमोहन के मुँह से बोल नहीं फूटा । उधर से बड़ा खान ठहाका लगाकर हँस पड़ा । जगमोहन ने खुद को सँभालने की चेष्टा की ।

"तुमने... तुमने देवराज चौहान के साथ क्या किया ?" जगमोहन के होंठ भिंच गए थे ।

"कुछ नहीं । अभी तो मैं बहुत व्यस्त हूँ । उससे मिल भी नहीं सका । वह मेरे आदमियों की देख-रेख में बहुत मजे से है ।"

"तुम बुरी मौत मरोगे ।"

"डकैती मास्टर भी ऐसा ही कहता था और अब वह मेरे शिकंजे में फँस चुका है । तुम अपने बारे में सोचो ।"

"मैं तुम्हें छोड़ने वाला नहीं... मैं.... ।"

"मैंने पता लगा लिया है । तुम्हारा नाम जगमोहन है । तुम देवराज चौहान के खास साथी हो । तुमने जो संगठन बनाया है, नकली है और मेरे लिए

बनाया है। मुझे खत्म करने के लिए इसे बनाया है। परन्तु तुम सबको मैं ही एक-एक करके खत्म कर दूँगा। तुम सब कुत्ते की मौत मरोगे।"

"हमें सौदा कर लेना चाहिए।"

"कैसा सौदा ?"

"देवराज चौहान को छोड़ दो और... ।"

"तुम्हारे पास है ही क्या जो तुम बड़ा खान से सौदा कर सको।" बड़ा खान का कड़वा स्वर जगमोहन के कानों में पड़ा, "दौलत की मेरे पास कमी नहीं है। इसके अलावा तुम खाली हो। हमसे कोई सौदा नहीं हो सकता।"

"जब्बार है मेरे पास।"

"जब्बार को बहुत जल्दी समझ में आ जायेगा कि वह देवराज चौहान की चाल का शिकार हुआ है। जब्बार के लिए मेरे मन में कोई मैल नहीं है। वह अभी देवराज चौहान के बारे में जानता नहीं है। जान जायेगा तो फिर उसका रूप देखना। अगर तुम्हारे पास मस्तान जिन्दा होता तो सौदा हो सकता था। परन्तु मस्तान को तुमने मार दिया।"

"तो हमसे सौदा नहीं हो सकता ?" जगमोहन के दाँत भिंच गए।

"तुम्हारे पास बराबर का सौदा करने के लिए सामान नहीं है।"

"मैं तुम्हें मजबूर कर दूँगा कि तुम मुझसे सौदा करो।" जगमोहन गुर्रा उठा।

"देवराज चौहान को मैं नहीं छोड़ूँगा। बहुत बुरी मौत मारूँगा उसे।"

"तुम एच०आई०वी० पीड़ित बन चुके हो।"

"देवराज चौहान की वजह से। कुत्ता बहुत बुरी मौत मरेगा।"

जगमोहन ने फोन बन्द कर दिया।

देवराज चौहान बड़ा खान के कब्जे में पहुँच गया था। ये खबर जगमोहन को हिला देने वाली थी।

परन्तु देवराज चौहान इस कदर आसानी से बड़ा खान के हाथों में नहीं पहुँच सकता। कोई तो गड़बड़ हुई ही है उसके साथ। रात वह देवराज चौहान से मिला था। वह राठी के किसी पहचान वाले घर पर रह रहा था।

जगमोहन उसी पल हाथ में दबे मोबाइल से राठी का नम्बर मिलाने लगा। मिनट भर बाद ही वह राठी से बात कर रहा था।

"देवराज चौहान तुम्हारे पहचान वाले के पास ठहरा था श्रीनगर में ?" जगमोहन ने पूछा।

"हाँ !"

"वह पता बताओ जहाँ वह ठहरा था।"

"बात क्या है ?"

"देवराज चौहान बड़ा खान के हाथों में पहुँच गया है। ये इतना आसान नहीं था।"

राठी की आवाज नहीं आई।

"बताओ।"

"वह शौकत नाम के आदमी के घर पर ठहरा था।" उधर से राठी ने शौकत का पता बताकर कहा, "वह बड़ा खान के लिए भी काम करता है।"

"शौकत बड़ा खान के लिए भी काम करता है ?"

"हाँ !"

"तो तुमने देवराज चौहान को उसके पास क्यों भेजा ?"

"वह मेरा पुराना साथी था। मैं सोच भी नहीं सकता था कि मेरे साथ वह ऐसी हरकत कर जायेगा।"

जगमोहन ने फोन बन्द कर दिया। दाँत भिंच चुके थे उसके।

□□□

रात के नौ बज रहे थे। आज बाहर सर्दी ज्यादा थी।

शौकत घर में अपनी पत्नी और बेटी के साथ बातों में लगा था और खुश था। व्हिस्की का एक गिलास खत्म कर चुका था और दूसरा तैयार कर लिया था। दोपहर में बड़ा खान का आदमी बीस लाख के नोटों से भरा थैला उसे दे गया था, जो कि अभी सामने ही रखा था। वह रह-रहकर उठकर नोटों को देखता और खुश होता कि कितनी आसानी से उसने बीस लाख कमा

लिए। शिकार खुद ही उसके पास आ गया और उसने प्यार से शिकार को पिंजरे में धकेल दिया।

"खाना खा लो।" उसकी पत्नी रेहाना ने कहा।

"आधे घण्टे बाद खाऊँगा। तुम खा लो।"

तभी कॉलबेल बजी।

शौकत और रेहाना की नजरें मिलीं।

"मेरे से कोई मिलने आया होगा।" कहकर उसने गिलास खाली किया और उसे रखकर दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

उसने दरवाजा खोला और उसी पल उसकी छाती पर गन आ लगी।

शौकत घबरा उठा। चेहरे का रंग उड़ गया। सामने कलाम खड़ा था और पीछे और भी लोग दिखे।

"शौकत हो तुम?" कलाम ने कठोर स्वर में पूछा।

"ह...हाँ!"

"भीतर चलो!" कलाम ने छाती पर रखी गन से उसे पीछे धकेला।

"परन्तु तुम...।"

कलाम ने जोरों से उसे पीछे धकेला।

शौकत लड़खड़ाकर तीन-चार कदम पीछे हो गया। चेहरा सफेद पड़ने लगा।

कलाम ने भीतर प्रवेश किया। उसके पीछे जगमोहन और चार अन्य लोगों ने भीतर प्रवेश किया और दरवाजा बन्द करके, शौकत की बाँह पकड़े कमरे के बीच में जा पहुँचे।

ये सब देखकर रेहाना घबरा उठी। उसकी बेटी घबराकर माँ के पास आ पहुँची।

"क... कौन हो तुम लोग?" रेहाना के होंठों से निकला।

"खामोश रहो।" कलाम गुर्राया।

शौकत ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी। सबको देखा। व्हिस्की का नशा उड़ गया था।

जगमोहन आगे बढ़ा और थैले के पास पहुँचा। भीतर पड़ी नोटों की गड्डियों को देखते ही उसके दाँत भिंच गए। वह पलटा और शौकत के पास जा पहुँचा। कलाम एक कदम पीछे हट गया।

"देवराज चौहान कल यहीं था, तेरे पास ?" जगमोहन ने शब्दों को चबाकर पूछा।

शौकत ने थूक निगला।

"राठी कहता है कि उसे तुमसे ऐसी आशा नहीं थी। तुमने देवराज चौहान को बड़ा खान के हवाले कर दिया। कितने पैसे लिए ?"

"म... मैंने ऐसा नहीं किया।"

"तो देवराज चौहान अचानक ही बड़ा खान के हाथों में कैसे पहुँच गया ?"

"मैं... मैं नहीं जानता। वह सुबह नाश्ता करके यहाँ से चला गया था।" शौकत ने हिम्मत करके कहा।

तभी कलाम ने गन की नाल का वार शौकत के चेहरे पर किया।

शौकत चीख उठा।

रेहाना और उसकी बेटी और भी सहम गई।

"राठी कहता है कि तुम बड़ा खान के लिए भी काम करते हो। कितने नोट मिले नोट बड़ा खान से ? ये थैले में पड़े नोट, देवराज चौहान को फँसाने की एवज में ही मिले हैं न। सच बोल। झूठ सुनकर हम बहलने वाले नहीं।"

"तुम लोगों को गलतफहमी हुई है। मैं राठी से बात करता हूँ।"

तभी कलाम ने दाँत भींचकर गन की नाल को चाकू की तरह उसके पेट में मारा।

शौकत चीख उठा।

"इन्हें कुछ मत कहो।" रेहाना तड़प उठी, "इन्हें माफ कर दो। गलती हो गई इनसे।"

"तेरी बीवी ने स्वीकार कर लिया है कि तूने देवराज चौहान को, बड़ा खान के हवाले किया है।" जगमोहन गुर्राया।

"मुझे माफ कर दो।" शौकत काँपते स्वर में कह उठा, "मुझे एक बार राठी से बात करने दो।"

"ये मामला राठी का नहीं है। मेरा है। मैं देवराज चौहान का साथी हूँ।" जगमोहन ने खूंखार भरे स्वर में कहा, "देवराज चौहान को फँसाने से पहले तुम्हें ये जरूर सोच लेना चाहिये था कि उसके पीछे भी लोग हो सकते हैं।"

"मुझे माफ कर दो।"

"देवराज चौहान कहाँ है ?" जगमोहन दरिंदा लग रहा था।

"मैं नहीं जानता।"

"अभी भी वक्त है, सच कह दो।"

"सच कह रहा हूँ।" शौकत का चेहरा दूध की भांति सफेद था, "मैं नहीं जानता बड़ा खान ने उसे कहाँ रखा है।"

"बड़ा खान कहाँ मिलेगा ?"

"नहीं पता। किसी को भी नहीं पता कि बड़ा खान कहाँ मिलता है। मैं पता लगाने की कोशिश करूँगा कि... ।"

जगमोहन ने दाँत भींचे रिवॉल्वर निकाली और दिल वाली जगह पर नाल रख दी।

"ये क्या कर रहे हो। मत करो, मैं... ।"

"हम पता लगा लेंगे कि बड़ा खान कहाँ मिलता है। तेरी जरूरत नहीं रही अब।" जगमोहन ने वहशी स्वर में कहा और ट्रिगर दबा दिया।

तेज धमाका गूंजा। शौकत चीखकर नीचे जा गिरा। रेहाना चीखकर शौकत की तरफ लपकी।

जगमोहन ने नोटों वाला थैला उठाया और पलटकर दरवाजे की तरफ बढ़ा। दरवाजा खोला गया और सब बाहर निकल गए। सामने ही वैन खड़ी थी, जिसमें वह सब आये थे। सब वैन में बैठे और वैन तेजी से आगे बढ़ गई।

□□□

अब्दुल करीम के एक तीन मंजिला होटल के पास वह वैन जा रुकी। रात के दस बज रहे थे। कड़ाके की सर्दी थी और सड़कें सूनसान दिख रही थीं। कभी-कभार कोई कार आती-जाती दिख जाती थी।

जगमोहन वैन का दरवाजा खोलते हुए बोला।

"मैं होटल को चैक करता हूँ। वे देवराज चौहान को यहाँ भी रख सकते हैं।"

"तुम अकेले ये काम कैसे करोगे। फँस सकते हो।" कलाम बोला।

"मैं कर लूँगा।" कहने के साथ ही जगमोहन होटल के भीतर रिसेप्शन पर जा पहुँचा।

रिसेप्शन खाली था। रिसेप्शन के सोफों पर एक आदमी कम्बल ओढ़े सो रहा था। जगमोहन ने उसे उठाया।

"क्या है?" वह अभी भी नींद में था।

"कमरा चाहिए।"

"कमरा?" उसकी आँखें खुलीं। जगमोहन को देखा, "हजार रुपये का कमरा है यहाँ।"

"चलेगा।"

"हजार रुपया दो।" वह कम्बल एक तरफ करके उठता हुआ बोला, "तुम्हें कमरा दिखा देता हूँ। सामान कहाँ है?"

"वह कल आएगा।" कहकर जगमोहन ने हजार रुपये उसे दे दिए जो कि उसने जेब में रखे।

जगमोहन को लेकर वह पहली मंजिल पर एक कमरे में पहुँचा और बोला-

"ये दो हजार रुपये का कमरा है, तुम्हें हजार में दे रहा हूँ। यहाँ दस लोग एक साथ ठहर सकते हैं।"

जगमोहन ने कमरे में नजर दौड़ाई और आगे बढ़कर दरवाजा बन्द कर दिया।

"खाना-पीना भी चाहिए?" उसने पूछा।

जगमोहन ने रिवॉल्वर निकाली और उसे दिखाकर बोला-

"बैठ जाओ। तुमसे कुछ पूछना चाहता हूँ।"

रिवॉल्वर देखकर वह घबरा उठा।

"तुम... तुम मुझे लूटना चाहते हो। लेकिन मेरे पास तुम्हारे दिए हजार के अलावा कुछ नहीं... ।"

"मेरी सुनो।"

"ह... हाँ!"

"कितना स्टाफ है होटल में?"

"इस वक्त तीन लोग हैं मेरे को मिलाकर। वे दोनों सोने जा चुके हैं।"

"नाम क्या है तुम्हारा?"

"भगत।"

"कितने कमरे फुल हैं?"

"चार।"

"बैठ जाओ।" जगमोहन आगे बढ़ा और कुर्सी खींचकर उसके पास कर दी। भगत घबराया सा बैठ गया।

"मैं जानता हूँ कि ये जगह बड़ा खान की है। अब्दुल करीम बड़ा खान के लिए काम करता है।"

"म... मेरे को इन बातों से क्या लेना-देना। मैं... मैं तो नौकर हूँ।"

"आज दिन में एक आदमी को यहाँ लाकर रखा गया है। अगर जिन्दा रहना चाहते हो तो उसके बारे में बताओ।"

"म... मैं नहीं जानता। मेरी ड्यूटी तो शाम आठ बजे से शुरू हुई है।"

"होटल में बड़ा खान के आदमी किस कमरे में हैं?"

"किसी में भी नहीं। यहाँ कोई नहीं है।"

"तुम्हारा मतलब कि यहाँ बड़ा खान के आदमी आते ही नहीं।" जगमोहन के दाँत भिंच गए।

"यहाँ कुछ ऐसे लोग आते हैं जो पैसा नहीं देते और रहकर, खाकर चले जाते हैं। मालिक कह देते हैं कि उनसे पैसा नहीं लेना।"

"ऐसे लोग अब होटल में नहीं हैं?"

"नहीं ! ऐसा कोई भी नहीं है। जो लोग भी हैं मुसाफिर हैं। ये रिवॉल्वर पीछे कर लो।"

"तुम मुझे पूरा होटल दिखा सकते हो ?"

"हाँ, चलो ! दिखा देता हूँ।"

□□□

जगमोहन ने अब्दुल करीम का दूसरा और तीसरा होटल भी देखा। इसमें रात के डेढ़ बज गये परन्तु देवराज चौहान की कोई खबर नहीं मिली।

"अब्दुल करीम के बंगले पर चलो कलाम।" जगमोहन ने गुस्से से कहा।

वैन आगे बढ़ गई।

"मेरे ख्याल में बड़ा खान ने देवराज चौहान को किसी ऐसी जगह पर रखा होगा, जहाँ हर कोई न पहुँच सके।" कलाम बोला।

"अब्दुल करीम को उस जगह के बारे में पता हो सकता है।"

"देखते हैं।"

एक घण्टे बाद ही वैन एक ऐसे बंगले के बाहर खड़ी थी जो कि अंधेरे में डूबा हुआ था। गेट पर चौकीदार कहीं नजर नहीं आ रहा था। सर्दी की वजह से वह कहीं दुबक गया होगा।

जगमोहन, कलाम और तीन आदमी बंगले की दीवारों को फलांगकर भीतर पहुँचे

हर तरफ सन्नाटा छाया हुआ था।

पोर्च में एक बल्ब जल रहा था। परन्तु सर्दी और कोहरे की वजह से उसकी रौशनी ज्यादा न फैल रही थी। वे बंगले के भीतर प्रवेश करने का रास्ता तलाश करने लगे। परन्तु दरवाजे-खिड़कियाँ भीतर से बन्द थे।

कलाम ने उन्हें वहीं रुकने को कहा और खुद एक पाइप के सहारे चढ़कर छत पर जा पहुँचा और नजरों से ओझल हो गया। दस मिनट बाद ही उसने भीतर का दरवाजा खोल दिया। वे भीतर गए तो दरवाजा बन्द कर लिया गया। भीतर सर्दी कम थी।

“उधर कमरे में तीन नौकर सोये हैं।” कलाम ने बताया, “पहली मंजिल पर एक कमरा भीतर से बन्द है।”

वह पाँचों सीढ़ियाँ चढ़कर एक दरवाजे के पास जा रुके। वहाँ बल्ब जल रहा था। मध्यम सी रौशनी हो रही थी।

जगमोहन ने दरवाजे का हैंडिल दबाकर उसे खोलने की कोशिश की।

“भीतर से बन्द है।” कलाम बोला।

अगले ही पल जगमोहन ने दरवाजा थपथपाया।

“ये क्या कर रहे हो ?” कलाम हड़बड़ाकर कह उठा।

जगमोहन ने पुनः दरवाजा खटखटाया। इस बार स्वर तेज था। बाकी सबने हथियार संभाल लिए।

दो पल बीते कि भीतर से नींद भरी एक मर्द की आवाज आई-

“कौन है ?”

“मालिक ! जरा दरवाजा खोलिए। जरूरी बात है।” जगमोहन नौकरों जैसे स्वर में कह उठा।

कुछ देर खामोशी रही फिर भीतर से दरवाजा खुलने की आवाज आई।

वे सब सतर्क हो गए। जगमोहन एक तरफ हट गया। कलाम गन थामे आगे बढ़ गया था। दरवाजा खुला। कलाम ने दरवाजा खोलने वाले की छाती पर गन रखी और धकेलता भीतर चला गया।

बाकी सब भी भीतर आ गए।

वह चालीस बरस का व्यक्ति था। शरीर पर उसने गाउन पहन रखा था। कमरा गर्म था। हीटर चल रहे थे। बेड पर एक औरत लेटी थी, जिसने रजाई ओढ़ रखी थी। वह ये सब देखकर घबरा गई थी।

वह व्यक्ति इतने हथियारबंद लोगों को इस तरह कमरे में पाकर हड़बड़ा उठा था।

जगमोहन ने उसके गाउन की तलाशी ली। कोई हथियार नहीं मिला। जगमोहन ने जोरदार घूँसा उसके चेहरे पर दे मारा। वह कराहकर दो कदम पीछे हुआ। सबने उस पर हथियार तान रखे थे।

“कौन हो तुम ?” जगमोहन दाँत भींचकर गुर्राया।

"अब्दुल करीम।" वह कह उठा, "तुम लोग कौन हो। ये सब क्या कर रहे हो मेरे घर में ?"

"बड़ा खान किधर है ?" जगमोहन के इस सवाल पर वह चौंका, "अगर तुमने कहा कि बड़ा खान को नहीं जानते तो हम तुम्हारे शब्द पूरे होने से पहले ही तुम्हें गोली मार देंगे।"

"मैं... मैं नहीं जानता बड़ा खान कहाँ पर है।" अब्दुल करीम कह उठा।

"सच बोलो, वरना तुम भी उन लोगों की तरह मारे जाओगे, जो हमें बड़ा खान के बारे में नहीं बता सके।"

"मैं सच कह रहा हूँ। मैं नहीं जानता कि बड़ा खान कहाँ पर मिलता है।" अब्दुल करीम घबराया हुआ था, "तुम लोग कौन हो, अपने बारे में बताओ ?"

"तुम बड़ा खान के लिए काम करते हो ?"

अब्दुल करीम ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी।

"बोलो, वरना वक्त से पहले मरोगे।"

"बड़ा खान ने मुझे तीन होटल खरीद कर दे रखे हैं। वहाँ उसके आदमी ठहरते हैं। छिपते हैं। कभी-कभी हथियार भी रखे जाते हैं।"

"आज तुम लोगों ने देवराज चौहान को पकड़ा है।" जगमोहन दाँत भींचकर कह उठा, "बताओ वह कहाँ है ?"

"मैंने सुना है कि वह पकड़ा गया, परन्तु नहीं जानता उसे कहाँ रखा।"

"झूठ मत बोलो।" जगमोहन गुर्रा उठा, "तुम जानते हो कि उसे कहाँ रखा है।"

"मैं सच में नहीं जानता।"

"कुछ अंदाजा तो होगा ?"

"नहीं ! मुझे इस बारे में कुछ नहीं पता। मैं अपने काम में ही व्यस्त रहता हूँ।" वह जगमोहन को देखने लगा।

"इफ्तिखार कहाँ रहता है ?"

अब्दुल करीम ने सूखे होंठों पर जीभ फेरकर जगमोहन को देखा।

"ये तो रुक गया।" जगमोहन ने खतरनाक स्वर में कलाम से कहा।

कलाम ने गन उसकी छाती पर रखी।

"ठहरो! रुको, बताता हूँ।" फिर उसने इफ्तिखार का पता बताया।

"ये बड़ा खान के लिये पाकिस्तान से हथियार लाता है ?" जगमोहन ने दाँत भींचकर कहा।

"ह... हाँ!"

"उन हथियारों को आतंकवादी संगठन को भी बेचता है ?"

अब्दुल करीम ने सहमति में सिर हिला दिया।

"तुम लोग हिन्दुस्तान को बर्बाद करने पर लगे हो ?"

अब्दुल करीम का चेहरा फक्क था। कुछ कह न सका। बारी-बारी सबको देखता रहा।

"ये कौन है ?" जगमोहन ने बेड पर लेटी औरत की तरफ इशारा किया जो डरी पड़ी थी।

"मेरी बीवी।"

"तूने।" जगमोहन खतरनाक स्वर में उस औरत से कह उठा, "तूने अपने पति को कभी समझाया नहीं कि वह गलत रास्ते पर न चले।"

खौफ में दबी औरत कुछ कह न सकी। जगमोहन ने अब्दुल करीम की आँखों में झाँका और वहशी स्वर में कह उठा-

"अगर तुम हमें देवराज चौहान के बारे में बता दो तो तुम्हारी जान बच सकती है।"

"मैं सच में नहीं जानता।" अब्दुल करीम कांपते स्वर में कह उठा, "मैं जानता होता तो बता चुका होता।"

"इसे खत्म कर दे।" जगमोहन ने कलाम को देखकर दरिंदगी भरे स्वर में कहा।

तड़-तड़-तड़।

गन थोड़ी सी गरजी।

अब्दुल करीम चीख न सका और बेड से टकराता नीचे जा गिरा। वह ठंडा पड़ गया था। जगमोहन ने औरत को देखा, जो कि डर की वजह से बेहोश हो चुकी थी।

□□□

इफ्तिखार का जो पता अब्दुल करीम ने बताया था, वहाँ पर काफी तगड़ा पहरा था।

कड़कती सर्दी में भी उसके बंगले के गनमैन सतर्कता से अपनी-अपनी जगह पर मौजूद थे।

वैन उन्होंने बंगले से पहले ही रोक दी थी। करीम पैदल ही अँधेरे में छिपता-छिपता बंगले का हाल देख आया था। जब पास पहुँचा तो जगमोहन वैन की सीट पर आँखें बन्द किये बैठा था।

"इफ्तिखार तक पहुँचना आसान नहीं। बंगले पर जबरदस्त पहरा है।" कलाम बोला।

जगमोहन ने आँखें खोलकर कलाम को देखा फिर कह उठा-

"वहाँ हमेशा ही पहरा होता होगा या आज ही पहरा है?"

"मैं समझा नहीं।"

"ऐसा तो नहीं कि वहाँ देवराज चौहान को रखा हो और पहरा लगा दिया हो।" जगमोहन बोला।

सोच-भरी चुप्पी के बाद कलाम कह उठा।

"मेरे ख्याल में वहाँ देवराज चौहान नहीं होगा। देवराज चौहान पर इस तरह सरेआम पहरा लगाकर, बड़ा खान इश्तिहार जैसा काम नहीं करेगा कि देवराज चौहान को यहाँ रखा है।"

"तो तुम्हारे ख्याल से देवराज चौहान वहाँ नहीं है।"

"हाँ, ये ही ख्याल है मेरा।"

"इफ्तिखार तो होगा?"

कलाम ने जगमोहन को गहरी निगाहों से देखा। अंधेरे में चेहरा स्पष्ट नहीं दिखा।

"वहाँ गनमैन मुस्तैद हैं। छः तो मैंने देखे। ऐसे में कुछ किया तो मरेंगे।"

"हम रुकेंगे नहीं। हमें कुछ करना ही है।" जगमोहन ने खतरनाक स्वर में कहा।

"ऐसा है तो हमें दिन निकलने का इंतजार करना होगा। इफ्तिखार के बंगले से बाहर निकलने का इंतजार करना होगा।"

"हम इंतजार करेंगे।"

"तुम इफ्तिखार को मारना चाहते हो?" कलाम ने पूछा।

"हाँ! मैं बड़ा खान को इतनी तकलीफ देना चाहता हूँ कि वह बाहर आ जाये।"

"तुम्हारी हरकतें बड़ा खान को मजबूर कर देंगी कि वह देवराज चौहान को कोई नुकसान पहुँचा दें।"

"वह उसे छोड़ने वाला तो वैसे भी नहीं।" जगमोहन गुर्राया, "हो सकता है इफ्तिखार को पता है कि देवराज चौहान को कहाँ रखा हुआ है और हम उसका मुँह खुलवा लें। वह बड़ा खान के लिए हथियार लाता है पाकिस्तान से। इफ्तिखार बड़ा खान के काफी करीब है। हो सकता है वह बड़ा खान के ठिकाने के बारे में जानता हो।"

"तुम्हारी सोच सही हो सकती है।" कलाम ने गम्भीर स्वर में कहा, "परन्तु उसके बंगले पर इतना पहरा है तो बाहर निकलने पर वह गनमैनों को अपने साथ रखता होगा। उस पर हाथ डालना आसान नहीं होगा।"

"बात को समझो कलाम। जितनी देर होगी, देवराज चौहान के लिये उतना ही खतरा बढ़ जायेगा।"

"परन्तु अब तो हमें दिन के उस वक्त का इंतजार करना होगा जब इफ्तिखार बंगले से बाहर निकलेगा।"

"वैन को किसी ऐसी जगह खड़ी कर लो कि किसी को हम पर शक न हो।"

"ये ठीक जगह है।" कलाम ने आस-पास देखते हुए कहा।

"सबसे कह दो कि वह दो-तीन घण्टे नींद ले सकते हैं। दिन निकलने पर इफ्तिखार के बंगले की हालात देखेंगे।"

"जरूरत पड़ी तो सुबह मैं फोन करके अपने और आदमी भी बुला सकता हूँ।"

"देखेंगे।"

तभी जगमोहन का मोबाइल बजा।

"हैलो!" जगमोहन ने फोन पर बात की।

"तुम कहाँ हो?" जब्बार की आवाज कानों में पड़ी, "अभी आँख खुली तो मैंने एक गनमैन से पूछा। उसने बताया कि तुम अभी लौटे नहीं।"

"मैं किसी काम के लिए निकला था, परन्तु वह काम लम्बा हो गया। दिन निकलने पर आऊँगा।" जगमोहन ने कहा।

"कलाम भी तुम्हारे साथ है।"

"हाँ!"

"तो मुझे साथ क्यों नहीं लेकर गए?" कानों में पड़ने वाले जब्बार की आवाज में शिकायती भाव आ गए।

"तब मैंने सोचा था कि छोटा सा काम है।"

"अब आऊँ मैं?"

"सुबह तक हम ही वापस लौट आयेंगे। तुम आराम से नींद लो।" कहकर जगमोहन ने फोन बन्द कर दिया।

□□□

देवराज चौहान की हालत सर्दी से बुरी हो रही थी। उसे एक खाली कमरे में रखा गया था। फर्श और दीवारों के अलावा कमरों में कुछ नहीं था। सामान के नाम पर कुछ नहीं था। रात भर वह सर्दी से बुरी तरह ठिठुरता रहा था। न तो वह बैठ पा रहा था। न ही लेट पा रहा था। इस कड़कती सर्दी में बिस्तर और मोटी रजाई भी हो तो, वह भी कम थी। कल दोपहर बाद उसे खाना दिया गया था। उसके बाद उसे पीने का पानी तक नहीं दिया। कोई आया भी नहीं था, जबकि उसे पूरी आशा थी कि बड़ा खान उसके पास अवश्य आएगा। परन्तु वह भी नहीं आया था।

रात भर सर्दी में ठिठुरने से उसकी हालत बुरी हो गई थी। आँखों में नींद थी परन्तु नंगे फर्श पर इतनी सर्दी में सो पाना जानवर के बस में भी नहीं था। दरवाजे के नीचे रौशनी देखकर उसे महसूस हो गया कि दिन निकल आया। परन्तु बाहर शांति ही छाई रही। वह नहीं जानता था कि उसे कहाँ लाया

गया है। उसे जब कार में बैठाकर ले जाया गया तो कुछ देर तक उसके सिर पर कपड़ा डाल दिया गया था कि वह रास्ता या ठिकाना न देख सके।

देवराज चौहान ठिठुरता सा, एक कोने में सिकुड़ा बैठा था। इतनी सर्दी में शरीर पर पड़ा गर्म स्वेटर भी कुछ खास राहत नहीं दे रहा था। किसी भी इंसान के लिए ये बहुत बड़ी यातना थी।

दिन की रौशनी दरवाजे के नीचे से नजर आने के बाद, दो-तीन घण्टे के बाद दरवाजे पर आहट हुई।

कोई आया था।

देवराज चौहान के दाँत भिंच गए। वह फुर्ती से उठा और चौखट के पास जा खड़ा हुआ। वह दरवाजा खुलने का इंतजार करने लगा। दरवाजा भीतर की तरफ खुलता था और इस तरह उसने दरवाजे की ओट में हो जाना था। बाहर से दरवाजा खोला जा रहा था। देवराज चौहान खुद को पूरी तरह तैयार कर चुका था हमला करने के लिए। इस कैद से छुटकारा पाना बहुत जरूरी था। वरना बड़ा खान उसे जिन्दा नहीं छोड़ने वाला।

दरवाजा खुला। पल्ला भीतर की तरफ खुलता चला गया। वह दरवाजे की ओट में हो गया।

दरवाजे पर तीन गनमैन दिखे। आगे वाले गनमैन की निगाह कमरे में घूमी। कमरा खाली पाकर उसके चेहरे पर कड़वे भाव उभरे और दरवाजे के पल्ले पर उसकी निगाह टिक गई। फिर वह तेजी से दौड़ा और गन के साथ भीतर प्रवेश करके फुर्ती से पलटा और अब गन दरवाजे के पीछे छिपे देवराज चौहान की तरफ थी। देवराज चौहान के होंठ भिंच गए। वह गनमैन को देखने लगा।

"तुम किसी भी चालाकी में सफल नहीं हो सकते। हम तीन हैं।"

तब तक बाकी दो भी भीतर आ गए थे।

देवराज चौहान समझ गया कि वह सच में कुछ नहीं कर सकता।

"तुम हम पर झपटने वाले थे।" वही गनमैन बोला, "अच्छा हुआ जो तुम ऐसा नहीं कर सके। वरना मैंने तुम्हें मार देना था।"

देवराज चौहान खामोश रहा।

"कमरे के बीच फर्श पर बैठ जाओ। बड़ा खान तुमसे मिलने आ रहा है।" दूसरा गनमैन कह उठा।

इनकी बात मानने के अलावा दूसरा रास्ता नहीं था। देवराज चौहान आगे बढ़ा और कमरे के बीचोबीच जा बैठा।

तीनों गनमैन, तीन अगल-बगल दीवारों के साथ पीठ सटाकर खड़े हो गए।

चंद पल बीते कि एक आदमी कुर्सी थामे भीतर आया और रखकर वापस चला गया। तभी दरवाजे पर बड़ा खान नजर आया। उसके होंठों पर खतरनाक मुस्कान नाच उठी।

देवराज चौहान उसे देखता रहा।

"तुम्हें यहाँ देखकर मुझे बहुत खुशी हुई हकीम साहब।" बड़ा खान कहते हुए भीतर आ गया, "मेरी आशा से कहीं जल्दी तुम मेरे हाथों में आ फँसे। वरना मैं तो सोचता था कि डकैती मास्टर अभी मुझे बहुत नचायेगा।"

बड़ा खान कुर्सी पर आ बैठा।

"क्या बात है? चूहे बने बैठे हो। रात नींद तो बढ़िया आई होगी।" बड़ा खान मुस्कुराया।

"मैं तुम्हारी कैद में हूँ।" देवराज चौहान ने कहा, "इसलिए मेरा कुछ भी कहना ठीक नहीं।"

"अच्छा! एक ही रात में समझदार हो गए हो। तुम्हारा संगठन मुझे बहुत परेशान कर रहा है। उन लोगों ने शौकत को मार दिया था।"

"उसे तो मरना ही था।"

"मेरे एक खास आदमी अब्दुल करीम को भी मार दिया। उसकी पत्नी से पता चला कि अब्दुल को मारने से पहले वह उससे मेरे और तुम्हारे बारे में पूछ रहे थे। वह तुम्हें तलाश कर लेना चाहते हैं।" बड़ा खान बोला।

"वह मुझे ढूंढने की पूरी कोशिश करेंगे।" देवराज चौहान बोला।

"लेकिन वह तुम्हें ढूंढ नहीं सकते। उन्हें मालूम नहीं होगा कि तुम कहाँ हो। लेकिन अब्दुल करीम को मारकर मुझे तगड़ा नुकसान दिया। रशीद-मस्तान की कमी मुझे खल रही है। तुमने कदम-कदम पर मुझे तकलीफ

दी। तुमने जो बीमारी मुझे दी, वह तो मेरी मौत के साथ ही खत्म होगी।" बड़ा खान शांत स्वर में कह उठा, "ये सब तकलीफें तो मुझे सहनी ही हैं, परन्तु मैंने तुम्हारी मौत सोच ली है कि कैसे तुम्हारी जान निकलेगी।"

बड़ा खान को देखता देवराज चौहान मुस्कुरा पड़ा।

"तुम यहीं इसी कमरे में सर्दी की वजह से तड़प-तड़प कर दम तोड़ोगे। तुम्हारे लिए यातना भरी ये मौत, तकलीफ वाली होगी। कड़कती सर्दी में खाली कमरे में पड़े रहना बहुत बुरा होता है। दिन में एक बार यानी कि चौबीस घण्टों में एक बार तुम्हें दो रोटी और पानी का गिलास मिलेगा, ताकि तुम भूख से तड़पकर नहीं, ठंड में तड़प कर मरो। यही है तुम्हारी मौत की तरकीब।"

देवराज चौहान बड़ा खान को देखता रहा। बड़ा खान के चेहरे पर क्रूरता नाच रही थी।

"आज हमारी आखिरी मुलाकात है। अब मैं तुमसे दोबारा मिलने नहीं आऊँगा। मेरे पास वक्त नहीं होता बर्बाद करने के लिए और तुमने मुझे बीमारी देकर और भी व्यस्त कर दिया है। इलाज करवाने के लिए मुझे अमेरिका जाना पड़ेगा। वहाँ के डॉक्टर से मेरी बात चल रही है। वह कहता है कि जब तक टेस्ट में एच०आई०वी० पॉजिटिव नहीं आता, तब तक मुझे शांत रहना होगा। हो सकता है ये बीमारी अभी मुझे न लगी हो। जो भी सच है, वक्त आने पर पता चलेगा। लेकिन अब तुम्हारी मौत तो निश्चित हो गई है। चार-पाँच दिन में मर जाओगे। ज्यादा हिम्मत वाले हुए तो आठ दिन जिन्दा रह लोगे। जब मरोगे तो तुम्हारा शरीर बुरे हाल में अकड़ा हुआ होगा। चेहरा सफेद पड़ा होगा। उस हाल में देखकर मुझे बहुत अच्छा लगेगा।"

देवराज चौहान खामोश रहा।

"तुम्हारे साथी जगमोहन को भी मैं ऐसी ही मौत दूँगा। वह भी तुम्हारी तरह ही मरेगा।"

देवराज चौहान ने गहरी साँस लेकर कहा-

"मुझे सिगरेट मिल सकती है?"

"नहीं !" तुम्हें दो रोटी और पानी के अलावा कुछ नहीं मिलेगा ।" बड़ा खान ने कड़वे स्वर में कहा । फिर अपने गनमैनों को देखता कह उठा, "अगले पाँच मिनट तक इसे ठोकरें मारते रहो । मैं इसकी चीखें सुनना चाहता हूँ ।"

एक गनमैन अपनी जगह पर सतर्क खड़ा रहा । बाकी दो आगे बढ़े और देवराज चौहान को ठोकरें मारने लगे । दो मिनट बीत गए परन्तु देवराज चौहान के होंठों से कोई चीख नहीं निकली । हर ठोकर पर कभी इधर लुढ़कता तो कभी उधर । उसने होंठ भींच रखे थे ।

"अभी तक इसकी चीख नहीं सुनी मैंने ।" बड़ा खान कह उठा ।

अगले ही पल ठोकरों के प्रहार बहुत तेज हो उठे । देवराज चौहान पीड़ा पर काबू नहीं पा सका और चीखने लगा । बड़ा खान के चेहरे पर खतरनाक मुस्कान नाच रही थी ।

"मारो हरामजादे को !" बड़ा खान दाँत भींचकर बोला । देवराज चौहान चीखता रहा ।

करीब दस मिनट तक ये ही सिलसिला चला । देवराज चौहान निढाल हो गया ।

"चलो !" बड़ा खान ने कहा, "अब डकैती मास्टर इसी कमरे में तड़प-तड़पकर मरेगा ।"

वे सब बाहर निकले और दरवाजा बन्द कर दिया । कराहता सा देवराज चौहान फर्श पर पड़ा था ।

दरवाजा बन्द करके गनमैन ने कुंडी लगा दी ।

"ये बहुत खतरनाक आदमी है ।" बड़ा खान ने गनमैनों से कहा, "इसे जरा भी मौका मिला तो तुम लोगों को मारकर फरार हो जायेगा । ये मेरा खास दुश्मन है । सावधानी से सख्त नजर रखो इस पर और जब सर्दी में तड़प-तड़पकर मर जाये तो इसकी लाश किसी चौराहे पर फेंककर, मुझे खबर कर देना ।"

□□□

दिन के 11:30 बजे थे ।

आज सूर्य नहीं निकला था। अभी भी वातावरण में कोहरा फैला था। रात में गिरी ओस की वजह से अभी तक जमीन और पेड़ों के पत्ते गीले थे। पत्तों में रह-रहकर पानी की बूँद गिर जाती थी। तीखी सर्दी जारी थी। इफ्तिखार के बंगले पर तगड़ा पहरा था। रात के पहरेदार सुबह छः बजे बदल गए थे और नए आ गए थे। इस इलाके में बंगले ही बने हुए थे। इसलिए ज्यादा भीड़भाड़ जैसी कोई चीज नहीं थी। जानलेवा सर्दी में कम ही कोई आता-जाता दिखाई दे रहा था।

11:40 पर इफ्तिखार के बंगले का पूरा गेट खुला और काले रंग की एक लम्बी कार बाहर निकली। उसमें एक आदमी ड्राइविंग सीट पर बैठा था। एक उसकी बगल में बैठा था। पीछे वाली सीट पर अकेला इफ्तिखार पसरा हुआ था। उसने काला, गर्म कमीज-पायजामा पहन रखा था। वह पचपन बरस का सेहतमंद, कुछ मोटा व्यक्ति था। चेहरा लाल-सुर्ख सेब जैसा था।

उसकी कार के पीछे-पीछे गेट से एक कार और निकली और पीछे आने लगी। उस कार में दो आदमी आगे और तीन पीछे थे। उनके पास गनें होने की झलक मिल रही थी। दोनों कारें मध्यम रफ्तार से आगे जा रही थीं।

इफ्तिखार के बंगले से कुछ दूर पेड़ के नीचे एक आदमी गर्म कपड़ों में, चेहरे पर मफलर लपेटे खड़ा था। जब दोनों कारें उसके सामने से निकल गईं तो तुरन्त मोबाइल निकालकर नम्बर मिलाया और बात की।

"कलाम, इफ्तिखार बंगले से बाहर निकल आया है। मैंने उसे पहचाना। वह काली कार के पीछे वाली सीट पर अकेला बैठा है। आगे एक आदमी कार चला रहा है, एक और आगे बैठा है। काली कार के पीछे पाँच आदमियों से भरी कार है। उनके पास गनें हैं।"

□□□

इफ्तिखार की काली लम्बी कार उस कॉलोनी से निकलकर मुख्य सड़क पर पहुँची। परन्तु पीछे वाली कार मुख्य सड़क पर न आ सकी। आठ-दस लोगों ने उस कार पर हमला कर दिया। तड़ातड़ कार पर गोलियाँ बरसने

लगीं। टायर बेकार हो गए। कार आगे नहीं जा सकी। भीतर बैठे पाँच व्यक्ति बाहर न निकल सके। गोलियों की बौछारें जारी थी। उनकी चीखों की आवाजें बाहर तक नहीं सुनाई दे रही थीं।

हमला करने वाले कलाम के आदमी थे। कलाम ने सुबह ही ठिकाने से अपने और आदमी बुला लिए थे। दो मिनट में ही उस कार में पाँच लाशें पड़ी थीं।

उसके बाद हमला करने वाले वहाँ से गायब होते चले गए।

□□□

गोलियों की आवाजें सुनकर इफ्तिखार चौंका। फौरन पलटकर पीछे देखा तो पीछे आती कार का हाल उसने अपनी आँखों से देखा। ड्राइवर ने कार रोक दी।

"बेवकूफ कार क्यों रोकी ? दौड़ा कार को।" इफ्तिखार ने गुस्से से कहा।

अगले ही पल कार दौड़ पड़ी।

"क्या हुआ जनाब ?" आगे बगल वाली सीट पर बैठे व्यक्ति ने पूछा।

"कोई मुझ तक पहुँचना चाहता है। पीछे आते आदमियों को रोककर उन्होंने मुझे अकेला कर दिया है।"

"ओह ! क्या कोई दुश्मन ऐसा करने वाला था ?"

"नहीं ! पता नहीं ये लोग कौन हैं। कार तेजी से दौड़ाते रहो।" इफ्तिखार ने बेचैनी से कहा, "दुश्मन अब कहीं पर भी मुझे पकड़ने की चेष्टा करेगा। दुश्मन जो भी है वह खतरनाक और चालाक है। जाने कबसे मेरे बाहर निकलने का इंतजार कर रहा था।"

"आप चिंता न करें जनाब ! मैं देख लूँगा उन लोगों को।" कहकर उसने पाँवों के पास रखी गन उठा ली। परन्तु इफ्तिखार के दाँत भिंच गए।

"जनाब !" कार चलाने वाला व्यक्ति कह उठा, "सफेद कार हमारा पीछा कर रही है।"

इफ्तिखार ने फौरन गर्दन घुमाकर पीछे देखा। सफेद इंडिका कार तेजी से उनके पीछे आ रही थी।

“कब से पीछे है ये ?” उस कार को देखते इफ्तिखार ने पूछा।

“हमारे मुख्य सड़क पर आते ही ये हमारे पीछे लग गई थी। तब से पीछे ही है। हम कई मोड़ ले चुके हैं।”

“पता नहीं ये कौन लोग हैं।” इफ्तिखार ने दाँत भींचकर कहा, “इस कार से पीछा छुड़ाओ।”

“पहाड़ी इलाके में कार ज्यादा तेज चलाना ठीक नहीं। सड़कें भी गीली हैं। कार फिसलकर खाई में गिर सकती है।”

इफ्तिखार बराबर पीछे आती सफेद इंडिका को देख रहा था। वह करीब आती जा रही थी।

“फोन करके सहायता माँग लीजिये।” ड्राइवर ने कार दौड़ाते हुए कहा।

“इतना वक्त नहीं है।” इफ्तिखार ने कठोर स्वर में कहा।

सफेद इंडिका काफी पास आ गई थी।

जल्दी ही वह वक्त भी आ गया जब सफेद इंडिका ने उनकी कार को ओवरटेक किया। इफ्तिखार ने देखा, कार में पाँच आदमी बैठे थे। कइयों से उसकी नजर मिली।

इफ्तिखार के होंठ भिंचे गए।

आगे पहुँचते ही सफेद इंडिका कार ने अपनी कार की स्पीड कम कर दी। वह कार उनकी कार को रोकने को मजबूर कर रहे थे।

“अब क्या करूँ जनाब ?” ड्राइवर ने पूछा।

बगल में बैठे व्यक्ति ने गन संभाल ली।

“कार को एक तरफ करके रोक दो और तुम।” दूसरे ने कहा, “गन का इस्तेमाल मत करना। मुझे उनसे बात कर लेने दो।”

“जी जनाब !” वह गन थामे कह उठा।

कार सड़क के किनारे रुक गई थी। आगे इंडिका भी रुकी और देखते ही पाँचों आदमी बाहर निकले। जिनमें जगमोहन और कलाम भी थे। दो ने गनें

थाम रखी थीं। अन्य तीन के हाथों में रिवॉल्वर थे। उन्होंने तुरन्त इफ्तिखार की कार को घेर लिया।

इफ्तिखार ने बैठे-बैठे पीछे का दरवाजा खोला और सामने खड़े गनमैन से बोला।

"मेरे पीछे क्यों पड़े हो ?"

"बाहर निकलो !" जगमोहन आगे आया, 'तुमसे बात करनी है।" उसका स्वर कठोर था।

"मैं तुम लोगों को नहीं जानता।"

"तुम इफ्तिखार हो और हम तुम्हें जानते हैं। इतना ही बहुत है। बाहर निकलो।"

"जो बात करनी है वह इस तरह भी हो सकती है।"

जगमोहन ने हाथ बढ़ाया और इफ्तिखार की बाँह पकड़कर उसे बाहर खींचा। ये देखकर आगे बैठा गनमैन मचला। उसने गन सीधी करनी चाही। उसकी खिड़की के पास खड़े कलाम ने हाथ में पकड़ी गन का मुँह खोल दिया।

तड़-तड़ की आवाजें गूँज उठीं।

वह गनमैन और ड्राइवर दोनों ही जिन्दा नहीं बचे। ये देखकर इफ्तिखार हड़बड़ा उठा। वह बाहर निकल आया था।

"ये तुम लोगों ने क्या किया। पहले भी तुम लोगों ने पीछे आती कार पर... ।"

जगमोहन ने उसकी कमर से रिवॉल्वर की नाल लगा दी। चेहरे पर दरिंदगी थी।

"चलो, हमारी कार में बैठो। जरा भी देर की तो हम तुम्हें भी मारकर चले जायेंगे।"

इफ्तिखार ने खतरे को महसूस किया और आगे खड़ी सफेद इंडिका की तरफ बढ़ गया। जिन लोगों ने ये सब देखा, वे खौफ से पीछे हटते चले गए। वे सब इफ्तिखार को लेकर इंडिका में बैठे और कार दौड़ा दी।

इफ्तिखार ने बोलना चाहा, परन्तु उसे चुप रहने को कहा गया।

□□□

इफ्तिखार को जंगल जैसी जगह पर ले जाया गया। दोपहर हो रही थी। कोहरा बरस रहा था। वातावरण में ठंडक बढ़ गई थी। ऊपर से जंगल जैसा खुला इलाका था।

इफ्तिखार परेशान और व्याकुल लग रहा था।

"आखिर तुम लोग कौन हो और क्या चाहते हो ?" इफ्तिखार कह उठा, "मुझ पर हाथ डालने की हिम्मत कोई नहीं कर... ।"

"डकैती मास्टर देवराज चौहान को कल बड़ा खान ने पकड़ा है।" जगमोहन के होंठों से गुर्राहट निकली, "मैंने देवराज चौहान को वापस पाना है। मैं उसका साथी जगमोहन हूँ और तुम हमें बताओगे कि देवराज चौहान कहाँ है।"

"मैं... मैं नहीं जानता।" इफ्तिखार के होंठों से बरबस ही निकला।

"तो पता करके बताओ। तुम बड़ा खान के लिये खास हो। पाकिस्तान से उसके लिए हथियार लाते हो।"

इफ्तिखार ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी।

"पाकिस्तान से हो या कश्मीर से ?"

"कश्मीर से।" इफ्तिखार बारी-बारी सबको देख रहा था।

"हम सिर्फ पाँच ही नहीं हैं। बहुत हैं। तुम्हारे पीछे गनमैनों से भरी कार पर हमारे आदमियों ने हमला किया था। तुम्हारे वह सब आदमी मर चुके हैं। देवराज चौहान को शौकत ने फँसाया। शौकत को हमने पिछली रात मार दिया। रात ही हम अब्दुल्ला करीम के पास पहुँचे। परन्तु वह नहीं जानता था कि देवराज चौहान कहाँ है। हमने उसे भी मार दिया। रात डेढ़ बजे से हम तुम्हारे बंगले के बाहर सर्दी में सड़ रहे थे। अब तुम्हारी बारी है। तुम देवराज चौहान के बारे में नहीं बता सके तो तुम्हें भी मार देंगे।" जगमोहन की आवाज और चेहरे पर मौत के भाव बरस रहे थे।

इफ्तिखार जानता था कि ये मजाक नहीं हो रहा।

"बोलो !" जगमोहन ने इफ्तिखार के दिल वाली जगह पर रिवॉल्वर रख दी, "देवराज चौहान कहाँ पर है ? बड़ा खान कहाँ पर मिलेगा ? मुँह से इंकार निकला तो गोली चल जायेगी ।"

पल भर के लिए इफ्तिखार की टाँगे काँप उठी । उसने तुरन्त खुद को संभाला । मौत को उसने पास ही खड़े महसूस कर लिया था । वह जानता था कि सच में अभी गोली चल सकती है ।

"मैं पता लगाता हूँ ।" इफ्तिखार सम्भल कर बोला ।

"कैसे ?"

"मुन्ना खान चार लोगों के साथ देवराज चौहान को पकड़ने गया था । उसे फोन करता हूँ ।"

"फोन पर उसे पूछोगे कि देवराज चौहान को कहाँ रखा गया है ?" जगमोहन उसी मौत भरे स्वर में बोला ।

"हाँ !"

"नहीं ! ये गलत होगा । उसे कहीं बुला लो । किसी सुरक्षित जगह पर । कहना अकेला आये ।"

"ठीक है !" इफ्तिखार ने सिर हिलाकर जेब की तरफ हाथ बढ़ाया । तभी कलाम गुर्रा उठा ।

"रुको !"

इफ्तिखार का हाथ रुक गया । उसने कलाम को देखा ।

कलाम गन थामे आगे बढ़ा और तलाशी लेने लगा । उसके कपड़ों से हथियार के नाम पर एक रिवॉल्वर निकली । जिसे लेकर कलाम पीछे हटा और इफ्तिखार को आँख से इशारा किया ।

इफ्तिखार ने जेब से मोबाइल निकाला और नम्बर मिलाने लगा ।

"कोई चालाकी मत करना ।" जगमोहन ने दाँत भींचकर कहा ।

"इन हालातों में मैं चालाकी कर ही नहीं सकता ।" फोन का नम्बर मिलाने में व्यस्त इफ्तिखार बोला ।

"कब से बड़ा खान के लिए काम कर रहे हो ?" जगमोहन ने पूछा ।

"दो साल से। जब से बड़ा खान ने कश्मीर में आकर अपना काम शुरु किया है।" कहने के साथ ही इफ्तिखार ने मोबाइल कान से लगा लिया।

दूसरी तरफ बेल जा रही थी। इफ्तिखार की गम्भीर, चिंता भरी निगाह जगमोहन, कलाम और बाकी तीनों पर जा रही थी। वह अपनी जान बचा लेना चाहता था।

"कहिये जनाब!" दूसरी तरफ से मुन्ना खान की आवाज कानों में पड़ी, "हुक्म दीजिये!"

"कैसे हो मुन्ना?" इफ्तिखार ने शांत स्वर में पूछा।

"आपकी मेहरबानी से सब बढ़िया चल रहा है।"

"क्या कर रहे हो?"

"काम तो चलते ही रहते हैं।" उधर से मुन्ना खान ने हँसकर कहा, "बताइये, मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?"

"तुमसे काम था।" इफ्तिखार ने सरल स्वर में कहा, "क्या तुम किसी को बिना बताये मेरे से अभी मिल सकते हो?"

"बिना बताये? खास काम लगता है। कहाँ आऊँ?"

"तुम।" इफ्तिखार ने एक सूनसान सड़क के बारे में बताते हुए कहा, "वहाँ पहुँचो। मैं सफेद इंडिका में मिलूँगा।"

"समझ गया। मैं आधे घण्टे में वहाँ पहुँचता हूँ।"

"किसी को बताना नहीं कि तुम मुझसे मिलने आ रहे हो।" कहकर इफ्तिखार ने फोन बंद किया और जगमोहन से बोला, "क्या तुम अपनी जुबान के पक्के हो कि मैं तुम्हें देवराज चौहान तक पहुँचा दूँगा तो तुम मुझे मारोगे नहीं?"

"मेरी जुबान का कभी भी भरोसा मत करना।" जगमोहन खतरनाक स्वर में बोला, "मैं अक्सर भूल जाता हूँ कि कुछ देर पहले मैंने क्या कहा है। परन्तु तुम्हारी तरफ से सब ठीक रहा तो तुम जिन्दा बच सकते हो।"

इफ्तिखार ने गहरी साँस ली।

"तुमने मुन्ना खान को ही फोन किया है या किसी को खतरे का इशारा किया है।" कलाम खतरनाक स्वर में बोला।

“मैं कोई चालाकी नहीं कर रहा। सिर्फ अपनी जान बचाना चाहता हूँ। मुन्ना खान से काम की बात पूछकर उसे खत्म कर देना।”

“क्यों ?”

“वरना वह बड़ा खान को बता देगा कि मैंने तुम लोगों की सहायता की। मैं मुसीबत में पड़ जाऊँगा।”

□□□

आधे घण्टे बाद, मुन्ना खान से मिलने की तय सड़क के किनारे सफेद इंडिका खड़ी थी। कार में कलाम और इफ्तिखार बैठे थे। दोनों खामोश थे और नजरें बाहर दौड़ रही थी। जगमोहन और बाकी के तीनों साथी सड़क किनारे पेड़ों के पीछे हथियारों के साथ छिपे थे। ये सतर्कता इसलिए बरती जा रही थी कि कहीं इफ्तिखार ने फोन पर कोई चाल न चली हो, उन्हें फँसाने के लिये। बड़ा खान से वास्ता रखता मामला था। हर कदम वे बेहद सोच-सम्भलकर उठा रहे थे।

तय वक्त के दस मिनट बाद मुन्ना खान कार पर वहाँ पहुँचा। इंडिका के पीछे ही सड़क किनारे कार रोकी और उतरकर इंडिका की तरफ बढ़ा। वह तीस बरस का कुछ लम्बा व्यक्ति था। देखने में फुर्तीला लग रहा था। इस वक्त उसने गर्म कमीज-सलवार, ऊपर मोटी जैकिट और सिर पर गर्म टोपी डाल रखी थी।

वह इंडिका के पास पहुँचा और नीचे झुककर भीतर देखा। कलाम इस वक्त बेहद सतर्क था। रिवॉल्वर वाला हाथ उसने एक तरफ छिपा रखा था।

मुन्ना खान से नजरें मिलते ही इफ्तिखार मुस्कुराया।

“आपको देखकर खुशी हुई जनाब !” मुन्ना खान ने कलाम पर नजर मारी, “कोई खास बात है क्या ?”

“भीतर बैठो मुन्ना।”

मुन्ना खान ने दरवाजा खोला और इफ्तिखार के साथ भीतर जा बैठा।

“कहाँ जाना है ?” मुन्ना खान ने पूछा।

“शायद... !” कहते-कहते इफ्तिखार ने गहरी साँस ली।

“क्या बात है ?” एकाएक मुन्ना की आँखें सिकुड़ी ।

यही वह वक्त था जब जगमोहन और बाकी तीनों कार तक आ पहुँचे ।

जगमोहन मुन्ना खान को धकेलते हुए भीतर बैठा और रिवॉल्वर उससे सटा दी । मुन्ना खान चौंका ।

“ये क्या ?” मुन्ना के होंठों से निकला ।

बाकी तीनों आदमी आगे की सीटों पर जा बैठे थे । एक ने कार स्टार्ट की ।

“ये क्या हो रहा है । ये लोग कौन हैं ?” मुन्ना खान तेज स्वर में इफ्तिखार से बोला ।

“मैं इन लोगों के कब्जे में हूँ ।” इफ्तिखार बोला, “इनके कहने पर तुम्हें बुलाया है ।”

“क्या ?” मुन्ना खान की निगाह कलाम की तरफ उठी, “ये कौन लोग हैं ?”

“चुप रहो !” जगमोहन उसकी कमर में रिवॉल्वर लगाये कह उठा, “अभी तेरे से बात करेंगे ।”

“तुमने किसी को बताया कि मेरे कहने पर, मुझसे मिलने आ रहे हो ?” इफ्तिखार ने पूछा ।

“आपने मना किया था । मैंने किसी को नहीं बताया । लेकिन ये सब... ।”

□□□

मुन्ना खान को लेकर वह सब वापस उसी जंगल में, उसी जगह पर आ पहुँचे । मुन्ना खान व्याकुल दिख रहा था । उसकी जेब में पड़ी रिवॉल्वर ले ली गई थी । इफ्तिखार गम्भीर था ।

“जनाब बात क्या है ? कुछ मुझे भी तो पता चले ।” मुन्ना खान ने खीझे स्वर में कहा ।

इफ्तिखार ने जगमोहन को देखा ।

"तुम बात करो ।" जगमोहन ने दाँत भींचकर कठोर स्वर में कहा, "हम सुन रहे हैं ।"

मुन्ना खान परेशानी से बारी-बारी सबको देख रहा था। उसने इफ्तिखार से पूछा-

"क्या बात है ?"

"मुन्ना ! ये लोग देवराज चौहान के साथी हैं और मेरे कई आदमियों को मारकर इन्होंने मुझे पकड़ रखा है। रात इन्होंने शौकत को भी मार दिया और अब्दुल करीम को भी। अगर मैंने इनकी बात नहीं मानी तो ये मुझे भी मार देंगे और तुम्हें भी नहीं छोड़ेंगे ।"

ये देवराज चौहान के साथी हैं, सुनकर मुन्ना सम्भल गया था।

इफ्तिखार पुनः गम्भीर स्वर में कह उठा-

"ये देवराज चौहान को वापस चाहते हैं और उसे शौकत के पास से पकड़कर तुम ही ले गए थे ।"

"ओह ! तो जनाब आपने खुद को बचाने के लिए मुझे इनके हाथों में फँसा दिया। ये तो गद्दारी हुई ।" मुन्ना खान गुर्रा उठा।

"ये वक्त गुस्सा करने का नहीं, समझदारी दिखाने का है। इन्हें बता दो कि देवराज चौहान को कहाँ रखा है। बता दोगे तो ये हमें जिन्दा छोड़ देंगे ।" इफ्तिखार का धीमा स्वर गंभीर था।

"बड़ा खान को आपकी ये हरकत जरा भी पसन्द नहीं आएगी ।" मुन्ना खान गुस्से में था।

"उसे मैं संभाल लूँगा ।" इफ्तिखार मुस्कुरा पड़ा।

तभी जगमोहन ने मुन्ना खान के गले पर रिवॉल्वर रखकर कहा।

"बस। अब बाकी की बात हमसे करो ।"

मुन्ना खान ने कठोर नजरों से जगमोहन को देखा। उसी पल कलाम ने जूते की ठोकर मुन्ना खान के पेट में मारी। मुन्ना खान पेट थामकर चीखा।

"अपनी नजरें ठीक करो ।" कलाम ने कड़वे स्वर में कहा, "हमें घूरो मत ।"

"बता, देवराज चौहान को कहाँ रखा है ?"

मुन्ना खान ने दाँत भींच लिए।

"वह जिन्दा है ?" जगमोहन गुर्राया।

"हाँ !"

"जिन्दा रहना चाहता है तो बता देवराज चौहान कहाँ है ?" जगमोहन ने एकाएक खूँखार लहजे में कहा, "अब बीस तक गिनती गिनी जायेगी। इस दौरान तू मर भी सकता है या देवराज चौहान के बारे में बताकर अपनी जिंदगी खरीद भी सकता है।" कहने के साथ ही जगमोहन ने कलाम को इशारा किया। कलाम आराम से गिनती गिनने लगा। जगमोहन ने रिवॉल्वर मुन्ना खान के गले पर लगा रखी थी।

मुन्ना खान के चेहरे पर मौत के साये लहरा रहे थे।

कलाम की गिनती दस तक पहुँच गई थी।

"बेवकूफी मत करो मुन्ना ! इन्हें बता दो जो पूछ रहे हैं। ये सच में मार देंगे।" इफ्तिखार कह उठा।

कलाम ने पंद्रह कहा। फिर सोलह।

मुन्ना खान ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी।

"तेरी मौत का मुझे सच में अफसोस होगा।"

कलाम ने उन्नीस कहा तो मुन्ना खान कांपते स्वर में कह उठा।

"ठहरो ! रुको, बताता हूँ। देवराज चौहान को पीली कोठी में रखा है।"

"पीली कोठी ?" जगमोहन वहशी स्वर में बोला, "ये कहाँ है ?"

"मैं बता दूँगा पीली कोठी कहाँ है।" इफ्तिखार कह उठा।

जगमोहन ने मुन्ना खान की गर्दन से रिवॉल्वर हटाई और दो कदम पीछे हट गया।

मुन्ना खान ने गहरी साँस ली।

तभी कलाम आगे बढ़ा और अपने साथी से गन लेकर मुन्ना खान की छाती पर रख दी। मुन्ना खान कांप उठा।

"म... मैंने बता... द... दिया है।"

"आधी बात। अभी बाकी है।" कलाम ने दरिंदगी भरे स्वर में कहा।

"क...क्या ?"

“बड़ा खान कहाँ पर है ?”

“मैं... मैं नहीं जानता ।” मुन्ना खान के होंठों से निकला ।

कलाम ने इफ्तिखार को देखा तो इफ्तिखार शांत स्वर में कह उठा-

“ये बड़ा खान का खास आदमी है । और इसे पता होता है कि वह कहाँ पर मिलेगा ।”

मुन्ना खान ने दाँत भींचकर खा जाने वाली नजरों से इफ्तिखार को देखा ।

“तुम ।” कलाम ने जगमोहन से कहा, “अब तुम बीस तक गिनती शुरु करो । ये मेरे हाथों से मरेगा ।”

जगमोहन ने फौरन बीस तक गिनती शुरु कर दी । मुन्ना खान का चेहरा फक्क पड़ने लगा ।

कलाम ने गन की नाल मुन्ना खान की छाती पर टिका रखी थी ।

गिनती आठ तक पहुँच गई । इफ्तिखार कह उठा ।

“बता दे । बचने का कोई रास्ता नहीं । ये तेरे को मार देंगे । इन्होंने शौकत और अब्दुल करीम को भी मार दिया है ।”

“रशीद और मस्तान भी हमारे हाथों ही मरे थे ।” कलाम ने दरिंदगी से कहा ।

जगमोहन चौदह तक पहुँच गया था ।

“बताता हूँ ।” मुन्ना खान हड़बड़ाकर कह उठा, “बड़ा खान नवाब हाउस गया है ।”

“नवाब हाउस ?” कलाम के माथे पर बल पड़े ।

“ये एक ठिकाना है उसका ।” इफ्तिखार बोला, “मैं जानता हूँ ।”

“तो तुम पूरी तरह मेरा साथ दोगे ?” जगमोहन बोला ।

“हाँ ! ईमानदारी से ।” इफ्तिखार ने गर्दन हिलाई ।

“तो अब इसकी जरूरत तो नहीं ।” कलाम ने मुन्ना खान को देखा ।

मुन्ना खान कुछ नहीं समझा ।

“नहीं !” इफ्तिखार ने होंठ भींचकर कहा ।

तड़-तड़-तड़

थोड़ी सी गन गर्जी और मुन्ना खान उछलकर पीछे को जा गिरा । वह शांत पड़ गया ।

इफ्तिखार ने आँखें बंद कर लीं ।

"दुःख हो रहा है ?" जगमोहन ने कठोर स्वर में कहा ।

"ऐसा कुछ नहीं है ।" इफ्तिखार ने आँखें खोलीं, "ये वादा है कि तुम लोग मुझे नहीं मारोगे ?"

"वादे से पहले एक शर्त भी है ।"

"मैं हर कदम पर तुम लोगों का साथ दूँगा ।"

"साथ देगा और ये बुरा काम छोड़ देगा ।"

"मैं तो छोड़ दूँ पर बड़ा खान मुझे नहीं छोड़ेगा । मैंने ऐसा सोचा भी तो वह उसी पल मुझे मार देगा । मैं उसके बहुत राज जानता हूँ । वह मुझे दूर नहीं होने देगा ।" इफ्तिखार बेचैनी से कह उठा ।

"ये हमारी गारन्टी है कि बड़ा खान जिन्दा नहीं बचेगा ।"

"फिर मैं ये काम छोड़ दूँगा ।"

"न छोड़ा तो हम अभी तेरे को खत्म कर..."

"ये नौबत नहीं आएगी । मैं छोड़ दूँगा । इन कामों से मैं भी तंग आ चुका हूँ ।"

"तो तुम पीली कोठी और नवाब हाउस के बारे में जानते हो कि ये दोनों जगह कहाँ हैं ?"

"हाँ ! पीली कोठी तो यहीं श्रीनगर में है । नवाब हाउस श्रीनगर से बाहर दस किलोमीटर दूर है । बड़ा खान नवाब हाउस में जब जाता है तो समझ जाता हूँ कि वह कुछ दिन आराम करना चाहता है ।"

"तो वह वहाँ आराम करने गया है ?" जगमोहन खतरनाक स्वर में बोला, "वहाँ कितना पहरा होता है ?"

"आठ-दस गनमैन और दो-तीन नौकर होते हैं । चार-चार गनमैन चार-चार घण्टों की ड्यूटी देते हैं । हर चार घण्टे बाद गनमैन बदल जाते हैं ताकि वह ड्यूटी देने के काबिल रहें । छुट्टी के चार घण्टों में वह नींद ले लेते हैं ।"

"ये तो ज्यादा कोई सख्त पहरा न हुआ ।"

"नवाब हाउस के गनमैन अचूक निशानेबाज हैं और आसपास किसी संदिग्ध को देखकर फौरन उसे शूट कर देते हैं। एक पहाड़ी पर दो मंजिला साधारण सा मकान है नवाब हाउस। गनमैन और नौकर नीचे वाली मंजिल पर रहते हैं और बड़ा खान पहली मंजिल पर रहता है। मैं दो-तीन बार बड़ा खान के साथ वहाँ जा चुका हूँ।"

"वहाँ कौन से वक्त जाना ठीक रहेगा ?"

"कह नहीं सकता। हर वक्त ही वहाँ खतरे से खाली नहीं है।"

"पीली कोठी के बारे में बताओ।" जगमोहन ने कहा।

"पीली कोठी बड़ा खान का ऐसा ठिकाना है जिसके बारे में ज्यादा लोग नहीं जानते। यहाँ बड़ा खान के बेहद करीबी लोग रहते हैं। दस-पंद्रह के करीब हैं वह। बड़ा खान उन पर पूरा भरोसा करता है।"

"मुन्ना खान भी उन्हीं में से एक था ?"

"हाँ !"

"पीली कोठी के लोग तुम्हें जानते हैं ?"

"हाँ ! मैं वहाँ जाता रहता हूँ। हथियारों को कभी वहाँ रखना होता है तो कभी वहाँ से उठाकर हथियार किसी संगठन को देने होते हैं। मेरा वहाँ आना-जाना सामान्य सी बात है।" इफ्तिखार ने सरल स्वर में कहा।

"अपने साथ किसी को ले जा सकते हो ?"

"ये सम्भव नहीं। बड़ा खान की मौजूदगी में तो बिल्कुल ही सम्भव नहीं। अगर किसी को साथ में वहाँ पर ले जाता हूँ तो इस बारे में मुझे बड़ा खान के सामने सफाई देनी होगी कि बाहरी आदमी को पीली कोठी लेकर क्यों गया।"

"तुम मुझे वहाँ ले जा सकते हो ?"

इफ्तिखार के चेहरे पर बेचैनी उभरी, बोला-

"बाद में बड़ा खान को जवाब देना भारी पड़ जायेगा।"

"बाद तक वह जिन्दा नहीं रहेगा।" जगमोहन ने कहा फिर कलाम से बोला, "आओ, हम आगे की रणनीति तय कर लें।"

“इसका ध्यान रखना।” कलाम ने अपने आदमियों से कहा, “गड़बड़ की चेष्टा करे तो शूट कर देना।”

इफ्तिखार गहरी साँस लेकर रह गया।

दिन सरकता जा रहा था। सर्दी बढ़ गई थी। दोनों कुछ कदम दूर जा पहुँचे।

“हमारे पास वक्त कम है कलाम। आज शाम ढलते ही हम पीली कोठी और नवाब हाउस पर हमला करेंगे। नवाब हाउस पर हमला करने में हम जब्बार का इस्तेमाल करेंगे।” इसके साथ ही जगमोहन कलाम को अपनी योजना समझाने लगा।

करीब बीस मिनट वे बातों में व्यस्त रहे फिर वह इफ्तिखार के पास पहुँचे।

“तुम्हारा परिवार है ?”

“हाँ !” इफ्तिखार ने सिर हिलाकर कहा, “पत्नी है, चार बच्चे हैं। एक मुम्बई में पढ़ता है, दो अमेरिका में। एक साथ रहता है।”

“हम जो काम करने जा रहे हैं, उसके लिए बहुत हद तक तुम पर निर्भर है। तुम्हें इस बात का पूरा मौका मिलेगा कि तुम हमें धोखा देकर बड़ा खान के हाथों में फँस सको और हम नहीं चाहते कि तुम ऐसा करो।”

“कसम से, मैं ऐसा कुछ नहीं करूँगा।” इफ्तिखार ने यकीन दिलाने वाले स्वर में कहा।

“तुम अपनी पत्नी को फोन करके बुलाओ।”

“क्या ?” इफ्तिखार के होंठों से बेचैनी भरा स्वर निकला।

“तुम्हारी पत्नी गारन्टी के तौर पर हमारे पास रहेगी कि तुम हमसे धोखा नहीं करोगे।”

“मैं धोखा नहीं करूँगा।”

“फिर तुम्हें क्या परेशानी है। जैसा हमने कहा है, वैसा कर दो। अपनी पत्नी को बुलाकर हमारे हवाले कर दो। वह हमारे पास पूरी तरह तब तक सुरक्षित रहेगी, जब तक कि तुम हमें धोखा नहीं दोगे।” जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा।

"मुझे क्या करना होगा ?" इफ्तिखार परेशान स्वर में बोला।

जगमोहन ने बताया।

"बड़ा खान मुझे जिन्दा नहीं छोड़ेगा।" इफ्तिखार दाँत भींचकर कह उठा।

"तुम हमारी बात नहीं मानोगे तो मैं भी तुम्हें मार सकता हूँ।"

"बात मानने से मैंने इंकार नहीं किया। क्या ये जरूरी है कि मैं अपनी पत्नी को बुलाऊँ ?"

"जरूरी है।"

इफ्तिखार ने अपनी पत्नी को फोन करके मामला समझाया और आने को कहा। उसे जगह बता दी।

"अब तुम मुझे नवाब हाउस के बारे में बताओ कि वहाँ तक कैसे पहुँचा जा सकता है ?" जगमोहन कह उठा।

□□□

जगमोहन इफ्तिखार की बीवी फातिमा के साथ ठिकाने पर पहुँचा। फातिमा पचास बरस की लम्बी-चौड़ी सेहतमंद औरत थी और सारा मामला वह समझ चुकी थी। इन हालातों में भी वह निश्चिन्त थी कि उसका शौहर उसे बचाने के लिए कुछ भी करेगा। वह जानती थी।

जगमोहन ने फातिमा को अपने आदमियों के हवाले करते हुए कहा-

"इसे अपनी माँ-बहन समझकर, पूरी इज्जत देते हुए अपनी कैद में रखो।"

उसके बाद जगमोहन जब्बार के पास पहुँचा। जब्बार उसे देखते ही कह उठा-

"तुम मुझे यहाँ छोड़कर किन कामों में भागे फिर रहे हो। मुझे भी तो साथ ले जा सकते थे तुम।"

"मैं बहुत बढ़िया काम करके आया हूँ।" जगमोहन मुस्कुराया।

"क्या ?"

"बड़ा खान के बारे में पता लगा लिया है कि वह कहाँ पर है।" जगमोहन ने कहा।

"कहाँ है वह ?"

"नवाब हाउस में।"

"इस जगह के बारे में मैंने पहले कभी नहीं सुना। कहाँ है ये ?" जब्बार की आँखें सिकुड़ी।

"मैं बड़ा खान का शिकार करने जा रहा हूँ। क्या तुम ऐसे मौके पर मेरे साथ रहना चाहोगे ?"

"इस बढ़िया मौके को मैं हाथ से कैसे जाने दूँगा।" जब्बार गुर्रा उठा।

"ऐसा ही मेरा ख्याल था कि तुम जरूर साथ चलोगे। तैयार हो जाओ। नवाब हाउस काफी सुरक्षित जगह पर है। वहाँ हमें खतरा आ सकता है। बढ़िया से बढ़िया हथियार साथ ले लो। चाहें जो भी हो, बड़ा खान जिन्दा नहीं बचना चाहिये।"

"नहीं बचेगा।" जब्बार ने दाँत किटकिटाये, "उसने मेरे साथ बहुत बुरा किया है। सब संगठनों में ये बात फैला दी कि मैं पुलिस के साथ मिल गया हूँ। फिर वह मुझे शहीद बनाने जा रहा था। कुत्ते की मौत मारूँगा हरामजादे को।"

□□□

इफ्तिखार खुद कार चला रहा था। बगल में कलाम बैठा था और पीछे वाली सीट पर कलाम का आदमी गन लिए बैठा था। कभी-कभी इफ्तिखार के चेहरे पर घबराहट नजर आने लगती थी। अँधेरा घिर चुका था। कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी। शाम से ही ओस पड़नी शुरू हो गई थी। सब सड़कें गीली दिखाई दे रही थीं।

"बड़ा खान मुझे नहीं छोड़ेगा।" इफ्तिखार कह उठा।

"उसे आज रात खत्म करने की पूरी चेष्टा की जायेगी।" कलाम कठोर स्वर में बोला, "तुम्हें अपनी पत्नी की चिंता करनी चाहिए। वह हमारी कैद में है। तुम ठीक से हमारा साथ दोगे तो तभी वह आजाद हो सकेगी।"

इफ्तिखार के होंठ भिंच गए।

"जैसा तुम्हें समझाया है, वैसा ही करना।" कलाम ने कहा।

कुछ ही देर में कार कोठी पर जा पहुँची।

वह काफी बड़ा एक मंजिला मकान था जो कि शांत इलाके में बना हुआ था। लोहे के बड़े गेट पर टोपी पहने दो गनमैन खड़े थे। इफ्तिखार ने उनके पास कार ले जा रोकी। चूँकि कार इफ्तिखार की नहीं थी, सड़क से उठाई थी, ऐसे में वे कार को पहचान नहीं पाये। दोनों गनमैन सतर्क हो गए थे। एक गन थामे सावधानी से पास आया।

"मैं हूँ इफ्तिखार।" इफ्तिखार ने कहा, "गेट खोलो!"

"ओह, जनाब आप!" वह बोला। झुककर भीतर झाँका। कलाम और पीछे बैठे व्यक्ति को देखता कह उठा, "ये लोग कौन हैं?"

"पाकिस्तान से आये हैं। मिलिट्री के लोग हैं।"

गनमैन फौरन पीछे हटा और दूसरे गनमैन से बोला-

"इफ्तिखार साहब हैं, गेट खोल दो।"

तुरंत ही गेट खोल दिया गया।

कार आगे बढ़ी और भीतर प्रवेश करती चली गई। हैडलाइट की रौशनी में कलाम वहाँ का माहौल देख रहा था। दो गनमैन उसे लॉन की तरफ टहलते दिखे। कार पोर्च में जा रुकी।

"आओ!" इफ्तिखार ने इंजन बंद करके दरवाजा खोलते हुए कहा।

कलाम और उसके साथी भी बाहर निकले।

तीनों सामने के लकड़ी के बड़े से दरवाजे की तरफ बढ़ गए। जो कि खुला हुआ था।

उन्होंने भीतर प्रवेश किया तो सामने ही कुर्सियों पर चार आदमी बैठे दिखे। जो कि ताश खेल रहे थे। गनें पास ही कुर्सियों से सटा रखी थीं। उन्हें देखते ही पत्ते छोड़कर गन थामी और सब खड़े हो गए। इफ्तिखार का आना तो साधारण बात थी। परन्तु साथ में दो अजनबी देखकर वह कुछ सतर्क हुए। वे जानते थे कि इस जगह पर कोई फालतू आदमी नहीं आता। एक गनमैन आगे बढ़ता हुआ इफ्तिखार से कह उठा।

"आइये जनाब ! साथ में कौन हैं ? मैंने इन्हें पहचाना नहीं ।"

"गनी !" इफ्तिखार सामान्य लहजे में कह उठा, "ये जुनैद साहब हैं और आज ही पाकिस्तान से आये हैं। ये इनके अंगरक्षक हैं।" इफ्तिखार ने पास खड़े गनमैनों की तरफ इशारा किया, "एक नया हथियार बनाया है। उनके बारे में ये तुम सब लोगों को बताएँगे ।"

"नया हथियार ?" गनी के होंठ सिकुड़े ।

"क्योंकि वह आम हथियार नहीं है। गन रूपी उस हथियार पर निशाना तय करने के लिये एक कम्प्यूटराइज चिप लगी है और उस पर सुइयों जैसा मीटर है। कमरे में बैठे-बैठे भी गोली को निर्देश दे सकते हो उस कंप्यूटराइज्ड चिप द्वारा। सुइयों से सेट कर लो दिशा और ट्रिगर दबा दो। गोली कमरे से निकलकर हवा में घूमती हुई उसी दिशा की तरफ जायेगी, जो दिशा तुमने सुइयों द्वारा सेट की है और अपने टारगेट पर जा लगेगी।"

"ओह ! ऐसी भी गन हो सकती है भला ।"

"हाँ ! पाकिस्तान ने ऐसी गन तैयार कर ली है। जुनैद साहब अभी सिर्फ दो गनें ही लेकर आये हैं। दोनों गनें तुम लोगों को दे जायेंगे। रातोंरात इन्हें सीमा पार करके पाकिस्तान पहुँचाना है। ये समझा देंगे कि गनें कैसे काम करती हैं और तुम लोग गनें इस्तेमाल करके देखना। अगर ठीक लगीं तो बताना, तब मैं ज्यादा गनों का ऑर्डर दे दूँगा ।"

"ऐसी गन तो वास्तव में शानदार होंगी।" गनी ने कहा, "परन्तु हमने तो शाम को सुना था कि कुछ लोगों ने आप पर हमला किया है। आपके काफी आदमी मारे गए और... ।"

"मैं बच निकला था ।" इफ्तिखार ने गहरी साँस ली ।

"कौन थे वे लोग, जिन्होंने आप पर हमला किया ?"

"पता नहीं ! लेकिन वह खतरनाक थे। बड़ा खान से उनके बारे में बात करनी होगी। कहाँ है बड़ा खान ?"

"सुबह आये थे और चले गए। उसके बाद कोई खबर नहीं है।"

तभी कलाम इफ्तिखार से कह उठा ।

"मेरे पास वक्त कम है। पाकिस्तान लौटना है। दस मिनट के लिए यहाँ सबको इकट्ठा कर लो।"

"जल्दी करो गनी!" इफ्तिखार ने कहा, "मुझे भी अभी कई काम करने हैं।"

"लेकिन सबको इकट्ठा करने की क्या जरूरत है।" गनी बोला।

"दस मिनट के लिए सबको इकट्ठा कर लोगे तो तुम्हें क्या परेशानी है?" इफ्तिखार ने सख्त स्वर में कहा।

"ठीक है जनाब! अभी बुलाता हूँ सबको।" फिर गनी ने पास खड़े तीन लोगों से कहा कि वे सबको यहाँ इकट्ठा होने को कहें।

वे तेजी से चले गए।

"वह गन कहाँ है?" गनी ने कलाम के साथी के हाथ में पड़ी गन को देखकर कहा।

"कार में रखी है।" कलाम कह उठा, "अभी ले आता हूँ।"

इफ्तिखार का दिल तेजी से बज रहा था। परन्तु चेहरा शांत था।

पाँच-सात मिनट लगे कि वहाँ चौदह गनमैन आ खड़े हुए। सबके पास गनें थी। जो कि खतरनाक था। वे लोग जो करने जा रहे थे, उसके मुताबिक उनके पास गनें होना ठीक नहीं था। परन्तु सबके पास गने थीं।

"इतने ही हैं?" इफ्तिखार ने पूछा।

"इतने ही हैं हम।" गनी बोला।

"मुन्ना खान नहीं दिख रहा?" इफ्तिखार ने यूँ ही पूछा।

"वह सुबह से ही जाने कहाँ गया है। बताकर नहीं गया। अब वह गन दिखाइए।"

कलाम ने अपने गनमैन को इशारा किया।

गनमैन तो जैसे तैयार था। अगले ही पल उसके हाथ में दबी गन का मुँह खुल गया।

तड़-तड़-तड़-तड़-तड़...।

गन ने रुकने का नाम नहीं लिया।

एक-दो को अपनी गन सँभालने का मौका मिला परन्तु कलाम ने रिवॉल्वर निकालकर फुर्ती से उनका निशाना ले लिया। वे अपनी गन का इस्तेमाल नहीं कर सके।

मात्र डेढ़ मिनट में सारा काम खत्म हो गया।

वह चौदह के चौदह नीचे पड़े थे। उनमें चार-पाँच तड़प रहे थे। कलाम दाँत भींचे आगे बढ़ा और तड़पने वालों के सिर में गोली मारकर उन्हें शांत कर दिया।

इफ्तिखार हक्का-बक्का खड़ा, फटी-फटी आँखों से वहाँ बिखरी पड़ी लाशों को देख रहा था। उनके जिस्मों से खून निकलकर फर्श पर बहने लगा। फायरिंग के बाद अब सन्नाटा सा आ ठहरा था।

कलाम और उनके साथी के चेहरे पर दरिंदगी नाच रही थी। तभी दौड़ते कदमों की आवाज गूँजी। वे तीनों चौंककर पलटे।

गोलियों की आवाज सुनकर वहाँ काम करने वाले नौकर दौड़े आये थे। इफ्तिखार दाँत भींचकर कह उठा-

"इन्हें भी खत्म करो वरना ये मेरे बारे में बड़ा खान को बता देंगे कि...।"

गन पुनः गर्जी और दोनों नौकर शांत पड़ गए।

"देवराज चौहान को ढूँढो।" कलाम ने दाँत भींचकर कहा।

उसके बाद वे तीनों पीली कोठी में देवराज चौहान को तलाश करने लगे। तब छिपा हुआ एक गनमैन उन पर फायरिंग करने लगा।

दस मिनट की कोशिश के बाद उसे शूट कर दिया गया।

वे जल्द से जल्द यहाँ से निकल जाना चाहते थे। गोलियों की आवाजें गूँज चुकी थीं। कोई मुसीबत आ सकती थी।

कुछ देर बाद ही एक कमरे में बंद देवराज चौहान उन्हें मिल गया।

□□□

वह छोटी सी पहाड़ी थी। खुले में थी। पहाड़ी पर पाँच हजार गज जगह समतल कर रखी थी। उस पर थोड़ी सी जगह में दो मंजिला मकान बना रखा था। उसी को बड़ा खान ने नवाब हाउस का नाम दे रखा था। उसके

अलावा पहाड़ी पर कोई और मकान नहीं था। पहाड़ी के किनारों पर काँटेदार तारें लगा रखी थी कि कोई आसानी से पहाड़ी पर न आ सके। पहाड़ी पर बने मकान की हर तरफ खुली जगह थी। पेड़ों को काट दिया गया था कि कोई पेड़ों की आड़ लेकर छिपकर मकान तक न पहुँच सके। चौबीस घण्टे मकान के आसपास गनमैन तैनात रहते थे। दो नौकर थे जो मकान की साफ सफाई किया करते और खाना बनाते थे।

ये नवाब हाउस बड़ा खान की पसन्दीदा जगह थी। जब भी बड़ा खान को आराम करना होता, तो वह यहाँ आ जाता था। पहाड़ी तक आने वाला कच्चा रास्ता पहाड़ी से ही नजर आता था। ऐसे में रास्ते पर पहाड़ी से ही नजर रखी जाती थी। दिन की रौशनी में वह कच्चा रास्ता साँप की तरह बल खाता नजर आता था। रात में उस रास्ते पर कोई वाहन आता तो उसकी लाइट इस बात का एहसास करा देती थी कि कोई आ रहा है। यहाँ पहरा देने वाले लोगों का बाकी किसी काम से वास्ता नहीं था। वह सिर्फ यहीं की देखभाल करते थे। इस जगह के बारे में बहुत कम लोग जानते थे। यहाँ पर बड़ा खान के साथ इफ्तिखार ही दो बार आया था। इफ्तिखार के अलावा यहाँ कोई और नहीं आया था। बड़ा खान को इफ्तिखार पर ही थोड़ा बहुत भरोसा था। तभी वह दो बार उसे यहाँ ला चुका था।

इस वक्त सर्द गहरी रात थी। बाहर ओस गिर रही थी। जमीन, मकान, पेड़-पौधे सब कुछ गीला सा हो रहा था। चारों तरफ सन्नाटा छाया हुआ था। छः गनमैन गर्म कपड़ों के ऊपर बरसाती और कैप पहने, गनें थामे मकान के आसपास और दूर टहलते पहरा दे रहे थे। एक कटीली तारों के पास खड़ा उस तरफ नजरें टिकाये हुए था, जहाँ रास्ता नजर आता था। रात के इस गहरे अंधेरे में रास्ता तो नजर नहीं आता था, परन्तु उस पर कोई वाहन आये तो, हैडलाइटों से उसके आने के बारे में जाना जा सकता था। मकान की ऊपरी मंजिल पर रोशनी हो रही थी। रास्ते पर नजर रखने वाले गनमैन को ये बात जरा भी महसूस न हो सकी थी कि आधा घण्टा पहले एक कार हैडलाइटें बन्द करके, बेहद सावधानी से ऊपर की तरफ आई थी। कुछ पहले ही वह कार एक जगह रुकी और उनमें से छः लोग गनें थामे उतरे और अँधेरे से भरे

रास्ते को तय करके पहाड़ी की तरफ बढ़ने लगे थे। कुछ ही देर में वह बिखरे हुए पहाड़ी पर सावधानी से चढ़ रहे थे। सड़क वाला कच्चा रास्ता उन्होंने छोड़ दिया था।

पहाड़ी काफी हद तक सीधी थी। वे छः लोग जगमोहन, जब्बार और चार अन्य गनमैन थे। हाथों में थमी गनों पर साइलेंसर लगे थे। सर्दी ने उनका बुरा हाल कर रखा था, परन्तु इरादे इतने पक्के थे कि वह रास्ते में आने वाली किसी भी कठिनाई की परवाह नहीं कर रहे थे। वह बिखरे हुए सावधानी से पहाड़ी पर चढ़ते हुए जा रहे थे।

कुछ ही देर में वह पहाड़ी के ऊपर तक जा पहुँचे थे।

आगे कांटेदार तारें लगी थीं वहीं रुककर उन्होंने पोजीशन ली। गनें तैयार की और भीतर का नजारा देखने लगे। मकान दो-ढाई सौ कदम दूर था। मकान के आगे-पीछे, दायें-बायें बल्ब जल रहे थे। वहाँ गनमैन टहलते दिखे। एक-दो-तीन-चार। कुल चार दिखे थे वह।

"एक साथ चार को उड़ाने का मौका सामने है जब्बार।" जगमोहन गुर्रा उठा।

"अभी लो। इन हरामियों को तो...।"

दोनों ने गनें सम्भाली और पिट-पिट की आवाजें उभरी।

उन चारों को गिरते देखा। एक छोटी सी चीख गूँजी। दो पल बीते कि दो और गनमैन वहाँ पर भागकर आते दिखे। शायद वह माजरा समझने की चेष्टा में थे।

जब्बार और जगमोहन ने उन्हें भी निशाने पर ले लिया। साइलेंसर लगी गन से फायदा हो रहा था कि शोर नहीं गूँजा था। परन्तु तभी उन्होंने एक गनमैन को भागते देखा। ये वह गनमैन था जो रास्ते पर निगाह रख रहा था। परन्तु जब उसने साथी गनमैनों को नीचे गिरते देखा तो समझ लिया कि मामला गड़बड़ है। वह मकान की तरफ दौड़ा।

परन्तु कुछ ही कदम भाग पाया था कि जब्बार ने उसे भी निशाने पर ले लिया। एक साथ कई बार ट्रिगर दबाया और गोलियाँ उसके शरीर में जा धँसी। वह उछलकर नीचे जा गिरा और फौरन ही ठंडा हो गया।

दोनों की निगाह हर तरफ फिर रही थी परन्तु अब कोई नजर नहीं आ रहा था।

"छः ही थे क्या ?" जगमोहन भिंचे दाँतों से कह उठा।

"सात को मारा है हमने।" जब्बार गुर्राया।

"शायद और भी हों।"

"परवाह नहीं।" जब्बार के होंठों से गुर्राहट निकली। वह खड़ा हो गया, "आओ !"

अगले ही पल जब्बार ने छलांग लगाई और कांटेदार तार के पास पहुँच गया। जगमोहन भी तार पार करके दूसरी तरफ आ गया। चारों साथी गनमैनों ने भी ऐसा ही किया। उनकी निगाह हर तरफ घूम रही थी।

जगमोहन गन थामे दबे पाँव मकान की तरफ दौड़ा और दीवार के पास पहुँचकर ठिठक गया। इधर-उधर बिखरी गनमैनों की लाशों को देखा। सब ठीक था। कोई और खतरा नहीं दिखा। उसने दूसरों को वहाँ आने का इशारा किया।

जब्बार उन चारों से बोला-

"तुम लोग इधर-उधर अंधेरे में बिखरकर पोजीशन ले लो। कोई दिखे तो बेहिचक शूट कर देना।"

वे चारों अंधेरे में गुम होते चले गए। जब्बार गन थामे जगमोहन के पास पहुँचा। दोनों खतरनाक शिकारी लग रहे थे।

दोनों की निगाहें मिली। जब्बार ने जगमोहन को आने का इशारा किया और आगे बढ़ गया। वह गन थामे मकान की दीवार के साथ-साथ आगे बढ़ता चला गया। आगे मोड़ आया तो सावधानी से मोड़ मुड़कर आगे चलता गया। फिर ठिठक गया। आगे मकान में प्रवेश करने वाला दरवाजा था, जो कि बन्द दिख रहा था।

"दरवाजा बन्द है।" जब्बार ने दाँत भींचकर कहा।

"गनमैन बाहर पहरा दे रहे थे। कोई तो रास्ता जरूर खुला होगा भीतर जाने का।" कहने के साथ ही जगमोहन गन थामे आगे बढ़ा और बन्द दरवाजे के पास पहुँचकर ठिठक गया।

दरवाजा शीशे का था। भीतर की तरफ पर्दे लगे थे।

जगमोहन ने दरवाजे के हैंडिल पर हाथ रखकर धक्का दिया तो दरवाजा खुलता चला गया। जगमोहन गन थामे सावधानी से भीतर प्रवेश कर गया। चारों तरफ नजरें घुमाई। कोई नहीं दिखा। ये सामान्य साइज का हॉलनुमा ड्राइंगरूम था और साधारण सा फर्नीचर रखा हुआ था। वहाँ से ऊपर नजर उठाने पर, ऊपरी मंजिल के कमरे और बालकनी नजर आ रही थी।

जब्बार भी भीतर आ गया। उसने दरवाजा बन्द कर दिया।

दोनों की नजरें मिली।

"पहले नीचे देखो।" जगमोहन ने दाँत भींचकर कहा और आगे बढ़ गया।

जब्बार दरिंदा सा बना गन थामे उसके साथ चल पड़ा।

□□□

ऊपरी मंजिल के एक कमरे में बड़ा खान बेड पर रजाई ओढ़े बैठा था। कमरे में पर्याप्त रोशनी थी। बेड पर रखी ट्रे में व्हिस्की की बोतल, गिलास और नमकीन के अलावा मुर्गे के भुने हुए दो पीस पड़े थे। गिलास में घूंट भर ही व्हिस्की पड़ी थी। बड़ा खान का चेहरा नशे में तप रहा था। आँखें लाल सुर्ख हो रही थीं। तीन घण्टों से वह सिर्फ पीने में ही लगा हुआ था। रह-रहकर आँखों के सामने देवराज चौहान का चेहरा घूम जाता था, जिसने उसे एच०आई०वी० जैसी घिनौनी बीमारी से पीड़ित कर दिया था। जिसका कि दुनिया में कोई इलाज नहीं था।

खुद को एच०आई०वी० से बचाने के लिए वह सिर्फ महँगी दवायें ही खा सकता था। परन्तु वह जानता था कि जल्दी ही एच०आई०वी०, एड्स में बदलेगा और फिर वह मौत के गले जा लगेगा।

ये ही परेशानी थी बड़ा खान की जो देर से पीये जा रहा था। उसे लगा कि देवराज चौहान को वह आसान मौत दे रहा है। मन ही मन उसने तय किया कि कल सुबह आदमी भेजकर देवराज चौहान को यहाँ मँगवा लेगा और उसे तड़पा-तड़पाकर बुरी से बुरी मौत देगा।

"ऐसा ही करूँगा मैं। कल देवराज चौहान को यहाँ मँगवा लूँगा।" बड़ा खान क्रूरता भरे स्वर में बड़बड़ाया फिर खाली गिलास करके नया पैग बनाने लगा।

नए गिलास से उसने घूंट भरा और गिलास रखकर, मुर्गा उठाया और खाने लगा। मन ही मन ये सोच रहा था कि अब उसे पाकिस्तान वापस चले जाना चाहिए। एच०आई०वी० का खौफ उसके जिस्म के जर्रे-जर्रे में फैल चुका था। थोड़ा सा खाने के बाद उसने मुर्गा वापस ट्रे में रखा और आँखें बन्द कर लीं। उसने थकान से भरी गहरी साँस ली।

उसकी साँसों से बारूद की स्मैल टकराई। बड़ा खान की आँखें तुरन्त खुल गईं।

"बारूद की स्मैल कहाँ से आई ? गोलियों की तो आवाज नहीं आई। फिर ये स्मैल... ।" शरीर पर डाल रखे गाउन की जेब में पड़ी रिवॉल्वर पर उसका हाथ जा टिका। सूंघने की कोशिश की। परन्तु अब उसे कोई स्मैल महसूस नहीं हुई। वहम हुआ होगा। ये सोचकर उसने रिवॉल्वर पर से हाथ हटाया और रजाई से हाथ बाहर निकालकर गिलास उठाया और घूंट भरा।

तभी दरवाजा खुला और गन थामे जब्बार ने भीतर प्रवेश किया। बड़ा खान के नशे से भरे मस्तिष्क को तीव्र झटका लगा। जब्बार को सामने पाकर वह ठगा सा उसको देखता रहा। वह पलक झपकाना भी भूल गया था। गिलास हाथ में ही थमा रहा।

इसी पल जगमोहन ने भीतर प्रवेश किया। बड़ा खान को जैसे होश आया। गिलास ट्रे में रखता कह उठा।

"ओह जब्बार ! मेरे सच्चे साथी। अच्छा हुआ जो तू आ गया। मैं तेरे को देवराज चौहान के बारे में बताना चाहता था।"

जब्बार के चेहरे पर वहशी मुस्कान नाच उठी।

"ये ही है बड़ा खान।" जगमोहन बोला, "मैंने इसकी आवाज पहचान ली है।"

"तुम ?" बड़ा खान कह उठा, "आजादी-ए-कश्मीर वाले। जब्बार ये संगठन भी इंस्पेक्टर सूरजभान यादव की तरह नकली है। तुम सूरजभान यादव को नहीं जानते। मैं तुम्हें बताता हूँ कि देवराज चौहान ही... ।"

पिट...पिट... ।

जगमोहन की गन से आवाज उभरी।

दोनों गोलियाँ बड़ा खान की छाती पर जा लगीं। वह वेग के साथ पीछे बेड से टकराया। उसी पल एक और गोली निकली जगमोहन की गन से और उसके माथे पर जा लगी। बड़ा खान वहीं का वहीं शांत पड़ गया।

जब्बार ने जगमोहन से कहा-

"सुन तो लेते कि ये क्या कहना चाहता था।"

"ये खामख्वाह की बातें करके, अपनी मौत से बचने की चेष्टा करता और हमारा वक्त खराब करता।"

"ये देवराज चौहान कौन है ?"

"पता नहीं।" जगमोहन मुस्कुराया, "मैंने तो नाम नहीं सुना। हमारा काम खत्म हो गया। हमें यहाँ से निकल जाना चाहिए।"

□□□

जगमोहन, जब्बार और चारों गनमैन आधी रात के बाद उस ठिकाने पर पहुँचे। ठिकाने पर शांति थी। कलाम मिला। जगमोहन से आँखों-आँखों में बात हुई। जगमोहन समझ गया कि देवराज चौहान को कैद से आजाद करा लिया गया है।

"बड़ा खान का क्या हुआ ?" कलाम ने पूछा।

"बड़ा खान को हमने मार दिया।" जगमोहन मुस्कुराया, "जब्बार की सहायता से ये काम आसानी से हो गया।"

"साले को मरना ही था, मर गया।" जब्बार खतरनाक स्वर में कह उठा, "मेरे को शहीद बनाने जा रहा था। मेरी इज्जत मिट्टी में मिला दी बाकी संगठनों की नजरों में।"

"सब ठीक हो जायेगा । अब तुम हमारे संगठन के वफादार हो ।" जगमोहन मुस्कुराकर बोला ।

"तो अब काम खत्म ।" कलाम कह उठा ।

"खत्म ?" जब्बार ने कलाम को देखा, "अभी तो कई संगठनों को खत्म करना है ।"

"हाँ !" कलाम ने फौरन खुद को सम्भाला, "मेरा मतलब था बड़ा खान का काम खत्म ।"

□□□

जब्बार गहरी नींद में था कि उसकी साँसों से सिगरेट की स्मैल टकराई । उसने फौरन आँखें खोल दीं । दीवार में लगी घड़ी में वक्त देखा । सुबह के साढ़े दस बज रहे थे । नजरें घुमाई तो देवराज चौहान को सामने खड़ा पाया । जब्बार दो पल तो देवराज चौहान को देखता रहा फिर उसकी आँखें फैलकर चौड़ी होती गई ।

"तुम ?" उसके होंठों से निकला, "इंस्पेक्टर सूरजभान यादव । तुम तो नकली इंस्पेक्टर हो । य... यहाँ कैसे ?" उसके चेहरे पर हैरानी थी ।

देवराज चौहान ने मुस्कुराकर कश लिया ।

वहाँ जगमोहन और कलाम के अलावा तीन आदमी और भी थे । एक ने हाथ में डोरी थाम रखी थी । एकाएक जब्बार की आँखें सिकुड़ी और जगमोहन को देखकर बोला-

"ये... ये कौन है ? ये तुम लोगों के पास कैसे ? ये ही तो है इंस्पेक्टर सूरजभान यादव । जिसने मुझे जेल से निकाला ।"

"ये देवराज चौहान है ।" जगमोहन ने कहा ।

"देवराज चौहान ?" जब्बार की आँखें सिकुड़ी, "जिसके बारे में बड़ा खान मुझे कुछ कहना चाहता था ।"

"ये मेरे ही लोग हैं जब्बार ।" देवराज चौहान ने कहा ।

"क्या ?" जब्बार चिहुँककर उछल पड़ा, "तुम्हारे लोग ?"

"तुम बड़ा खान के बारे में मुँह खोलने को तैयार नहीं थे तो मुझे तुम्हारा मुँह खुलवाने के लिए दूसरा रास्ता इस्तेमाल करना पड़ा। मुझे खुशी है कि बड़ा खान को मारने के लिए तुमने मेरे लोगों का पूरा साथ दिया।"

जब्बार हक्का-बक्का सा सबको देखने लगा। मस्तिष्क में धमाके फूटने लगे थे। सारा मामला उसकी समझ में आता चला गया। एकाएक उसके दाँत भिंचते चले गए।

"हरामजादे, कुत्ते.... !" जब्बार ने चीखकर देवराज चौहान पर छलांग लगा दी, "तूने इतना बड़ा खेल खेला मेरे साथ।"

तभी तीन आदमियों ने आगे बढ़कर जब्बार को थामा और बेड पर उलटा लिटा लिया। हाथ पीछे करके उसकी कलाईयाँ बांधी जाने लगीं। जब्बार के मुँह से गालियाँ निकल रही थी। उसकी पिंडलियाँ भी बाँध दी गईं।

"जगमोहन !" देवराज चौहान ने कहा, "इसे नींद का इंजेक्शन दे दो।"

जब्बार गालियाँ निकाले जा रहा था।

देवराज चौहान ने मोबाइल निकाला और नम्बर मिलाने लगा।

कुछ ही पलों बाद कमिश्नर सजंय कौल की आवाज कानों में पड़ी तो देवराज चौहान उससे बात करने लगा।

□□□

जम्मू पुलिस हैडक्वार्टर के बाहर ए.सी.पी. संजय कौल अकेला खड़ा था। रात के साढ़े ग्यारह बज चुके थे। वह बार-बार कलाई पर बंधी घड़ी पर निगाह मार लेता था। पंद्रह मिनट और इसी प्रकार बेचैनी से बीते कि एक वैन पास आकर रुकी। कौल की निगाह वैन पर जा टिकी। वैन धूल से अटी पड़ी थी। तभी वैन का पीछे का दरवाजा खुला और कलाम बाहर कूदा। भीतर से जब्बार के द्वारा दी जा रही माँ-बहन की गालियों की आवाजें कौल के कानों में पड़ने लगी थीं।

कलाम ने वैन के फर्श पर लेटे जब्बार की टाँगे पकड़ीं। भीतर से जगमोहन ने उसे कन्धों से सम्भाला और वैन से बाहर लाकर, कमिश्नर कौल के पास ही नीचे लिटा दिया।

"जब्बार !" कौल हक्का-बक्का सा कह उठा ।

कलाम और जगमोहन वैन में चले गए । तब तक देवराज चौहान वैन से बाहर, कौल के पास आ पहुँचा था ।

"य... ये तो जब्बार है ।" कौल ने अजीब से स्वर में देवराज चौहान से कहा ।

"मैंने इस वक्त तुमसे मिलने को कहा था ।" देवराज चौहान बोला ।

"हाँ ! तुमने कहा था कि तुम मुझे सारा मामला बताओगे । परन्तु ये तो जब्बार... ।"

"कानून की अमानत ले गया था । उसे लौटाने आया हूँ । तुमने क्या सोचा कि मैं खाकी पहनकर कानून से गद्दारी करूँगा । मैं बेशक नकली पुलिस वाला था, परन्तु खाकी तो असली थी कमिश्नर ।"

"तुम... तुम आखिर चाहते क्या हो ? इसे ले गए और अब वापस दे रहे हो ।"

"काम खत्म हुआ । मैं इसके द्वारा बड़ा खान तक पहुँचना चाहता था । उसे खत्म कर देना चाहता था । तुम्हें खुश होना चाहिए कि बड़ा खान अब जिन्दा नहीं है । कल रात उसे मार दिया गया ।"

"मार दिया ?"

"हाँ !"

"परन्तु तुमने ये काम क्यों किया ?"

"मन था, कर दिया ।"

"तुम हो कौन ?"

"देवराज चौहान । लोग मुझे डकैती मास्टर कहते... ।"

"डकैती मास्टर देवराज चौहान ।" कौल चिहुँक पड़ा ।

"हाँ ! वही ।"

कौल अविश्वास भरी नजरों से उसे देखता रहा ।

"सौदा बुरा नहीं रहा कानून के लिए । कुछ दिन के लिए मैं जब्बार को ले गया और बड़ा खान को खत्म करके जब्बार को कानून के हवाले कर रहा हूँ । अब मैं चलूँ ।" देवराज चौहान कहकर पलटा ।

नीचे पड़ा जब्बार अभी भी माँ-बहन की कर रहा था।

"वह इंस्पेक्टर सूरजभान यादव कहाँ है ?" पीछे ए.सी.पी. कौल ने पूछा।

"वह सलामत है और कल सुबह के बाद वह दिल्ली में नजर आने लगेगा।" कहने के साथ ही देवराज चौहान वैन में जा बैठा।

उसी पल वैन आगे बढ़ गई।

कमिश्नर कौल वैन को जाते देखता रहा फिर गहरी साँस लेकर नीचे पड़े जब्बार को देखा। देवराज चौहान को गया पाकर जब्बार अब सामने कौल को पाकर, उसकी माँ-बहन की करने लगा था। उसे गालियाँ देने लगा था। कौल ने जोरदार ठोकर जब्बार की कमर में मारी। जब्बार चीख उठा।

"मुझे गालियाँ देता है।" कौल ने दाँत भींचकर कहा, "अभी बताता हूँ तेरे को।" कौल ने आवाज लगाकर सामने से जाते पुलिस वालों को बुलाया और जब्बार को उठाकर भीतर ले चलने को कहा।

हाथ-पाँव बँधे थे जब्बार के। वह फिर से वापस अपनी जगह पर आ पहुँचा था।

समाप्त